आख्यान

डा. विजय चौरसिया

गोंड़ राजाओं के कथा इतिहास का साक्ष्य

प्रस्तावना

'आख्यान' ग्रंथ में गोंड़ राजाओं राजा पेमलशाह, राजा हिरदेशाह, राजा बैहामारी,राजा पालीविरवा,राजा लोहगुंड़ी,राजाकुही मांछा,राजा बायोड़ड़ी एवं राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय की वीर गाथायें गायी जाती हैं। ये सभी गोंड़ क्षत्रीय राजा किसी इतिहास के पात्र से अधिक उनकी कल्पना के पात्र हैं। कुछ पात्रों के नाम इतिहास में मिलते हैं - जैसे राजा पेमलशाह,राजा हिरदेशाह,आदि किंतु उनके चरित्र मनगढ़ंत हैं। लोक गाथा गायक अपने मन से पात्रों को गढ़ लेता है। गोंड़ राजाओं की गाथा में वीरता के साथ - साथ श्रृंगार का वर्णन अधिक मिलता है।

परधान एक छोटी सी आदिम जाति के लोगों का समूह है। जो पिछले कुछ दशकों में तीव्रता से हिन्दू संस्कृति के संर्पक में आये हैं और हिन्दूओं का बहुत कुछ उन्होंने अपनाया है, परधान गोंड़ आदिम जाति की ही एक शाखा है पर उनकी संख्या गोंड़ों की लगभग केवल चार प्रतिशत है। सतपुड़ा के प्रदेश में मुख्यतः नर्मदा के कछार में इनका मुख्य निवास है। वैसे मध्य तथा उत्तरी मध्य प्रदेश तक यत्र - तत्र इनका फैलाव है।

परधान गोंड़ जाति का अनुज है और इस प्रकार वृहद गोंड़ कुटुम्ब में उसका विशेष स्थान है। परधान जाति के लोग मूलतः कवि और गायक हैं। इस जाति के लोगों ने सदा गोंड़ राजाओं की प्रशस्ति के ही गीत गाये हैं और इस तरह गोंड़ों के गौरव पूर्ण अतीत की याद ताजा रखी है। अपने गीत तथा कथाओं में अपनी गौरव गरिमा गाने के बजाय उसने सदा गोंड़ों की कारगुजारी का बखान किया है। इस प्रकार परधान एक प्रकार से गोंड़ों के चारण कवि कहे जा सकते हैं।

प्रस्तुत संकलन के कथानकों में गोंड़ राजाओं के विविध प्रसंग, उनके अपने जीवन दर्शन के अनरुप उनकी ही वाणी में इस गीतात्मकता के साथ संजोये गये हैं कि सारी गाथा एक धारा प्रवाही सूत्र के रुप में आगे बढ़ती जाती है और एक बार हाथ में आने पर संकलन मुश्किल से हाथ से छूट पाता है।

मैंने इस गाथा को पूरा का पूरा , जैसा का तैसा अपनी ओर से बिना कोई टिप्पणी दिये

पाठक के सामने रख दिया है । इस गाथा का क्षेत्रीय भाषा से हिन्दी अनुवाद को भी जैसा का तैसा रख दिया है । जिससे हिन्दी अनुवाद भी इतनी सरस एवं प्रभावक बन पड़ी है कि सहज ही ग्रहण होती चली जाती है। हिन्दी के पाठकों को उसकी भाव भूमि ग्रहण करने में कहीं भी विशेष कठिनाई प्रतीत नही होगी। लोक साहित्य में रुचि रखने वाले विद्वानों तथा लोक तत्व विज्ञान के अनुसंधाताओं के लिये यह संकलन निश्चय ही उपयोगी सिद्व होगा।

इन सभी लोक गायकियों में गोंड़ प्रदेश के गौरव तथा गोंड़ राजाओं के शौर्यपूर्ण युद्ध कौशल तथा उनके भव्य अतीत के विशुद्व चित्रण मिलते हैं।

इस संकलन का परायण करने से गोंड़ प्रदेश में प्रचलित विभिन्न अनुष्ठानों,रीति - रिवाजों , मेला - बाजार आदि समारोहों तथा विवाह की मनोरंजक विधियों का आभास सहज ही हो जाता है। इसके अतिरिक्त धर्म में प्रगाढ़ आस्था तथा धर्म - विमुखता से अथवा खंड़ित धार्मिक कृत्य से अमंगल होने की आशंका तथा उनकी मौलिक तथा तर्क पूर्ण अभिव्यक्ति , आदिवासी लोक जीवन को एक विशेष कोण से प्रस्तुत करती है।

भाषा व भावों का गठन व प्रभोत्पादक शैली में ओजपूर्ण युद्ध वर्णन निश्चित रुप से भारतीय संस्कृति को विशिष्ट गौरव प्रदान करता है।इन गोंड़ राजाओं की गाथाओं के संकलन मैंने गोंड़ प्रदेश में जाकर स्वयं किया है और इसे उसी ध्वान्यात्मक रुप में लिखा है । जिसमें सूचक ने उच्चारण किया है। अतः कहीं कहीं बोली विभेद सामान्य पाठक व साहित्यिक को खटक सकता है ।

इसके अतिरिक्त में उन सभी आदिवासी भाईयों को धन्यवाद देता हूं विशेष रुप से श्री हरि सिंह मरावी जी ग्राम गारकामट्टा जिला ड़िड़ौरी जिन्होंने अमूल्य समय देकर इसे गाकर सुनाया है तथा श्री रामफल परस्ते ग्राम बरगांव जिला ड़िड़ौरी को जिन्होंने इसे लिपीबद्व करने में सहयोग प्रदान किया है। गोंड़वानी के मुद्रण तथा सम्पादन में डॉ. कपिल तिवारी जी निदेशक आदिवासी लोक कला अकादमी भोपाल एवं श्री अशोक मिश्रा ने अपना अमूल्य समय देकर इस संग्रह का महत्व बढ़ाया है ।

इन सभी महानुभावों का मैं ह्रदय से आभारी हूं।

आपका अपना हीः
डॉ. विजय चौरसिया
चौरसिया सदन, गाड़ासरई
जिला ड़िंड़ौरी म.प्र.

गोंड़वानी गाथा

गोंड़वानी मंड़ला एवं ड़िड़ौरी जिला एवं एवं समस्त गोंड़ परिवारों में प्रधान जाति के गायकों द्वारा गायी जाती हैं इनमें गोंड़ राजाओं पेमल शाह, हिरदे शाह, हीरा खान सिंह क्षत्रीय, बैहामारी, पाली विरवा, और राजा लोह गुंड़ी की वीर गाथायें गायी जाती हैं. ये सभी गोंड़ क्षत्रीय किसी इतिहास के पात्र से अधिक उनकी कल्पना के पात्र हैं. कुछ पात्रों के नाम इतिहास में मिलते भी हैं. जैसे पेमल शाह, हिरदे शाह आदि किंतु उनके चरित्र मनगढ़ंत हैं. लोक गाथा गायक अपने मन से पात्रों को गढ़ लेता है. गोंड़ राजाओं की गाथा में वीरता के साथ-साथ श्रृंगार का वर्णन बहुत अधिक मिलता है.

गोंड़वानी के गाथा गीतों का सार प्रस्तुत है.

राजा पेमल शाह

गाथा गीत का प्रारंभ राम के स्मरण से होता है. गोंड़ों मैं एक राजा पेमल शाह हुये हैं. उनका पुत्र हिरदे शाह था. ब्रम्हा ने पहले ब्राम्हण से फिर क्षत्रीय से कहा कि वे इस पृथ्वी के पालन पोषण का भार अपने ऊपर लैं. जब दोनों ने मना कर दिया,तब ब्रम्हा ने यह भार गोंड़ राजा को सौंपा.

उनकी आज्ञा से राजा पेमल शाह राज्य करने लगे. उनके अन्य भाई थे - दूधनशाह, बूढ़नशाह, शंकरशाह, और दलपतशाह, राजा पेमलशाह गढ़ा में राज कर रहे हैं. नौ सौ जोड़ी नागर चल रहे हैं. सोलह सौ बैलौ की दांए चल रही है. उनके राज्य में सभी मनुष्य और पशु - पक्षी प्रसन्न हैं.

एक बार राजा पेमलशाह पर विपत्ति पड़ी. राजा और उनकी रानी पोहपाल कंद - मूल खोद - खोद कर खा रहे हैं. उनके भाईयों ने कोई मदद नहीं की. एक दिन एक हंस के जोड़े ने राजा पेमलशाह को मोती लाकर दिये. राजा ने यह कहकर अस्वीकार कर दिये कि उनको तो केवल खाना - खाने को चाहिये. हीरे मोती खाये थोड़ी जा सकते हैं.

रानी सहायता के लिये अपने मायके पाताल कोट गयी. जहां उनका भाई भोजा बल्लारे अपनी दो पत्नियों के साथ रहता है. पोहपाल की भाभियों ने उसे पहचानने से इंकार कर दिया और उसका अपमान किया. जब भाई भोजा बल्लारे को पता चला तो उसने अपनी बहन से माफी मांगी और पत्नियों को दंड़ित किया. भाई भोजा बल्लारे ने अपनी बहन रानी पोहपाल को बहुत

कुछ देना चाहा पर रानी ने कहा उसको तो केवल उसके हिस्से का दहेज चाहिये. फिर भी भाई भोजा बल्लारे ने चालाकी से अपनी बहन रानी पोहपाल को बहुत कुछ दे दिया.

रानी पोहपाल चुनिया में बूचल और अपनी गोद में बड़ा देव रख कर अपनी ससुराल आ गयी. ससुराल पहुंचने पर राजा पेमलशाह ने बड़े देव का काफी सम्मान किया.

राजा पेमलशाह खेत जोत रहे हैं और खेत में खूब अनाज उगा रहे हैं. अब यह प्रसंग यहीं छोड़ते हैं और दिल्ली के रुम बादशाह की चर्चा करते हैं. वे अपने सिंहासन पर बैठे हैं. उसी समय राजा पेमल शाह ने भाटा ड़ोंगरिया में जंगल काट कर आग लगाई है. उसकी आंच से रुम बादशाह की दाढ़ी झुलसने लगी. जब राजा पेमलशाह चले तो रुम बादशाह का सिंहासन खिसकने लगा. रुम बादशाह राजा पेमल शाह को देखने चल दिये. रुम बादशाह ने राजा पेमलशाह को गढ़ मंड़ला जाने की सलाह दी.

राजा खेत में काम कर रहे हैं. रानी पोहपाल उनको भोजन देने आयी है. तो राजा ने देखा कल तक तो रानी के दोनों पैरों में चांदी की पायल थीं. आज एक पैर में सोने की पायल कहां से आ गयी. राजा उस पर शंका करते हैं. बाद में पता चलता है कि रास्ते में एक पारस पत्थर है. उसकी ठोकर लगने के कारण चांदी की पायल सोने की हो जाती हैं.

राजा उस पारस पत्थर को अपने कंधे में रखकर घर ले आते हैं. बड़ा देव के प्रताप से राजा रानी के दिन बदल जाते हैं. राजा ने महल बनवाया. तो रानी की सत से पत्थर स्वयं दौड़ते चले आये. बारह कोस के अहाते में नगर बस गया. महल बन गया. राजा की खेती - बारी होने लगी. अब राजा पेमलशाह के राज्य में दूर - दूर से रैयत आकर बसने लगीं.

0ध्0

राजा हिरदेशाह

बड़े देव की माया से राजा पेमलशाह पुनः अमीर हो गये. राजा - रानी दोनों बड़ा देव की पूजा करते हैं. उनके प्रताप से उन्हें एक पुत्र हुआ. जिसका नाम हिरदेशाह रखा गया.

हिरदेशाह बड़े हुये तो शिकार खेलने जाने लगे. एक दिन हिरदेशाह ने अपनी मां से जिद की कि उन्हें सोने का ऐसा जूता बनवा दो. जिसकी शक्ल रुम बादशाह जैसी हो. उनको वैसा ही जूता वनवा दिया गया. जिसको पहनकर वे खुशी - खुशी इधर - उधर घूम रहे हैं.

अब नेगी भगवत राय का किस्सा सुनो.

नेगी भगवत राय सोचते हैं की बारह बरस हो गये. सुना है कि राजा पेमलशाह बहुत बड़े आदमी हो गये हैं. वे उनसे मिलने राम नगर आते हैं. वे देखते हैं कि बारह योजन के क्षेत्रफल में रामनगर बसा है. हीरा - मोतियों के बाजार लगे हुये हैं. सोने के महल,सोने की अटारी,चांदी की चौपाल,रत्नों के खंभे,और मोतियों की झालरें लगीं हैं. महल में सिपाहियों के अतिरिक्त बाघ

और भालुओं का पहरा लगा हैं.

राजा पेमलशाह नेगी भगवत राय का खूब स्वागत करते हैं. राजा नेगी भगवत राय को छप्पन प्रकार के भोजन खिलाते हैं. फिर नेगी भगवत राय यह कथा सुनाते हैं कि गोंड़ कैसे पैदा हुये.

ब्रम्हा के मुख से ब्राम्हण पैदा हुये ब्राम्हण बात बहुत करते हैं पर काम कुछ नहीं करते थे. वे भीख मांग कर अपना पेट पालते हैं.ब्रम्हा की छाती के मैल से क्षत्रीय पैदा हुये. तब ब्रम्हा ने सोचा की इस प्ृथ्वी का पालन पोषण कौन करेगा. अतः उन्होंने अपने गोड़ (पैर) से गोंड़ पैदा किये. जो ब्रम्हा को सबसे अधिक प्रिय हैं. तब ब्रम्हा ने गोंड़ से कहा की पृथ्वी का भार तुम्ही संभालोगे.ब्रम्हा जी ने एक जोड़ी बैल और सतगजरा दाने देकर गोंड़ों को धरती पर भेज दिया.

जब यह कथा समाप्त हुयी तो राजा ने नेगी को खूबदान - दक्षिणा दी.नेगी भगवत राय ने हिरदेशाह के सोने के जूते मांगे.राजा ने उसे वे सोने के जूते दे दिये और नेगी को अपने नगर में बसा लिया. उसके लिये सोने का महल बनवा दिया. नेगी ने महल के ऊपर कलश और उसके ऊपर सोने का मुर्गा बनवाया. यह महल राजा हिरदेशाह के महल के सामने था. राजा हिरदेशाह ने एक दिन मुर्गे पर तीर छोड़ दिया. मुर्गा फक्क से उड़ गया. इस नेगी भगवतराय नाराज हो गया. उसने बादशाह से बदला लेने के लिये राजा हिरदेशाह से मित्रता कर ली. नगी भगवत राय क सलाह पर राजा हिरदेशाह ने गढ़ मंड़ला में हिरदेनगर बसाया. नेगी ने राजा को सलाह दी की महल के ऊपर आकाश दीप जला दो. जब आकाश दीप जला तो रुम बादशाह की दाढ़ी जलने लगी. उसने आकाश दीप का पता लगाने के लिये नीलामन नामक भाट को चौरागढ़ भेजा. रुम बादशाह ने उससे कहा की वह हिरदेशाह से तलवाना तगाादा वसूल कर के लाये.

जब भाट नीलामन चौरागढ़ पहुंचा तो राजा हिरदेशाह ने उसका भरपूर स्वागत किया.उसे तलवाना तगादा भी दिया. अब भाट नेगी भगवतराय के महल में तलवाना तगादा लेने पहुंचा. नेगी से भाट नीलामन ने वह जूते भी ले लिये जो रुम बादशाह की शक्ल के बने थे.

जब भाट नीलामन ने लौटकर दिल्ली के बाशाह को वह जूते दिखाये तो उसे क्रोध आ गया.उसने पठानों की फौज लेकर राजा हिरदेशाह के पास जुर्माना भरने के लिये भेजा.

राजा हिरदेशाह ने कहा कि जुर्माना भरने के लिये उसके पास धन नहीं है.वह हाथी पर बैठकर युद्ध करेगा. वह सज-धज कर दिल्ली की ओर रवाना होता है. दिल्ली के बादशाह की पूरी फौज पठान पलटन, कलार पलटन, तिलयान पलटन,महरान पलटन, अहरान पलटन, राजा हिरदेशाह से हार जाती हैं. तब बादशाह स्वयं आये और राजा हिरदेशाह को स्वागत के साथ अपने दरबार में ले गये.

दिल्ली के रुम बादशाह ने एक कुंआ बनवाया. उसके ऊपर दरी बिछवा दी, जैसे ही राजा हिरदेशाह वहां से निकला,वह उस कुंआ में गिर जाता है. बारह बस तक राजा हिरदेशाह उस अंध - कूप में पड़ा रहा. एक दिन राजा हिरदेशाह ने बड़ा देव का स्मरण किया. बड़ा देव ने चूहा बनकर उस कुंआ तक रास्ता बनायी और राजा हिरदेशाह को दिल्ली के बादशाह की कैन्या चिन्ना मोती के महल में पहुंचा दिया. दोनों एक दूसरे को देख कर मोहित हो गये. राजा हिरदेशाह राजकुमारी चिन्ना मोती के महल में उसके साथ पति - पत्नी की भांति रहने लगे. नौ महिने बाद रानी चिन्नामोती को एक पुत्र हुआ.

एक दिन राज कुमारी चिन्ना मोती का भाई नुंगडुंग वहां से निकला. उसने अपनी बहन के महल में एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी. उसने अपने पिता से शिकायत की तब रुम बादशाह ने राजा हिरदेशाह को अपना दमाद मान लिया. बादशाह ने राजा हिरदे शाह के सामने तीन शर्तें रखीं. पहली शर्त थी - की राजा कायर घोड़े को सायर कर दे और सायर को कायर. बड़ा देव की सहयता से उसने ऐसा कर दिया. तीसरी शर्त थी कि एक ही प्रहार से एक बकरे के तीन टुकड़े करना. राजा ने बकरे की पूंछ में नमक लगा दिया. जब बकरा अपनी पूंछ चाटने लगा, तब राजा हिरदेशाह ने प्रहार किया इस प्रकार बकरे के तीन टुकड़े हो गये.

अब रुम बादशाह ने अपनी पुत्री की बिदा राजा हिरदेशाह के साथ कर दी राजा हिरदेशाह अपने घर हिरदेनगर वापस आ गया. वहां सबने उसका स्वागत किया और आने की खुशियां मनायी. राजा हिरदेशाह ने चिन्ना मोती के लिये एक महल बनवाया . जो आज भी राम नगर में रानी महल के नाम से जाना जाता है.

जैसे राजा हिरदेशाह के दिन फिरे वैसे सब के दिन फिरे.

0ध्0

राजा बैहामारी

सिंगार दीप में श्री पिरथीपत राजा राज कर रहे हैं. उनकी रानी का नाम पुंगार पूसे और बहन का नाम घैलाक दामा है. उनकी बहन झींझारगढ़ के राजा जलमन शाह के साथ ब्याही थी. राजा पिरथीपत अपनी बहन से मिलने अपने घोड़े पर सवार होकर जाते हैं. वह अपनी बहन को बिदा कराकर अपने महल में ले आते हैं. भाभी अपनी ननद की खूब खातिर करती है.

ननद के आग्रह पर रानी उसे हरदी बजार दिखाने ले जाती है. दोनों बढ़िया वस्त्र और बहमूल्य आभूषण पहने हैं. बाजार में वे अपनी सखी - सहेलियों से मिलती हैं. वे बाजार में समान खरीदती हैं. वे वहीं पर बातों - बातों में यह निर्णय लेती हैं कि उनको जो बच्चा पैदा होगा, उनका विवाह वे आपस में कर देंगी. वे दोनों गर्भवती हैं. ऐसा सोचकर वे स्वयं भांवर ड़ाल लेती हैं. आगे भाभी और पीछे ननद, उस समय चिड़ियां विवाह गीत गाती हैं. पहाड़ की हवायें शहनाई बजा रही हैं. बादल नगाड़े बजा रहे हैं. रानी राजा को घर पहुंचकर विवाह वाली बात बताती है. राजा प्रसन्न हुआ की चलो दूध पलटाना हो जायेगा.

राजा अपनी बहन को ससुराल छोड़ आते हैं. नौ माह बाद रानी पूंगार पूसे को एक पुत्र पैदा हुआ. चारों ओर खुशियां मनायी जाने लगीं. उस पुत्र का नाम बैहामारी रखा गया. उसी समय झिंझारगढ़ में घैलाक दामा के उदर से एक लड़की पैदा हुयी जिसका नाम रामा रखा गया.

बारह वर्ष हो गये. बारह वर्ष बाद राजा पिरथीपत अपनी बहन के घर अपने पुत्र की सगाई के लिये जाते हैं. उधर बहनोई के मन में खोट आ जाती हैं. वे सोचते हैं कि उनकी एक ही

बेटी है, लमसेना (घर जमाई) रखना अधिक उचित होगा.

राजा जलमन शाह अपने साले राजा पिरथीपत को शिकार खिलवाने जंगल ले जाते हैं और वहां उसे मार ड़ालते हैं .राजा पिरथीपत प्राण त्यागते समय कहते हैं कि मेरा बेटा बैहामारी तुमसे अवश्य बदला लेगा.

जब बैहामारी को अपने पिता की मृत्यू का पता चला तो वह नौ सौ मटिया, सात सौ सिंगी, तेरह सौ भूत, और चुड़ैलों को लेकर अपने फूफा से युद्ध करने पहुंचा. उसने राजा जलमन शाह को मार ड़ाला. और उसकी पुत्री रामा को घर ले आया. वहां उनकी धूम-धाम से शादी हो जाती है. एक बूढ़ा बैगा जो शादी करा रहा था. शराब पीये जा रहा था. जब रानी ने उसे शराब पीने से मना किया तो उसने लगन बिगाड़ दी. नतीजा यह हुआ की दुल्हा दुल्हन का मिलाप न हो सका.

एक दिन रामा उस बूढ़े के पास गयी और उसे दारु की दो बोतलें दी. तब बूढ़े ने बताया की उनका मिलाप किस कारण से नहीं हो पाया है . तब बैगा बाबा ने मोहनी बनाकर कंघी में बांधकर रामा को यह कह कर दे दी कि यह कंघी खाट में जहां उसका पति सोता है वहां खौंस देना.

इधर रामा ने अपनी सास से कहा की मेरा पति तो मेरी तरफ देखता तक नहीं है. अतः मैं अपने छोटे भाईयों सोमा राजा और कामा राजा के घर जा रही हूं. जब वह सज-धज कर निकली, तो बैहामारी ने उसे देखा और उसके ऊपर मोहीत हो गया. लेकिन वह उसे पहचान नहीं पाया की वह उसकी पत्नी है. जब रामा चली गयी तब उसकी मां ने बतलाया की उसकी पत्नी अपने भाईयों के घर चली गयी. बैहामारी उसी समय घोड़े पर बैठकर उसके पीछे चल दिया.

रास्ते में रामा को दो राजकुमारों ने पकड़ लिया. वे उसको नाव में बैठालकर उसे नदी के उस पार ले जाने लगे. बैहामारी ने नाव पर तीर मारा . जिससे नाव डूब गई. राजकुमार बच गये. बैहामारी को रामा न मिल सकी. रामा को एक बड़ी मछली ने खा लिया. एक बूढ़े बैगा ने वह मछली पकड़ी जब मछली का पेट चीरा गया तो उसमें से रामा निकली. वह अभी तक जीवित थी. बैगा ने उसको अपनी पुत्री की तरह पाल. ढूंढ़ते - ढूढ़ते बैहामारी वहां पर पहुंच गया. वह भी बैगा बन गया . उसके विवाह की बात पक्की हो गई. एक दिन रजकुमार ने रामा को देखा , तो उसको महल में बुलवा लिया. जब बैहामारी को पता चला तो बैहामारी ने उस राजकुमार के राज्य पर चढ़ाई कर दी. बैहामारी ने उसकी सारी सेना को समाप्त कर दिया. रामा ने अपने सत की दुहाई देकर बड़ा देव से सबको जीवित करा दिया बैहामारी रामा को लेकर अपने राज्य में आ गये. उसकी मां यह देखकर बहुत प्रसन्न हुयी.

जिस प्रकार बैहामारी की जोड़ी बनी वैसी सबकी बने।

0ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध् ददददध्ध्0

राजा पालीविरवा

एक पालीपुर राज्य है जो बहुत समृद्व है. उस राज्य में गोंड़ राजा तपेसुर राज्य कर रहे हैं . उनकी एक बहुत सुन्दर रानी है. जिसका नाम निंगाल पाल है. उसको एक पुत्र हुआ . जिसका नाम पालीविरवा रखा गया.

एक रात रानी ने सपना देखा कि उसके भाई चांदो गढ़ के राजा बल्लारो के घर एक पुत्री पैदा हुयी है. जिसका नाम बाई बिलरिया रखा गया है. उसका विवाह पालीविरवा से हो जाता है.

जब रानी ने अपने पति राजा तपेसुर को अपना स्वप्न सुनाया तो वे शादी की बात तय करने चांदोगढ़ चल दिये. वहां पहुंचकर राजा तपेसुर ने बल्लारों के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा. बल्लारों को यह पसंद नहीं आया. उसी रात को बल्लारों ने राजा तपेसुर को शराब पिलाने कलार की दुकान पर ले गये. शराब पिलाकर उसे नदी किनारे ले जाकर बल्लारों ने राजा तपेसुर को मार ड़ाल.

राजा तपेसुर का छोटा भाई तपेसुर को ढूंढ़ने निकलता है. उसको राजा तपेसुर का घोड़ा जिसका नाम शाह करन रहता है,वह रास्ता बताने में मदद करता है. भोजे बल्लारे ने शराब पिलाकर उसे भी मार ड़ाला. माता निंगाल पालो ने यह बात पालीविरवा से छुपाई. जब वह बारह वर्ष का हुआ, तब उसके साथियों ने खेल-खेल में उसके पिता का नाम पूंछा. जब उसने अपनी माता से अपने पिता के बारे में पूंछा, तो माता ने बताया की उसके पिता नहीं हैं. वह सपने से पैदा हुआ है.

एक दिन एक कुटनी बुढ़िया ने पालीविरवा को उसके पिता को मृत्यू का प्रसंग अप्रत्यक्ष रुप से बता दिया. पालीविरवा शाह करन घोड़ा लेकर चांदो गढ़ चला गया.

पालीविरवा ने अपने मामा के यहां का भेद जानने के लिये एक बैगा का भेष रखकर नगर में प्रवेश किया. वहां जाकर पता चला की बाई बिलरिया का विवाह उसके पिता ने लांझी पुर के खोखल दूल्हे से तय कर दिया है.

रात को पालीविरवा ने दूल्हे के साथ एक बुढ़िया को सुला दिया. दूल्हे को गुस्सा आया और

वह बरात वापस ले गया. दूसरे दिन बाई्र बिलरिया अपनी सहेलियों के साथ सरवर सागर बांध में स्नान करने आती है. वहां पर पालीविरवा बाई बिलरिया को सब किस्सा सुनाता है. बाई बिलरिया पालीविरवा पर मोहित हो जाती है. और उसी से विवाह करने को तैयार हो जाती है. पालीविरवा उसके सत की परीक्षा लेते हैं. जिसमें वह सफल हो जाती है. अब उनके विवाह की तैयारियां होने लगतीं हैं.

जब भोजा बल्लारे को पता चलता है ,तब वह क्रोधित होकर अपनी सेना लेकर पाली विरवा को मारने चल देता है. दोनों में भयंकर युद्ध होता है. तब पालीविरवा अपने मामा भोजा बल्लारों को मार ड़ालता है. उसके बाद वह बाई बिलरिया को साथ लेकर अपने राज्य में माता निंगालपालो के पास आता है. राज्य के सभी लोग खुशियां मनाने लगते हैं.

जैसी पालीविरवा की बनी वैसी सब की बने.

0ध्0

राजा लोहगुंड़ी

एक राज्य में राजा पंचनरायन राज्य करते थे. उनकी बेटी का नाम हिरौली कन्या था. उसका विवाह लोहरीपुर के राजा के बेटे लोहगुंड़ी के साथ हुआ था. जब उसका विवाह हुआ था. उस समय वे दोनों बहुत छोटे थे. लोहारीपुर के राजा लोहगुंड़ी की माता का नाम कंकालिन और बहन का नाम विघासन था. जब बारह बर्ष बीत गये तब राजा पंचनारायन ने राजा लोहगुंड़ी को एक पत्र लिखा कि मेरी बेटी का गौना पंद्रह दिन के अंदर करा कर ले जाओ. अनथ्या कुछ बिगड़ जाता है तो तुम्हारी जिम्मेदारी होगी . राजा ने यह संदेश पवन दसौरी नामक बूढ़े के द्वारा भेजा.

जब पवन दसौरी पत्र लेकर जा रहा था . तब हिरौली ने पवन दसौरी से पत्र मांग कर पढ़ लिया. उसने सोचा पंद्रह दिन तो बहुत कम हैं. अतः उसने पंद्रह दिनों के स्थान पर दो माह कर दिये.

जब पवन दसौरी राजा लोहगुंड़ी के महल में पहुंचा. तो वहां उसकी बहुत खातिर हुयी. पवन दसौरी वह पत्र देकर वापस आ गया.

अब हिरौली को लगा की अब तो उसे ससुराल जाना ही है , चलो हरदी बाजार देख आयें. उसने एक स्त्री बुड़राहिन को अपने पिता के के पास हरदी बाजार जाने की अनुमति लेने भेजा. राजा ने बताया की हरदी बाजार तो जादू की नगरी है. वहां के राजा राम दरबई ने वावनगढ़ के राजाओं के सिर काटकर टांग रखे हैं. उस राजा के चरीत्र का भी क्या कहना ? उसने बीस संड़ - मुसंड़ लड़के पाल रखे हैं. जैसे ही बाजार भरता है. राजा इन लड़कों को गली में छोड़ देता है. जहां कोई अच्छी लड़की दिखी कि वे उसे पकड़कर राजा के पास पहुंचा देते हैं. राजा के मना करने के वावजूद हिरौली कन्या अपनी सखियों को लेकर चुपचाप हरदी बाजार चल दी.

जब हिरौली कन्या हरदी बाजार की एक गली में पहुंची तो मंहगू नामक गुंड़े ने उसको देखा. उसने यह खबर राजा को सुनाई कि वह लड़की इतनी सुंदर है कि तुम्हारी जीभ की तरह उसके पांव की ऐड़ी है. राजा ने हिरौली समेत सभी लड़कियों को पकडवा लिया. हिरौली ने एक चाल चली. उसने राजा से कहा की वह तो स्वयं राजा को चाहती है. इसीलिये वह हरदी बाजार आयी थी. फिर भी आपको बारह वर्ष तक प्रतिक्षा करना पड़ेगी. राजा तैयार हो जाता है.

इधर बुड़राहिन ने अपने गांव पहुंच कर राजा पंचनारायन को यह सूचना दी. राजा पंचनारायन ने राजा लोहगुंड़ी को पत्र भेजा कि मैंने तो तुम्हें सूचित किया था कि अपनी पत्नी को पंद्रह दिन में ले जाओ. ड़ेढ़ महीना हो गये तुम नहीं आये. राजा राम दरबई्र ने उसे रख लिया है.

राजा लोहगुंड़ी को जब यह सूचना मिली तो वह क्रोधित हो उठा. मां और बहन के मना करने पर भी वह अपने घोड़े बैदुला पर सवार होकर पांच हथियार साथ में रखकर अकेला चल दिया. जब वह राजा राम दरबई के नगर के किनारे पहुंचा तो वहीं पर ड़ेरा ड़ाल दिया. जब राम दरबई को पता चला तो उसने धोखे से राजा लोहगुंड़ी को मारने की योजना बनाई.

जब राजा लोहगुड़ी तालाब में पानी पीने आये, तभी राम दरबई ने तीर से उसे मार ड़ाला और उसकी लाश को एक गड्ढ़े में दबा दिया. सिंगी और भूतों ने राजा लोहगुंड़ी को बहुत तलाश किया. पर वे अपने राजा की लाश नहीं पा सके. तब घितवा और ठूंठी चुड़ैल ने एक योजना बनाई ,घितवा अतरा मक्खी बनकर एक फूल में घुस गया. जब रानी हिरौली ने उस फूल को सूंघा तो घितवा उसकी नाक में घुस गया. नाक से वह उसके पेट में चला गया इस कारण रानी के पेट में भयंकर पीड़ा होने लगी. उधर ठूंठी चुड़ैल ने एक ढुलनिया का भेष धारण किया ओर यह चिल्लाते हुये घूमने लगी कि पेट का दर्द ठीक करवा लो. एक सिपाही उसको रानी के पास ले गया . ठूंठी चुड़ैल ने सबको बाहर कर दिया. फिर उसने हिरौली के पेट पर हाथ फेरकर उसका दर्द ठीक कर दिया. ठूंठी ने हिरौली से यह पता लगा लिया की कि राजा लोहगुंड़ी की लाश कहां गड़ी है. ठूठी ने यह भी बतलाया कि उसका ड़ेरा सरवर सागर बांध के किनारे है. जब भी तुम्हें पुनः तकलीफ हो तो तुम वहीं चले आना. ठूंठी अपने ड़ेरे पर लौट कर आ गई. उसने अपने साथियों को बता दिया की राजा की लाश महल के आंगन में गड़ी है. सिंगी और भूतों ने कुत्ता, बिल्ली, मक्खी, बादल, पानी, कीट, पतंगा में अपना रुप बदल लिया. जिससे राजा के महल में हाहाकार मच गया. उसी समय वे राजा लोहगुंड़ी की लाश को बाहर निकाल कर ले आये. सिंगी और भूतों ने अमृत कुंड़ से अमृत लाकर राजा को चटाया. जिससे राजा जीवित हो गया.

रात को हिरौली कन्या के पेट में फिर से दर्द हुआ. वह अपनी सहेलियों और नौकरानीयों के साथ सरवर सागर बांध आ गयी. वहां ठूंठी ने उसके पेट का दर्द ठीक कर दिया. वहां उसकी मुलाकात राजा लोहगुंड़ी से हो जाती है. दोनों प्रसन्न हो जाते हैं. राजा हिरौली की जांघ पर सिर रख कर सो जाते हैं. रात को जब उसकी नौकरानियों ने राजा राम दरबई को यह किस्सा सुनाया तो वह अपनी सेना लेकर राजा लोहगुंड़ी से युद्ध करने बांध के किनारे आ गया. घमासान युद्ध हुआ. राजा लोहगुंड़ी ने राम दरबई को मार ड़ाला और उसकी कैद में जितनी लड़कियां थीं सब को मुक्त कर दिया.

बाद में राजा को तरस आ गया.अतः उसने राजा राम दरबई और उसकी सेना पर अमृत

छिड़ककर जीवित कर दिया.

राजा लोहगुंड़ी और रानी हिरौली अपने राज्य में आ गये. प्रजा बहुत प्रसन्न हुई. वे खुशी से रहने लगे.

जैसी उनकी बनी,तैसी सबकी बने।

0ddddd्dddd्dddd्ddddd्ध्0

राजा कुही मांछा एवं बायोड़ंड़ी

यह सतयुग की बात हैं. जब गोंड़वाना में गोंड़ राजाओं का राज्य था. तब एक महासम्राट राजा हुये. वे थे राजा कुही मांछा. राजा कुही मांछा चांदा गढ़, देवहार गढ़, देवगढ़ के राजा थे. उनके राज्य में अस्सी लाख गोंड़ भाई निवास करते थे.

राजा कुही मांछा बहुत बलवान राजा थे. उनके खरदा का नाम वेद मांछा था. राजा उस खरदा को रोज पांच किलो नमक से मंजवाते थे. बारह सांगा का खरदा था. वह ऐसा खरदा था की यदि उसकी धार पर मक्खी बैठ जावे तो वह कटकर दो टुकड़े हो जाती थी.

राजा कुही मांछा के घर में एक कन्या ने जन्म लिया उस कन्या का नाम पिली वाबिन मंछाल रामो रखा गया.

राजा का नाम कुही मांछा, रानी का नाम सिंघाल रामो, खरदा का नाम वेद मांछा और बेटी का नाम पिली वाबिन मंछाल रामो था. राजा कुही मांछा का राज्य तीन गढ़ों में था. राजा का दरबार लगा है. सोने के सिंहासन पर व्यास गद्दी पर राजा बैठे हैं. राज सभा में सभापति बाईस गढ़ के लाला - बाबू , तेईस गढ़ के जमींदार और बड़े - बड़े सरदार बैठे थे. सभी अपना -अपना न्याय कर रहे थे और जुर्म कायम कर रहे थे. बहुत सारे नौकर - चाकर लगे हैं.

असड़िया का बेटा भुसड़िया, भुसड़िया का बेटा कोल भसेड़ा, कोल भसेड़ा का बेटा मृद लांघा,

उसके भाई का नाम मंहगू, उसके बेटा का नाम पुंदगू .ये राजा कुही मांछा के कर्मचारी थे.

राजा कुही मांछा चांदागढ़ में राज्य कर रहे थे. वे इतना अच्छा शासन कर रहे थे कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता. राजा कुही मांछा के महल में कैन्या मंछाल रामो दिनों - दिन जवान हो रही थी. कैन्या मंछाल रामो के साथ बत्तीस कुवांरी लड़किया., सोलह सड़वा और सत्रह हैवाती हमेशा साथ में रहते थे. मंछाल रामो का महल सतखंड़ा था. जिसमें नौ खंड़ की ओवरी और शंकर जी का त्रिशूल गड़ा था. दिनों - दिन कन्या मंछाल रामो जवान हो रही थी. इस प्रकार एक दिन वह शादी के लायक हो गयी. उसकी मां सिंघाल रामो अपनी साठ सहेलियों के साथ घूमते - फिरते अपनी लड़की को देख रही थी. रानी अपनी सहेलियों से कहती है - अपना कोई रिश्तेदार नहीं आता,नहीं तो अपनी बेटी की शादी कर देती.

एक दिन राजा कुही मांछा राजमहल में रानी के साथ बैठकर भोजन कर रहे थे. रानी राजा से कहती है - पति देव हमारी बेटी जवान हो गयी है. उसके रिश्ते के लिये कोई सगे - संबंधी रिस्तेदार नहीं आ रहे हैं. क्या करें ? इतना सुनने के बाद राजा भोजन करके कचहरी चले गये. राजा राज सभा में अपने मंत्रीयों से बोलते हैं - सभा के सरदारो मेरी बेटी पिली वाबिन मंछाल रामो होशियार और जवान हो गयी है. उसके विवाह के लिये कोई रिश्ता नहीं आ रहा है. सभा के सभापति राजा के इस प्रश्न का कोई जबाव नहीं दे पाते . इतने में मृद लांघा कहता है. राजा साहब आपने अपनी बेटी का चौक, छटौ, बरहों, जब किया था. तब आपने सबको निमंत्रण दिया था कि नहीं? आपके घर में कन्या का जन्म हुआ है कि लड़के का इसको कौन जानता है.महराज आप इस देश के राजा महराजा हैं . आप तो पूरे बावन गढ़ के राजा महराजाओं को पत्र भेज दीजिये. जिसके भाग्य में होगा उसके साथ आपकी बेटी की शादी हो जावेगी. मृद लांघा के कहने पर राजा पूरे देश और बावन गढ़ के सभी राजाओं को चिट्ठी भेज देते हैं. गोंड़वाना के राजा जब उस पत्र को पढ़ते है, तो बहुत खुश होते हैं और कहते हैं कि ऐसा मौका फिर कहां मिलेगा. सभी राजा बड़े उत्साह के साथ चांदागढ़ जाने की तैयारी करने लगते हैं.

राजा महराजाओं के परिवार के लोग उन्हें चांदागढ़ जाने के लिये मना करते हैं. वे अपने राज पुत्रों को समझाते हैं कि बेटा चांदागढ़ में नौ लाख का फांदा, जो जायेगा चांदा उसको लगेगा फांदा, परंतु राज पुत्र अपने परिवार का कहना नहीं मानते हैं. वे बड़ी खुशी से चांदागढ़ जाने की तैयारी में जुट जाते हैं. बावन गढ़ों के राजा चांदागढ़ पहुंच जाते हैं. वे राजा आठ दिन नौ रात की यात्रा करके चांदागढ़ की सीमा पर पहुंच जाते हैं. परे चांदा गढ़ राज्य में लाल - पीले और काले रंग के तंबू तन रहे हैं. राजा सात दिशाओं से चांदागढ़ को घेर रहे हैं. उनके हाथी, घोड़ा, फौज ,फटाका चिल्लाहट मचा रहे हैं. चांदा गढ़ की जमीन में न तो गाय चारा चर सकती है और न ही पनहारिनें पनघट पर जा सकती हैं. राज्य की पूरी प्रजा यह दृश्य देखती है. चांदा गढ़ में अनगिनत मकान हैं. वहां के गोंड़ जगह - जगह हाथी घोड़ा से खेती - बारी कर रहे थे. देव गढ़, देवहार गढ़, नगर चांदा गढ़ में खबर फैल गयी कि राजा कुही मांछा की एक बेटी है . उसकी शादी के लिये बावनगढ़ के सभी राजाओं को बुलाया गया है. पूरे राज्य में राजाओं के तंबू ही तंबू नजर आ रहे थे. जिसे देखकर राजा कुही मांछा घबड़ा गये. वे अतयंत सोच में पड़ गये. की मृद लांघा के कहने पर मैंने सभी राजाओं के पास चिट्ठी भिजवा दी . जिसके कारण सभी देश के राजाओं ने चांदागढ़ में अपने तंबू गाड़ दिये हैं.

राजा सोचते हैं की मेरी तो एक ही बेटी है मंछाल रामो. मैं उसकी शादी किसके साथ करुं किसके साथ न करुं. ऐसा सोचकर राजा पछता रहे हैं उनकी बुद्वी विवेक काम नहीं करती है.

उस दिन मृद लांघा के भाई मंहगू की जबाबदारी राज सभा में कचहरी की देखभाल और चौकी दारी करना था. राजा मंहगू से बोले मंहगू लांघा कहां गया है. मंहगू बोला महराज लांघा भोजन तैयार कर रहा है. तब राजा ने पूंछा लांघा की पत्नी कहां गयी है. तो मंहगू बोला उसकी पत्नी महराज जंगल गयी है. इतना सुनते ही राजा को गुस्सा आ गया. राजा ने सटक मार कोड़े को पानी में भिंगोया और मंहगू से कहा लांघा को जल्दी बुलाओ नहीं तो इस कोड़े से तुम्हारी चमड़ी उधेड़ देंगे. मंहगू लांघा को बुलाने उसके घर जाता है. मृद लांघा राजाओं के तंबू में आ जाता है. और वहां पर राजाओं से कहता है. मेरा नाती दमाद कौन बनेगा.

तब सभी राजा अपने - अपने को कहते हैं की मैं तुम्हारा नाती दमाद बनूंगा. सभी राजा लांघा को एक - एक मोहर देते हैं. लांघा सोचता है इन मोहरों को कहां रखूं. तब वह घर आकर एक हंड़िया में उन मोहरों को रख देता है. वह पुंदगू से कहता है तुम घर की रखवाली करना कोई कुत्ता बिल्ली न घुस जाये. मैं कचहरी जा रहा हूं. इतना कहकर लांघा कचहरी की ओर चल देता है. रास्ते में लांघा की भेंट मंहगू से होती है. मंहगू लांघा से कहता है भैया राजा तुम्हारे लिये सटक मार कोड़े को पानी में भिंगोकर रखे हैं. तुम राजा के पास जल्दी जाओ. लांघा चला जाता है. मंहगू घर आ जाता है. उसे घर पर मोहरों वाली हंड़ी मिल जाती है. लांघा आधे रास्ते से लौटकर घर वापस आने लगता है. रास्ते में उसे फिर मंहगू मिल जाता है. वह हाथ में मोहरों से भरी हंड़ी रखे रहता है. वह लांघा से पूंछता है ।

लांघा ये मोहरें कहां से आई हैं. ऐसा सुनकर लांघा घबड़ा जाता है. तब लांघा कहता है मंहगू भाई इसका चार आना भाग तुम ले लो पर राजा को मत बताना. मंहगू कहता है मैं तो नहीं मानता मैं राजा को जरुर बताउंगा. तब लांघा कहता है चार आना भाग मैं रख लेता हूं बारह आना भाग तुम रख लो. इस प्रकार उन दोनों में समझौता हो जाता है. और लांघा राज महल में आ जाता है. वह राज सभा में जाता है वहां आकर वह देखता है की बहुत से राजा सिर में पगड़ी बांधकर चांदागढ़ के मंत्रीयों के साथ बैठे हैं. सभी राजा कुही मांछा से कहते हैं राजा आप की एक ही बेटी है. उसके रिश्ते के लिये देश - देश से राजा और आपके रिश्तेदार आये हैं. उसी बात की चर्चा आज सभा में की जावे. उसी समय लांघा पहुंचता है. वह सभी सभापतियों से राम जोहार करके राजा को दंड़वत प्रणाम करता है. तब राजा कुही मांछा लांघा से कहते हैं. लांघा तुम्हारे कहने पर मैंने देश-देश से राजा महराजाओं को बुला लिया है.

मृद लांघा कहता है राजा आपका नाम राजा कुही मांछा आपके खरदा का नाम वेद मांछा उस खरदा को जो राजा तीन बार उठा लेगा. उसका विवाह कैन्ना मंछाल रामो से कर दिया जावेगा. जो राजा उस खरदा को नहीं उठा पायेगा उसे कैद करके हाथ में हथकड़ी पहनाकर कारागाह में ड़ाल दिया जावेगा. इतना सुनते ही राजा कुही मांछा को कुछ संतोष हुआ.

इतने में जितने राजा स्वयंवर में आये थे वे कहते हैं चलो भाई सभी अतिथी गण देव गढ़, देवहार गढ़, नगर चांदा के राजा कुही मांछा से राम जोहार कर लें.

इतने में सभी बावन गढ़ के राजा चांदा नगर जिसमें लाख फांदे हैं जिसमें अनगिनत छप्पर ,कांच और तांबे की सड़क दक्षिण दिशा में बाग केतकी ,केवड़ा और चंपा के बगीचे लगे हैं.

ऐसे चांदागढ़ से सभी राजा चांदा गढ़ के राजा कुही मांछा से राम जोहार करके जाने लगते हैं. जो राजा जिस काबिल था. उसकी सवारी भी वैसी ही थी.

उसी समय मृद लांघा बोलता है, सुनो ये राजा महराजा देश - विदेश के मुसाफिर राजा, हमारे राजा का नाम कुही मांछा है उनके खरदा का नाम वेद मांछा है. इस खरदा को जो राजा तीन बार उठायेगा वही राजा हमारे राजा से राम जोहार कर सकता है. इसके अलावा कोई भी राजा से राम जोहार मम्मा नहीं कह सकता. जो राजा इस खरदा को नहीं उठा पायेगा उसको बिना किसी कारण बताये कैद कर लिया जावेगा. उसके सिर को सात पाटी में मुंड़ा कर दिया जावेगा. उसके नाक - कान में भिलमा और कौंड़ी छेद दी जावेगी. हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी पहना दी जावेगी. उसे कारागाह में ड़ाल दिया जावेगा.

ऐसा सुनकर देश - विदेश से आये सभी राजा घबड़ा गये. मृद लांघा ने सभी राजाओं को एक कतार में बैठा दिया और उनसे कहा की तुम लोग बारी-बारी से खरदा उठाओ. इतना सुनते ही सभी राजा घबड़ाने लगे और कहते हैं तीन बार खरदा उठाते - उठाते तो हमारे प्राण ही निकल जायेंगे. सभी राजा शांत होकर बैठ जाते हैं. किसी भी राजा की हिम्मत नहीं होती की वह खरदा को उठा सके. लांघा सैनिकों को आदेश देता है कि महल के सभी खिड़की दरवाजे बंद कर दिये जावें.

मृद लांघा राज कुही मांछा से कहता है महराज आपके राज्य की जहां तक सीमा है वहां पर बारह हाथ की लंबी चौड़ी और बारह बांस की गहरी खाई खुदवा दो. उसके नीचे भाला, बरछी, तलवार गड़वा दो. राजा ऐसा आदेश देकर गद्दी पर बैठ जाते हैं. कोई भी राजा उस खरदा को उठाने के लिये तैयार नहीं होता है. तब लांघा अपने नौकर सद्दी - मुसद्दी से कहता है चलो तुम लोग भिलमा और कौंड़ी गुथो. राज्य के सभी नाईयों से कहता ह.ै वे छुरा उस्तरा लेकर आ जावें और बावन गढ़ के सभी राजाओं के सिर का सात पाटी मुंड़न कर दें. सब के सिर पर उल्टा छुरा चला दें पर सिर पर चोटी अवश्य छोड़ दें. इसके बाद सटक मार कोड़े से प्रत्येक राजा की पीठ पर सात-सात कोड़े मारे जावैं.

राजा की आज्ञा से बावन गढ़ के सभी राजाओं का मुंड़न कराया गया. उनके नाक - कान में भिलमा और कौड़ी छेद दी गयी. हाथ में हथकड़ी लगा दी गयी. पैरों में बेड़ी पहना दी गयी. उसके बाद सभी राजाओं को हवालात में बंद करा दिया गया.

इससे नगर चांदागढ़ में हाहाकार मच गया. जो राजा आये थे उनके हाथी - घोड़ा लाव लश्कर सभी पर राजा कुही मांछा ने कब्जा कर लिया.

सब से पीछे बिरहुल गढ़ के राजा वीर महर सिंह राज सभा में पहुंचते हैं. राजा से जोहार करते हैं और राजा से कहते हैं जोहार मम्मा जोहार.

उसी समय लांघा बोलता है ये मुसाफिर राजा हमारे राजा का नाम कुही मांछा है उनके खरदा का नाम वेद मांछा, उसी वेद मांछा खरदा उठाने की शर्त है. जो राजा तीन बार खरदा को उठायेगा उसी की जोहरनी स्वीकार की जावेगी. यदि उसे न उठा पाये तो बिना कसूर के चांदा गढ़ में कैद कर लिये जाओगे.

इतना सुनते ही वीर महर सिंह कहते हैं राजा मैं खरदा उठा लूंगा. ऐसा कहकर वीर महर सिंह अपना सीना ठोंकते हैं.

अब वीर महर सिंह उस बारह सांगा के खरदा को उठाकर झुला - झुला कर मार रहे हैं. पहली बार खरदा उठाने पर खरदा वीर महर सिंह की छाती में गड़ गया. दूसरी बार खरदा उठाने से वीर महर सिंह की छाती फट गयी. अब महर सिंह पूंछता है राजा इस तीसरे खरदा को मैं कहां मारुं. तब लांघा पूरी सभा को संबोधित करते हुये कहता है. महर सिंह का जो एक खरदा बचा है उसके एवज में महर सिंह राजा के यहां लमसेना बनकर रहेगा

वह प्रति दिन बारह कांवर पानी लायेगा, रोज बारह आंगन को लीपेगा. बारह सारों के कमरों से गोबर निकालेगा, रोज बारह नगरियों के लिये भोजन तैयार करेगा. वह उन बारह नगरियों के लिये पेज - भाजी बारह वर्ष तक उन्हें खेत में ले जाकर देगा. इसके बाद कजलीवनबिद्रादौनागिरी पहाड़ में जो हंस राज भैसा रहता है उसे नागर में फांदेगा. उस नागर में एक तरफ भैसा रहेगा तो दूसरी तरफ नागर को जोतने वाला महरसिंह रहेगा. उसके बाद एक खेत ज्यादा जोतना पड़ेगा. जब वह नागर ढ़ीलकर आयेगा. तो मेन की कुल्हाड़ी से बबूल की लकड़ी को काटेगा. उसको इतना काम लमसना की अवधि पूरा करने के पूर्व करना पड़ेगा. मृद लांघा वीर महर सिंह से पूंछते हैं. तुम यह सभी काम लमसनाई के दौरान कर सकोगे. तब महर सिंह बोलते हैं हां भाई मैं यह सभी काम लमसनाई जीतने के पहले कर लूंगा.

इसके बाद वीर महर सिंह राज महल में लमसनाई जीतने के लिये रहने लगे.

बामन गांव के जो राजा स्वयंवर में आये थे उन्हें कारागार में बंद कर दिया गया.

एक दिन कैन्ना पिली बाविन मंछाल रामो बांध में स्नान करने अपनी साठ सहेलियों के साथ गई थी. गांव के लोग उसी बांध के दूसरे तट में नहा रहे थे. ग्रामवासी मंछाल रामो को बांध में स्नान करते देख आपस में चर्चा करते हैं कि वह देखो राजा कुही मांछा की अकेली संतान है. इसके कारण बावन गढ़ के राजाओं को हवालात में बंद कर दिया गया है. इसका पाप इस कन्या को भोगना ही पड़ेगा. तब मंछाल रामो अपनी सहेलियों से पूंछती है. ये गांव वाले किस की बात कर रहे हैं. तब उसकी सहेलियां कहती हैं रानी जी ये लोग आपके बारे में ही बात कर रहे हैं.

इतना सुनते ही मंछाल रामो कोप भवन में चली जाती है वह कोप भवन में जाकर कटार से आत्म हत्या करना चाहती है. उसी समय सोने के पिंजड़े में बंद तोता राय मेघिन मंछाल रामो से बोलता है दीदी सीता राम - सीता राम मुझे भूख लगी है. दूध रोटी दो. इसके बाद तोता बोलता है दीदी मुझे मालुम है, आपको अपने पति का गम है. तब मंछाल रामो कहती है क्यों रे मिट्ठू मैं तुमको जिंदगी भर से घी का लौंदा और चना की दाल खिला रही हूं. फिर भी तुम अपना मुंह सम्हाल कर बात नहीं कर सकते. तब तोता बोलता है दीदी तुम मुझे खाना दो तब मैं आपको एक बात बताउंगा. तब मंछाल रामो कहती है तुम पहले अपनी बात बताओ तब मैं तुमको खाना दूंगी.

तब तोता रायमेघिन बोलता है. दीदी आपके पिता राजा कुही मांछा ने बावन गढ़ से राजाओं को बुलाकर उन्हें स्वयंवर का लालच दिया और सभी राजाओं को बुलाकर उन्हें बेकसूर हवालात में ड़ाल दिया. एक राजा वीर महर सिंह ने महराज का खरदा उठा लिया है. वह महल में लमसनाई जीत रहा है. यदि वह राजा आपको पसंद नहीं है तो एक राजा और है वह तुम्हारे मामा फुआ का लड़का है. तब रानी उस तोता से पूंछती हैं कि वह लड़का कहां रहता है और

उसका क्या नाम है. तब तोता बोलता है दीदी तुम्हारी मां और उसकी मां दोनों पक्की सहेली थीं एक दिन दोनों गई रहीं चिरपोटी बाजार , तुम्हारी मां और उसकी मां दोनों रिश्ते में नंद भौजाई लगती थीं. उसकी मां ने हंसा नाम का एक कबूतर लिया और तुम्हारी मां ने मुझे खरीदा जब दोनों बाजार से लौट रहीं थी तो रास्ते में थकने के कारण एक महुआ की छांव में आराम करने लगीं. तुम अपनी मां के पेट में थीं . वह भी गर्भवती थी. तब तुम्हारी मां ने कहा भौजी तुम्हारी बेटी और मेरा बेटा होगा तो तुम अपनी बेटी मुझे दे देना और कहीं मेरी बेटी होगी तो तो मैं तुम्हें दे दूंगी. ऐसा कहकर दोनों रानीयों ने पेट में पल रहे बच्चों का रिश्ता पक्का कर लिया.

उसी समय महुआ के पेड़ से दो महुआ गिरे दोनों ने एक - एक महुआ उठाया और अपने ब्लाउज में महुआ का रस टपकाया उसे मैं देखता रहा, तो दीदी वह रानी रहती है खैरागढ़ बैरागढ़ में और उसके बेटे का नाम है बायोड़ंडी क्षत्रीय और वही उठायेगा चांदागढ़ के खरदा को.तब मंछाल रामो बोलती है क्यों रे सुआ इसका पता कौन लगायेगा तो सुआ बोलता है दीदी आपको खबरिया भेजना पड़ेगा. वही पता लगाकर आयेगा.

तब मंछाल रामो कहती है. हे सुआ मैं बिना जाने पहचाने किससे कहूं. तुम ही मेरी सहायता कर सकते हो. तो सुआ कहता है दीदी मैं वहां नहीं जा सकता, मैं अगर वहां जाऊंगा तो मैं वहां से लौटकर वापस नहीं आ सकता. क्योंकी रास्ते में तीन जगह काल चक्र्र है . घर से निकलूंगा तो खुसरा पक्षी है उससे बच गया तो चचान बाज है. चचान बाज से बच गया तो भूमिया बैगा के चौंप के फांदा में फंस जाऊंगा. तो दीदी ऐसे - ऐसे ग्रहण हैं. मेरे पीछे इसलिये मैं वहां नहीं जा सकता.

रानी तोता को खाना नहीं देती वह उससे कहती है रायमेघिन तुमको ही चिट्ठी लेकर राजा बायोड़ंड़ी के पास जाना होगा. अंत में किसी प्रकार तोता वहां जाने के लिये तैयार हो जाता है. कैन्ना मंछाल रामो राजा बायोड़डी को पत्र लिखती है. वह पत्र में लिखती है - यहां पर बावन गढ़ के राजा महराजाओं को हमारे पिताजी ने हवालात में ड़ाल दिया है. तुम अगर मेरे मामा फुआ के बेटे हो तो मुझे चांदागढ़ आकर ले जाओ.और यदि आप नहीं आ सकते हो तो मेरे नाम की तीन-तीन चूड़ियां पहन लेना और रास्ते में बैठ कर कोदों दरना.

इसके बाद कैन्ना मंछाल रामो ने राय मेघिन तोता को घी का लौंदा और चना की दाल खाने को दी. चिट्ठी को तार में फंसाया और उस चिट्ठी को तोता राय मेघिन के गले में बांध दिया. तब सुआ कैन्ना मंछाल रामो से राम - राम कहकर बिदा लेता है. महल से उड़कर सुआ चांदा गढ़ के तीन चक्कर काटता है.

सुआ दिन भर उड़ता रहा रास्ते में दिन डूब जाता है तो सुआ एक ऊमर के पेड़ के ऊपर बैठ जाता है. उस पेड़ के एक कोटर में खुसराईन पक्षी अपने बच्चों को जन्म दे रही थी. सुआ उस कोटर के ऊपर जाकर बैठ गया. सुआ को देख - देख खुसराईन तड़फड़ा रही थी. सुआ मजे से सो रहा था. दूसरे दिन सुबह - सुबह खुसरा पक्षी पेड़ पर आता है. तो सुआ उस खुसरा पक्षी को देखकर घबड़ा जाता है. सुआ वहां से उड़ जाता है . रास्ते में एक जगह उसे चचान पक्षीयों का झुंड़ दिखाई देता है.

किसी प्रकार सुआ उनसे बच कर उड़ते चला जा रहा था. उड़ते - उड़ते जब वह थक जाता

है तो . तो वह एक झाड़ी के ऊपर बैठ जाता है.उस झाड़ी के नीचे सियार - सियारनी रहते थे. उसी समय सियारनी सियार से कहती है - चांदागढ़ के राजा कुहीमांछा की एक बेटी है. उसके विवाह के लिये राजा ने बावन गढ़ों से राजा महराजा बुलवाये और उन्हें हवालात में बंद कर दिया. इस प्रकार सियार - सियारन राजा कुही मांछा और रानी मंछाल रामो के साथ हुयी घटना की चर्चा करते हैं.

उनकी बात को सुनकर रायमेघिन सुआ वहां से उड़ जाता है. एक जगह रायमेघिन सुआ को ढ़ेर सारे तोतों का झुंड़ दिखाई देता है. रायमेघिन तोता उस झुंड़ में शामिल होने को जाता है. तो सभी तोते उसे देखकर उड़ जाते हैं. रायमेघिन भी उनके पीछे - पीछे उड़ने लगता है. उसी समय एक गांव में बैगा चौंप फांदा लगाकर बैठा था. सभी तोते उसके फांदे में फंस जाते हैं. कुछ देर बाद रायमेघिन वहां पर पहुंचती है. तब सभी तोते रायमेघिन से कहते हैं.।

रायमेघिन तुम हमारी ही जाति की हो. हम लोग धोखे से यहां फंस गये हैं. हम लोगों को यहां से निकालने में मदद करो. तब रायमेघिन कहती है जब फांदे वाला बैगा आयेगा तब सभी तोते मरने का बहाना करना . सुबह जब वह बैगा आता है तो सभी तोते मरने का बहाना कर के पड़े रहते हैं.।

बैगा एक - एक तोते को जाल से निकालकर जमीन में फैंक रहा है. तोते नीचे गिरते थे तो उन्हें दर्द होता था. परंतु वे फिर भी अपने पंख नही फड़फड़ा रहे थे. बैगा ने जैसे ही रायमेघिन को छुआ वैसे ही सभी तोते करन - करन कह कर उड़ गये. रायमेघिन सुआ वहां से उड़ी और सीधे बैरागढ़ पहुंच गयी.

बैरागढ़ में राजा बायोड़ड़ी के दोस्त उस सुआ को पकड़ने को दौड़ते हैं पर वे उसे नहीं पकड़ पाते हैं. राजा के दोस्त और सुआ दोनों परेशान हो जाते हैं. तब सुआ राजा के दोस्तों से कहता है. ये राजा के दोस्तो तुम लोग मुझे पकड़ लोगे तो मार ड़ालोगे. यदि तुम लोग मुझे न मारने का वायदा करो तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा. तब राजा बायोड़ड़ी क्षत्रीय कहते हैं आ जा सुआ हम लोग तुझे नहीं मारेंगे. तब सुआ उड़ कर राजा बायोडंड़ी के कंधे में बैठ जाता है. राजा बायोड़ंड़ीं देखते है की सुआ के गले में एक पत्र बंधा है. राजा ने उस सुआ के गले से पत्र निकाला और उसे पढ़ने लगे. पत्र में लिखा था.

श्री हरी शुभ स्थान नगर चांदागढ़ जहां के राजा कुही मांछा जिसकी लड़की मंछाल रामो पत्र भेजने वाले का नाम पिली बाविन मंछाल रामो पाने वाले का नाम राजा बायोड़ड़ी बैरागड़िहा मारा क्षत्रीय मेरे मामा फुआ का बेटा हो तो आकर मुझे ले जाये. नहीं आ सकता है तो मेरे नाम की तीन चूड़ियां अपने हाथों में पहन ले.

राजा बायोड़ड़ी बैरागड़िहा ने जब पत्र पढ़ा, तो वे अपने मित्रों से कहते हैं मित्रो जल्दी घर चलो. वे अपने साठों मित्रों के साथ घर आते हैं. रास्ते में एक बुढ़िया की झोपड़ी पड़ती है. उस बुढ़िया ने मुर्गे पाल रखे थे. राजा उसके मुर्गो को पत्थर मारता है । जिससे एक मुर्गा मर जाता है. तब बुढ़िया रोते हुये कहती है की राजा का हाथी, पूजा का घोड़ा और रांड़ का मुर्गा, इन तीनों की कीमत एक बराबर होती है. राजा उसके मुर्गे को मारकर आगे बढ़ जाता है.

एक लड़का पीछे - पीछे आता है वह बुढ़िया से पूंछता है माता राम तुम क्यों रो रही हो. तब बुढ़िया कहती है बेटा किसी ने मेरे मुर्गा को मार ड़ाला है. तब वह लड़का कहता है दाई

राजा बायोड़ड़ी अभी - अभी अपने दोस्तों के साथ यहां से गये हैं. कहीं राजा ने तुम्हारा मुर्गा न मारा हो. तब वह बुढ़िया कहती है राजा को मेरा मुर्गा मारने से कौन सा राज पाट मिल जायेगा. तुम्हारे राजा की सात पीढ़ियों के सिर चांदागढ़ में कटे अंगे हैं. वह वहां जाकर अपने पुरखों की पगड़ी निकाल कर लाता तो जानती. उस लड़के ने यह बात राजा को बतलाई तो राजा तुरंत उस बुढ़िया के पास आया.

उसने आकर बुढ़िया से कहा दाई अभी तुम इस लड़के से क्या कह रही थी. बुढ़िया कहती है राजा बेटा मेरे मुर्गे को किसी ने मार दिया है. उसी करण मैं पछता रही थी. तो इस काने लड़के ने कहा दाई राजा अभी इसी रास्ते से गये हैं. तब मैंने कहा राजा मेरे मुर्गा को क्यों मारेंगे. उनके पुरखों के सिर चांदागढ़ में टंगे हैं. वहां जाकर राजा अपने पुरखों की पगड़ी लाता तो जानती. मैंने उस लड़के से यही कहा है. तब राजा ने उस ड़ोकरी को उस मुर्गा का हर्जाना पांच मोहर दी और राजा अपने राज महल में पहुंच गया.

राजा महल में जाकर राज माता से कहते हैं. मां यह सुआ चांदा गढ़ से आया है. तुम्हारी बहू कैन्ना मंछाल रामो ने पत्र लिखा है. कि तुम आकर मुझे ले जाओ. यदि नहीं आ सकते तो मेरे नाम की तीन चूड़ी पहन कर टिपटा वाली गली में बैठकर कोदों दरना. राज माता उसे जाने के लिये मना करती है. तब राजा सुआ को खाने के लिये घी का लौंदा और चना की दाल देता है. तब सुआ कहता है जीजा जी आप चांदागढ़ कब पधार रहे हैं. तो राजा ने कहा सुआ जिस दिन तुम्हारे राज्य की सीमा पर लाल, पीले, काले तंबू दिखै तो समझना राजा आ गये हैं. ऐसा संदेश लेकर सुआ चांदागढ़ वापस आ जाता है.

राजा बायोड़डी मारा क्षत्रीय अपनी मां से कहते हैं मॉ मुझे चांदागढ़ जाना है मुझे तुम पांच मोहर दो. तब मॉ कहती है बेटा तुम वहां कहां जाओगे बैरी बासा की जगह है. तब राजा अपनी मॉ से कहते हैं - मॉ तुम आंगन में एक तुलसी का पेड़ लगा लो और उसमें रोज पानी देते रहना जब तक तुलसी का पेड़ हरा रहेगा तब तक समझना मेरा बेटा जिंदा है और जिस दिन वह पेड़ मुर्झा जावे तो समझना मेरा बेटा युद्ध में शहीद हो गया है. राजमाता राजा को हर प्रकार से समझाती हैं.

परंतु राजा नहीं मानते वे अपनी माता से पांच मोहरें मांग कर बैला आंखिन चुनिया लेकर कलार पारा जाते है वहां से बैला आंखिन चुनिया में शराब लेकर महल वापस आ जाते है. वहां आकर वह अपनी मां से बोलते हैं . मॉ मैं तो चांदागढ़ जा रहा हूं मैं सोच रहा हूं की मैं अपने संगी साथियों के साथ उठ बैठ लूं. ऐसा कहकर राजा बांध में स्नान करने चले जाते हैं. वहां से वापस आकर राजा अपने देवालय में जाते हैं. वहां देवताओं को होम धूप लगाते हैं. शराब की धार से तर्पण करते हैं. राजा अपने देवताओं से कहते हैं देवता गण मैं चांदागढ़ जा रहा हूं . आप लोग मेरा साथ दोगे की नहीं. तब देवता कहते हैं राजा जी जब से आपने हमें अपने साथ रखा है तबसे हम लोग आपकी रक्षा करते आ रहे हैं जिस दिन आप हम लोगों को अपने शरीर से बाहर निकाल देंगे तब की बात हम लोग नहीं जानते. पूजा करने के बाद राजा आंगन में आकर अपने साठ साथियों के साथ मिलकर शराब पीने लगते हैं.

नौ नारी बत्तीस कुआंरी लड़कियां पानी लेकर खड़ी हैं वे सभी से कह रहीं हैं भोजन तैयार है भोजन ग्रहण करें. राजा और उनके साथी भोजन करने बैठ जाते हैं. पत्तलें परोसी जाती हैं

पत्तलों में छत्तीस प्रकार के भोजन तथा चचेड़ा और कुंदरु की सब्जी स्वाद के लिये बामी मछली और सांभर का मांस परोसा गया. राजा बायोड़ड़ी भोजन करने बैठते हैं. राजा पांच कौर भोजन देवताओं को चढ़ाते हैं. इसके बाद सभी लोग भोजन करने लगते हैं.

भोजन करने के बाद बिड़ी , तम्बाखू , हुक्का खा पीकर, राजा खूंटी में टंगी सोने की कलिहारी लेकर घुड़साल में जाते हैं । राजा का देवता समान घोड़ा बेंदुला बंधा था. राजा बायोड़ड़ी घोड़े की पीठ पर हाथ फेरते हैं. तो घोड़ा बोलता है महराज आपके ऊपर कौन सी विपत्ति आ गयी है. तब राजा कहते है बैंदुला मुझे तुम पर सवारी करना है. मुझे चांदागढ़ जाना है. तुम मेरा साथ दोगे की नहीं.

तब राय बाघिन का बेटा बैंदुला घोड़ा बोला महराज जी जब मेरी जवानी रही तब तो आपने चांदागढ़ पर चढ़ाई नहीं की अब तो मैं बूढ़ा हो रहा हूं . तो आप चांदागढ़ में चढ़ाई करने को कह रहे हैं. फिर भी मैं तैयार हूं . जब तक आप मेरी पीठ पर सवार रहेंगे तब तक आपको कुछ नहीं होगा जिस दिन आप मेरी पीठ पर नहीं रहेंगे उस समय की बात मैं नहीं जानता. राजा घोड़े को कलिहारी खिलाते हैं . फिर उसे सोलह वरन के आंगन में लाकर उसके ऊपर पीले चांवल छिड़कते हैं. इसके बाद राजा सोलह सौ जिया जोगन मियां मोहन आदि सभी देवी देवताओं को घोड़ा के माथे पर सवार करते हैं. अब राजा राजसी वेश भूषा धारण कर रहे हैं. राजा लोहे के साज - बाज और चर्तुभुज पारस तथा सिर पर मुकुट लगाकर पैरौं में मखमल के जूते धारण कर हाथ में बैरी शाल खरदा को रखते है. राजा चांदागढ़ में चढ़ाई करने के लिये तैयार हो जाते हैं.

राजा बायोड़ड़ी बैंदुला घोड़ा पर सवार होकर जाते हैं. जब वे राजा लोहगुंड़ी के राज्य में पहुंचते हैं. तब वे देखते हैं कि राजा लोहगुंड़ी के राज्य लोहनगढ़ में लोहा ही लोहा की बाड़ी लगी थी. लोहनगढ़ के राजा लोहगुंड़ी को जैसे ही पता चला की राजा बायोड़ड़ी लोहन गढ़ की ओर आ रहे हैं. तब वह अपनी सेना को आदेश देता है कि राजा बायोड़ंड़ी को चारों तरफ से घेर लिया जावे. लोहनगढ़ की सेना ने राजा को चारों तरफ से घेर लिया. युद्‌ध के बाजे बजने लगे.

घोड़ा बैंदुला राजा से कहता है राजा आप सर्तकता से मेरी पीठ पर बैठे रहें. राजा बायोड़ड़ी के सामने राजा लोहगुंड़ी की पूरी फौज खड़ी थी. बैंदुला घोड़ा सरपट दौड़ कर फौज के बीचों - बीच पहुंच गया. युद्‌ध शुरु हो गया , तेगा और तलवारें चलने लगी . राजा बायोड़ड़ी की सेना दुश्मन को मौत की नींद सुला रही थी. चारों दिशाओं में कटे हुये सिर दिखाई दे रहे थे.

राजा बायोड़ड़ी ने राजा लोहगुंड़ी की पूरी फौज को मार गिराया. राजा ने लोहे की सात परत बाड़ी को तोड़ दिया और नगर चांदा गढ़ के लिये रवाना हो गये. रास्ते में राजा को कांसनगढ़ राज्य मिलता है. कांसनगढ़ जहां कांसा और पीतल के तवा जड़े हैं. वे वहां जाकर कांसनगढ़ के राजा कौंस बंधी को ललकारते हैं.

कांसनगढ़ के राजा को युद्‌ध में परास्त कर बैरागढ़ की ओर जाने लगे. आठ दिन नौ रात के बाद बैरागढ़ की सीमा दिखाई दी. राजा ने बैरागढ़ की सीमा पर पहुंचकर अपना ड़ेरा ड़ाल दिया.

राजा ने सीमा के पास लाल, पीले, काले तंबू गाड़ दिये. राजा अपने तंबू में जाकर आराम करने लगे. पिली बाविन मंछाल रामो ने देखा की सीमा पर लाल, पीले, काले तंबू लगे हैं. तो

वह अपने सुआ से पूंछती है. ये सुआ यह लाल, काला, पीला तंबू किस राजा ने तान कर रखा है. तो सुआ बोला दीदी यह तंबू अपने देवबली, धनबली, राजबली, राजा बायोड़ंड़ीं मारा क्षत्रीय का है.

रानी अपनी सहेलियों के साथ बांध में स्नान करने जाती हैं. वह बांध के पास राजा का तंबू देखती है तो वह राजा के तंबू में चली जाती है. रानी अंदर जाकर देखती हैं की राजा तंबू में अंदर आराम कर रहे हैं. मंछाल रामो को तंबू के भीतर जाते हुये वीर महर सिंह देख लेता है. वह उसे देखते ही भन्ना जाता है. वह कहता है मैंने रानी के लिये बारह वर्ष की लमसनाई जीती है और यह कहां का राजा आ गया. जिसने मेरी लमसनिन पिली बाविन मंछाल रामो को अपने तंबू के अंदर रोक रखा है. वह राजा बायोड़ड़ी को ललकार कर कहता है राजा बायोड़ड़ी तुझमें अगर ताकत है तो मेरे साथ युद्ध कर या अपने राज्य को वापस चला जा. राजा बायोड़ड़ी तंबू से बाहर निकलते हैं और कहते हैं वीर महर सिंह मैं तो अभी स्नान करने जा रहा हूं.

ऐसा कहकर राजा बांध मेरं स्नान करने चले जाते हैं. वे कारी पटपर के ऊपर बैठकर पानी के अंदर चले जाते हैं. वे पानी के अंदर कारी पटपर पर तीन घंटे तक सांस रोककर बैठे रहते हैं. वे तीन घंटे बाद ही पानी के बाहर निकलते हैं. बाहर आकर राजा बायोड़ड़ीं वीर महर सिंह से कहते हैं. महर सिंह तुम इस कारी पटपर पर बैठकर तीन घंटों तक पानी के अंदर रहो तो जानें. राजा महरसिंह ने ऐसा करने से मना कर दिया.

तब राजा ने कहा महरसिंह अब तुम युद्ध के लिये तैयार हो जाओ. इतना सुनते ही वीर महरसिंह ताल ठोंककर राजा बायोड़ंड़ी से युद्ध के लिये तैयार हो जाता है. दोनों राजाओं का मल्ल युद्ध होता है. दोनों बहुत देर तक लड़ते हैं. अंत में राजा बायोड़ड़ी ने राजा महर सिंह को उसी कारी पटपर पर उठा कर पटक दिया. और उसका एक पैर अपने पैर से दबाया और दूसरे को हाथ से पकड़ कर फाड़कर महरसिंह के दो टुकड़े कर दिये.

राजा ने महरसिंह के शरीर का एक भाग पनघट में और दूसरा भाग राजा कुही मांछा के दरबार में उठाकर फैंक दिया. दरबार में बैठे राजा और दरबारी वीर महरसिंह के टुकड़े हुये शरीर को देखकर चौंक गये. राजा कुहीमांछा कहते हैं यह तो वीर महर सिंह का शरीर हैं. वह ललकार कर कहता है कौन ऐसा जमींदार या राजा हैं. जिसने मेरी बेटी के लमसेना को फाड़कर यहां फैंका है. मेरे रहते मेरे दमाद की हत्या हो गयी.

तभी किसी दरबारी ने कहा महराज बांध पर किसी राज्य के राजकुमार ने अपने तंबू तान कर रखे हैं. उसी ने वीर महरसिंह की हत्या की है. इतना सुनते ही राजा कुहीमांछा ने युद्ध के आदेश दे दिये. पूरे राज्य में मार - मार की आवाज से बाजा बजने लगे. मिट्टी के नगाड़ों से डुम - डुम तथा कांसा पीतल के नगाड़ों से टन - टन की आवाज आ रही थी. उनकी आवाज नौ कोस तक सुनाई देती थी.

राजा बायोड़ड़ीं भी युद्ध के लिये तैयार हो जाते हैं. वे अपने शरीर में साज - बाज जिरह बख्तर, गोले, बम, तलवार, भाला, बरछी लगाकर तैयार हो जाते हैं. युद्ध के मैदान में बंदूक और बम की ठांय - ठांय तथा तेगा से तेगा टकराने की खट - खट और तलवारों से छपक - छपक की आवाज आ रही थी. जगह - जगह नरमुंड़ कटे पड़े हैं. चारों ओर खून की नदियां बहने लगी. तलवारों से घोड़े कट कट कर और हाथी घायल होकर जमीन पर तड़फ रहे हैं. बैदुला घोड़ा

खून से सराबोर हो गया.

इस चार घड़ी के घमासान युद्ध में हाहाकार मच गया. जिसे देखकर चांदागढ़ के राजा का दिल घबड़ा गया. युद्ध के मैंदान में मांस के लोथड़े ही लोथड़े नजर आ रहे थे. हाथी , घोड़े खून की नदी में बह रहे थे. राजा कुही मांछा की अनगिनत फौज का एक चौथाई भाग युद्ध में शहीद हो गया.

राजा बायोड़डी की युद्ध सामग्री देखकर राजा अफसोस करते हैं.की मैंने बिना सोचे समझे युद्ध का बाजा बजवा दिया था. तब राजा कुही मांछा के सभापति राजा को सलाह देते हैं कि आप उस राजा से क्षमा मांग लैं तब राजा कुही मांछा गले में अंगोछी ड़ालकर राजा बायोड़डीं की शरण में जाते हैं. वे राजा बायोड़डी के पास जाकर कहते हैं राजन आप किस राज्य के राजा हैं. मुझे पता नहीं था और मैंने अनजाने में युद्ध के बाजे बजवा दिये.

तब राजा बायोड़डी बोले मैं इजई का बेटा बिजई , बिजई का बेटा ब्रम्हा, ब्रम्हा का बेटा श्री देव और श्री देव का बेटा मैं बायोडंड़ीं मारा क्षत्रीय हूं. इतना सुनते ही राजा कुही मांछा कहते हैं. राजन आप तो मेरी बहन के बेटे हो ऐसा कहकर राजा कुही मांछा ने राजा बायोड़डी के घोड़े की लगाम पकड़ ली और उन्हें आदर सहित घोड़े से उतारने लगे. उसके बाद राजा बायोड़डी को आदर सहित राज महल में लाते हैं. वे राजा बायोड़डीं से तीन बार खरदा उठाने का आग्रह करते हैं.

राजा बायोड़डी अपनी छाती को ठोंककर खरदा को दोनों हाथों से उठा लेते हैं. राजा ने खरदा को सीने से लगाकर पांच हाथ दायें और पांच हाथ बायें हवा में लहरा दिया. राजा के देवताओं ने उसके खरदा को संभाल लिया. राजा ने दो बार खरदा उठाकर मारा तभी लांघा बोलता है. महराज आप राजा कुही मांछा के भानजे हो एक खरदा पुन्न में छोड दो. तब राजा बायोड़डीं ने उस खरदा को जमीन में रख दिया. सभा में राजा बायोड़डी मारा क्षत्रीय की जय जयकार होने लगी. तब राजा बायोड़डीं ने राजा कुही मांछा से आग्रह किया की वे सभी बंदी राजाओं को छोड देवैं. राजा ने बावन गढ़ के सभी राजाओं को छोड़ दिया.

राजा बायोड़डी मारा क्षत्रीय ने राजा कुही मांछा का खरदा उठा लिया. यह समाचार जब कैन्ना मंछाल रामो ने सुना तो वह खुशी से पागल हो गयी. सभी राजा बायोडंड़ीं बैरागड़िहा की जय जयकार करने लगते हैं.

अब राजा बायोडंड़ी राजभवन से अपने तंबू में आते हैं. वहां जाकर वे अपने देवी देवताओं , सिंगी चित्तावर , ठेलामार ठुलुआ, हुलकमार कटार , तुल्ही बख्तर, नौ सौ जोगनी, मियां मोहन आदि सभी देवताओं को एक तूमा में ड़ालकर पेड़ के ऊपर टांग देते हैं और उसी पेड के नीचे देवताओं के समान बैंदुला घोड़ा को बांध देते हैं.

वहां राजमहल में राजा कुही मांछा अपनी बेटी मंछाल रामो की शादी की तैयारी करने लगते हैं. हरदीगढ़ से हल्दी, तेलनगढ़ से तेल, पूर्व दिशा से मंड़प और उत्तर दिशा से मंगरोहन की लकड़ी कटवाकर बुलाई जाती है. वर - वधु की गांठ सुवासा - सुवासिन और दोसी बांधते हैं. चौदह वरन के आंगन में मंड़प गड़ा है. बावनगढ़ के राजा महराजा बरात में शामिल होते हैं. सात सुवासिन और नौ दोसी राजा - रानी की भांवर करा रही हैं. लांघा कुही मांछा से कहते हैं. राजा जी आपने जो एक खरदा पुन्न में छोड़ा था. उस खरदा का संकल्प कर दैं. राजा कुही

मांछा उस खरदा को उठाकर जैंसे ही घुमाते हैं. उसी समय खरदा राजा बायोड़्ड़ी मारा क्षत्रीय को लगता है. राजा बायोड़्ड़ी लद्द से मंड़प के नीचे गिर जाते हैं.

पूरे राज्य में हाहाकार मच जाता है. कैन्ना मंछाल रामो अपनी किस्मत को कोसती है. की यह कैसा अपशगुन हो गया है. बावनगढ़ के राजा जो बराती बने थे. वे शोकाकुल हो जाते हैं. वे सभी कहते हैं की हम लोग राजा बायोड़्ड़ी के कारण ही जेल से छूटे हैं. इनके हमारे ऊपर बहुत अहसान हैं. इनका अंतिम संस्कार हम सभी राजा मिलकर करेंगे. फिर कोई राजा शमशान घाट में चिता बनाने चला जाता है तो कोई राजा के लिये सरग नसैनी बना रहा है.

राजा बायोड़्ड़ीं के बैरागढ़ राज्य में अपशगुन हो रहे थे. तुलसी का पेड़ मुरझा गया. राज माता की कमर टूट गयी. वे अंधी हो गयीं महल बहरे हो गये. राज माता धौलमती रो-रो कर महल में विलाप कर रहीं हैं.

यहां नगर चांदागढ़ में राजा बायोड़्ड़ीं क्षत्रीय की मृत देह को शमशान घाट ले जा रहे हैं. चंदन की लकड़ी को काटकर चिता सजाई जा रही है. फिर राजा बायोड़्ड़ीं को उस चिता में लिटाया गयाा. कैन्ना मंछाल रामो पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा है. वह कहती हैं राजा बैरागड़िहा मारा क्षत्रीय ने मेरे कारण ही प्राण त्यागे हैं. मैं भी उनकी चिता में बैंठ कर सती हो जाऊंगी. ऐसा कहकर रानी मंछाल रामो हल्दी लगे कपड़ों में ही दुल्हन का श्रृंगार कर शमशान घाट में पहुंच गई. राजा को चिता में लिटा दिया गया. उसका अग्नि संस्कार कर दिया गया राजा का घोड़ा बैंदुला एक पेड़ पर आगे पीछे बंधा था. वहीं पर तूमा में राजा के सभी देवी - देवता लटके थे. राजा बायोडंड़ी का मृत शरीर जल रहा है.

कैन्ना मंछाल रामो तंबू को देखती है और सोचती है जब राजा ही नहीं हैं. तो यह तंबू किस काम का है. इसे भी चिता के साथ जला दिया जावे. तब कैन्ना ने पेड़ पर टंगे तूमा को निकालकर उसका ढ़क्कन खोला तूमा का ढ़क्कन खुलते ही सभी देवता भनभनाकर निकलने लगे. रानी खाली तूमा को चिता में ड़ाल देती है.

तूमा से निकले देवता कौवा और गिद्व बनकर अपने पंख फड़फड़ाकर चिता की आग बुझाने लगे. कोई देवता राजा का जिव लेने चला गया तो कोई देवता अमृत लेने चला गया. जिव को लाने वाले देता जीव को लेकर आ गये और अमृत को लाने वाले देवता अमृत लेकर आ गये. रानी चिता को बुझाने वाले कौवा और गिद्वों को हकाल रही थी. ऐसा करते-करते वह सती होना भूल गई.

कुछ देवता राजा का पिंड़ बना रहे थे. चिता की आग बुझ गयी . जिव लाने वाले देवता जिव को लेकर आ गये वे पिंड़ में जिव को सींच रहे थे. अमृत लाने वाले देता अमृत को वेद के ड़ंड़ा से पिंड़ को ठोंकते हैं. उसके पिंड़ को ढ़ोंकते ही राजा बायोड़्ड़ी जय बड़ा देव कहकर उठ जाते हैं.

कैन्ना मंछाल रामो यह देखकर आश्‍र्चय में पड़ जाती है. वह मन ही मन राजा के देवी देवताओं को धन्यवाद देती हैं.तब रात्री में कैन्ना मंछाल रामो राजा से कहती है राजा जी अब आप बैरागढ़ चलिये. तब राजा बावन गढ़ के राजाओं को देखकर कहते हैं. मुझे यहां कौन लाया है . तब बावनगढ़ के राजा कहते हैं - राजन आपकी मृत्यू हो गयी थी. यहां अपका दाह संस्कार करने के लिये लाये थे. आपके देवताओं ने आपको जीवन दान दिया है.तब राजा पूछते हैं . मुझे मारा

किसने था. राजन आपको राजा कुही मांछा ने मारा था. राजा इतना सुनते ही गुस्से से तमतमा गये. उन्होंने बावन गढ़ के राजाओं को आदेश दिया कि वहां के राजा ने मुझे धोखा से मारा है. इसलिये चांदागढ़ पर चढ़ाई कर दो .

राजा कैन्ना से कहते हैं. कैन्ना तुम तंबू में आराम करो मैं दरबार मैं मामा कुही मांछा से राम जोहार करके आता हूं . तब राजा सभी देवताओं का स्मरण करते हैं. अपने साज - बाज धारण करके राजा कुही मांछा से युद्ध करने के लिये प्रस्थान कर जाते हैं. वे राजा कुही मांछा के पास जाकर बोलते हैं. राजा कुही मांछा मैं तुम से अपनी सात पीढ़ी का बदला लेकर रहूंगा. इसके बाद राजा बायोड़ड़ी अपना खरदा उठा - उठा कर नरसंहार करने लगते हैं. एक पल के लिये जब सिरोही चली तो खून की धार बहने लगी. बैंदुला घोड़ा दुश्मनों को दुलत्ती मारता और दांतों से काट रहा था. नगर चांदागढ़ में हाहाकार मच गया. राजा बायोड़ड़ीं ने मार काट मचा कर अपनी सात पीढ़ी का बदला चुका लिया.

इसके बाद राजा बायोड़ड़ीं अपने घोड़े पर सवार होकर राजा कुही मांछा से मिलने राजमहल में आते हैं. राजा कुहीमांछा उन्हें देखते ही अपने गले में अंगोछा ड़ालकर मुंह में तिरिन चबाकर राजा बायोड़ड़ी क्षत्रीय के चरणों में गिर जाते हैं. राजा कुही मांछा कहते हैं.भांजा दमाद मैं बन गया गाय और आप बन गये बाघ, आपने मुझसे अपनी सात पीढ़ी का बदला ले लिया. अब आप मेरे सातों कसूर माफ कर दैं. राजा कुही मांछा अपने दमाद राजा बायोड़ंड़ी को आदर सहित बैठने के लिये व्यास गद्दी देते हैं.राजा को दहेज में चांदागढ़ का आधा राज्य देते हैं.इसके बाद राजा बायोड़ंड़ी अपनी रानी कैन्ना मंछाल रामो को लेकर आठ दिन नौ रात में बैरागढ़ पहुंचते हैं.उनके आते ही पूरे राज्य में खुशी फैल जाती है. नौ नारी बत्तीस कुंवारी सोलह सौ सड़वा ,सत्रह सौ हैवाती बारी-बारी से राजा की आरती उतारते हैं. नगर की नारियां मंगल गान गाती हैं. राजा सबसे भेंट - भलाई करते है।.

राज्य की प्रजा राजा को आदर सहित राज महल में ले जा रही है. राजा राज महल में पहुंचते हैं. राज माता धौलमती राजा की आरती उतारती हैं. बैरागढ़ और खैरागढ़ दोनों राज्यों में राजा निमंत्रण भिजवाते हैं. बैरागढ़ और खैरागढ़ की प्रजा आकर राजा को आर्शीवाद देती है. राजा की ओर से बावनगढ़ के राजकुमारों को एक एक धोती और एक - एक कमीज प्रदान की गयी तथा सभी राजाओं के बाल वनवाये गये. बावन गढ़ के सभी राजाओं को उनका राज्य वापस दिलवाया गया. सभी राजा अपने-अपने राज्यों को प्रस्थान कर गये. राजा बायोड़ंड़ी ने बैरागढ़ और खैरागढ़ में अचल राज्य किया.

जैसे राजा की बनी वैसे सब की बने।

0ध्0

राजा हीराखान सिंह क्षत्रीय

इजई के बेटा बिजई , बिजई क्रा बेटा ठाकुर देव, ठाकुर देव का बेटा श्री देव, श्री देव का बेटा पालो गढ़ लिंगो,पालोगढ लिंगो का बेटा कारीकामा, कारीकामा का बेटा हीरा सिंह कारीकामा.

एक दिन राजा कारी कामा नेताम राजा तपेसिरिया के पास रैया सिंघोला उनके राज्य में गये. वहां पर राजा तपेसिरिया और राजा कारीकामा में किसी बात पर वाद - विवाद हो गया था.

एक दिन राजा कारी कामा ने अपने वस्त्र और अस्त्र - शस्त्र उतारकर एक जगह रखे और पाखाना करने बैठ गये. उसी समय राजा तपेसिरिया के दूतों ने राजा कारीकामा का सिर उनके धड़ से अलग कर दिया.

राजा के घोड़े का नाम राई रोझिन के पीला गिद्व बाघ बछेड़ा शाह करन था. राजा कारीकामा का घोड़ा शाह करन यह सब देख रहा था. उसने सोचा की राजा मेरी पीठ में सवार होकर आये थे. अब में खाली पीठ यहां से कैसे जाऊंगा. तब घोड़े ने देखा की राजा तपेसिरिया की बेटी कैन्ना कम्माल हीरो सोने के झूले में झूल रही थी. तब घोड़े ने कैन्ना कम्माल हीरो को अपने मुंह में दबाया और उसे लेकर आठ दिन नौ रात में ताई गढ़, तुईगढ़, भागू टोला होते हुये हीरा गढ़ आ गया. वहां आकर रानी को खबर देता है कि राजा कारीकामा रैया - सिंघोला में मारे गये .

हीरा गढ़ सिरपुर राज्य का एक नगर है. हीरा गढ़ में राजा कारीकामा का लड़का राजा हीरा खान सिंह का जन्म होता है. घोड़ा राजा कारीकामा की पत्नी रानी धम्माल घैलो के पास जाकर खड़ा हो जाता है. रानी धम्माल घैलो देखती हैं कि उनके राजा का घोड़ा अपने मुंह में एक बच्ची को दबाकर लाया है. घोड़े ने कैन्ना कम्माल हीरो को रानी के समक्ष रख दिया. कैन्ना को देखकर रानी आश्चर्य में पड़ जाती हैं. रानी घोड़े से पूंछती हैं कि तुम्हारा सवार राजा कहां गया. तो घोड़ा रानी को बतलाता है कि राजा रैया - सिंघोला में मारे गये हैं. मैं राजा तपेसिरिया की बेटी कैन्ना कम्माल हीरो को लेकर आ गया हूं. आप उसकी बेटी से हीरा खान सिंह की शादी करवा दो.

तब राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय के मित्र इनहरिया, किनहरिया, बसुरिहा, सिट्टा दांत मंहगुटरा, घोड़स मंद परसू, अैजू, मंद लैजू,बोहखरिहा, मुनगा तरिहा, पीपर तरिहा तथा उसके साठ दोस्त और सभी बड़े बूढ़े असड़िया का बेटा भुसड़िया, भुसड़िया का बेटा कोल भसेड़ा, कोल भसेड़ा का बेटा मृद लांघा और बाईस गढ़ के व्यापारी , कर्मचारी , तेईस गढ़ के जमींदारों ने मिलकर बचपन में ही राजा हीरा खान सिंह की शादी रानी कम्माल हीरो के साथ कर दी.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय और कम्माल हीरो एक साथ खेलते कूंदते बड़े हो गये. वे दोनों एक दूसरे को भाई - बहन के समान मानते थे. उनके साथ खेलने वाले मित्रों की शादी होने लगी. तो कम्माल हीरो सोचती है कि सबकी शादी हो रही है हमारी शादी की बात कोई क्यों नहीं करता है. मैं भी तो जवान हो गयी हूं . मैं भी अपना घर बसाना चाहती हूं.

एक दिन रानी कम्माल हीरो अपने महल में बैठकर अपनी शादी के बारे में सोच रही थी. उसी समय उसके पास बोड़राहिन आई. उसने रानी से पूंछा रानी तुम क्या सोच रही ळो. तो

रानी कम्माल हीरो ने कहा - बोड़राहिन सब की शादी हो गयी है पर मेरी शादी अभी तक क्यों नहीं हुयी है. तब बोड़राहिन ने कहा रानी लड़कियों की शादी जीवन में एक बार होती है. बार - बार नहीं तब रानी ने कहा बोड़राहिन मेरी शादी कब और किसके साथ हुयी है. हमें तो पता ही नहीं. तब बोड़राहिन बतलाती है कि रानी तुम्हारी शादी बचपन में ही राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय के साथ हो गयी है.

रानी को विश्वास नहीं होता तो वह महल की बूढ़ी मालिन से पूंछती है . वह कहती है हां बेटी यह बात सही है. तुम्हारी शादी राजा हीरा खान सिंह के साथ बचपन में हो गयी थी.

राजा हीरा खान सिंह अपने साठ मित्रों के साथ चित्रसागर तलाब में स्नान करके राज महल में आते हैं. रानी कम्माल हीरो छत्ीास प्रकार के भोजन तैयार करके रखती है. राजा हीरा खान सिंह जैसे ही स्नान करके राज महल में आते हैं. उसी समय रानी कम्माल हीरो लोटे में जल लेकर आती है और राजा से बोलती है. - हे पति देव जल ग्रहण करैं. रानी के मुंह से इन तीन शब्दों के निकलते ही राजा घबड़ा जाते हैं. कि रानी को यह क्या हो गया है. रानी को कहीं भूत प्रेत तो नहीं लग गये. राजा ने गुनिया को बुलाया. गुनिया ने कहा राजा जी रानी को भूत प्रेत नहीं लगे हैं. उसी समय राज माता आती हैं. वे कहती हैं राजन कैन्ना कम्माल हीरो यहां की बेटी नहीं हे. यह रैया - सिंघोला के राजा तपेसिरिया की बेटी है. इतना सुनकर राजा शरमा जाते हैं. वे महल से बाहर चले जाते हैं.

उसी रात राजा को भूख लगती है. तो वे रात को रसोई घर में आते हैं. रसोई घर में पत्तलें पड़ी रहती हैं. राजा अंधेरे में यहां वहां भटकते हैं. वे वहां पर सोये हुये लोगों से टकरा जाते हैं. तो सभी लोग जाग जाते हैं. रानी कम्माल हीरो सभी को रसोई से बाहर निकालती है. वह राजा के हाथ पैर धुलाती है. वह राजा से कहती है पति देव भोजन ग्रहण करें. रानी ने छत्तीस प्रकार के भोजन राजा को परोसे, राजा ने पांच कौर भोजन देवताओं को प्रदान किया. फिर प्रेम से भोजन ग्रहण किया. इस प्रकार राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय और रानी कम्माल हीरो एक दूसरे के जीवन साथी बन गये.

राजा सबेरे राज दरबार में आते हैं. वे मृद लांघा से कहते हैं. मृदलांघा यह सब अनजाने में हो गया है. मृद लांघा सोचता है. राजकुमार हीरा खान सिंह को युवराज का पद देना चाहिये. जिसका राज्य ताई गढ़, तुई गढ़ , सिरपुर नगरी भागू टोला तथा नौ लाख छप्परों वाला हीरा गढ़ जिसमें गोंड़ भाई निवास करते हैं. वह राजकुमार को उस राज्य का युवराज बनाने की सोचता हैं.

मृद लांघा राज दरबार से महल में राज माता धम्माल धैलो के पास आता हैं. वह राज माता से कहता है. राज माता अब युवराज हीरा खान सिंह क्षत्रीय को राज पद दे देना चाहिये. राजा का राज तिलक होना जरुरी है. राजा की गद्दी सूनी है. राज माता लांघा की बात मान लेती हैं.

मृद लांघा पूरे राज्य में मुनादी करवा देता है कि युवराज हीरा खान सिंह का राज तिलक होना है. सभी नगरवासी आनेद मनाते है. घर - घर में मंगल गीत गाये जा रहे हैं.

राज महल में युवराज हीरा खान सिंह क्षत्रीय का राज श्रृंगार किया जा रहा है. युवराज को लोहे के साज और लोहे के बाजूबंद , बारह मर्द की ताकत बराबर साज और तेरह मर्द की

ताकत बराबर नकचुंदा और सिर पर पगड़ी जिसमें रेशम की कलगी लगी थी.

राज दरबार में राजा के लिये सोने का सिंहासन जिसमें व्यास गद्दी लगी थी. उसमें राजा को बैठाला गया. राज माता धम्माल घैलो ने राज दरबार में अपना सब राज - पाट , खेती - बाड़ी, गाय - बछड़े, हाथी -घोड़े, धन - दौलत , सभी कुछ राज तिलक करके राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय को सौंप दिया. राजतिलक के समय पूरे राज्य में आनंद ही आनंद था.राजा हीराखान सिह अपना राज - पाट चलाने लगे. प्रजा के साथ पुत्रवत व्यवहार करने लगे.

ऐसा करते - करते बहुत दिन बीत गये. एक दिन रानी कम्माल हीरो अपने पति राजा हीराखान सिंह से कहती हैं. हे प्राण नाथ एक निवेदन है. राजा बोले रानी साहिबा बतलाईये क्या बात है. तो रानी बोली हे पति देव एक बार मुझे मेरा मायका दिखला दिजिये. तब राजा कहते हैं रानी सब बात करना पर रैया - सिंघोला जाने की बात मत करना. वहां हमारी सात पीढ़ी के पूर्वजों के सिर टंगे हैं. इस कारण मैं वहां नहीं जा सकता. तब रानी कहती है राजन मैं यहां पर अच्छा खाती - पीती हूं. पर जब तक मॉ है तो मायका है और पति है तो ससुराल है.

इस जीवन में मैंने मॉ का घर नहीं देखा तो यह जीवन बेकार है. इससे अच्छा तो मर जाना है. ऐसा कहकर रानी कम्माल हीरो कोप भवन में चली जाती हैं. राजा हीराखान सिंह रानी से पूंछते हैं - रानी आप कोप भवन में क्यों आ गयी. तो रानी बोली राजन आप चुप रहीये. मेरा सिर दर्द कर रहा है. राजा ने रानी की नाड़ी पकड़ी और कहा रानी जी आपको मायके का भूत लगा है. रानी बोली राजा जी मैं आपको अपना दुख बताती हूं तो आप उसे हंसी में उड़ा देते हैं.

रानी की दशा देखकर प्रण करते हैं और कहते हैं - रानी मैं तुमको तुम्हारे मायके रैया सिंघोला लेकर जरुर जाऊंगा. परंतु मैं अपनी मां धम्माल घैलो से आज्ञा ले लूं. राजा अपने राज महल से चलकर मोती महल आते हैं. वे राज माता के कमरे मैं जाते हैं. वे राज माता से कहते हैं माता जी आपकी बहू मायके जाने को कह रही है. इसलिये मैं आपसे आज्ञा मांगने के लिये आया हूं. इतना सुनते ही राज माता की ऑखं में आंसू आ जाते हैं. वह कहती है बेटा तुम रैया सिंघोला जाने की बात कभी नहीं करना. वह दुश्मनों की जगह है. वहां जो भी जाता है लौट कर वापस नहीं आता है. वे अपनी मां के सगे नहीं बाप के विश्वास पात्र नहीं. मैं कैसे कह दूं की तुम वहां जाओ. राजा के बहुत अनुनय विनय करने पर राज माता उन्हें रैया सिंघोला जाने की आज्ञा दे देती हैं.

राजा रैया सिंघोला जाने के पहले कलार पारा जाते हैं. वे वहां से बैला आंखिन चुनिया में महुआ की शराब लेकर राजमहल में आते हैं. जहां नौ नारी , बत्तीस कुंवारी, सोलह साढ़ू, सत्रह हैवाती, छै कोरी छै आगर संगी, सहेलियों के साथ रानी कम्माल हीरो बैठी थी. राजा राज महल में पहुंचते ही रानी कम्माल हीरो बैला आंखिन चुनिया लाकर देते हैं. इसके बाद राजा मृद लांघा को बुलाकर कहते हैं. लांघा मेरा तो रैया सिंघोला जाना पक्का है, तुम मेरे साठ जवान संगी साथियों को बुला दो उन के साथ उठ बैठकर सुख - दुख की बातें कर लूं. ऐसा कहकर राजा अपने राज्य के सागर तलाब बांधों में जाते हैं और उन्हें प्रणम करते हैं. राजा तलाब से स्नान करके महल में आते हैं. वे महल में आकर रानी से हवन सामग्री मांगते हैं. वे लोहे के चिमटा में आग और बैला आंखिन चुनिया बुलाते हैं. राजा देवालय में जाकर हवन पूजन करते हैं. हवन

करने के बाद शराब की धार से देवताओं को तर्पण देते हैं. उसी समय समस्त देवता साक्षात विराजमान हो जाते हैं. जैसे ब्राम्हण के देवता ब्रम्ह देव, बनियों के देवता शंकर जी , तेलीयों के देवता तेलिया मशान, अहीरों के देवता मिरचुक देव, और गोंड़ों के देवता बड़े देव इन सभी देवताओं को राजा शराब की तर्पण देते हैं.

राजा अपने सभी देवी देवताओं जैसे - बड़ा देव , बूढ़ा देव, निशा भंगी, मरका देव, दुल्हा देव, दुलखुरी माई रात माई, मुड़खुरी माई , ठाकुर देव, सोलह सौ जिव और सत्रह सौ जोगनी,ठेला मार ठेलुआ, हुलुक मार कटार, तुल्ही बख्तर, रक्त बूढ़ी छुरी, गिद्वा मल फरसा, इन सभी को स्मरण करता है.राजा अपने देवी देवताओं से पूंछता है. मैं रैया सिंघोला जा रहा हूं. आप लोग मेरा साथ दोगे की नहीं. बड़ा देव, बूढ़ा देव, सभी देवता वहां विराज मान थे. सभी देवता राजा से विचार विर्मश करते हैं. देवता गण राजा से कहते हैं. राजन जब तक आप हम सभी देवताओं को अपने साथ रखैंगे. तब तक हम लोग आपका अनिष्ट नहीं होने देंगे. यदि हम देवताओं को आपने अपने साथ से अलग कर दिया तो हम नहीं जानते.

राजा हीरा खान सिंह ने सभी देवताओं की पूजा अर्चना और हवन करके बैला आंखिन चुनिया रखकर देवालय से बाहर आ गये.

राजा के संगी - साथी आंगन में एकत्र थे. उसी समय बड़राहिन लोटे में पानी लेकर आती है और कहती है भोजन तैयार है सभी लोग चलिये . राजा ने छत्तीस प्रकार का भोजन और बत्तीस प्रकार का मीठा साथ में सब्जी, बामी मछली, सांभर का गोश्त, मोर की चटनी, स्वाद के लिये अंदोरी बड़ी, चुदोरी बड़ी, जिसे घी में तला गया था. राजा ने इतना स्वादिष्ट भोजन बनवाया था कि खाना - खाने वाले बार बार खाना मांग रहे थे. राजा भी अपने साथियों के साथ भोजन करने बैठ गये. राजा अपनी थाली से थोड़ा - थोड़ा सभी प्रकार का भोजन निकालकर धरती माता को अर्पित करते हैं. पांच कौर भोजन सान कर देवताओं को अर्पित करते हैं. राजा के दिये हुये भोजन को देवताओं ने ऊपर ही ऊपर ग्रहण कर लिया. राजा ने देवताओं को जल अर्पित किया. इसके बाद स्वतः भोजन ग्रहण किया.

भोजन करने के बाद राजा घुड़साल में शाहकरन घोड़ा के पास गये. राजा ने जब घोड़े की पीठ पर हाथ फेरा तो घोड़े ने कहा राजन आप पर कौन सा कष्ट आ गया है. मैं इतने सालों से घुड़साल में बंधा हूं. आपने इसके पहले कभी भी मेरी पीठ पर हाथ नहीं फेरा . तब राजा बोलते हैं घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा मुझे अपनी ससुराल रैया सिंघोला जाना है. तुम मुझे साथ दोगे की नहीं. तो घोड़ा बोला राजन जब मेरी जवानी थी. तब तो आप ने कभी रैया सिंघोला पर चढ़ाई नहीं की. अब मैं जब बूढ़ा हो रहा हूं तब आप रैया सिंघोला में चढ़ाई करने की सोच रहे हैं. वहां पर आपकीे सात पीढ़ी के सिर टंगे हैं. तब राजा बोलते हैं। शाहकरन मर्द अपनी मर्दागनी को , सुअर खेत को ,और क्षत्रीयअपना क्षत्रीय धर्म कभी नहीं छोड़ता वह चाहे खेत में रहे या युद्ध के मैदान में तब घोड़ा बोला राजन जब तक आप मेरी पीठ पर सवार रहेंगे तब तक आपको किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने दुंगा. जिस दिन आप मेरी पीठ छोड़ देंगे. उस दिन की बात मैं नहीं जानता.

राजा हीरा खान सिंह घोड़े की लगाम पकड़कर उसे घुड़साल से आंगन में लेकर आते हैं. राजा घोड़े को चना की दाल और घी का लौंदा खिलाते हैं. वे बारह बैलों की घंटी और तेरह

बैलों का श्रृंगार घोड़े के गले में बांधते हैं. राजा घोड़े का श्रृंगार करके अपने महल में आ जाते हैं.

अब राजा हीरा खान सिंह अपनी ससुराल जाने की तैयारी कर रहे हैं. वे अपने शरीर में बारा मृद का साजू और तेरह मृद के बाजू बांध रहे हैं. राजा ने अपने शरीर में लोहे के साज बाज और जिरह बख्तर धारण किये. पैरों में मखमल के जूते सिर पर शीश बंध की टोपी जो रेश्म की कलगी से सजी थी उसे धारण किया. इसके बाद राजा काले पीले चांवल देवताओं को अर्पित करते हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय बड़ा देव का स्मरण कर देवताओं को अपने वश में कर रहे हैं. राजा ने घोड़े के चारों पांव में चाकू छुरियां बांध दी हैं. देवताओं को घोड़े के सिर पर सवार करा दिया है. राजा के अंग - अंग में ठाकुर देव ,दुल्हा देव, दुल्खुरी माई, रात माई, मुड़खुरी माई नारायण देव सवार हो जाते हैं. बड़ा देव और बूढ़ा देव राजा के खरदा में विराजमान हो जाते हैं. जब देवताओं ने सुना की राजा रैया सिंघोला जा रहे हैं. तो सभी देवता व्याकुल हो जाते हैं कि राजा अपनी ससुराल जा रहे हैं. रानी कम्माल हीरो अपने मायके जाने की तैयारी में सोलह श्रृंगार करती है.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय और रानी कम्माल हीरो राज माता धम्माल घैलो के पास आकर उनके चरण छूते हैं. वे राज माता से रैया सिंघोला जाने की आज्ञा मांगते हैं.

राज माता धम्माल घईलो अपने बेटा हीरा खान सिंह और बहू कम्माल हीरो को जाने का आर्शीवाद देती हैं. वे कहती हैं.
जा बेटा जुग - जुग जी रण भूमि में सदा तेरी विजय हो. राजा रानी दोनों बार - बार राज माता के चरण र्स्पश करते हैं. राजा और रानी राज महल से प्रस्थान करते हैं. राज्य की प्रजा राजा रानी को कुछ दूर तक विदा करने जाती है. रानी ने सोलह श्रृंगार किया था . वे चंद्रमा के समान निखर रहीं थी. उनकी दसों अंगुलियों में दस जोड़ी अंगूठी, पैरों में बिछिया पहनें हैं.

रानी ने अपने शरीर में जो वस्त्र धारण किये हैं वे हैं चारम छारी और हाल्हा कलोरो जिसके चारों कोनों में हीरा दमक रहा था. रानी कम्माल हीरो मायके जाने की खुशी में आगे - आगे चल रहीं है. रानी के पीछे राजा हीरा खान सिंह और उनका घोड़ा शाहकरन गिद्व बाघ बछेड़ा चल रहा हैं. कुछ दूर चलने के बाद राजा घोड़े में बैठ जाते हैं. तो घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा सरपट भागने लगता है. राजा रानी से कहते हैं रानी जी लंबे - लंबे ड़ग भरिये रैया सिंघोला बहुत दूर है. चैत के महीना की कड़कती धूप में रानी पैदल चली जा रहीं थी. चारों तरफ से लू चल रही थी. जमीन बहुत गर्म हो गयी थी. जिससे रानी के पैरों में जलन पड़ रही थी. रानी राजा से बोलती हैं राजा जी आपके पास घोड़ा है . आप आगे बढ़िये मैं धीरे - धीरे आती हूं. राजा ने घोड़े की लगाम कसी तो घोड़ा हवा से बात करने लगा. वह हिरन के समान छलांग लगा - लगा कर दौड़ रहा था. घोड़े ने कहा राजन आप मेरी लगाम छोड़ दें. मैं आपको अभी रैया सिंघोला पहुंचा दूंगा. राजा ने घोड़े की लगाम छोड़ी तो घोड़ा आकाश में उड़ने लगता है. इधर रानी कम्माल हीरो परेशान थीं. उनके दोनों पैरों में फफोले पड़ गये थे. वह बहुत थक गई थीं और चलने में असमर्थ थीं. तब वह चारों हाथ पैरों से चलने लगीं. सूर्य नारायण डूबने लगे तो रानी रास्ता छोड़कर घने वन में घुस गई. वहां रानी ने एक नाले में जाकर पानी पिया और रो रोकर रात

काटी.

राजा हीरा खान सिंह दूसरे दिन सुबह होते ही आकाश मार्ग से रैया सिंघोला पहुंच जाते हैं. घोड़ा बोलता है राजा जी जरा नीचे तो देखिये कौन सा शहर है. तो राजा कहते हैं शाहकरन मैं नहीं जानता यह कौन सा शहर है. तब घोड़ा बोला राजन यही है रैया सिंघोला आपकी ससुराल. तब राजा बोलते हैं ।शाहकरन हम रैया सिंघोला तो आ गये पर यहां हमको बिना कैन्ना के पहचानेगा कौन ?

तब घोड़ा बोला राजा जी चलिये कैन्ना का पता लगा कर आते हैं. तब घोड़ा अपने सिर पर विराजमान जिया जोगन से कहता है - हे राजा के देवता जिया जोगन ,मिंया मोहन सोलह सौ जोगनी, नौ सौ चित्तावर तुम लोग जाकर रानी का पता लगाकर आओ. राजा के सभी देवता गण रानी कम्माल हीरों को खोजने निकल पड़ते हैं. परंतु रानी का कहीं भी पता नहीं चलता. राजा की आत्मा रानी के बिना व्याकुल हो रही थी.

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा एक घने वन में प्रवेश करता है.वह रानी को खोजते - खोजते कुछ दूरी पर जहां रानी कम्माल हीरो आराम कर रहीं थी . वहां पर पहुंच जाता है. राजा रानी को देखते हैं रानी को अपने तन बदन का बिलकुल होश नहीं था. उनके हाथ पैर में फफोले पड़ गये थे. रानी दर्द से कराह रहीं थीं. तब राजा ने रानी से कहा रानी चलो . तो रानी ने कहा राजा जी अब हम रैया सिंघोला नहीं जायेंगे. तब राजा बोले रानी जी अब यदि हम लौट कर वापस घर जाते हैं तो हमारी प्रजा और साथी पूंछेंगे की कैसे वापस आ गये. तब हम क्या बतायेंगे. तब रानी रो - रो कर राजा को अपने हाथ के फफोले दिखलाती है. तब राजा रानी के कष्ट को देखते हुये रानी से कहते हैं रानी आप घोड़े पर सवार हो जाइये. रानी ने कभी भी घोड़े की सवारी नहीं की थी. उसी समय राजा रानी का हाथ पकड़कर घोड़े पर बैठालते हैं. राजा घोड़े से बोलते हैं शाहकरन हम दोनों को रैया सिंघोला ले चल. राजा रानी दोनों घोड़े पर सवार हो जाते हैं तो घोड़ा सरपट भागने लगता है. तीन दिन बाद घोड़ा एक बियावान जंगल में पहुंचता है. उस सुनसान जंगल में दो भाई रहते थे. उनका नाम सोमा और कामा था. उन दोनों की शादी नहीं हुयी थी.

उसकी झोपड़ी के सामने जाकर घोड़ा खड़ा हो जाता है. दोनों भाई घोड़े पर सवार राजा रानी को देखते हैं. तो छोटा भाई बड़े भाई से कहता है भैया हम दोनों में से औरत किसी के पास नहीं है.ये किसी राज्य के राजा महराजा हैं. इनसे लड़ाई में तो हम जीत नहीं सकते इसलिये इनसे दोस्ती कर ली जावे. मैं उनसे कहता हूं कि वह मेरी बड़ी मौसी का बेटा है. आज हमारे घर में विश्राम कर ले. फिर राजा को शराब में जहर ड़ालकर खतम कर देंगे. ऐसा विचार कर दोनों भाईयों ने राजा को रोका. उनका आदर सत्कार किया. उनके लिये भोजन तैयार किया फिर सोमा कामा ने दो बोतल शराब बुलाई और जहर वाली शराब राजा हीरा खान सिंह को देने लगे. राजा के देवी - देवता सोमा कामा का यह तमाशा देख रहे थे. राजा हीरा खान सिंह दोनों भाईयों के बीच में बैठे थे. उसी समय राजा के देव - देवता राजा की शराब को बदल देते हैं. जिससे जहर वाली शराब सोमा कामा पीने लगते हैं. और जो शराब सोमा कामा अपने लिये लाये थे . उस शराब को राजा पीने लगते हैं. जहर वाली शराब पीकर सोमा कामा तड़फने लगते हैं. थोड़ी देर बाद दोनों की मृत्यू हो जाती है.

सुबह राजा हीरा खान सिंह रानी को लेकर आगे बढ़ जाते हैं. आठ दिन नौ रात के बाद राजा रैया सिंघोला की सीमा में पहुंचते हैं. रैया सिंघोला की सीमा पर बांध के किनारे राजा अपने तंबू गाड़ देता है.

सुबह - सुबह बांध पर रैया सिंघोला की पनिहारिनें बांध पर पानी भरने को आती हैं. वे राजा को देखकर आश्चर्य में पड़ जाती हैं. क्योंकी रैया सिंघोला में सिर्फ नारी जाति का राज्य था. वहां के सभी पुरुष युद्ध करने दूसरे देश चले गये थे. पनिहारिनें राजा को एक टक देख रहीं थीं. उसी समय एक बुढ़िया हाथ में लाठी लेकर ठुकरुक - ठुकरुक करते हुये बांध पर आई. वह बुढ़िया पनिहारिनों से कहती है . तुम लोग एक टक लगाकर क्या देख रही हो. सभी पनिहारिनें एक स्वर में बुढ़िया से बोलती हैं. ये दाई हमारे राज्य में मर्द जाति का दिखना दुर्लभ है वहां बांध के किनारे कोई राजा आये हैं अपनी रानी के साथ उन्हीं को हम देख रहे हैं.

सभी पनिहारिनें उस बुढ़िया को राजा के पास ले जातीं हैं. राजा हीरा खान सिंह तंबू के नीचे आसन लगाकर बैठे थे.उसी समय रानी कम्माल हीरो बुढ़िया के पास आती है. बुढ़िया रानी कम्माल हीरो से पूंछती है - बेटा तुम कहां से आई हो. तो रानी उस बुढ़िया को अपना परिचय बताती है. बुढ़िया तुरंत राजमहल में जाकर यह सुखद समाचार रानी सिंघाल रामो को सुनाती है. वह कहती है रानी जी आपके बेटी दमाद आये हैं वे बांध के किनारे रुके हैं.

तब रानी सिंघाल रामो बुढ़िया से कहती है. दाई हमारे राज्य में तो सिर्फ औरतों का राज्य है. पुरुष जाति का प्रवेश इस राज्य में वर्जित है. फिर बेटी दमाद को यहां कैसे ला पायेंगे. तब लड़कियां बोलती हैं रानी जी हम आधी लड़कियां युवकों का और आधी लड़कियां युवतियों का वेश धारण कर राजा रानी को लेकर आ जायेंगे.तब सभी लड़कियां अलग - अलग वेश में जाकर राजा को राज महल में लेकर आ जाती हैं.

राजा की सास रानी सिंघाल रामो सोने के कलश में कपूर की आरती लेकर राजा के स्वागत के लिये दरवाजे पर खड़ी रहती हैं. सभी युवक - युवतियां गाजे - बाजे के साथ राजा - रानी को लेकर महल में प्रवेश करते हैं. रानी कम्माल हीरो की छोटी बहन कैन्ना श्रीयाल जंगो सोने के लोटे में गंगा जल लाकर अपनी बहन और बहनोई के चरण धोती हैं. रानी अपने दमाद और बेटी की आरती उतारती हैं. राज महल में पहुंचने के बाद राजा हीरा खान सिंह को मोती महल में रहने का स्थान दिया जाता है. राजा मोती महल में सोने के पलंग पर लेटे हुये हैं. रानी कम्माल हीरो अपनी मां और बहन से सुख - दुख की बातें कर रही हैं.

रानी कम्माल हीरो अपनी मॉ से कहती हैं. मॉ यहां राज महल में सब दिख रहे हैं. परंतु हमारे पिताजी कही नजर नहीं आ रहे हैं. तब रानी सिंघाल रामो बतलाती हैं. बेटी तेरे पिताजी युद्ध करने गये हैं . वे कहकर गये हैं कि वे बारा भाटी बंगाला को तोड़कर राजा राय मुंड़ा के राज्य को जीत कर आयेंगे. परंतु अभी तक वापस नहीं आये. उनके साथ जो छोटे - छोटे लड़के गये थे. वे जवान हो गये और जो जवान गये थे . वे बूढ़े हो गये . जो बूढ़े गये थे वे मर गये. तभी से तेरे पिताजी बारा भाटी बंगाला में रह रहे हैं. तब रानी कहती है मॉ आप यह बात अपने दमाद को मत बतलाना. नहीं तो आपके दमाद अपने ससुर का पता लगाने निकल जायेंगे.

यहां मोती महल में राजा पलंग पर लेटे - लेटे सोचते हैं कि अभी कुछ देर पहले तक यहां

ढ़ेर सारे लड़के - लड़कियां दिख रहे थे परंतु अभी यहां पर सुनसान है. किसी का पता नहीं चल रहा है. बिना बाहर निकले सही बात का पता नहीं चलेगा. राजा अपनी रानी को बुलाते हैं. वे रानी से कहते हैं रानी लोटा में पानी दो मुझे पाखाना जाना है. रानी राजा को बाहर जाने के लिये मना करतीं हैं पर राजा नहीं मानते. तब रानी कम्माल हीरो राजा के साथ - साथ पाखाना जाने के लिये बाहर निकलती हैं. एक जगह पर जाकर राजा रानी से कहते हैं. रानी तुम यहीं रुको मैं पाखाना करके आता हूं. ऐसा कहकर राजा ने कुछ दूर जाकर अपना खरदा जमीन में गड़ा दिया. उसके ऊपर अपना अंगोछा टांग दिया और उसी की आड़ लेकर राजा शहर की ओर भागने लगे. रानी कम्माल हीरो मेड़ की आड़ में राजा का इंतजार करती रहीं. राजा जी वहां से भागते - भागते शहर में आ गये.

राजा शहर में आकर मृद नामा के घर का पता लगाने लगे. उसी समय एक मांझी बैलों को रख कर अपने घर जा रहा था. मांझी अपनी पत्नी के साथ था . उसकी पत्नी पूंछती है . क्यों मांझी बारा भाटी टूटी की नहीं. तो मांझी कहता है न तो सोन का सोन बरहा मरा है न ही बारा भाटी टूटी है. राजा हीराखान सिंह उनकी बातें सुनते - सुनते पीछे से आ रहा था. राजा माझी के पीछे - पीछे उसके घर पहुंच जाता है. वहां जाकर राजा मांझी को अपना परिचय देता है. तब माझी कहता है राजा सरकार आप तो मेरे बहनोई हैं. राजा जी आपके ससुर राजा तपेसिरिया बारह बषरें से बारा भाटी में रह रहे हैं. तब राजा ने पूंछा माझी तुम बारा भाटी कब जाओगे. तो मांझी कहता है राजा जी मैं सुबह बारा भाटी जाऊंगा. तब राजा कहते हैं माझी मैं भी तुम्हारे साथ बारा भाटी जाऊंगा.

तभी राजा को रानी कम्माल हीरो की याद आयी. तब राजा जल्दी से रानी के पास जाने लगे. रानी बेचारी बीच मैदान में बैठी राजा का इंतजार कर रही थी. राजा ने खरदा के ऊपर से अपने कपड़े उठाये और लोटे का पानी जमीन में गिराया और रानी के पास पहुंच गये. राजा रानी दोनों वहां से चलकर मोती महल आ जाते हैं.

रानी अपनी मां और बहन के साथ उनके महल में आ जाती हैं. रानी मन ही मन सोचती हैं कि यहां आज की रात कैसे कटेगी. क्या राजा को वापस हीरा गढ़ जाने के लिये कहूं ? उधर राजा अपने मन में सोचता है कि कब सुबह हो और मैं यहां से निकल जाऊं.राजा रात को रानी के साथ भोजन करते हैं . सुबह होते ही राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय अपने देवी देवताओं का स्मरण करते हैं. वे अपने वस्त्राभूषण और अस्त्र - शस्त्र धारण कर घुड़साल में अपने घोड़े शाहकरन के पास आते हैं. राजा घोड़ा शाहकरन से कहते हैं शाहकरन अब तुमको बारा भाटी चलना है. घोड़ा बोलता है राजा जी बारा भाटी जाते हो तो संभलकर जाना . राजा घोड़े को घुड़साल से निकालकर आंगन में लाते हैं. वे घोड़े पर सवार होकर मांझी के साथ बारा भाटी पहूंच जाते हैं. उसी राज्य का एक मंत्री राजा को देख लेता है . वह जाकर राजा तपेसिरिया को बतलाता है कि एक राजा बारा भाटी की ओर आ रहा है. राजा उस मंत्री से कहते हैं युद्ध का नगाड़ा बजवा दो.

राजा हीरा खान सिंह ने नगाड़ा की आवाज सुनी तो वे घोड़े से बोले शाहकरन अब हमारी रक्षा तुम्हारे हाथ में है. देवताओं के समान घोड़े के पूरे शरीर में बिजली चमकने लगती है. नौ लाख सैनिकों ने राजा को सात ओर से घेर लिया. राजा ने सेनिकों से जमकर युद्ध किया. थोड़ी

देर के लिये चली लड़ाई में खून की नदियां बहने लगीं. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय ने राजा तपेसिरिया की सेना के बारह आने सैनिकौं को मौत के घाट उतार दिया. तब राजा तपेसिरिया गले में अंगोछा ड़ालकर राजा हीरा खान सिंह के सामने दंड़वत हो जाते हैं. राजा तपेसिरिया हाथ जोड़कर विनती करते हैं. वे कहते हैं राजा जी हमसे बड़ी भूल हो गयी है. आप कहां से आये हैं और कहां के राजा हैं. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घोड़े पर बैठे - बैठे बोले मैं हीरा गढ़ के ताई गढ, तुई गढ़, सिरपुर नगरी , भागू टोला के राजा कारी कामा का बेटा मैं राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय हूं. इतना सुनते ही राजा तपेसिरिया कीऑखं में आंसू आ जाते हैं. राजा तपेसिरिया पछताते हुये कहते हैं. यह तो मेरा भानजा है. इसके लिये मैंने युद्ध के बाजे बजवाकर अपनी ही सेना का नाश करवा लिया है. राजा तपेसिरिया राजा हीरा खान सिंह का स्वागत करते हैं. दरबार के सभी लोग राजा की जय - जय कार करते हैं.

राजा तपेसिरिया कहते हैं. बारह वर्ष हो गये पर अभी तक सोन का सोन बरहा नहीं मरा और न ही बारा भाटी टूटी है. मैं आज यह प्रण करता हूं कि जो भी राजा सोन के सोन बरहाको मारेगा और बारा भाटी को तोड़ देगा . उससे मैं अपनी इकलौती बेटी श्री याल जंगो की शादी कर दूंगा. उसे मैं दहेज में रैया सिंघोला का आधा राज्य दुंगा.

उसी समय राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घोड़े पर बैठे - बैठे अपने खरदा को हाथ में लेकर प्रण करते हैं कि वे बारह भाटी को तोड़कर ही रहेंगे. वह सेना से कहते हैं. बारा भाटी चलने की तैयारी करो.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय सभी देवताओं का मन में स्मरण करते हैं. वे दरबार में बैठे सभी राजा महराजाओं और राजा तपेसिरिया से भेंट - भलाई करके बारा भाटी की ओर चल देते हैं. राजा हीरा खान सिंह बारा भाटी जाकर घमासान युद्ध करते हैं और बारा भाटी तोड़ देते हैं. वे सोन के सोन बरहा को मार ड़ालते हैं. युद्ध समाप्त होने के बाद घोड़े के देवता घोड़े के माथे में और राजा के देवता राजा के शरीर में आकर बैठ जाते हैं.

बंगाला देश के राजा राय मुंड़ा को मालुम पड़ता है कि राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय ने बारा भाटी तोड़ दी है. इसके बाद राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय की सेना चमरा पारा को ध्वस्त करने पहुंच जाती है. उसकी सेना चमरा पारा को ध्वस्त करके आगे बढ़ती है. तो राजा का घोड़ा शाहकरन राजा से बोलता है राजा जी अब राजा राय मुंड़ा को पराजित करने चलते हैं. राजा हीरा खान सिंह घोड़े से कहते हैं. शाहकरन राजा राय मुंड़ा का देश पठानों का देश है. बिना जादू टोना सीखे वहां जाना व्यर्थ है. तब घोड़ा कहता है राजन राय मुंड़ा के गुरु आलनाथ जोगी बाल नाथ बाबा यहीं रहते हैं. उनसे अपन झिरिया के पास जाकर जादू टोना सीख लेते हैं. राजा हीरा खान सिंह जादू - टोना सीखने आल नाथ जोगी बाल नाथ बाबा के पास जाते हैं. आलनाथ बाबा खुश होकर आठ दिन नौ रात में राजा को जादू टोना करने की कला को सिखा देते हैं. बाबा प्रसन्न होकर राजा से कहते हैं राजन मैं तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हूं. तुमको जो वरदान मांगना है मांग लो.राजा कहते हैं गुरु महराज मेरे पास भगवान का दिया सब कुछ है. मुझे सिर्फ राजा राय मुंड़ा चाहिये. बाबा बोलते हैं बेटा वह मेरा पहला चेला है उसे मैं नहीं दे सकता. परंतु राजा की राज हट के कारण बाबा को माना पड़ा.

इसके बाद राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय राजा राय मुंड़ा से युद्ध करने जाते हैं. दोनों

की सेना में घमासान युद्ध होता है राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय ने राजा राय मुंड़ा की पूरी फौज को ध्वस्त कर दिया. अब मात्र पठान राजा राय मुंड़ा बच गये थे. वह अपने जादू - टोना के बल पर बचा रहा.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय राजा राय मुंड़ा पर जादू चलाते हैं . दोनों ओर भयानक जादूय युद्ध होता है अंतः राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय राजा राय मुंड़ा को हरा देते हैं. राजा राय मुंड़ा सोचते हैं कि राजा हीरा खान सिंह से तो मैं परास्त हो गया हूं. तब राजा राय मुंड़ा मुंह में घास चबाकर गले में अंगोछा ड़ालकर राजा हीरा खान सिंह के समक्ष दंड़वत पंणम करने चले जाते हैं. राजा हीरा खान सिंह शरणगत् राजा को जीवन दान दे देते हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय अपने घोड़े शाहकरन से कहते हैं शाहकरन हम लोगों ने बारह कोस लंबा और तेरह कोस चौड़ा लकड़ी के पुल को ध्वस्त किया है. सोन के सोन बरहा को मारा , बारा भाटी को ध्वस्त कर चमरा पारा का भी नामो निशान मिटा दिया है. इसके बाद पूरे बंगाला देश में भी विजय प्राप्त कर ली है. राजा राय मुंड़ा की पूरी सेना प्रजा सहित समाप्त कर दी है. अब करने को क्या रह गया है. तब घोड़ा बोलता है - राजन टिकरा पारा में दरबार लगा है चलिये दरबार के लिये प्रस्थान करते हैं.

तब राजा हीरा खान सिंह राजा तपेसिरिया के दरबार में बारा भाटी आते हैं. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय जैसे ही दरबार में पहुंचते हैं. वहां उपस्थित सभी राजा उन्हें देखकर थरथराने लगते हैं. सभी राजा अपना सिंहासन छोड़कर राजा हीरा खान सिंह के सामने दंड़वत हो जाते हैं. राजा सभी राजाओं को युद्ध का समाचार सुनाते हैं. राजा की जीत को सुनकर पूरी सभा राजा की जय जयकार करने लगती है. राजा के ऊपर फूलों की वर्षा होने लगती है.

तब राजा पूरी फौज को रैया सिंघोला कूच करने का आदेश देते हैं. राजा हीरा खान सिंह अपने घोड़े शाहकरन से कहते हैं। तुमको कहीं कुआ ,तलाब मिले तो घोड़ा रोक देना . मैं स्नान - ध्यान करना चाहता हूं. तब घोड़ा बोलता है राजन यहीं पर पास में आठा नारा बीसा झोरी है. वहीं जाकर स्नान ध्यान कर लें. तब राजा और उसका घोड़ा आठा नारा बीसा झोरी में रुक जाते हैं. राजा ने अपने तथा घोड़े के सभी देवी - देवताओं जिया जोगन , मिंया मोहन , नौ सौ सिंघी चित्तावर सभी को अपने अंगों से उतारकर एक तूमा में भरते हैं. तुमा में भरने के बाद उसमें ड़ांट लगाकर उसे साजा वृक्ष पर टांग देते हैं. घोड़े को एक पेड़ से बांध देते हैं. उसके पैरों में सांकल बांध देते हैं. राजा झील में जाकर कारी पटपर पर बैठकर स्नान करने लगते हैं. राजा तेसिरिया के दूत आकर राजा को बतलाते हैं. कि राजा हीरा खान सिंह आठा नारा बीसा झोरी में कारी पटपर पर बैठ कर स्नान कर रहे हैं. उन्होंने अपने देवी देवताओं को साजा के पेड़ में लटका दिया है. यही मौका है राजा हीरा खान सिंह को धोखे से मार देने का,राजा अपने दूतों को आज्ञा देते हैं. कि वे राजा का वध कर ड़ालें. राजा के दूत धोखे से राजा हीरा खान सिंह पर तीर चलाते हैं. तीर उनके सीने में लगता है. वे वहीं पर बेहोश होकर गिर जाते हैं. राजा के दूत आकर राजा तपेसिरिया को बताते हैं. की उन्होंने राजा हीरा खान सिंह का वध कर दिया है.

इसके बाद राजा तपेसिरिया की पूरी सेना रैया सिंघोला पहुंच जाती हैं. रानी कम्माल हीरो मोती महल की छत पर खड़े होकर अपने पति के आने की राह देखतीं हैं. उसी समय राजा

तपेसिरिया अपनी फौज के साथ राजमहल में प्रवेश करते हैं. वे सभी को युद्ध का समाचार सुनाते हैं. तब रानी कम्माल हीरो अपने पिता से पूंछती है. पिताजी आपके दमाद नहीं आये. तब राजा तपेसिरिया कहते हैं. बेटी मैंने तुम्हारे पति को नहीं देखा.

रानी ने जैसे ही सुना की राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय वापस नहीं आये हैं. वह वेहोश होकर गिर पड़ी. थोड़ी देर बाद रानी को होश आता हें. तो वह राजा का पता लगाने राजमहल से निकल पड़ती है. वह नगर में आकर एक घर के पास रुकती हैं. वहां उसे एक लड़के के द्वारा पता चलता है कि राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय आठा नारा बीसा झोरी में कारी पटपर पर बेहोश पड़े हैं. इतना सुनते ही राना कम्माल हीरो आठा नारा बीसा झोरी जाती हैं.

वहां जाकर रानी देखती हैं की साजा के पेड़ से बंधा घोड़ा शाहकरन किलकारी मार - मार कर तड़फ रहा हैं और राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय कारी पटपर पर मछली के समान तड़फ रहे हैं. राजा को देखते ही रानी कम्माल हीरो राजा से लिपट कर रोने लगती है. राजा का अंतिम समय आ गया था. राजा अपनी रानी कम्माल हीरो को देखकर कहते हैं. रानी आप सब से पहले मेरे माथे और छाती के तीर निकाल दें. जिससे मेरे प्राण आराम से निकल जायें. रानी राजा के माथे और छाती से तीर निकालती हैं. तीर के निकलते ही राजा के प्राण निकल जाते हैं. उनका स्र्वगवास हो जाता है.

रानी राजा के शरीर को चंदन की लकड़ी से बनी चिता पर लिटाकर उसमें आग लगा देती है. आग लगाने के बाद रानी सोचती है. जब राजा ही नहीं हैं. तो मेरा जीवन किस काम का ऐसा सोच कर रानी राजा के साथ सती होने का सोचती है. राजा ने अपने सभी देवता धामी, सिंघी चित्तावर , नौ सौ जोगनी को तूमा में बंद कर साजा के पेड़ पर लटका दिये थे. वे देवता तूमा के अंदर भड़ - भड़ हो रहे थे. रानी कम्माल हीरो की नजर उस तूमे पर पड़ी तब रानी ने सोचा अब राजा तो हैं नहीं उनके देवी- देवताऔं का हम क्या करेंगे क्यों न इनको भी चिता की आग में ड़ाल दिया जावे.

ऐसा सोचकर रानी ने उस तूमा को साजा के पेड़ से निकाला और उसका ढ़क्कन खोला जितने देवी देवता थे सभी उससे बाहर आ गये. उसमें से आधे देवी - देवता कौआ और गिद्व बनकर आकाश में उड़ने लगे. बूढ़ा देव दूसरे देवताऔं से कहते हैं. जल्दी से जल्दी चिता की आग बंछा दो. कोई अमृत लेने के लिये चले जाओ. सभाी देवी - देवता भूत - प्रेत राजा की चिता की आग को बुझाते हैं. उसी समय रानी सोचती हैं कि मैं अपने पति के साथ सती हो जाऊं पर कौवा और गिद्व को चिता से हकालने के कारण रानी सती होना भूल जाती हैं. चिता भी बुझ गयी थी. राजा का जीव लेने गये देवता जीव लेकर वापस आ गये.अमृत लेने गये देवता अमृत लेकर वापस आ गये. उसी समय बूढ़ा देव, बड़ा देव, दुल्हा देव , दुलखुरी माई, रात माई, मुंड़खुरी देव, नारायण देव, सभी ने राजा की खारी का पिंड़ बनाया.उस पिंड़ में राजा हीरा खान सिंह के जिव को प्रवेश कराकर उस पिंड़ में अमृत ड़ाल दिया. उस पिंड़ को देवता ड़ंड़ा से पीटने लगे. जिससे वह पिंड़ मानव शरीर में बदलने लगा. थोड़ी देर बाद उस पिंड़ की जगह राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय लेटे दिखे. इतने में राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय राम - राम का नाम लेकर बूढ़ा देव का स्मरण करके उठ कर बैठ जाते हैं.

राजा हीरा खान सिंह के उठकर बैठते हैं और कहते हैं मेरी प्राण प्यारी रानी कम्माल

हीरो मैं आठ दिन नौ रात का थका हारा और भूखा हूं .मुझे बहुत जोर से भूख लगी है. तब रानी कम्माल हीरो ने घोड़े के गोन से दाल , चावल निकालकर भोजन तैयार किया. राजा ने झोरी में जाकर स्नान किया. इसके बाद भोजन किया.

रैया सिंघोला में एक पठान राजा ने घावा बोल दिया.पठानाजा कैन्ना श्रीयाल जंगो को कैद करना चाहते थे. तब कैन्ना श्रीयाल जंगो वहां से भागकर राजा हीरा खान सिंह के पास आ जाती है. वह राजा हीरा खान सिंह को बतलाती है कि रैया सिंघोला में पटान राजाओं ने धावा बोल दिया है. तब राजा हीरा खान सिंह रैया सिंघोला की ओर प्रस्थान करते हैं. वे वहां जाकर पठान राजा की सेना को ध्वस्त कर देते हैं. राजा हीरा खान सिंह रैया सिंघोला से युद्ध जीतकर आठा नारा बीसा झोरी में वापस कम्माल हीरो और श्रीयाल जंगो के पास आते हैं.तो दोनों रानी वहां नहीं मिलती . राजा भंवरा सिंह दोनों रानियों को लेकर भाग जाता हैं.

राजा हीरा खान सिंह साधू को भेष धारण करके राजा भंवरा सुर के राज्य में जाते हैं. उनका राजा भंवरा सुर के साथ भयानक युद्ध होता है. राजा हीरा खान सिंह राजा भंवरा सिंह की सेना को परस्त कर राजा दोनों रानियों को राजा भंवरा सुर की कैद से छुड़ाकर वापस ले आते हैं.इसके बाद राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय दोनों रानियों के साथ रैया सिंघोला के लिये रवाना होते हैं. आठ दिन नौ रात में वे रैया सिंघोला पहुंचते हैं. रैया सिंघोला में राजा हीरा खान सिंह की शादी कैन्ना श्री याल जंगो के साथ बड़ी धूम - धाम के साथ होती है. राजा हीरा खान सिंह और दोनों रानी राज माता धम्माल घैलो के चरण स्पर्श करते हैं. राज माता दोनों को आर्शीवाद देती हैं.

राजा हीरा खान सिंह रैया सिंघोला में प्रेम पूर्वक राज करने लगते हैं. जैसी राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय की बनी वैसी सबकी बने।

0ध्0

1.आख्यानःगोंडवानीः हिन्दी भाषा में पृष्ठ 37 से 324

2.आख्यानःगोंडवानीःगोंड़ी क्षेत्रीय भाषा में पृष्ठ325से609

हिन्दी रुपांतरण गोंड़वानी

राजा पेमल शाह

राम का नाम सुमरन कर ले मेरे भाई
मन में संतोष कर ले भाई
बिगड़ी बात सब वही संभालेगे रे दादा
राम चन्द्र रघुवीर रे भाई sss
संकट विपत्ति में रे मेरे साथी
राम का ही आधार है
कुटुंब परिवार कोई साथ नही देता रे दादा
जब भारी विपत्ति पड़ती है रे भाई sss
हाय ss राम का नाम सुमरन कर ले भैया हो sss
अब गाकर सुनाता हूं राजा पेमलशाह को भैया
उसके बेटा हिरदे शाह की गरीबी रे दादा ss
कैसे सत्यवादी गोंड़ राजा हो गये रे मेरे दादा
सुन लिजिये मेरे मालिक ss
यह है ss पेमलशाह और हिरदेशाह
की कहानी रे भाई ss
गोंड़ राजाओं में रे भाई
पेमलशाह राजा
जाहिर हो गये रे भैया
जिसका लड़का हिरदेशाह रे भाई

जिसके नाम से कांप गया है दादा
दिल्ली का रूम बादशाह
उनकी कहानी को
गाकर सुनाता हूं
कान लगाकर सुनलो ss
सभी पंच भाई रे हो ss
सत युग की बात है
जब सबका जन्म हुआ था
कैसे ब्रम्हा रे भैया
इस संसार का रचे है
ब्राम्हण और छत्री
गोंड़ ने रचा है दादा

हां तो ss ब्रम्हा जी एक दिन अपने मन में सोचते है कि मैंने इतने बड़े संसार की रचना कर डाली है।

परंतु इस संसार की पालने का भार किसको दूँ। किसी को तो इसकी जिम्मेदारी देनी होगी।

अब ब्रम्हा रे दादा
अपने मन में सोचकर
ब्राम्हणा और छत्री को
गोंड़ को रे भाई
बुलाते है रे दादा
अब ब्रम्हा बोल रहे है तीनों से sss
हो ss क्या बोल रहे है ब्रम्हा !
कहते है सुन ले रे ब्राम्हणा ।
तुम मेरे पुत्रों में सबसे ज्यादा पढ़े लिखें हो।
इसलिये तुम इस पृथ्वी का भार संभालो।

भार कैसे में संभालूंगा महराज कहता है ब्राम्हण। मेरी पृथ्वी में जितने भी जीव जन्तु है सभी को भोजन कराना है। खाने के लिये देना है। सभी के पालन पोषणा का भार लेना होगा ! कहते है ब्र्रम्हा।

ब्राम्हाण कहता है ! यह काम मुझसे नहीं होगा महराज मुझसे बात करा लो किताबें पढ़वा लों। मैं यह काम करके क्या जांनू। मैं तो स्वतः दूसरों से अपना काम करता हूॅ। मैं। तुम्हारे संसार को कहां पाल सकूंगा।

नही दादा मुझसे यह नहीं होगा। अब बुलाया ब्रम्हा ने छत्री को ss

छत्री आया मूछों को ऐंठता ! धरे तलवार तेगा।

कहता है क्या कहता है ब्रम्हा महराज।

ब्रम्हा कहते है ! सुन रे छत्री बेटा ! तुम तो बड़े बलवान हो

तुम इस संसार का भार अपने ऊपर ले लो तो में निश्चिंत हो जाऊंगा।

छत्री कहता है ! मुझसे मार काट करा लो दादा। यह पालने का बोझ मैं नहीं दो सकता।

मैं हूॅ गुस्से वाला आदमी ! जो भी मुझसे तीन पांच करेगा उसी को तलवार घुसेड़ दूंगा।

मुझे यह काम दोगे तो तुम्हारे संसार में एक भी जीव जिन्दा नहीं बचेगा। नही दादा मुझसे न होगा।

तुम किसी और से कहकर देख लो।

इतना कहकर छत्री भग गया हो ss

अब ब्रम्हा रे भैया

सोचते है मन में

ब्राम्हणा बहुत चतुर था

वह भी मना कर दिया

अब बचा है गोंड़ लड़का

बहुत ही शुद्ध है

न किसी के तीन में

न किसी के पांच में

उसे मैं कैसे कहूं

आखिर बुलाकर तो देंखू

अब बुलाया है ब्रम्हा ने गोंड़ लड़का को हो sss

हो sss ब्रम्हा कहते है गोंड़ लड़का से ! क्या बोल रहे है ब्रम्हा ! कहते है सुन रे गोंड़ बेटा!

मैंने इतने बड़े संसार की रचना कर डाली है। लाखों जीव जन्तु बना डाला हूॅ। आखिर उनका पेट कौन भरेगा यह सोचकर परेशान हूॅ।

ब्राम्हाणा को बुलाया उसने मना कर दिया छत्री को बुलाया असने भी मना कर दिया। अब तुम बचे हो बेटा !

तुम संसार के पालने की जिम्मेदारी ले लेते तो मैं निश्चिंत हो जाता।

गोंड़ लड़का मना करना तो जानता ही नहीं था। हां तो महराज तुम जैसा कहोगे वेसा ही करूंगा कहकर व खड़ा रहा।

हो sss ब्रम्हा खुशी हो गये हो sss

खुशी हो गये भाई

ब्रम्हा रे दादा

कहते है रे बेटा

रख लिया मेरी लाज रे

आज तुमने दाऊ रे

मेरे संसार के

तुम पालन हार हुये रे

सब तुमको रे बेटा

किसान कहेंगे दाऊ

ले नागर रख लें

और रख ले बैला

ऊबड़ खाबड़ धरती में

खोद खोद बेटा

अनाज उगाना रे

जीव जन्तु सभी तुमसे पलेंगे रे दादा sss

हो ss ब्रम्हा गोंड़ लड़का को एक नागर दे रहे है। एक जोड़ी बैल दे रहे है और बोले जा बेटा धरती को खोदकर कमाना खाना और संसार के जीव जन्तुओं को पालना दुनिया तुझे अन्नदाता कहेगी।

अब चला है गोंड़ लड़का

कंधे में हल रखें

बैलों को हांकते हो

जाकर पहुंचे है भाई

गढ़ा जबलपुर में दादा

ऊँची सी पहाड़ी में

डाल दिया डेरा

आ गयी सब गोंड समाज रे भाई ss

अब बढ़ने लगी सेना गोंडो की रे भैया ss

आपस में लड़ने झगड़ने लगे रे दादा ss

कोई का कहना कोई नही माने रे भैया

ब्रम्हा सोच में पड़ गये रे भाई ss

हो ss क्या सोच रहे है ब्रम्हा अपने मन में कहते हे ये तो आपस में लड़े मरे जा रहे है ।

ऐसा ही होता रहेगा तो मेरे संसार को कौन पालेगा । न बनाता तो इनमें एक राजा पैदा करता।

अब ब्रम्हा रे भैया

गोंड के शरीर को

मथते है दादा।

साल की मथानी

सांप की तो डोरी

लगाई है दादा, चौदह देवता लगे है

अब मथ रहे हे गोंड को रे दादा ss

हो ss कैसे मथ रहे है गोंड़ के शरीर को ब्रम्हा अब निकला हे भील लड़का हाथ में तीर कमान रखे टोकनी के समान मुंह है भील लड़का का ।

देवता कहते हे नहीं यह नहीं है राजा लायक यह राजा जैसे नहीं दिखेगा ! यह तो पूरे गांवों को लूट लूटकर खा जायेगा ।

हो ss कहते ेहैं जा रे भील भाई दिन डूबने की दिशा में भाग जा नर्मदा के उस पार जंगलों

में रहना और लूटपाट करके खाना ,भील भाग जाता है दिन डूबने की दिशा में नर्मदा के किनारे हो ss ।

अब फिर से रे भेया
मथ रहे दादा
तब निकला है
बैगा रे दवार

हाथ में गेंती और टोकनी रखकर हो ss हो निकले है बैगा बाबा रखे है हाथ में गेंती टंगी है कंधे पर टोकनी बड़े - बड़े पुठठे देखकर कहते है ब्रम्हा !

तुम तो जंगल के रहने वाले हो भाई !तुम राज्य क्या चलाओगे, जा भाग जा दिन ऊगने की दिशा में !नर्मदा उदगम के जंगलो में कंद मूल खोदकर खाना। बैगा रखे अपनी गेंती ओर टोकनी चला गया दिन ऊगने की दिशा में हो ss ।

क्या कहना भैया
फिर से मथते है दादा
गोंड़ के शरीर को
लगें हे देवता
साल की मथानी
सांप की डोरी
मथ रहे है भाई

अब निकला है गोंड़ कंधा में नागर तो हाथ में पैनारी रखे हो ss ब्रम्हा कहते है यही तो हे मेरे संसार का पालन हार ! तुम तो कमाने वाले पुत्र हो रे भाई तुम कहां से राजपाट सम्हालोगे तुम यहीं जहां धरती दिखे खेती किसानी करना ! अब चला है गोंड़ भैया नागर ओर बखर रखे हो ss ।

अब फिर से मथ रहे है भाई
क्या कहना दादा
अब निकले है भैया
कोल ओर भरिया
कंधे में कुदाली
हाथ मे कुल्हाड़ी
रखे रे दादा
कोल भरिया निकले है हो ss

हो ss बहा कहते हे तुम तो कबाड़ी हो ,तुमसे राज्य करना नहीं आयेगा जाओ मेरे गोंड़ लड़के के साथ रहना और कबाड़ का काम करना ! अब चल दिया है कोल भरिया रे हो ss

अब पड़ गये हे भेया
सोच में रे ब्रम्हा
कोई नहीं मिला
किसे राज्य सौंपू

अब मथ रहे है सब देवता मिल के हो हो ss मथते मथते अब राज गोंड़ निकला है हाथ में चाबुक रखे ! ब्रम्हा कहते है हां यह है राजा ! चाबुक से सबको रास्ते में ले आयेगा ।
हो अब यहां राज्य करना रे बेटा कहकर ब्रम्हा अपने लोक मे चले गये हो sss ।

अब तभी से रे भैया
ये गोंड़ राजा
राज गोंड़ हैं भाई
राज्य करने लगे है रे दादा
अब इसी घराना में रे भैया
राजा पेमलशाह जगत प्रसिद्ध राजा हो गये भाई
जिसके भैया दूधनशाह , बूड़नशाह रे भाई
शंकरशाह, दलपतशाह रे दादा
इन चारों भाई राजा पेमलशाह से पैदा हुए थे रे हो ss
कैसे अलग अलग कुंटुब में
घर बांध लिये है
कैसे कैसे अपनी पत्नि और ल़ड़का रखकर
अपने अपने गांव में
रहते है रे दादा
पेमलशाह राज्य कर रहे है हो ss

हो ss राजा पेमलशाह गढ़ा में राज्य कर रहे है राज्य के दरवारी और दोस्त सब आज्ञा मान रहे हे पेमलशाह की! नौ सौ जोड़ी नागर चल रहे हे पेमलशाह के बारह लाख खंड़ी की गाहनी हो रही हे सोलह बैलो की दांय फंदी है ! पेमलशाह के घर और बाहर दाना भरा है नौकर चाकर को परवाह नहीं हे पूरे क्षेत्र में चिड़िया , पक्षी जीव जन्तु खा रहे हे ॅ आनंद मना रहे है राजा के राज्य में !

कैसा राज्य चल रहा हे गोंड़ राजा का हो ss
हमेशा दिन रे भैया
एक से नहीं बीततें
सुख दुख दादा
जोड़ी चली आयी है
कभी है उजाला
कभी है अधियारां
धन दौलत भैया
उरिया की छाया है
इस तन और धन का
मत करो घमंड रे
खालो और पीलो
ले लो और देलो

यही साथ जायेगा
सब यहीं खतम हो जायेगा रे दादा ss
हो क्या कहना भैया !
न बताओ मालिक !
सूर्य देव ऊगते है
धीरे धीरे चढतें हे
कड़ी धूप रे दादा
सिर के ऊपर तपती है
घड़ी भर में हीरा
वही चली जाती है
नहीं रहता तेज हो
नहीं रहती गरमी रे भैया
ऐसा ही हे यह राज पाट धन दौलत हो ss

हो ss राजा पेमलशाह पर विपत्ति पड़ी है आकाल पर आकाल सूखे पर सूखा पड़ रहा हे खेतों में एक दाना पैदा नहीं हो रहा है ! बीमारी पर बीमारी पड़ रही है पूरे जानवर मर गये है नौकर चाकर हरवाहा काम धंधा छोड़कर भाग गये हे महल अटारी खंडहर हो गये है बिना मरम्मत के गिर रहे है हो ss

मुसीबत आ गयी राजा पेमलशाह के ऊपर ! सोना, चांदी, चोर चुराकर भाग गये ! जानवर मर गये हे चूहा बंदर जो भी रहा उसे मजदूर खा गये ! अब राजा का मरना हो गया हे हो ss ।

सोना ओर चांदी
चोरी वाला धन है भाई
पूंछ हिलाने जैसा
नाशवान धन रे दादा
सड़ा होने वाला धन रे दादा
यह सब नष्ट हो गया ! राजा अनाथ से हो गये रे भैया ss
हो ss विपत्ति में रे दादा
दिन काटना पड़ता है
यह जिंदगी रे दादा
गुजारना पड़ता हे
यह विपत्ति एक न एक दिन
सब के ऊपर आती है हो ss
यह विपत्ति रे भैया
रामजी पर पड़ गयी
सीता के लिए
वन वन में रोयें

यह विपत्ति रे दादा
लक्ष्मण पर पड़ गयी
इंद्र कामनी रे दादा
बकरा बनाकर रखी
यह विपत्ति रे भाई
पांडवों पर पड़ गई
नगर वैराट में दादा
नौकर बनकर रहे
विपत्ति राजा पेमलशाह पर पड़ी हे हो sss
हो खाना खाने तक को लाले पड़ गये राजा को !

सोने की थाली में छत्री के चांवल खाने वाले राजा आजाहुल पत्तों के दोनो में महुआ की डुभरी खा रहे हे चार की चिरौजी खा रहै है पत्थर में फोंड़ फोड़कर खमेर के फल खा रहै है पानी में उबाल कर ।

हो ss कैसी विपत्ति पढ़ गयी भैया
राजा मेरे पेमलशाह
रानी मेरी पेमलशाह
दोनों को दादा
कपड़े ने लत्ते
तन कमजोर हो गया
पहाड़ों के कंदों को
खोद खोदकर खाते है
किरची का कंद
गुरचू का कंद
सेमल मूसली कांदा
पताल कुम्हरा कांदा
खनुआ का कंद
अंगीठा का कंद
सब को रे भैया
खोद खोद खा रहे है
केवलार ओर कचनार
कोसम की भाजी
कुछ नहीं बचा हो
ये पेट बैरी
इसके लिए दादा
कहां कहां मारे मारे फिरना पड़ता हे रे दादा ss
हो ss ऐसी विपत्ति पड गयी राजा पेमलशाह पर रे भेया

हो ss एक दिन रानी कहती हे क्यों राजा न होता तो जाकर देखते अपने दिवान ओर मुकददम के पास अपने भाईयों और रिश्तेदारो के यहां कहीं दया करके एक आध मुटठी दाना दे देते बिना अनाज खाये यह दिल कैसे को मानेगा ।

अब राजा चले है दीवान मुकददम के पास भाई ss
संपत्ति के साथी सब हे भैया
विपत्ति के साथी कोई्र नहीं है हो
मां भाई कुंटुब परिवार रे दादा
सभी संपत्ति के साथी रे भैया
विपत्ति पड़ने में रे हीरा
कोई्र नहीं पूंछता हो ss ।

हो ss राजा पेमलशाह टोकनी रखकर घूम रहे हे दीवान मुकद्दम के पास जा रहे हे अपने भाइ्रयों के पास जा रहे है आखिर किसी के पास में से एक मुठठी दाना नहीं निकलता कहते है ! हम ही मर रहे भूख के कारण रे राजा तुम को कहां से देगें रे दादा पान पत्ते खाकर जी रहे हे अनाज कहां से पायेगें देखने को ।

राजा वापस आ गये अपने घर लौटकर हो ss ।

मन में निराशा
हो गयी हे राजा की
मरना तो हो गया
दाना के बिना भाई्र
कहां तक खायेगें
इन जंगलों के फल
सोचते है राजा
रानी से बोलते है राजा हो ss

हो ss क्या बोलते हे राजा रानी से ! कहते है सुन ओ रानी ! तुम्हारे मायके वालों के पास बहुत धन है न बने तो जाते कुछ मांग मूंग कर लाते । यहां तो भूख के कारण प्राण निकल जायेगें ऐसा लगता हे । जाने का तो जाती राजा ! मेरे दहेज की एक सफेद भैंस , मुंडी बकरी है, हीरा नगीना बैल है और बिर्रा दाना है जिसे मेरे भाईयो ने अभी तक नहीं दिया कहती है रानी पोहपाल।

राजा पेमलशाह कहते है तो जा रानी। यह मिल जायेगा तो खेती बाड़ी करके पेट तो पालते।

आखिर कुछ तो नहीं हे राजा मेरे पास पहनने ओढ़ने को। ऐसे जाने में शर्म लगती है।

काहे की शर्म ओ रानी
गरीबी अधीनी
भगवान की देन है
चोरी में शर्म है
चपारी में शर्म है
गरीबी में क्यों शर्म करें है

जो भगवान देता है

उसी को खाते है

उसी को पहनते है

इसमें में काहे की शर्म रानी हो ss

हओ तो मैं ऐसी ही चली चाऊंगी। आखिर बहुत दिनों में जा रही हूँ। भाई - भौंजाई के घर। थोड़ी बहुत शराब तो रखनी ही पड़ेगी। खाली हाथ कैसे जाऊं।

हां ! यह तो ठीक कहती हो। शराब तो रखनी ही पड़ेगी। तब वह कहां से पायेंगे पैसा धेला ।अपने पास में एक कौड़ी भी नहीं है। कहती रानी ! तुम यह बताओं भाई ! औरत जाति का दिमाग ऐसे समय में तेज हो जाता है। मेरी अक्ल तो मोटी हो गयी है तो सुन राजा ! तुम जाओ जंगल ! लकड़ी काटकर ला दो। मैं उसे कलार की दुकान में बेचकर आ जाऊंगी और उसके बदले में शराब ले आऊंगी । खुशी हो गये राजा हो ss।

हो ss कहते है !

ठीक कहा रानी!

लाकर दे कुल्हाड़ी

मैं जाता हूॅ जंगल

धन्य मेरी रानी

विपत्ति की साथी

औरत रे भैया

सुख दुख के साथी

है रे भाई

ऐसा कहकर राजा पेमलशाह कुल्हाड़ी रखकर जंगल जाते है हो ss।

हो ss जा रहे है जंगल पेमलशाह!

काट रहे है सूखी लकड़ी बांध रहे गढ़टा सिर में रखकर अब चले है पेमलशाह जंगल से लिचिक पिचिक ! कभी किये हो तो जानें।

गर्दन दर्द करने लगी है राजा की ! एक तलाब के किनारे पहुंच कर कहते है । थोडा विश्राम कर लेता । यह कितना बजनदार है । वहीं गठ्ठा पटककर राजा आराम करने लगे है रे भाई sss

पेमल शाह राजा रे भैया

लकड़ी के गठ्ठा को

तलाब की मेंड के ऊपर रखकर

दातून करने लगे है हो ss

हो ss कैसे राजा पेमलशाह तलाब के भीतर धुसकर दातून बना रहै है हो ! कैसे अंजली में पानी भरकर खाली पेट पानी पी रहे है।

हो ss कैसे दो हंसो का जोड़ा तलाब की पार में बैठकर पंख खुजा रहे है चोंचों से । कैसे राजा को देखकर हंसों का जोड़ा आपस में बातें करता हे। क्या कह रहे है हंस आपस में ।

कहते है यह राजा पेमलशाह है ! गोंडो के राजा ! कभी इसके घर में धन - धान्य की

कमी न थी। आखिर आज के दिन लकड़ी काटकर बेचने जा रहे है। धन्य रे करम ! विपत्ति में दोस्त - भाई कोई भी साथ नही देते।

हो ss और क्या बोल रहा है हंसो का जोड़ा । कहता हे इनके खेत में हम और हमारे लड़के बच्चे खूब दाना खाकर पले है । आखिर उसका बदला चुकाऐंगें।

ऐसा विचार कर रहे रे भैया
हंसों का जोड़ा रे भाई
उड़ गये आकाश में
जाकर पहुंच गये सागर के बांध में
वहां से रे दादा
अपनी अपनी चोंच में
मोती बीन बीनकर
पंखो में रे भाई
भर कर रे दादा

राजा के पास तलाब में पहुंचे है हो ss
हो ss हंस तलाब के किनारे आकर उतर गये हे राजा को बुलाते है हंस अपने पास।
हो ss राजा मन में सोंचते है ये पक्षी हमें क्यो बुला रहे है आखिर जाकर तो देखें।

अब जाते है राजा
हंसों के पास रे
कहते है क्या है हंस
क्या कहते हो भाई
किसलिये बुलाया है

आकर हंस चूमा चाटी कर रहे है हो ss
हो ss हंस मिलकर भेंट कर रहे है राजा से।

हालचाल पूंछ रहे है राजा से । हो ss कहता है हंस सुन रे राजा। इस संसार मे आदमी - आदमी के काम नही आता जब मुसीबत आती है तो कोई साथ नही देता। आखिर हम तो पक्षी है । कल कभी तुम्हारे खेत का अनाज चुगा था उसी का बदला चुका रहे है।

हो ss इतना कहकर हंसो ने जब अपने पंख फडफड़ाये क्या कहना झर, झर, झर हीरा मोतियों का ढेर लग गया।

हो ss कहते है हंस । ले जा राजा इन हीरे - मोतियों को अपनी कोठी में भर ले । तुम्हारी विपत्ति दूर हो जायेगी ।

हो ss मोतियों के ढेर देखकर
राजा अट्टहास करके हंसता हे।

हंसते है रे राजा
मोंतियों के ढेर
देखकर रे दादा
हंसों का जोडा

देख देख कर भाई
कहते है अपने मन में
खुशी के कारण
पागल हो जाते है
यह क्या है रे दादा

ऐसा सोच रहे है हंस का जोड़ा अपने मन में हो ऽऽ

हो ऽऽ राजा बोल रहे है । हंसो के जोड़ा से । क्या बोल रहे है राजा कहते है सुनो रे पक्षी में इन पत्थरों को ले जाकर क्या करूगां यह मेरे किस काम आयेंगे कुछ अनाज होता तो पेट भरता कुछ वस्त्र होते तो शरीर ढंकता। इन पत्थरों का क्या करूंगा।

ऐसा बोल रहे है राजा पेमल शाह हो ऽऽ

केसे सुनकर रे भैया
हंसो का जोड़ा
अचरज में आ गये
कहते है रे राजा
यह पत्थर नहीं है भाई
ये हीरा मोती है रे
जिसके पास रहते हे
वह बड़ा आदमी कहलाता है
इनके लिये तो भाई
लोग मरे कटे जाते है
तुम कैसे मूर्ख हो
कंकड पत्थर बता रहे हो राजा ऽऽ

हो कैसे बोल रहे है हंस । तुम राजा कैसे मूर्ख हो । ये कंकड - पत्थर नही है। हीरा - मोती है । तुमने कभी देखा है की नही । जिसके पास यह रहता है धनवान कहलाता है । इन के लिये तो मनुष्य मरे कटे जाते है ।

ऐसे समझा रहे है हंस राजा को रे भैया ऽऽ

हो ऽऽ कैसे बोल रहे हे राजा पेमलशाह । तुम सुन लो रे पक्षी।

जिस से पेट भरता है
जिससे तन ढकता है
वही संपत्ति है रे
वही धन है रे दादा
बाकी सब पक्षी
सोना और चांदी
रूपया और पेसा
हीरा और मोती
कंकड पत्थर आय रे पक्षी हो ऽऽ।

हो ss क्या बोल रहे है पेमलशाह ! सुनो रे पक्षी ! इसका क्या करूंगा क्या मैं इसे खांऊगा या पहनूंगा इनको रखने से भूख थोड़ी शांत हो जायेगी, ले जाओ भाई अपने कंकड़ पत्थरों को राजा सिर मे लकड़ी का बोझा रखे चले जा रहे हे भाई ss ।

लकड़ी का बोझा रे दादा
सिर पर रखे है राजा
चले जा रहे है
गांव की तरफ रे भैया
गांव के पास में
कलार का घर था
शराब की सुगंध रे भाई
निकली है रे दादा
क्या कहना है हीरा
जिस वक्त राजा
पहुचें है भटटी के पास
जब पहुंची है नाक में
शराब की सुंगंध रे भाई
राजा की जीभ में पानी आ गया है हो ss

हो ss राजा अपने मन मे कहते है बहुत दिन हो गये शराब नहीं हो पी, ना होता थोड़ी सी पी लेता, नशा में भूख का पता नहीं चलेगा ।

हो ss अब पहुंच गयें हे राजा कलार की दुकान में कैसे पटक दिया बोझा आंगन में । कैसे घुस गये दुकान में राजा । कहतें है राजा !

कलार रे भैया
थोड़ी सी दया कर दे
एक घूंट शराब
दे दे कलार
मै अपनी आत्मा को ठंडी कर लेता रे !

हो ss कलार बोल रहा हे तुम सुन लो राजा शराव मांगने में नहीं मिलती और न ही उधार मिलती ! लकड़ी दे दे ओर शराब पीले । अब लकडी दुकान में देकर राजा पेमलशाह शराब पीने शराब पीने बैठ गये है हो ss ।

हो ss एक बोतल शराब दिया है कलार ने उसे राजा ने अपने देवी देवताओं के तर्पर्ण में खर्च कर दी । दूसरी बोतल शराब दिया है कलार ने ! राजा ने उसे अपने पितरों को चढ़ा दी। अब तीसरी बोतल शराब दिया हैकलार ने।उसे राजा गटा गट पी गये ।

पीने खाने में दोपहर हो गयी हो sss
अब राजा रे भैया
शराब के नशे मे
भूल गया रे भाई

किसलिए आया हूँ
क्या ले जाना है
कौन सी बात है
हुयी रही दादा
रानी से भाई

यह सब भुला गया शराब के नशा में रे दादा ss

हो ss पीते पीते दोपहर हो गयी, शराब खतम हो गयी । चले है अब राजा कुल्हाड़ी रखकर लड़खड़ाते हुये हो sss जब निकले है भटटी से राजा । रास्ता चलने लगें तब उन्हें याद आयी । ये दादा रानी से तो कहके आया था कि लड़की लांऊगा , और लकड़ी तो मै उस कलार के मुंह में भर कर आ गया,

अब रानी को क्या बतांऊगा!आखिर लकड़ी तो ले जाना ही पड़ेगी नहीं तो रानी नाराज हो जायेंगी अब काट रहे राजा साजा के पेड़ को हो ss

हो ss उस साजा के पेड़ को काटकर राजा कंधे में रखतें है अब ले जा रहे है डूंडा को रखकर राजा रे भाई ss।

धमाक की आवाज आया, रानी निकली है घर से राजा को हाथ पैर धोने के लिये पानी देने । महुआ की डुभरी और केवलार की भाजी बनायी रहीं रानी। उसे राजा को खाने दिया और कहती है तुम खाना खा लो राजा मैं इस लकडी को कलार के यहां बेचकर आती हूँ अब रानी चली हैं लकड़ी सिर पर रखकर बेचने हो ss ।

रखी हे सिर के ऊपर भैया
साजा की लकड़ी ?
उकठा रे दादा
चली जा रही है बेचने
सिर पर लकड़ी रगड़ रही है
गला दर्द हो रहा है
इस शरीर के लिये
रानी और राजा
बड़े और छोटे
चोर और झूठा
सभी कष्ट सहते है
ऐसा यह जीवन रे दादा हो ss
हो रानी पहुंच गयी कलार की दुकान में ,

कैसे बोल रही हैं रानी पोहपाल कलार से ! कलरा रे भैया लकड़ी ले ले और मुझे चुनिया में शराब भरकर दे दे ।

हो ss कलार कहता है पटक दे बाई लकड़ी को लाओ तुम्हारी चुनिया उसमें शराब भर दूं । कैसे रानी लकड़ी का डूंडा पटकती है कैसे कलार चुनिया में शराब भर रहा है रे भाई ss ।

छोटी सी चुनिया मिट्टी की रे भाई

कलार शराब भरता है रे दादा
एक बोतल दो बोतल दस बोतल दादा
ढ़ेर सारी शराब समा गयी रे दादा
भटटी की पूरी शराब भर डाली कलार ने

आखिर वह चुनिया अभी तक आधी नहीं भरी है हो ss

यह चमत्कार देखकर कलार आश्चर्य में पड़ गया। कहता है रूक जा बाई मैं अपनी दूसरी दुकान से शराब लाकर इसे भरता हूॅ।

हो ss कलार भागा है दूसरी दुकान में वहां से लाया है नौ सौ कनस्तर शराब भरा है चूनिया में आखिर चुनिया खाली की खाली यह देखकर कलार अपनी ऑख से अचरज भरा देख रहा है हो ss।

तब रानी पोहपाल रे भैया
कलार से कहती है
रहने दे रे भैया
मै इतना ही ले जाऊंगी
जब किया है बड़े देव का स्मरण रे रानी ने
चुनिया मुंह से भर गयी रे दादा

अब कलार रानी के चरणों में गिर गया है हो ss

हो ss शराब लेकर रानी अपने घर वापस आ गयी है रे भाई ! अब रानी पोहपाल अपने मायके जाने की तैयारी कर रही ंहै रै भैया हो ss।

कहती हे क्या धरकर ले जांऊ रे। राजा माता पिता मर गये है एक भाई है भोजा बल्लारे ! भाभी है यह गरीबी देखकर हंसेगी ! आखिर जाना तो पड़ेगा ही कोई दूसरा उपाय भी नहीं दिखता है !

ऐसा कहकर रानी तैयारी कर रहीं है हो ss
हो ss क्या तैयारी कर रहीं है रानी ?

महुआ का लाटा ,
खमेर का ठोला ,
केवलार की भाजी,
महलोन के दोनों में
रखकर बांध रहीं हे
दमला के सिंहार,
चार की चिरौंजीं,
भिलवा के फल रख रहीं है रानी।
किरची कंद , बिरची कंद
खनुआ कंद बांध कर
रख रही हे रानी पोहपाल
टूटी चिनिया में शराब रखी है

फटी हुयी साड़ी पहने हुये

और चली है पताल कोट रे भाई ऽऽ

कहती हैं देखना राजा घर द्‌वार को , कुछ न कुछ बनाकर खा लेना भूखे मत रहना , मै जल्दी आऊंगी , यहां वहां मत जाना ।

अपने पति को ऐसा धैर्य बंधाकर रानी पोहपाल मायके जा रहीं हैं हो ऽऽ ।

हो ऽऽ चली जा रहीं हें पाताल कोट की रास्ता पकड़ ली हे भूख लगती है तो थोड़ा नाश्ता कर लेती है थकान लगती है तो थोड़ी देर पेड़ के नीचे विश्राम करती है रात्री होती है तो कहीं भी सो जाती है आखिर रूकती नहीं है मायके के रास्ते चली जा रही है हो ऽऽ ।

चली जा रहीं है रानी रे भेया

पकड़ ली है रास्ता

पाताल कोट की रे साथी

अंधेरा कोना

काला पहाड़

सुना छप्पर

धमकी दादर

कुइली कछार

हीरा रे नदी

नाकते जा रहीं है भैया

रानी चली जा रहीं है अपनी धुन में पाताल कोट को हो ऽऽ

हो ऽऽ आठ दिन , नौ रात में पहुंची है रानी पोहपाल पाताल कोट की सीमा के पनघट में पहुंची हे रानी । थोड़ा विश्राम किया स्नान करके साफ वस्त्र पहने हॅै । तेल लगाकर हाथ पैरों को चिकना किया ! पत्थर के ऊपर बैठकर नाश्ता किया है फिर टूटी चुनिया को रखकर चली है पाताल कोट नगर को हो ऽऽ

हो ऽऽ पाताल कोट रे दादा बारा कोस के क्षेत्र में बसा है चारों तरफ पहाड़ों की दीवाल सी खींची है । जहां सूर्य और चंद्रमा नहीं देख सकता आदमी को तो कया गिनती है ऐसे पाताल कोट में रानी पोहपाल का मायका है हो ऽऽ ।

हो ऽऽ रानी बाजार में पहुची है

क्या देख रहीं हे रानी

अंचन परदा, कंचन परदा,

कांचों कपड़ा दहनारा

चीर बंधा हे सवर्ग द्‌वार में

आवन खोरी बावन बजारा

तिरपट खोरी नौ सौ हजारा

मूंगा मोतिन के लगे है बजार

रानी बाजार देखकर अकबका गयी हे हो ऽऽ अब चली है अपने भाई के महल की और जब जाकर पहुंची है महल के पास , टज़ूख्ज़े फाड़कर देखने लगी ।

हो ss क्या देख रहीं है रानी ?

देख रही है बाहर बाध का पहरा , भीतर भालू का पहरा, चौदह सिपाही फाटक पर घूम रहें है बिना आज्ञा के न कोई भीतर जा रहा है न बाहर आ रहा है ! रानी पहुंच गयी पवित्र द्वार में रे भाई ss ।

रानी पहुंची है पवित्र द्वार में रे दादा ss

देखकर महलों को रानी अकबका गयी है भाई ! वह पूंछती है पहरेदारों से तुम भोजा बल्लारे का घर बताओ रे दादा ! पहरेदार कहते है घर तो यही है तुम कहां से आयी हो बाई ।

रानी बताती है सोच सोचकर बात हो ss । हो ss सब जुड़ गये है पहरे दार सभी रानी की हंसी उडा़ने लगे कहतें है सूरत तो देखो रे भाई! हमारे राजा की बहन है कहती है ! अरे हमारे राजा की तो एक ही बहन हे । उसका गढ़ा वाले राजा पेमलशाह के साथ विवाह हुआ है वह रानी है तुम कैसी रानी कहां की रानी हो बाई। ऐसा कहकर दुतकारतें रे दादा।

हो ss दरवाजे पर भीड़ लग गयी! जो आता हे वहीं हंसी उड़ाता है पर अंदर नहीं जाने देता ।

नहीं जाने देने देते दरवाजे से भीतर
रानी रे दादा
खड़ी खडी रोती है
कहती है रे दादा
कोई तो जाओं
मेरे भाई को
खबर तो दे आओ रे
मेरी भाभियो को
बता तो आओ
रानी पोहपाल
आयी है दादा
दरवाजे पर खड़ी है हो sss

हो ss भोजा बल्लारे की दो पत्नि थी , सात मंजिल की अटारी में सोने से झूला में झूल रही थी । दरवाजे पर शोर सुनकर झरोखा से झांककर देखती हे । पूंछती है कहां से आयी है यह औरत क्या कह रहीं है ।

कैसे बता रहे सिपाही रे भाई ss

हो ss कहते है यह न जाने कौन है मालीकिन मांगने वाली जैसी लगती है कहती है मैं बहन हुॅू राजा की सुनकर राजा की औरते हेंसती है हो ss ।

कहती हे अच्छी नंद है! आई है अपने भाई के पास । जाओ इसे मुर्गी खाना में बंद कर दो वहां मुर्गीयो के साथ कुड़कुडा़ती रहेगी !

अब क्या कहना है रे दादा
वे सिपाही रे भैया
रानी की हंसी को रे भाई

निर हंसी जानकर रे दादा
पकड़कर ले चले है भाई
मुर्गी खाना में
बंद करने को रे भैया
रानी पोहपाल को ले जा रहे हे
अब रानी रे भैया
अपने मन में दादा
बड़ें देव की समृति करती है
कहती है हे बड़ा देव
सत्य के यदि होगे
मेरी खबर को देवता
मेरे भाई के पास पहुंचाना

ऐसा मन में सुमरन करती जा रहीं है रानी हो ऽऽ

हो ऽऽ यहां ऊपर सातवी मंजिल में बड़े देव शंकर झूला में झूल रहें है सोने की पालकी में सोने की जंजीर लगी हुयी है बड़े देव को सेवक झुला रहे है हो ऽऽ जब रानी पोहपाल ने सुमरन किया है बड़े देव का उसी समय बड़े देव का झूला अचानक रूक गया , बड़ा देव कहतें है मेरे परिवार के किसी ने मुझे मन से याद किया है किसके ऊपर कष्ट आ गया है । हो ऽऽ तुरंत उठें है बड़ें देव झरोखा से देखते है क्या देखते है बड़ा देव ?

रानी पोहपाल को सिपाही ढकेलते ले जा रहे है वह रोते रोते जा रहीं हे बड़ा देव को याद करते जा रहीं है और क्या देखते है बड़ादेव ?

राजा भोजे बल्लारे की दोनों औरतें सात मंजिल से देख देख कर हंस रहीं है गांव के लड़का लड़की हंस रहै है उसके पीछे पड़ गये ।

सोचते है बड़े देव ! क्या सोचते है ?
इस घर की कन्या को
गढ़ा की रानी को
यह कैसे रे दादा
दुर्दशा बन गई
रोने लगे बड़ा देव
धन्य रे तेरी करनी
क्या होने का क्या होता है देखा नहीं जा रहा है बड़ा देव से यह चमत्कार हो ऽऽ

हो ऽऽ जब उड़े है बड़ादेव !
पहुंचे है राजा के महल मे !
वहां देखते है राजा को ।

सोने के पंलग पर भैया
सोये हुये है राजा रे दादा
छै माह की नींद में भाई

लगी है राजा को हीरा

जाकर झकझोर कर जगाया राजा को हो ss

हो ss राजा घबड़ा कर उठें ! ऐ दादा बड़ा देव यहां कहां आये ! क्या कष्ट हो गया इसका भेद बताइये बड़ा देव । राजा हाथ जोड़कर पूंछ रहै है हो ss

हो ss बता रहे है बड़ा देव कहते है सुन रे राजा ! बहुत दिनों मे तेरी बहिन आयी है तुम्हारे घर मेंऑख की गुड़िया , सीने का हदय , माता पिता का निशानी , एक ही तुम्हारी बहन है आयी है तुम्हारे द्वार में ! उसको तुम्हारी औरतो ने मुर्गी खाना में बंद करवा दिया है ।

हो ss इतना सुनते ही राजा,को गुस्सा के कारण पूरे शरीर में आग तो लग गयी । थर थर थर थर कांपने लगे राजा गुस्सा के कारण बिस्तर छोड़कर नंगे पैर दौड़ पड़े मुर्गी खाना की ओर हो ss ।

अब राजा रे भैया

यह सुनकर दादा

बहन मेरी आयी है

मुर्गी खाने में बंद है

उसकी औरतों ने रे दादा

जल्लाद तो हो गया

बाध मार कोड़ा रे भाई

हाथ में रखकर

दौड़ पड़ा है रे दादा

हो ss जाकर पहुचतें है राजा मुर्गी खाना के पास में ! सिपाही बंद कर रहे थें धक्का दे देकर ! जिस समय पहुंचकर फटकारा है कोड़ा सिपाहीयो को सड़ाक , सड़ाक , उस समय भागते रास्ता नहीं मिल रहीं थी सिपाहियो को कहते है ये दादा ! ऐ दादा ! नहीं ! मालिक ! हमारा कसूर नहीं हे ! रानी जी ने जैसी आज्ञा दी हम लोग वैसा ही कर रहे थे !

अब राजा ने सिपाहियो को छोड़ दिया हो sss

हो ss राजा देखते है रानी पोहपाल को ! जाकर उसके पैरो पर गिर पड़ते हे राजा , आंसुओ की धार बह गयी राजा की! कहते है बहन मुझे माफ कर दो मेरी गंवार औरतें आपको नहीं पहचान पायी ।

राजा रानी पोहपाल को उठाकर उसको चूम रहे है हो ss

कैसे मिल भेंट कर रहे हैं दादा

रानी पोहपाल और भोजे बल्लारे हो

बहन और भाई

रो रोकर दादा

कैसे विपत्ति बताती है

रानी पोहपाल रे भाई

गढ़ा राज्य की दादा

कैसे सुन रहै है भैया

राजा भोजे बल्लारे

अब चले है बहन को लेकर महल में हो SS

हो SS अब देखा है उसकी औरतों ने झरोखा से रे भाई ! सिपाहियों पर कोड़े पड़ रहै है रे दादा! राजा अपनी बहन के साथ रो रोकर मिल रहे थे भाई । तब अपनी गलती जानकर सकपका गयी रानी हो ।

हो SS दोनों रानी ने सोने के झूला में झूलना छोड़ दिया खड़ें खडें कांप रहीं थी डर के कारण, कौन जाने कितनी पिटाई पडेगी अब ।

हो SS आये है भोजे बल्लारे महल में जिस समय फटकारा है बाघ मार कोड़ा सड़ा सड़ रानी की पीठ की एक परत चमड़ी उधड़ गयी। रानी पोहपाल भाई के हाथ को पकड़ती है। उससे कोड़ा छुडाती है । अपनी कमर से लपेट लिया पर राजा नही मानते। मेरी बहन का बदला लूंगा कहते है राजा।

हो SS जब राजा नही मानते तब पोहपाल बोलती है।

भेया आप नही मानते हैं तो मै जाती हॅू। आपके घर मैं अब कभी नही आऊंगी।

अब कभी नही आंऊंगी रे भेया
तुम्हारे धर में दाऊ
दोऑखं की गुड़िया जैसी
मेरी दोनों भाभीयां है
मेरे कारण रे भेया
तुम उन्हें मारे डाल रहे हो
मैं अब यहां रहकर क्या करूंगी

इस घर की मालिकन जब मेरे से नाराज रहेंगी। तब मैं किसके कारण यहां रहूरंगी रे भैया।

बहन की बातों को सुनकर राजा की गुस्सा शांत हुयी।

हो SS अब सोलह घडे पानी गर्म करवाया हैं। बारह घडे उसमें ठंडा पानी मिलवाया है । नहला रही है दोनों रानी अपनी ननद को हो।

हो SS पत्थर से खूब घिस - घिसकर नहला रही है । बारह वर्ष के मैल को घिस घिसकर निकाल रही है । कैसे उसके शरीर में गुदगुदी लगाकर हंसा रही है। पोहपाल को । कैसे स्नान करके तेल, हल्दी लगा रही है पोहपाल को हो SSS

अब सोने की संगोसी
निकाला है दोनों ने
पहनने की ओढनी
निकालते है रे भैया
रंग - रंग के कपड़े
पहनाती हें रे भैया
रानी पोहपाल को
दोनों भाभीयां रे दादा
हो SS क्या वस्त्र पहनाती है

रानी पोहपाल को ?

बारह थान का लंहगा

चौदह मुट्ठी की तिरनी

झीका तानी अंगिया

अठारह बैलन की कानी

चारम चीरा फरिया

चारों खूंट में बरैं हीरा

तीरन के अंगिया

पूरब के चोली

झिन मछयावर अलंगा

इन सभी वस्त्रों को टोकनी से निकालकर पहना रही हैं हो ऽऽ

हो ऽऽ अब कैसे जेवर गहने पहना रहे हे पोहपाल को ?

राय बैजन्ती पैरी

देश भंगान टोड़र

रतन जोत के खीला

गवरी गजन की चूडी

हरी सांप खंगवारी

चंदा सूरज मनयारी

सुन्नत की बिंदया

कपाल में ढुरक रहे हैं हो ऽऽ

हो ऽऽ रानी पोहपाल स्नान करके कपड़ा और गहने पहन कर तैयार हो गयी। दोनों भाई बहन खाना खाने बैठे है । एक रानी खाना परोस रही है । एक रानी मक्खी हकाल रही है । भाई बहन खाना खा रहे है ।

हो ऽऽ कैसे खाना खा रहे है भाई - बहन

इलायची के समान चांवल

गंगा - जमना की दाल

अड़गुन भटा, बैगन भटा

छोटी कुंदरु, लम्बे चचेड़ा

सलकत बामी उड़त लावा

चिकन मुंहा, सुहांरी

ऐंठ मुंहा ठठरा

मत मुंहा बबरा

लिर लुड दलिया

दुर दुर भजिया

अदौरी बरी, धिनौचा तरी, चटुवा नाचै घरी घरी । ऐसे नाना प्रकार के पकवानों का भोजन कर रहे है भाई - बहन ऽऽ

अब भोजन कर के
फुरसत हुये हैं दादा
बैठे है पलंग पर
बहन और भाई
एक तरफ बैठी है
दोनों रानी
राजा कहते है अपनी बहन से हो ऽऽ
क्यों दीदी
इतनी दूर से आयी हो
मेरे लिये क्या लायी हो
क्या लाती रे भाई
गरीब जो हूँ रे
तुम ठहरे राजा
तुम्हारे लिये क्या लाती रे भाई
ऐसा बोलती है रानी पोहपाल हो ऽऽ
तब कहते है राजा
नही मानता बहन
मेरा नाश्ता निकालो
मुझको मत ठगो
तब निकला है नाश्ता रानी पोहपाल ने हो ऽऽ

हो ऽऽ महुंआ का लाटा, खमैर के ढोला, केवलार की भाजी कैसे प्रेम से खा रहे है राजा भोजे बल्लारे हो।

कैसे दोनों रानियां खा रही है हंस हंस कर हो ऽऽ

कहती है आज मन का खाना मिला है । अपनी ननद के घर का है ज्यादा स्वादिष्ट लगता है।

हो ऽऽ कैसी बूचल चिनिया की शराब पी रहे है भोजा बल्लारे हो ।
ठोला रे दादा
महुआ के लाटा
खम्हेर के ठोला
केवलार की भाजी
चिनिया की दारू
खतम कर दी दादा
तेंदू और चार
भिलमा ओर डूमर
खा रहे है भेया
बहन का लाया व्यंजन कैसे खा रहे है रे भाई ऽऽ।

हो ss व्यंजन खा गये । शराब पी डाली । अब नशा छाया हे भोजे बल्लारे को हो ss

हो ss क्या बोल रहे है भोजे बल्लारे !

कहते है । बहन तुम बहुत दिनों में आयी हो । तुमको भगवान ने गरीबी दे दी हे। पर तुम्हारे भाई के पास ईश्वर की दया से सब कुछ है । मांग ले जो मांगना है । ले जा जो लेना हो । मैं तुम्हारा हाथ नही पकड़ सकता।

ऐसा बोल रहे हे भोजा बल्लारे हो ss

हो ss अब बोली है रानी पोहपाल । सुन ले रे भेया ss। मुझे कुछ नही चाहिये। मेरे दहेज का जो समान मेरे माता - पिता ने मुझे जो दिया था । सिर्फ वही चाहिये। तुम्हारा कमाया हुआ मैं नही मांगती। हमारी भाभीयां नाराज हो जायेंगी। आखिर मेरे माता - पिता की कमाई में मेरा हिस्सा है । उसे भर दे दो।

क्या हिस्सा है तुम्हारे दहेज का उसे खुलकर बताओ।

तब बता रही है रानी पोहपाल रे भाई ss

तुम सुनलो रे भैया
मेरे माता - पिता
मेरी शादी के समय
दहेज दिये थे
एक चांदी के समान भैसिंया
एक मुंडी बकरी
हीरा नगीना बैल
सत गजरा दाना
उसे मैं नही ले गयी थी।
वही दहेज है रे भाई
तुम मुझे दे दो रे भेया ss

हो ss सुनकर हंसते है भोजा बल्लारे कहते है यह क्या मांगती हो बहन कितने दिन हो गये वो तो बूढ़े हो गये थे उनकी मृत्यु हो गयी है। उनके बदले में जो चाहिये ले जा इतना बड़ा परिवार हे । जो तुमको पंसद हो ले जाओ। तब बहन कहती हे नहीं रे दादा भैया ! मुझे वहीं चाहिये बूढ़े हो जाये चाहें कैसे भी हो जाये । जो मेरी किस्मत में होगा वहीं मिले ।

चांदी के समान भैसिया
मुंड़ी रे बकरी
हीरा नगीना बैल
भाग्यवान रहे दादा
इनमें ही तो
बड़े देव का वास था
इस बात को दादा
भोजा बल्लारे जानता था रे भाई

इसलिए रे भैया
राजा टालता है
इसलिये रे दादा
रानी पोहपाल लेने के लिये अड़ गयी हो ss

हो ss भोजा बल्लारे समझा रहा है बहन को ! वे जानवर तो बूढ़े हो गये है बूढ़े का क्या करोगी बाई आज ले जाओगी कल मर जायेगे मेरी बदनामी होगी लोग कहैगें बहन को ठग लिया पर बहन ने हट पकड़ ली कहती है मैं नहीं मानूंगी मुझे वहीं चाहिये । अब दे रहे है भोजा बल्लारे हो ss

ले जा बहन तुम तो नहीं मानती जो तुम्हारे कर्म में होगा तो वहीं भोगोगी ।

होss अब कह रहे है राजा भोज बल्लारे ! बहन तुम अपना सत गजरा दाना और ले जाओ निकाल लो कोठी से जितने तुम्हें चाहिये ।

खुला है भंडार री बहन
भरे पड़े है दाना री बहन
घर और बाहर में नहीें समाता
जितना दिल चाहे ये बाई
अपने हाथों से निकाल लो हो ss

हो ss बहन कहती है भेया मेरी चिनिया में जितना समा जाये उतना ही चाहिये ।

यह छोटी सी चिनिया में
कितने दाना आयेंगे री बाई
एक पसों में भर जायेगा और क्या
तुम क्यों मेरी हंसी कराती हो
बोरों में भर ले बाई
बैलो में लादकर ले जाओं
मैं चिनिया भर दाना नहीं देता

हो ss रानी नहीं मानती कहती हे भैया में चिनिया भर से ज्यादा नहीं लूंगी मेरा जितना हिस्सा है उतना ही लूंगी । अब रानी नहीं मानती रे भाई ।

हो ss तब राजा नौकरों से कहते है जाओ यह चुनिया मुंह तक भर देना नौकर लेकर जा रहे है भाई !

हो जब भर रहे है चिनिया
उस समय में गजब तो हो गया
कोठी पर कोठी
फोड़ते जा रहे हे रे दादा
उस चिनिया का पेट रे
नहीं तो भर पा रहा
पेंदी में चिपके हुये दिखते है दाना
बारह कोठी फूटी

सोलह कोठी फूटी
नहीं है ठिकाना
नौ सौ कोठी फूट गयी दादा
चिनिया नहीं भर पा रहीं हो
तब तो रे भैया
राजा घबड़ाया
बस करो मेरी बहन
मै हार गया बहन
तुम्हारी सत्य की जय हो दीदी
हो गई परीक्षा री बाई
तुम्हारे सत्य जैसी बहन
कोई नहीं इस धरती में

मैं हार मानता हूँ दीदी मेरे कसूर को माफ कर दो !

हो ss उसी समय बड़े देव शंकर झूला से उठकर आते हे बोलते है राजा से हो ss

क्या बोलते है बड़ा देव ! कहते है सुन रे राजा ! रानी पोहपाल की बराबर धरती में और कोई सत्यवादी नहीं है ।

कैसे सत्य ईमान से राजा
अपनी विपत्ति काट रहीं हे
अपने पति के साथ रे भाई
दुख सुख की साथी है
यह रानी पोहपाल रे भाई
बड़ी सत्यवादी रानी है भाई

हो ss और क्या बोलते है बड़ा देव, सुन ले राजा मैं इसी लड़की के साथ मृत्यु लोक में जांऊगा । मृत्यु लोक में ऐसी सत्यवादी हें मैं वहां उन्हीं के साथ रहूंगा ।

सुनकर राजा रोने लगे हे हो sss
हो ss बोल रहे हे बड़ा देव सुन ले रे राजा
इस पाताल कोट में
बहुत ज्यादा झंझट हे
मेरा मन रे राजा
उकता गया है दादा
कुछ देश दुनिया को
मेरी भी देखने की इच्छा है
इस लड़की के साथ जाने में
मर्यादा बनी रहेगी
इसलिये राजा मै जा रहा हूँ भाई
तुम जब बुलाओगे मैं आ जाऊंगा रे भाई रे ss

अब करते है बिदाई !

चली है रानी पोहपाल रे भाई ।।

चल रहीं हे चांदी भैसिया

चल रहीं हे मुंडी बकरी

हीरा नगीना बैला

कैसे हांक रहे दादा

सत गजरा दाना को

बूची चुनिया में रखे

बड़ा देव को गोदी में रखे

पैदल चलनें लगी रानी पोहपाल हो ऽऽ

हो ऽऽ अपने भाई से भेंट कर रहीं है अपनी भाभीयों से भेंट कर रहीं है । गांव बस्ती के बुजुगरें से भेंट कर रहीं है सबसे भेंट भलाई करके रानी पोहपाल चल दी है रे भाई ।

हो ऽऽ चली जा रहीं है रानी

मन में खुशी है रे भाई्

भैया के आदर सत्कार को

भाभीयों के आदर सत्कार को

सोच सोचकर रे दा दा

अपने मन में रे भैया

खुशी होती जा रहीं हे रे भेया

अपने मन में कहती है

भाई हो तो ऐसा हो

भाभीयां हो तो ऐसी हो

नहीं तो कोई न हो

हीरा नगीना रे बेला

लदे लदाय जा रहा है

भूरी भैसियां रे भैया

पगुराते जा रहीं है रे दादा

मुंड़ी बकरी रे हीरा

मिमयातें जा रहीं है भैया

आठ दिन नौ रात में

जाकर पहुंच गयें भैया

गढ़ा के राज्य में भाई्

जाकर खड़ी हो गयी अपने धर के दरवाजें में हो ऽऽ

हो ऽऽ जैसे ही आवाज सुना है राजा ने हड़बड़ाकर निकले है घर से इन सबको देखकर चकित हो गये राजा !

रानी कहती है तुरंत पानी लाओ राजा बड़ा देव आये है उनके पैर धुलाओं पहले !

हो ss राजा ने तुंरत लोटे में पानी निकाला ! पीढा़ के ऊपर रखकर बड़ा देव के चरण धुलाये फिर उन्हें अपनी गोदी में लेकर चूमा चाटी कर रहें है ।

हो ss रानी कहती हे !

क्यों रे राजा ! पाताल कोट में तो बड़ा देव सोने के झूला में झूलतें थे ? अपन कहां पायेगें सोने को झूला तब राजा कहतें है अपन पीढ़ा का झूला बनाकर मोवा की रस्सी से झुलायेगे जो हमारे पास है वहीें तो सोना है ।

अब डाला है झूला रे भेया
लकड़ी का पटा सुमा की रस्सी
बंध गया झूला
बड़ा देव का भाई्र
बड़ा देव झूल रहे हे हो ss

हो ss अब राजा पूंछ रहे है रानी से ये रानी कैसा आदर सत्कार हुआ तुम्हारे भाई भाभीयों के यहां । इस लंगोटी को वहीं झाड़ियों में बहाकर आ जाओ । इन वस्त्रों को पहन लो मैं लायी हूॅ आपके लिये राजा कहते हें। तुम तो कुछ ही दिनों में कितनी सुंदर होकर आ गयी हो रानी कुंआरी कन्याओं जैसी दिखती हो कितनी सुंदर हो । तुम स्नान करके आओं राजा तुम अच्छे वस्त्र पहनोगे तो तुम भी मुझसे सुंदर दिखोगे ।

ऐसी बात कर दोनों पति पत्नि हंस रहे है हो ss
हो ss राजा पेमलशाह रे भाई्र
स्नान करके आ गये
यहां रे दादा रानी पोहपाल
अच्छा अच्छा भोजन
बनाकर रखी है दादा
राजा को अपने सामने
बैठालकर भाई्र खिला रही है भाई रे ss

हो ss बारह वर्ष में आज अनाज से भेंट हुयी है राजा की राजा पेट भर कर अनाज खा रहे हैं रानी मक्खी हांक रहीं है पंखा हिला रहीं हे। खा पीकर दोनो विश्राम कर रहे है रे भाई ! दूसरे दिन सुबह हुयी है रे दादा मुर्गी के बोलते ही राजा पेमलशाह उठ गये है भैया बैल, भैंस, बकरीयो को छोड़कर ले जाने लगे भाई्र।

हो ss बैलों में फांदे है टूटा नागर में हो ss

हो ss बहुत सुबह राजा पेमल शाह छोड़े हैं भैंस को बैलो को अैार बकरियो को । हो ss टूटा हुआ हल रखकर निकले है घर से कहती है रानी ! कहां चले राजा ! राजा कहते है जाता हूॅ रानी कहीं खेत खोदुंगा तभी तो गुजर - बसर होगी । तो मैं भोजन रखकर कहां आंऊगी राजा बोल रही हैं रानी । तुम नागर की सीघ में चले आना । हां तों तुम जाओं ! कहकर रानी अपने घर के काम में लग गयी अब चले हैं रे भाई्र।

हो कैसे चलें है राजा !
बैलो में हल फांदे

हाथ मे मुठिया रखे
चले जा रहे है राजा
कंधे में कुल्हाड़ी
कमर में हंसियां
आगे आगे भैंस
और है बकरियां
हीरा नगीना बैल
ले जा रहै है राजा
हवेली की और भैया

जाकर छोड़े है हवेली में हो ss

होss कया देखा है हवेली में , जमीन काली होकर सूख गयी है हो ss

जमीन के ऊपर घास ही घास मोवा की कांस ही कांस छाया हे कटीली झाड़ियां लगी हैं ।

लेकर कुल्हाड़ी रे भैया
जरिया को काटने जुटे हे
लेकर कुदाली रे दादा
धास खोदने लगे
काम खतम नही हो रहा
हिम्मत नहीं पड़ रहीं है
कहते है जाये मरे वहां
हवेली में रे दादा
मेरे भरोसे खेती नही होगी रे
चलो चलें जंगल की ओर रे भाई ss

हो ss थक गये है राजा , कांस और कोदों के कारण नागर का फल नही चल रहा हे । कोदों में पैर धंसता है कोदों में नागर का फल उलझता हे बैल नहीं खीच सकते खोदने से नही खुदता , इसलिये यहां हो ss राजा जंगल में नागर रखकर आ गया है हो ss

यहां जंगल में ।

झाड़ी झंकाड़ को
काट काट दादा
धरती में बिछाने लगे दादा
एक तरफ से लगा दी आग
पूरी धरती जल गई्
तब नागर उठाकर
खुरूर खुरूर जोतने लगे भैया

कहते है यह ठीक है॰ कुछ ज्यादा मेहनत नहीं लग रही सीधे में खेती करके दाना उपजाऊंगा ।

अब जोत रहे है राजा पेमलशाह हो ss

अब यहां की बात यहीं छोड़ो भैया
दिल्ली वाले रूम्म बादशाह का
हाल सुनाता हूँ रे दादा
दिल्ली के रूम्म बादशाह
बैठे है रे दादा
तरवत के ऊपर भैया

हो ss जिस समय पेमलशाह ने भाटा पहाड़ी में पेड़ों को काटकर आगी लगायी हे । जिस समय में आग की लपटें उठी है उसी समय में रूम्म बादशाह की दाढ़ी में आंच लगने लगी हो ss

दाढ़ी मे हाथ फेर रहे है बादशाह और कहते हे कोन है जंगल में आग लगा रहा हे हो ss

जिस समय नागर चले है पेमलशाह के भाटा पहाड़ियों के दादर में उस समय में रूम्म बादशाह का तखत हिलने लगा है हो ss

अब तो रूम्म बादशाह ने अपना घोड़ा कसाया गढ़ा को उड़ चले हे हो ss ।

अब पहुंचे हैं बादशाह
गढ़ भाटा की पहाड़ियों में रे दादा
क्या देखते हे भाई
लगी हे आग रे दादा
जल रहै हैं पत्ते रे भाई
राजा पेमलशाह दादा
नागर जोत रहे हे हो ss

हो ss पहुंचतें ही रूम्म बादशाह बोलते है ! क्या बोलते है बादशाह कहते हें यह क्या कर रहे हो भोई राजा ! इतनी बड़ी हवेली को छोड़कर इस बंजर जमीन में नागर फांदे हो तुम यहां कितनी कमाई करोगे । राजा बादशाह से सलाम करते है फिर बोलते हे मालिक यह पहाड़ बंजर है इसलिये यह पहाड़ी मेरे लिये अच्छी हे न मेहनत न खर्च खोद खोदकर बीज बो दूंगा और फसल काट लूंगा ।

हो ss तब तो तुम बहुत काम चोर हो भाई मेहनत से जी चुराओगे तो उन्नति कैसे करोगे,जो कुछ देगा भगवान इसी में राजा एक मुठठी बीज बोयेगे तो सौ किलो पाऊंगा कौन जोड़कर रखना है ।

अब बोल रहै है रूम्म बादशाह रे दादा
तुम सुन लो रे राजा पेमलशाह
यहां गढ़ा में तो दादर नहीं है राजा
तुम चले जाओ चौरा दादर गढ़ मंडला हो ss

हो ss बादशाह बोल रहे है सुन रे राजा ! यहां गढ़ा में तो दादर नहीं है थोड़ा सा है जो जल्दी खतम हो जायेगा, तुमको जंगल काटना हो तो चौरा दादर गढ़ मंडला चले जाओ बहुत बड़ा दादर है जहां इच्छा वहीं काटो जोतो ।

हो ss तब राजा बोलते हें आखिर अपनी जमा पूंजी बता दो ,पांच कुडे लम्पा के चांवल और

पांच कुड़े सिंहार के बीज साल भर की यही जमा आयी हे ।

हां तो कहा है राजा पेमलशाह ने हो ss

अब रूम बादशाह अपने घोड़े पर बैठकर दिल्ली जाने लगते हैं और राजा पेमलशाह अपने नागर छोडकर नागर को सभांलकर रख रहे है हो ss ।

रानी पोहपाल रे दादा
सुबह उठकर
गोबर पानी करके
घर का काम करके
पनघट में स्नान करके
रोटी बनाती है
हंड़ी में पेज भेया
दोना मे भाजी
पत्ता में रोटी
सिर के ऊपर हंड़ी रखकर
चली जा रहीं है खेत में पेज रखकर हो ss

हो ss अपनी रास्ता चली जा रहीं है रानी को राजा बाजू में नहीं दिखते तो सामने की ओर देखती जा रहीं है हो ss ।

चली जा रहीं है रानी
पत्थरो में टकराकर
झाड़ियो को नाकतें
घाटियों में चढ़ते
अपनी रास्ता भेया
दोपहर हो गयी
सोचती हे मन में
राजा को भूख लगी होगी हो ss

हो ss जाकर पहूंच गयी रानी पोहपाल खेत में क्या देख रही है रानी !

राजा ने बारह कोस का खेत बना डाला है नागर ढ़ील दिये हे !

हो ss और क्या देख रही है रानी ?

हीरा नगीना बैल
हरा हरा चारा चर रहा हे
चांदी भैंस
पानी के डबरे में तैर रहीं है
मुंडी बकरी
झाड़ियो के नीचे बैठी पगुरा रही है ।

हो ss और क्या देख रही है रानी ?

देख रहीें है कि राजा नागर ओर जुंआड़ी रखे हुये झाड़ियों के नीचे छाया में बैठकर तम्बाखू

पी रहै है रानी लपक कर राजा के पास पहुंच गयी कहती है भूख लगी है क्या राजा । नहीं बासी जो खवा दिया था तुमने सुबह किस लिये भूख लगती राजा ऐसा कहकर हंस रहें हे हो ss ।

अब रानी रे दादा
उतारती है खाना
झाड़ियों के नीचे भैया
दोना में पेज
पत्ते मे भाजी
दे रहीे है राजा को
थाली में रोटी
रख दी है दादा
मटके मे पानी
रख दिया है भाई
तूमा निकालकर
कहती है रे राजा
हाथ मुंह धो लो
पेज पी लो राजा हो ss

हो ss राजा तुरंत उठ जाते है तूमा में पानी निकाला हे हाथ मुंह धोकर खाना खाने बैठ गये है।

कैसे बैठ गये है राजा
पत्थर के ऊपर दादा
सामने बैठी हे रानी
परोस कर दे रही है
हंस हंस कर भेया
कैसे जंगल में मंगल
हो रहीं है भाई
बनी है जोड़ी
भगवान की करनी रे दादा
पेज भाजी खाकर
खुशी रहते है रे दादा
कैसे खुशी के दिन है रे भैया

हो ss पेज पी रहे है राजा हंसी मजाक हो रहीं हे दोनों के बीच में !

हो ss केसे नजर पड़ी है राजा की रानी पायल के ऊपर एक पायल सोने की आगी के समान दमक रहीं है और एक पायल चांदी की चमक रहीं है । हो ss राजा के मन में पाप समा जाता है ।

सोचते है राजा

अपने मन में भाई

कल तक तो दोनों पायल

चांदी की रही रहीं ओ

आज एक पायल भैया

सोने की कहां से ले आयी

किसी की रानी से मित्रता है क्या हो ऽऽ

हो ऽऽ ऐसा पाप समाया है राजा के मन में पूंछ रहे है राजा रानी से क्या पूंछ रहे है कहते है क्यों ये रानी कल तो तुम्हारे दोनो पैरो में चांदी की पायल थी आज एक पायल सोने की कहां से आ गयी है तुम इसका रहस्य बतलाओ रानी ऽऽ ।

हो ऽऽ जब देखा हे रानी ने अपने पैरो की तरफ उस समय रानी अकबका जाती है सच में एक पायल चांदी की थी एक पायल सोने की । रानी कहती हे राजा मे इसका रहस्य नहीं जानती घर से जब मैं चली थी तब तो दोनो पैरो में चांदी की पायल थी । परंतु रास्तें में कैसे कैसे यह हो गया मैं नहीं जानती । अब राजा को गुस्सा आ गयी हो ऽऽ ।

हो ऽऽ दोना के पेज को उठाकर फेंक दिया राजा ने मिटटी के मटके को पैनारी मार कर तोड़ डाला कहते है तुम किसी से दोस्ती कर रहीं हो ,इसलिये किसी ने याद में यह पायल दी है इसका क्या रहस्य है सही सही बता दो नहीं तो कुल्हाड़ी से तुम्हारे टुकड़े कर दूंगा ।

अब रानी दहाड़ मारकर रोने लगी हे

अब रानी रो रहीं है भैया

कहती है हे बड़े देव

मै सत्यवादी नारी हॅू रे

तुमको थोड़ा सा भी हाल मालुम हो तो बडा देव

आखिर कुछ मेरे में पाप हो तो

तुम मुझे अंधा कर दो

कोढ़ निकाल दो

मेरे अंग अंग में कीड़े पाड़ दो

यदि में सत्य हॅू तो

तो इस राजा की मति को

सही कर दो बड़ा देव

तुम्हारे मैं हाथ जोड़कर विनती करती हॅू ऽऽ

हो ऽऽ जब बड़े देव की विनती करती है रानी बड़ा देव की सौगंध खाती है तब राजा को विश्वास हो जाता है । बडे देव ने अपना चमत्कार दिखाया है हो ऽऽ

हो ऽऽ अब राजा बोलते है रानी तुमने बड़े देव की सौगंध खायी है इसलिये मैंने तुम्हारे ऊपर विश्वास कर लिया है। परंतु यह कैसे सोने की हो गयी यह संदेह कैसे दूर होगा इसकी शंका कैसे दूर होगी । मैं क्या बताऊ राजा मेरी अक्ल काम नहीं कर रही है कहती हे रानी ।

तब राजा बोलते हे । तुम जिस रास्तें आयी हो उसी रास्ते से घर को चलो अपने दूसरे पैर की पायल को पत्थरों से छुलाती चलना देखते है इसमें कुछ महिमा मिलें ।

अब चली है रानी रे भैया
सिर के ऊपर पेज का मटका रे दादा
पीछे है राजा
नागर पैनारी रखे
हीरा नगीना बैल
चांदी के समान भेसियां
मुंडी बकरी
हंकालतें ले जा रहे रे भाई
सब उसी रास्तें से चले जा रहे है रे भाई

हो ऽऽ चलते - चलते रानी को एक पत्थर से ठोकर लग जाती है होऽऽ क्या देखती हैं रानी दूसरे पांव की पायल भी सोने की हो गयी है। आग के समान दमक रही थी। रानी राजा को बुलाती है ओ राजा! ओ राजा !

क्या है रे रानी

कहती है आइये आइये मिल गया

अब राजा दौड़कर आते हैं हो ऽऽ

जब आये है राजा देखते है पायल को तो दोनों पायल आग के समान दमक रहीं थी रानी कहती है राजा यहां इस पत्थर के छूने से ऐसा हुआ है ।

हो ऽऽ अब राजा ने अपने हल का फाल जब छुलाये है उस पत्थर से तो वह लोहे का फाल सोने का हो गया दमकने लगा आग के समान ।

अब तो रे दादा
राजा और रानी
खुशी हो गये भैया
पारस का पत्थर
पा गये दादा
राजा कंधे में रखकर चल रहे है

उस पारस पत्थर को हो ।

बडे देव का प्रताप है
राजा रानी के रे भाई
दिन वापस आ गये
ढेर सारी जमीन मिल
खेती करने रे भाई
पारस पत्थर मिल गया
अब नहीं है कमी
राजा को भैया
अब चौरा दादर में
बसने की रे भैया

होने लगी तैयारी
कैसे गृहस्थी का समान रखकर चल रहें हे गढ़ मंडला के राज्य में हो ss
कैसे कंधे में कांवर
रखे हुये हे राजा
एक तरफ पारस पत्थर
दूसरी तरफ बड़ा देव को
रखे है भाई
कैसे कपड़ो का गट्ठा
बूची चिनिया में सात गजरा दाना
सिर में रे दादा
बोल रहीं हे रानी
चांदी भैंस
मुंडी बकरी रे
हीरा नगीना बैल
आगें आगे भैया
दोड़ते जा रहे हे
कैसे राजा और रानी
चौरा दादर में रे भाई
बसने जा रहे है दादा
इस पेट का बुरा हो जाय हो ss
कैसे एक जंगल पार करते हे
दो जंगल पार करते है
नरई नाला को
हिंगना की झाड़ियां
मॉ नर्मदा
रपटन धाट
डूबते कौना
पार हो गये भाई
दिन भर चलते है
रात होती है तो सो जाते है
चले जा रहे है भैया
बैलो को चराते
भेंस को तैराते
बकरी को कुंदातें
चले जा रहे हे राजा रानी हो ss
हो ss आठ दिन नौ रात में जाकर पहुंच गये है चौरा दादर में रे भाई ss

हो ss बड़ा देव बोलते हे बस राजा बस यही है चाौरा दादर यही रूक जाओ । रात्री में वहीं रूक गये सभी लोग हो ss

हो ss सुबह हो गयी ! राजा से बड़ा देव बोलते है राजा सात हाथ की साजा लड़की की बल्ली काट कर ले जाओ यहां थून देवी है !

अब राजा रे भाई
उठाये हॅै कुल्हाड़ी
गये है जंगल में रे भाई
काट रहे है सात हाथ की
साजा की बल्ली रे भाई
लाये है कंधे में रखकर

पटक देते हे लाकर बड़ा देव के सामने हो ss

हो ss अब बड़ा देव बोलते है नर्मदा की ओर मुंह करके मेरे नाम से हवन करों ओर इस बमीठे में बल्ली गढ़ा दो । राजा ने हवन किया ओर बमीठे के ऊपर बल्ली गड़ा दी ।

हो ss उस बमीठा में रे दादा
एक मसान रहता था
वह बल्ली रे दादा
जाकर मसान के सिर में
घप से घुस गई़ रे भाई

हो ss खून की धार निकल आयी रे दादा ।

हो ss अब क्या कहना ! राजा वह खून देखकर घबड़ा गया कहता है यहां किस जीव की हत्या हो गयी हे ! राजा तुरंत बल्ली उखाड़ लेते है ।

अब देख रहे है बड़ा देव रे भैया
कहते है राजा
यह ठीक नहीं किया रे भैया
तुमने बल्ली क्यों उखाड़ ली
मैंने तो जान बूझकर गड़वाया था
जन्म जुगाधन के रे राजा
तेरा राज्य न समाप्त होता
आखिर क्या करोगे बेटा
जो किस्मत में बदा होता है
वहीं होता है रे भाई
तुम्हारे गोंड़ो के राज्य
कभी न कभी समाप्त हो जायेगा रे भाई

ं ऐसा कहकर बड़ा देव उस बल्ली को दिखाते है हो ss

अब बल्ली दे दी रे दादा
राजा रानी सोचते है मन में

पहले महल बना ले रे भाई
इसके बाद दूसरा काम देखेंगे
बैठने की जगह तो हो जाएगी।
फिर खाने पीने का देखा जाएगा
अब हो रही है महल बनवाने की तैयारी हो ऽऽ
हो ऽऽ राजा पेमलशाह जिस समय जंगल गये है जिस पत्थर में हाथ लगाते थे वह अपने आप लुड़क कर भागने लगे पत्थर को पत्थर हांकने लगे।

हो ऽऽ गायों जानवरों की तरह पत्थर खड़बड़ाते आ रहे है। आकर नर्मदा के किनारे जमा हो रहे हैं।

क्या कहना भैया
आश्चर्य की बात है
जगंल के पत्थर
जिसके ऊपर नजर डालो
वह रे दादा
अपने आप चलते जैसे है रे भैया।
एक दूसरे पत्थर को
हांकने जैसे कर रहे रे दादा
गायों और जानवरों के समान
रड़वड़ाते चले आ रहे है रे दादा
कोई नहीं था भैया
बिना कारीगर के रे दादा
महल बन रहा था
रात को चार गुना रे भाई
महल बनते जा रहा रे भाई
हो बिना राज मिस्त्री के, बिना कारीगर के
महल बन रहा है भैया।
पत्थर दौड़ते आ रहे है
एक दूसरे के ऊपर चिपक कर आ रहे है
दिवाल दरवाजे अटारी सब
अपने आप बनते जा रहा है रे भाई
राजा देख देख कर मग्न हो रहे है हो ऽऽ
एक दिन रे राजा पेमलशाह
रानी से मजाक में कहते है रे भाई
देख रानी मेंरे पुण्य प्रताप को
जिस पत्थर को हांकता हूँ रानी
गायों और जानवरों की तरह

दौड़कर आते है

हो SS सुनकर रानी कहती है ।

राजा यह झूठ है।

मर्द का सत्य नही रहता ।

वह तो औरत के सत्य में आय

चंद्रमा और सूर्य उल्टा ऊगनें लगते हैं

तुम्हारे सत्य से नही। मेरे सत्य के कारण

राजा यह पत्थर दोड - दौड आते है।

हो राजा को विश्वास नही हुआ । कहते हैं मैं कैसे मानू। मैं तों हांककर लाता हूँ तो मै जानू की तुम यहां धर में बैठी रहती हों।

रानी कहती है । औरत चाहे कहीं भी हो उसकी मर्यादा से ही घर गृहस्थी चलती है। मैं इसे नही मानता कहता है राजा। कहते है चलो पत्थर लेने जाना है।

अब चले है राजा

चौरा के दादर मा

कह रहे है पत्थरों से

छूते है एक पत्थर को

दौडने लगे है पत्थर रे भाई

राजी खुशी होकर

पीछे पीछे आ रहे है भाई

हो SS कहते हैं रानी को जाकर बताऊगां । आज किसके सत्य से पत्थर चल रहे है । ऐसे प्रसन्न हो रहे है राजा हों

अब यहां रे दादा

रानी पोहपाल रे भैया

बना रही है खाना

पसाये है चांवल

थाली में पसिया डालकर

थोडे से चांवल रे दादा

दो घूंट पसिया को

पी रही है भैया

हो SS उसी समय में वे पत्थर जहां के तहां रूक गये।

अब राजा एक एक पत्थर को छू रहे है। परंतु वे पत्थर अचल हो गये है। वे हिल तक नही रहे है।

हो SS ढेर लग गया पत्थरों के एक पहाड बन गया। बडी दीवाल के समान पत्थर इकटठे हो गये।

उसी को आज हम लोग करिया पहाड कहते है

अब दोडे है राजा

आये है घर में
हांफते रे हांफते भाई
रानी देखकर पूंछती है राजा
कैसे आज पत्थर नही लायें
कहते हे क्या बताऊं रानी
अड़ गये पत्थर ओ
चल विचल नही हो रहे है
कहती है अपने प्रताप से लाओ न राजा
देखो तुम्हारे बिना खवाये
मैने चांवल की मांड पीली है
इस करण से राजा
मेरा सत्य खतम हो गया है
अब तुम अपने सत्य से
पत्थर लाकर बताओं
हो ss राजा कहते है रानी सत्य ही है
तुम्हारे ही सत्य से पत्थर दोडते रहे हे मैं मान गया इसको
अब राज मिस्त्री लगवाकर महल बनवा रहे है हो ss
महल और अटारी
बन गयी दादा
बारह कोस के मैदान में
राम नगर बस गया है भैया
चौरा दादर में राम नगर बस गया है भैया
चौरा दादर के
अरना पठार में
राजा की खेती होने लगी भाई
दूर - दूर से लोग आकर वहां बसने लगे भैया
राजा पेमलशाह का राज्य बस गया है हो ss
000ध्000

राजा हिरदेशाह

राजा पेमलशाह का राज्य बस गया चौरा दादर में। खेती होने लगी है रन भाटा में। गांव और नगर महल और अटारी बन गयी । दूर - दूर के लोग आकर बसने लगे है। राजा को टैक्स देने लगे है।

हो ss क्या कहने है। राजा का दरबार लगने लगा है। राजा का न्यायालय लगने लगा है। मुकदमा होने लगे है। राजा के यहां बड़े बड़े न्याय होने लगे है।

हो ss बारह कोस के क्षेत्र में रामनगर बस गया है। राजा राज्य करने लगे है रे भाई।

लौटे है दिन रे भेया
पेमलशाह राजा के
पारस का पत्थर
सोना ही सोना कर दिया
सोना के ईंट रे भैया
सोने की दिवाल
बन गई है रे दादा
महल और अटारी रे
चांदी का चौपाल
रूपयों का भंडार
हीरा मोतियों की झालर
नही है ठिकाना रे भाई
बाग और बावली
ताल और तलैया
आम अमरैया
सागर और बांध
रतन जोत की क्यारियां
फूल और फुलवारी
क्या कहोगे दादा
नही है ठिकाना
संपत्ति का भाई
कमरों से निकले जैसे होती हे हो sss

अब दिन वापस आ गये है राजा पेमलशाह के रे भैया। भाई - बंद आ आकर टोलों में बसने लगे है दादा ! जो विपत्ति के समय मुंह नही बोल रहे थे। वे आकर विनती करते है दादा। यह भगवान की माया है रे दादा ss

भज लो नाम हरि का हो sss

हो कैसे राजा पेमलशाह राज्य कर रहे है । कैसे शंकर शाह, दूधनशाह, बूढ़न शाह, दलपत शाह आ आकर भाई के सहारे में रहने लगे। यह बडा देव की माया है रे दादा।

कैसे सोने के झूला में
कैसे सोने के पिढ़ा में
सोने की सांकल से
बड़ा देव रे भैया
झूल रहे है भाई
राजा रानी झुला रहे है हो ss

हो ss बड़ा देव की सेवा हो रही है। साल साल भर में पूजा और चढ़ोत्री हो रही है बड़ा देव की। रानी पोहपाल प्रतिदिन सेवा कर रही है बडा देव की।

हो ss बडा देव देखते है एक दिन रानी का मन उदास है कहते है । क्यों रानी आज आप क्यों उदास हो। तुम अपने मन का रहस्य बताओ तो । रानी कहती है । क्या बताऊं बडा देव आपसे क्या छिपा है। तुमने हमें इतना राज पार धन दौलत दी। आखिर एक हीरा जेसे पुत्र बिना सब सूना है।

आज के दिन गोद में होता तो खिलाती कुंदाती । मन देख देख कर खुशी होता ।आपने मुझे सोना चांदी के भंडार के ऊपर बैठाल दिया है। परंतु मन ही नही मानता।

बिना बाल बच्चों के रे देवा
यह धन दोलत रे दादा
महल अटारी रे भाई
सभी काटने खाने दौडती है रे देवा
ऐसा मन में लगता है
सब कुछ दिया रे देवा
परंतु गोदी में पुत्र नही दिया
मेरे लिये दादा
संसार में अंधेरा हे देव रे
इसलिये मन सूना सूना रहता है हो sss

हो ss बडा देव मन में सोंचते है । सच तो कह रही है रानी सब कुछ है ! लेकिन पुत्र नही है तो किस काम का।

हो ss जब बोले है बडा देव जा रानी तेरी इच्छा पूरी होगी। तुम अपने मन में शंका नही लाना।

अब तो रानी खुशी हो गयी रे भैया
अब तो रे भैया
बडा देव का वरदान
सफल हो गया है दादा
रानी रे पोहपाल
गर्भवती हो गयी भाई
राजा ओर रानी
मन में खुशी होते है दादा
पेट के अंदर
नौ महीना में रे भाई
अठारह गुरू बालक पल रहा है हो ss

हो नौ महीना पेट के अंदर अठारह गुरू पल रहे है बच्चे के! हो पेट के भीतर गर्भ में ही सभी विद्या पढ डाली है बच्चे नें।

कहते है कहां से जन्म लूँ। पेशाब की जगह से जन्म लूंगा तो कहेंगे पेशाब कर दी है। टट्टी की जगह से जन्म लूंगा तो कहेंगे टट्टी कर दिया है। टज़ूख्ज़ से जन्म लूंगा तो कहेंगे कीचड है। नाक से जन्म लूंगा तो कहेंगे नाक छिनक दी है। कान की जगह से जन्म लूंगा तो

कहेंगे कान का मैल निकला है। आखिर कहां से जन्म लूं।

हो ss जब ढाई पसलियों को तोड कर निकला है बालक। इस कारण हिरदेशाह नाम संसार में फैल गया है।

हो ss जिस समय हिरदेशाह ने जन्म लिया उस समय ढाई घंटों तक पूरे राज्य में सोना और चांदी की बरसात होती रही। और सही में सोना बरस गया। गांव के छोटे - छोटे लोगों ने सोना चांदी बीनकर अपने मकान भर लिये है।

उसी गांव में रे भैया

रह रहे थे अहीर और अहीरन

अहीर गया रहा

गाय चराने

अहीरन जो घर में रही रे दादा

हो ss जिस समय सोना और चांदी की बरसात होने लगी। अहीरन सो रही थी। मुंह ढांककर । उघार कर कपडों को देखती है सच्चा सोना बरस रहा है। थोडी इच्छा हुयी की उठाकर इकटठा कर लूं। फिर कहती है । सभी जगह तो बरस रहा है। मेरा अहीर गाय लेकर गया है। हार में समेट कर ले आयेगा मैं और क्यों मेहनत करूं।

ऐसा सोचकर अहीरन सो गयी है हो ss

अब जंगल में रे भैया

अहीर रे भाई

चरा रहा है गाय

बिखरे है जानवर

एक पत्थर ऊपर

कमर में पोंद के पार धर के

पी रहे थे बीडी रे भाई

हो ss जिस समय सोने की बरसात हो रही थी।

अहीर काम चोर तो रहा ही। सोचता है कोन इकट्ठा करें । सभी जगह तो सोना बरस रहा है । मेरी अहीरन ने तो इकटठा करके कोठी में भर लिया होगा। ऐसा सोचकर अहीर ने सोना उठाया रे भाई ss

अब शाम के समय रे भैया

चला जा रहा अहीरा रे दादा

जानवरों को हांकते रे भैया

पहुंच गया है गांव में

जानवरों को सार में बांधकर

जब आया है घर में

अहीर के खाली हाथ देखकर

कहती है अहीरन

क्या कहती है अहीरन। कहती है क्यों रे अहिरा खाली हाथ आया है। और सोना इकटठा

करके कहां रख आया है।

अहीर कहता है । मैं क्या करता तुमने तो भर लिया होगा इकट्ठा करके कोठी में । उतने ही में काम चल जायेगा। क्या करेंगे ज्यादा रखकर।

ऐ दादा अहीर का नही है ठिकाना । कहता है रांड सुलायी में पूरा सोना खो दिया कैसे तुम सोते रही। गांव भर के लड़का लडकियों ने सोना इकटठा किया है पर तुमने क्यों नही किया इकट्ठा।

अहीरन कहती है तुम भी तो बीडी पीकर बैठे रहे। तुम्हारे आगे सोना बरसा था की नही ? फिर कैसे नही बीना !

हो ऽऽ मची है लडाई अहीर और अहिरन की । वो उसको गाली दे रही थी तो वह उसे कोस रहा था। झीका झपटी होने लगी दोनों में ।

तब तो रे दादा
गांव भर के बुजुर्ग
जमा हो गये भैया
अहीर को समझाने लगे हो

हो कहते है बुजुर्ग । सुन रे अहीरा । तुम दोनों अलाल हो रे । जानवर चराते - चराते जानवर हो गये हो। तुमको मेहनत करना नही आता है।

पंरतु तुम लोग मत लड़ो । हम गांव वाले तुमको रोज मजदूरी दिया करेंगे। जिससे तुम्हारे पास खूब सोना हो जायेगा।

अब रूकी है लडाई रे भैया
बुज़ुर्ग पंच लोग रे दादा
अपने - अपने घर गये हो
न्याय झगडा खतम करके भाई ऽऽ
बहुत सबेरे
अहीरा रे भैया
उठाता है टोकनी
गया है गांव में
घर घर रे दादा
मजदूरी मांगने रे हो ऽऽ

हो ऽऽ मजदूरी मांगने गया है अहीर । घर घर जाकर मजदूरी मांग रहा है गांव भर के लोग पीतल दे रहे हैं रे। मजदूरी में! गिराया है आंगन में। तो पीतल ही पीतल का ढेर लग गया है अहीर पीतल देखकर अपने माथे पर हाथ रखकर रह गया है ऽऽ

कहता है हमारे भाग्य मे सोना नही बदा है पीतल बदा है । उसी दिन से अहिरों ने सोने के जेवर पहनने छोड दिया है। पीतल के ही गहने पहनते है हो ऽऽ।

उसी दिन से मजदूरी चली है रे भाई ऽऽ
अब यहां राजा पेमलशाह को रे भाई
खुशी के मारे नही है ठिकाना

बाजा और गाजा
राज्य भर में भैया
निमंत्रण हो रहा है
सीधा बंट रहा है
अांनद - उत्सव हो रहा है
नाच गाना हो रहा है।
सब जनता खुशी मना रही है।

हो ss बड़े बड़े बैगा आये है। बडे बडे बुजुर्ग जुड़े है । लड़के का नामकरण हो रहा है। अच्छा महूर्त देख रहे हैं । कहते है नाम हिरदेशाह होगा रे भेया ss

हिरदेशाह नाम प्रसिद्व रे दादा
रखा है गुनियों ने
ह्रदय से इसका जन्म हुआ
अढाई पसली तोडकर
इसलिये रे भैया
हिरदेशाह नाम रखा है हो
हो ss अब ह्रदय शाह सोने के पलना में
झूलते है भैया
रेशम की निवार लगी
सोने की जंजीर बंधी
रेशम की डोरी को
पकडे हैं सखी
झुला रही है भैया
हिरदेशाह को हो
एक महीना बीता
छै महीना बीता
साल भर में रे दादा
डुगर डुगर डग रखता है
दो साल में रे दादा
गद फदा कर दौडता है
माता - पिता से
बात करता है भाई
पांच साल में भेया
गली कूचों मे खेलने
लगे है हिरदेशाह
लडकों के साथ में
तीर कमान रखकर

मुर्गीयों को मारते
फुडकी हो या
लावा को मारते है

शिकार के शौकीन हो गये है रे हिरदेशाह भाई

हो ss हिरदेशाह लडकों के साथ खेल रहे है दौड रहे है यहां से वहां - वहां से यहां, खिलवाड कर रहे है।

हो ss तीर कमान रखकर शिकार खेल रहे है हिरेदशाह।

एक दिन भैया रे
रास्ते में दादा
करौंदा का कांटा
गड़ तो गया भैया
पैरों में रे हीरा
हिरदेशाह भाई
आकर रानी के पास
रोने लगा भैया
कहते है मां मेरे लिये जूते बनवा दो

हो ss क्या बोलते है हिरेदशाह कहते है जूते बनवा दो मेरे लिये करौंदा का कांटा गड़ गया है मेरे पैर में ।

हो ss रानी कहती है बेटा चमार को बुला कर नाप दे दो बनाकर ला देगा।

नहीं चमार से नही बनवाता कहते है हिरदेशाह तो किससे बनवाओगे भाई ! पूंछती है रानी में सुनार से बनवाऊंगा सोने के जूते।

आया है छलबलिया सुनार हो ss
कैसे आया है सुनार रे भाई
कहता हे क्या बात है मालिक
कहता है तुम मेरे लिये सोने के जूता बना दो रे सुनार
ऐसा जूता बना दे सुनार
जैसा रूम बादशाह का चेहरा है बैसे
जूता बनाकर ला दो मुझको

हो ss सुनार कांपने लगा। हाथ जोडकर कहता है महराज मेरे लडके बच्चे हे । आप यह कैसी आज्ञा दे रहे है। वह सुनेगा तो मुझे मार ही डालेगा किसी भी सूरत में नही बचायेगा।

हो ss तब बोलते है हिरदेशाह । तुम बिलकुल मत डरो सुनार तुम्हें कुछ नही होगा। तुम्हें जितना सोना चाहिये ले जाओ पर मुझको ऐसे ही जूते बनाकर ला दो।

अब लो गया है सुनार हिरदेशाह की तौल भर सोना हो ss
कहां ले गया हे भैया
तोल भर सोना
हिरदेशाह के बजन बराबर

ले जाकर भैया
भटटी में गलाकर
जूते बना रहा है
सोने की पत्तर में
रूप का पानी दिया है
मोतियों की लडी लगाई है
हीरा की टिकिया
दे रहे है बीच बीच में
अंधेरे में रे भैया
आग के समान दमकाते है
जूता रे भाई
पानी के समान
वजन हे जूते का
चरमर चरमर बजते है
रूम बादशाह का
नक्शा उतारा है रे भाई
कैसे जूते बनकर तैयार हो गये रे भैया।

हो ss अब चला है जूता लेकर सुनार पहुंचता है राजा के महल में । जूते निकालकर दिखात है देखते ही खुश हो जाते है हिरदेशाह । वे जूता पहनकर ऊपर नीचे, ऊपर नीचे दौडने लगे सुनार को एक गठरी भर के मुहर दी है। जूते की बनवाई हो ss

अब तो हिरेदशाह जूतो को पहनकर रे भैया
इस कमरे से उस कमरे नाचता फिरता है भाई
चरमर की आवाज पेमलशाह सुनते है रे दादा
आकर देखते हैं जूतों को रे भाई
हाय ss कैसा गजब कर दिया है मेरे बेटे ने रे हो ss
हो ss राजा बोल रहे है।
क्या बोल रहे है राजा ! कहते है
ऐसे जूते क्यों बनवाये है बेटा !
रूम बादशाह को मालूम पडेगा
तो जान से मार डालेगा।
इनको छिपाकर रख दो
आखिर हिरदेशाह नही मानते हो ss
अब हिरदेशाह रे भैया
सोलह वर्ष का हो गया
उसके दोस्त भाई
उसके संगी - साथी

लड़कों की सेना
अलग लगाता है दादा
ऐसा काम चल रहा है हिरदेशाह के हो ऽऽ
अब यहां की बातें तो यहीं छोड़ता हूॅ रे दादा ऽऽ
नेगी भगवत राव के हाल सुनाता हूॅ रे भाई !
कैसे नेगी भगवत राय सोचे है मन में रे भैया ।
बारह वर्ष हो गये
राजा पेमलशाह के घर नही गया हूॅ रे भाई !
हाय ऽऽ कैसे हो आता तो अच्छा रहता हो ऽऽ
कहते है अपने घर में !
थोडा सा खाना और बना देना ।
जाता हूॅ अपने पुराने जजमान के पास
बारह वर्ष में उनके दिन बदल गये होंगे ।
सुनते है बड़ा आदमी हो गया है।
अब चले है नेगी भगवत राय हो
रखे हुये है खाना रे भैया
ओढ़े है चादर रे दादा
कंधे में लटकाये है बाना
बारह थान का फेंटा बांधे है
सोलह थान की झोली टांगें है
रखे हुये है पांव में जूते
चल दिये है नेगी भगवत राय हो ऽऽ
अब एक जंगल रे भाई
दो जंगल रे भाई
तीन जंगल रे दादा
पार करते है
कजरी पहाड़
वन बिन्द्रा रे दादा
नकटी रे घाटी
सातों रे सिलगी
बांध के द्वार रे भाई
धुनसी रे झोड़ी
बावन दहारा
पार करते जाते है दादा
नेगी रे भगवत राय
जाकर पहुंचते है

चौरागढ़ के रामनगर हो ऽऽ

हो ऽऽ क्या देखते है नेगी भगवत राय ? देखते है। बारह जोजन के चारो तरफ रामनगर बसा है। कांच के समान सुन्दर जलाशय बावन बाजार बने है । हीरा मोतियों के बाजार लगे है। सरवर सागर बांध में आम की अमरेया के नीचे फूल,फुलवारी, चम्पा, मोंगरा फूल रहे है। हो ऽऽ सोने के महल, सोने की अटारी, चांदी का आंगन, रतन जोत खंब की बैठक, मोती की झालरें लटक रही है। ऐसे प्रताप राजा पेमलशाह के देखकर प्रसन्न हो गये नेगी भगवत राय हो ऽऽ

अब क्या कहना रे भाई

देखते - देखते बाजारों को

चले जा रहे है नेगी भगवत राय

जाकर पहुंच जाते है रे दादा

राजा के महल के द्वार में रे भाई

हो ऽऽ क्या देखते है नेगी भगवत राय ? लगा है न्यायालय राजा का ! चौदह सिपाही खडे है पहरा में बाघ और भालू का पहरा लगा है द्वार में । सोने का महल, सोने की दीवाल, सोने का कलश, देखकर आश्चर्य चकित हो गये है नेगी भगवत राय।

कहते है सही का राजा है रे !

अब खबर भिजवायी है भीतर नेगी भगवत राय ने हो ऽऽ

सुनकर खबर रे दादा

निकली है रानी रे भाई

लोटा में पानी रखकर

सोने की थाली रे भैया

पैर धुलाती है

नेगी भगवत राय के भाई

हल्दी का टीका

लगा रही है रे दादा

ले जाकर रे भाई

पलंग विछाकर

उसके ऊपर बैठालती है

नेगी भगवत राय को दादा

अब पूंछ रहे है सभी राजी खुशी के हाल हो ऽऽ

हो ऽऽऽ सुनते ही राजा दौडे आते है । नेगी से मिलकर भेंट कर रहे है। राजा रानी नेगी का आदर सत्कार कर रहे है कैसे आदर सत्कार हो रहा है। नेगी भगवत राय का हो ऽऽ

अब कैसे रे दादा

ठंडा सा पानी

गरम करने रखते है भाई

स्नान कराते है रे दादा

कैसे हल्दी और तेल से
कैसे शरीर में लगाते है
कैसे अब खाना खाने की
कर रहे है तैयारी रे भाई

हो ss कैसे सेमर की लकड़ी का पटा विछाया है। कैसे सोने के लोटा में रम झिरिया का पानी भर कर रखे हुये है। अब कैसे नाना प्रकार के खाना खिला रहे है। नेगी भगवत राय को हो ss

कैसे मेवा मिष्ठान, पांचो पकवान
गेंहू के गोदला
चांवल के बबरा
तेल की पुडी
केवलार की भाजी
भुट्टा का पेज
कुदई का भात
महुआ का लाटा
दूध की बियारी
मठा की महेरी
चना का चबेना
मसूर की दाल
कंचन की थाली
सोने का गडुआ
रम झिरिया का पानी
हीरा मोती का पटा
ऐसा भोजन करा रहे है नेगी भगवत राय को हो ss
हो ss खाना पीना हो चुका।
अब चिलम तम्बाखू कीे हो रही है।

हो ss पूरे गांव में निमंत्रण दे दिया है। भलखा कोटवार पूरे गांव में डुंडी पीट पीटकर बता रहा है। क्या कहता है कोटवार ! कहता है चलो चलो रे रामनगर के स्त्री - पुरूष । राजमहल में नेगी भगवत राय आये है बाना गीत का कार्यक्रम है। लड़के, स्यान, बूढ़ा, जवान, ऊसट, खूसट, ऐरा, गैरा, सब जुड़ गये रे दादा। जगह नही मिल रही है चौदह जोजन के आंगन में जहां देखो आदमी ही आदमी दिख रहे है।

कर रहे आदर सत्कार रे भैया
खटिया और मचिया
पलंग और जाजम
बिछा रहे है भाई
नौकर और चाकर

लगे गये है दादा
बैठी है जनता
पलंग वाले पलंग पर
खाट वाले खटिया पर
जाजम वाले जाजम पर
धरती वाले धरती पर
जो जिसके लायक है
बैठ गये है दादा
चिलम तम्बाखू
बट रही है भाई
बारह कोस मेरे भैया
धुंआ छा गया है
चिलम और बीडी का रे दादा

(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

ऐसा माजमा और भीड एकत्र हुयी है राजा के आंगन में हो।

हो ss अब निकाल रहे है नेगी भगवत राय अपने बाना को और बैठे है बीच दरबार में एक तखत के ऊपर । उमेठ रहे है बाना की कान पूंछ । रखे है सरौता । जिस समय में गले में सुर भरे है उस समय फैल गयी आवाज । गली हार पहाड गूंज गये है । आवाज को सुनकर । अब सुना रहे है गोंडी कथा का वृतांत रे भाई ss कह रहे है नेगी भगवत राय।

तुम सुन लो रे राजा
सुनाता हूं में वृतांत रे भाई
इन गोंडों के रे भैया
कैसे जन्म लिया है इस संसार मे हो ss

हो sss जब ब्रम्हां महराज ने पृथ्वी का निर्माण कर लिया उस समय सोचा कि मैने तो जंगल पहाड, नदिया, नाला, पेड, पौधे सब बना डाले है । परंतु बिना मानव के यह पृथ्वी सूनी है। मानव का निर्माण करूंगा। तभी तो पृथ्वी का शोभा है।

तब ब्रम्हा रे भैया
अपने मुंह को मथे है
मथते मथते दादा
जब उन्होने खखारा है
उसी समय में रे भाई
खखार से ब्राम्हाण ने जन्म ले लिया है रे भाई

हो ss मुंह से ब्राम्हाण ने जन्म ले लिया। बड़बड़, बडबड़ बातें करने लगा। तब ब्रम्हा कहते हे जाव रे तुम बातें ज्यादा करते हो काम धाम कुछ नही कर पाओगे। तुम्हारा पेट भीख मांगने में चलेगा।

सच है रे भाई हो ss वे ज्यादा बात करते है काम ज्यादा नही करते। उसी दिन से ब्राम्हाण

भीख मांगते आ रहा है रे भाई ।

अब सुन लो रे भाई ।

एक दिन ब्रम्हा

अपनी छाती के मैल को

निकाले है दादा

निकाल कर मैल को

जिस समय फेंका है

उसी समय मे

उस मैल से रे भैया

छत्री जन्म ले लिये है रे भाई

हो ss पैदा होते ही भगदड मच गयी। अपने - अपने तीर, अपने - अपने भाला वह उसे मार रहा है तो वो उसे गिद्वों के समान युद्ध होने लगा । तब ब्रम्हा ने उन्हे भाले से भगा दिया और कहा जाओ तुम लोग ऐसे ही आपस में लडोगे - मरोंगे।

अब सोचते है ब्रम्हां

इस पृथ्वी को भैया

कौन संभालकर रखेगा

किसे और बनाऊं

अब फाडा है पैर (गोड) को

निकाला है खून रे दादा

गोड से गोंड ने जन्म लिया है हो ss

हो ss ब्रम्हा बोलते है गोंड से जा बेटा । तुम मेरे सबसे प्रिय हो । इस पृथ्वी का भार तुम ही संभालोगे । तब ब्रम्हा ने गोंड को एक नागर और एक जोडी बेल दिये । सत गजरा दाना दिया और गोंड को पृथ्वी पर भेज दिया।

तभी से !

हमारे आजा पुरखा रे भाई

धरती को गोड गोड (खोद खोद)

नागर फांद रहे है रे दादा

अनाज उगा रहे है

संसार का पेट पाल रहै है हो ss

हो ss ऐसा वृतांत सुना रहे हे नेगी भगवत राय

राजा, रानी, प्रजा, मुकद्दम सब बैठकर सुन रहे है। गांव भर की जनता बैठी है उठने का नाम नही ले रही है । पूरी रात गीत में कट गयी हे हो ss

हो ss सुबह हो गयी है । भगवत राय ने गीत गाना बंद कर दिया हे। सभी लोग अपने - अपने धर को चले गये है।

हो ss नेगी भगवतराय को अब खिला पिला कर विदा कर रहे है राजा हो ss

हो ss कैसे विदा कर रहे है

राजा तुम सुन लो रे भाई ऽऽ
बैठने के लिये घोडा
सोने का पलैंचा
सोने की कडाही
रेशम की रस्सी से
कस कर खडे कर रहे हैं हो
पहनने के कपडा
ओढ़ने को उढ़ना
खाने की थाली
पीने के लिये लोटा
बांधने के लिये फैंटा
लाकर रे भैया
सामने रख दिया
सूपा भर सोने की मोंहरे
लाकर रख दिया है भाई

कहते है राजा और रानी ! लो नेगी महराज शुद्व मन से ग्रहण कर लें । पर नेगी कहता है। क्या कहता है नेगी ? सब कुछ तो दिया राजा आपने पर अपने पैर के जूते पहनने को नही दिये । हाँ सच है भूल गया था राजा जूता मंगाते है

हो ऽऽ नेगी कहता है । जूते मैं अपने मन के लूंगा राजा । तुम दोगे तभी मैं यह दान उठाऊंगा नही तो ऐसे ही उठ जाऊंगा ।

राजा कहते है । जैसे जूतें मांगोगे वैसे ही दुंगा । मांगो तुम कैसे जूते चाहते हो ।

अब मांगा है भगवत राय ने जूते हो ऽऽ

हो ऽऽ कहते है नेगी भगवत राय । मुझे हिरदेशाह वाले जूते चाहिये रे राजा हो ऽऽ

हो ऽऽ क्या कहते है राजा
क्या मांगा है रे नेगी
उसके बदले में भाई
सोना चांदी जितना लगे
ले जा रे नेगी
मैं सोने के जूते दूसरे वनवा दूंगा रे
परन्तु तुम उन जूतों को मत मांगो भाई

हो ऽऽ नेगी नही मानता अड़ा गया है नेगी । कहता है राजा अगर लूंगा तो वही जूते लूंगा दूसरे नही लूंगा ।

हो ऽऽ नही मानते ! नही मानते ! राजा लाचार हो गये ! तब हिरदेशाह के जूते मंगा कर दे रहे है राजा रे भाई।

हो जूते पाकर खुशी हो गये नेगी रे भाई ऽऽ
अब राजा और रानी

सोचते है मन में
यह तो नेगी हे
देश दुनिया में घूमता रहता है
जूतों को पहनकर
गांव - गांव घूमेगा
कहीं किसी दिन रे दादा
दिल्ली वाले रूम बादशाह की
नजर पड़ गयी
तो गजब ही हो जायेगा रे भाई ss

हो ss इसलिये इस नेगी को यही बसा लेते तो रहा आता । अपने पास कुछ भी कमी नही है। महल बनवा दूंगा । खाने पीने की व्यवस्था कर दूंगा। तब वह यहीं रहेगा । कहीं नही जा पायेगा।

ऐसा सोचते है राजा और रानी
कहते है नेगी भगवत राय से भाई
ओ नेगी रे दादा
तुम कहां गांव में पडे हो भैया
यहां राम नगर में आ जाओं
हम तुम्हारे लिये घर द्वार बनवा दूंगा रे

हो ss नेगी भगवत राय प्रसन्न हो गये है रे भैया sss कहते है जो आज्ञा महाराज। यही आ जाउगां । आपके सहारे में मुझे किसी बात की चिंता नही है। जाऊं अपनी पत्नि को लेकर आ जाऊं ।

हो ss वापस हो रहे है। नेगी अपने गांव को जाकर अपनी पत्नि को बताते है । सब हालचाल राजा का आदर सत्कार को। राजा की भेंट को। सुनकर उसकी पत्नि प्रसन्न हो गयी । अब अपना डेरा समान रखकर नेगी चौरागढ में आ गया रे भाई ।

हो ss बस गये है राम नगर में नेगी भगवत राय । एक परिवार के समान रहने लगे है भाई !

अब नेगी रे भगवत राय
महल तो बनवाते है
सोने के गारे में
हो रही है जुड़ाई रे दादा
चांदी का चौपाल
सांत खंडो की अटारी
बन गई भाई
हिरदे शाह के महल के सामने हो ss

हो ss क्या कहते है। राजा के महल के समान महल बनकर तैयार हो गया है ! भगवत राय का ।

अब कलश के ऊपर सोने का मुर्गा बनवा कर बैठाला है नेगी भगवत राय ने ।

कैसे पड़ी है नजर हिरदेशाह की कहता है अपने मन में यह हमारा नेगी है और हमसे बढ़कर महल बनवा रहा है। जब उठाया है धनुष चढ़ाया है बाण और जब निशाना साध के मारा है मुर्गा को बाण लगते ही मुर्गा फक्क से उड़ गया। नेगी भगवत राय देखकर कहते है। यह हिरदेशाह का काम है। इसका बदला कभी न कभी उसे चुकाना पडेगा ऐसा सोचकर वह जानबूझकर दोस्ती बढ़ाता है हिरदेशाह से हो ss

नेगी भगवत राय की भैया
हिरदेशाह से रे राजा
दोस्ती यारी बढ़ गई भाई
आना और जाना
उठना और बैठना
नहाना और धोना
खाना और पीना
एक साथ होता
एक साथ सोते है
एक साथ जागते है
जंगल में भैया
साथ - साथ जाते
अब दोस्त यारी का
नही है ठिकाना रे
हिरदेशाह राजा
अब क्या कहना भाई
गजब के है शिकारी
राज भर में दादा
प्रसिद्ध तो हो गये है
इतने सुन्दर है कि
आग के समान दमकते है
जिसके साथ में रे भाई
नेगी भगवत राय
ऐसी दोस्ती चल रही है हो ss

हो ss बहुत मित्रता हो गई है रे भाई पल भर के लिये अलग नही होते है हो ss

परंतु नेगी भगवत राय ने अपने मन में बात गांठ बांधकर रख ली है, वह मौका ढूंढ रहा था अपना बदला लेने को एक दिन नेगी बोलता है हो ss

हो क्या बोलते है नेगी भगवत राय । कहते है सुन लो रे हिरदेशाह राजा तुम्हारा नाम तो प्रसिद्ध हो गया है रे राजा । आप अपने नाम का एक नगर बसा लेते उसमें आकाश दीप जलाया जाता हो तुम्हारा नाम पूरे संसार में प्रसिद्ध हो जाता । हिरदेशाह को यह बात पसंत

आ गयी है रे भाई ऽऽ

अब बसने लगा है भैया
हिरदे नगर !
चौरा दादर गढ़ मंडला में
हिरदेशाह रे भाई
बसा रहे है हो ऽऽ

हो ऽऽ हिरदे नगर की भूमि का नाप हो गया । दूर - दूर से प्रजा आकर बसने लगी है उस हिरदेनगर में महल और अटारी बन गये है कुंआ बावली तालाब और तलैया का निर्माण हो रहा है। बाग, बगीचा , फूल फुलवारी लग गयी है ! ऐसा सुन्दर नगर बस गया है हो ऽऽ

हो ऽऽ सोने का महल
चांदी के खम्बे
मोतियों की झालर
रेशम के परदे
सोने के कलश
लग गये है भैया
बावन बाजार
बन गये है दादा
कुआं बावली
ताल तलैया
खुद गये है भैया
बाग बगीचे
फूल फुलवारी
लग गये है भैया
पंवर द्वार
बैठक कचहरी
बन गई है दादा
ऐसे सुन्दर नगर
बस गया है हो

हो ऽऽ हिरदे नगर बस गया है । अब नेगी भगवत राय बोलते है। राजा अब आकाश दीप जला देते तो अच्छा रहता है।

हिरदेशाह आकाश दीप बनवा रहे है।

हो ऽऽ कई राज्यों के कारीगर बुलाये है
कई देशों के मिस्त्री बुलवाये है
बारह सौ कारीगर तेरह सौ मिस्त्री
सोलह सौ सुनार चौदह सौ लुहार
नौ लाख मजदूर लगे है भैया

बारह वर्ष में आकाश दीप बना है भाई
अब उसे देख देखकर हिरदेशाह खुशी होते है
हो ss राजा पेमलशाह देखते है लड़के की करनी को
बढ़ाई को सुन-सुन कर फूले नही समाते ! मानो
पोहपाल बहुत प्रसन्न है भाई
अपने पुत्र के
बढ़ाई को सुन-सुनकर
दोनो पति-पत्नि रे दादा
रानी और राजा
खुशी हो जाते है
मन में और कहते है
एक ही पुत्र
सूर्य के समान उजयाला
फैला रहा है भाई
ऐसे हुये है हिरदेशाह रे भाई ss

हो ss राजा प्रसन्न है । और जब देखा है कि उनका पुत्र आकाश दीप जलाने वाला है। तब वृद्ध राजा आये और कहते है बेटा त्यादा बड़े में गिरने का डर लगा रहता है , ऐसा चलो की किसी कीऑख में न खटको परंतु हिरदेशाह नही मानते हो ss

नही तो मानते है दादा
हिरदेशाह रे भाई
कर रहे है तैयारी रे भैया
आकाश दीप जलाने की
नेगी भगवत राय के साथ में
करते है सलाह हो

नेंगी भगवत राय की इच्छा पूरी हो रही है हो ss हो ss जब लगाई् है आगी आकाश दीप में । उस समय रात के समय में जिस समय आग लगी पूरे क्षेत्र में झक,झक झक, झक उजेला फल गया । उसकी आंच जब बादशाह की दाढ़ी में लगी उस समय अल्हा-अल्हा, तौबा-तौबा कहकर उठ बैठे रूम्म बादशाह । वह अपने दरवारियों से कहता है देखो कर कहते हैं बादशाह चौरा गढ़ में पेमलशाह का बेटा हिरदेशाह है।

हो ss रूम्म बादशाह कहते है। भेजो जो भेजो किसी को वह देखकर आयेगा । कैसे वह आकाश दीप है कैसे उसको बनाने वाले है। कैसे रूम्म बादशाह के दरबार में खलबली मच गयी है भाई

अब बुलाते है नीलामन भाट को रे भाई
कहते है रूम्म बादशाह भाट तुम मेरी बात सुनो
नीला मन तुम चौरागढ़ को चले जाओ
अपना टैक्स, कर वसूल करके लाओ हो ss

हो ऽऽ और क्या बोलते है बादशाह ? नीला मन तुम चौरागढ़ चले जाओ । देखकर आओ आकाश दीप को । किसने बनाया है आकाश दीप ! तुम हिरदेशाह को भी देखकर आ जाना । टैक्स और कर वसूल कर केले आओ ऽऽ

अब चलने की तैयारी कर रहा है भाट रे दादा ऽऽ
आया है भाट रे भैया
अपने घर में बोलता है
अपनी पत्नि से दादा
सुन-सुन ओ भाटिन
मेरे लिये भोजन तो बना दे
मै जाता हूँ चोरागढ़ ओ
टैक्स कर वसूल करने
मेरी कर दो तुम तैयारी ओ
अब बनाया है भोजन रे भैया
अब बनाया है भोजन भटिन ने रे भाई
रखे है भोजन रे भैया
खुमरी और लाठी
रखकर रे भैया
निकले है नीलामन
अब पकड़ लिया है
चौरागढ़ की रास्ता हो ऽऽ

हो ऽऽ चला ज रहा है नीलामन भाट । जंगल , पहाड़ पार करते चौरागढ़ के लिये चले जा रहे है।

एक कोस चलते है
दो कोस रे दादा
दस कोस चलते है
बीस कोस रे भैया
कोसन पर कोस रे
चलते जाते है नीलामन
नदी में नहाते है
झाड़ियों मे आराम करते है
रात गुजारते है
चल रहे है नीलामन
टैक्स कर वसूलने
लालच में भैया
चले जा रहे है
भाट रे भाई हो

हो जाकर पहुंच जाते है चौरागढ़ में रे भैया ss

हो ss क्या देख रहे है नीलामन भाट । बारह कोस के क्षेत्र में शहर बसा है तालाब और बांध में आम के पेड़ लगे है, कुंआ, बावली, ताल - तलैया बने है । फूल - फुलवारी लगी है सब जगह मोंगरा की खुशबू फैल रही है।

और क्या देख रहे है नीलामन भाट ? देख रहे है महल अटारी सोने के सात खंडो वाली , सोने की हवेली , सोने के कलश चमक रहे है। चांदी के खंबों में मोतियों की झालर , चांदी की चौपाल लगी है, कचहरी बावन बाजार में हीरा मोतियों के ढेर लगे है। यह सब देख रहे है नीलामन भाट रे भाई ss नगर को देखते - देखते नीलामन राजा के महल में पहुंचते है।

हो ss रूम शाह का भाट आया है
दिल्ली से भाट आया हुआ है।
कैसे उसका आदर सत्कार कर रहे है राजा हो ss
कैसे स्वागत सत्कार हो रहा है भैया
बैठने को मचिया
सोने की खाट
नहाने को पानी
खाने को भोजन
कैसे दे रहे है भाई
चिलम ओर तम्बाखू
कैसे सत्कार कर रहे है दादा
कैसे रूम बादशाह के हाल - चाल पूंछ रहे है भाई
किसलिये आये हो तुम नीलामन
किसलिये भेजा है तुमको
इसका तुम कारण बता भाट
ऐसे ही तुम्हारे राज्य को
देखने सुनने आया हूँ
कहता हे भाट रे भाई

हो ss भाट कहता है कोई कारण नहीं है जो राजा देखने सुनने के लिये भेजा है दिल्ली वाले रूम बादशाह ने राज्य का हाल - चाल जानने को ।

हो ss कैसे पूंछ रहे है भाट राज - काज और कचहरी के हाल - चाल हिरदेनगर की वसीयत को आकाश दीप की बात को । कैसे बता रहे है पेमलशाह हो ss

नीलामन भाट कहते है राजा आपका पुत्र कैसा है थोड़ा मुझे दिखा तो देते ।

अब बुलाया है हिरदेशाह को रे भाई
हो ss देखकर मोहित हो गया है भाट
हिरदेशाह को देखकर
सोने के समान दमक रहा है
हिरदेशाह का शरीर

कहते हैं नीलामन धन्य है रे राजा ।

अच्छा लड़का पाया है तुमने ।

अब टेक्स कर दे दे राजा में चलूंगा।

राजा दे रहे है टेक्स और कर हो ऽऽ

अब नीलामन भाट रे भाई बिछा दिया है खुवार

आंगन में दादा

देते है टेक्स

भीतर से ला लाकर

पांच कुडे की कसेंडी में

सोना और चांदी के हो ऽऽ

मुहर और सिक्का

भर भर का दादा

खुवार में भर दिया भाई

ढेर लग गया है सोना और चांदी का हो ऽऽ

हो ऽऽ राजा के यहां से टैक्स और कर मिल गया । अब नीलामन भाट देखता है दूसरी बखरी को ।

हो ऽऽ किसकी बखरी है भाई । राजा की हवेली के सामने खड़ी है लोग बताते है नेगी भगवतराय की बखरी है अब गये है नीलामन भाट नेगी भगवत राय के बखरी में टेक्स कर वसूल करने के लिये हो ऽऽ

अब नेगी भगवत राय रे भैया

नीलामन भाट का रे दादा

आदर सत्कार करते है

पानी पिंगल देते है

खाट में बैठलाकर

चिलम और तम्बाखू रे

भर भर कर पिलाते है

दिल्ली के रे भैया

हाल - चाल पूंछते है

कैसे दोनों लोग मिलकर आपस में बात कर रहे हो ऽऽ

हो ऽऽ नीलामन भाट पूंछ रहे है । नगर के हाल चाल को हिरदेशाह की चाल को । आकाश दीप को हो ऽऽ

नेगी भगवत राय सब बतला रहे है नमक मिर्च लगाकर उसकी बुराई बता रहे है भाई

अब कहते है नीलामन

दे दो भाई टैक्स और तगादा

मै अब दिल्ली जाऊंगा

मुझे जल्दी जाना है भाई

हो ऽऽ कैसे पांच कुड़ो की कसेंडी में नेगी भगवत राय सोना और चांदी के सिक्के नाप कर ला रहे है। कैसे नीलामन खुवार में गट्ठा बांध रहे है भाई हो ऽऽ

किस प्रकार गट्ठा बांधते - बांधते पलंग के नीचे नजर पड़ गयी है नीलामन भाट की । कहते है दिखाना तो बाबू वह क्या रखा है पलंग के नीचे भगवत राय कहते है जूता है भाटो हिरदेशाह ने बनवाया था उसे मैं लेकर आ गया हूॅ । कहता है दिखाना तो मुझे मैं भी देख लूं कैसे जूते है। अब कैसे उठाकर जूतों को देख रहे है हों नीलामन भाट हो ऽऽ

हो कैसे सोने के जूतों में
रूम बादशाह की छवि
बनी है रे दादा
देख कर रे भाट
खुशी हो जाता है
मन में सोचता है
रूम बादशाह को
बताऊंगा रे भैया
इन जूतों को रख लेता हूॅ हो ऽऽ

हो ऽऽ नीलामन भाट अपनी गठरी में जूतों को बांधने लगा भगवत राय कहते है क्यों भाटों यह कैसी चोरी करने लगे , इनको क्यों बांधने लगे हो । कहते है नीलामन यह जूते तगादा में जायेगें रे रूम बादशाह के पास इसलिये इन्हे बांध रहा हूॅ । नहीं भाटो ऐसा मत करो मेरी मांगी हुयी चीज है। तुम कैसे ले जाओगे । कहते है भगवत राय तब नीलामन बोलता है सुन रे बाबू । प्रजा की प्रत्येक वस्तु पर बादशाह का हक होता है इन जूतों को देखकर बादशाह प्रसन्न हो जायेगें। इसलिये ले जा रहा हूॅ।

अब नही दे रहे है भाई
नीलामन भाट ने
जूतों को बाधं लिया
गठरी में दादा
छीना कर देखा
नेगी भगवत राय
परंतु नही छोडे भैया
जूतों को रे दादा
लेकर चल दिये है
दिल्ली को हो ऽऽ
अब रखी है गठरी
सिर के ऊपर भैया
चल दिये है पैदल
नीलामन भाट रे
आठ दिन नौ रात में

पहुंच गये दिल्ली
जाकर पहुंचे है
घर में रे भैया
कहते है ! थोडा उतार तो ओ भाटिन बहुत वजनदार है चैथी दर्द करने लगी है।

हो ss भटनिन निकली है घर से सिर के ऊपर को बोझ उतार कर उसे ले जाकर घर के भीतर रखती है।

हो ss जिस समय खोली है गठरी आंगन में सोने चांदी के ढेर लग गये । यह देखकर खुशी हो गयी भटनिया रे भाई । कहती है कितना है , भाट कहता है मैंने नही नापा है तुम जाओ कूड़ो मांगकर ले आओ और नाप लो । अब चली है भटनिया कुडो मांगने को हो ss

हो ss राजा की बखरी में कुडो मांग रही है। भाटिन कहती है मेरा भाट टैक्स लेकर आया है उसे नापना है।

कुडो की पेंदी मे
रार लगा दी रे दादा
दे दिया कुडो रे
भाटिन लेकर आ गयी
नाप नाप भैया
उस कुडो से रे भाई
कोठी में भर दिया
उस कुडो को रे भाई
वापस राजा की बखरी में
पहुंचाकर आ गयी भैया
कुडो की पेंदी में भाई
दो चार सिक्के चिपके रहे
उसे देखकर रे भैया
राजा के सिपाही रे दादा
भाट की किस्मत को सराहते है हो ss
कहते है रे भैया
यह भाट की तकदीर बड़ी है
टैक्स कर में भाई
सोना चांदी के सिक्के पाया है
धन्य है भाट की किस्मत रे भाई
हो ss अब नीलामन भाट रे भाई
नहा धोकर रे भैया
खाना पीना खाकर रे दादा
थोड़ा सा पलंग पर विश्राम कर के रे भाई
चला जा रहा है राजा से मिलने दादा

जूते रख लिये है अपने हाथ में हो ss

हो ss जाकर पहुंचते है बादशाह के दरबार में लगा है न्यायालय रूम बादशाह का बडे - बडे दाढ़ी वाले पठान बैठे है। दरबार में बड़े - बड़े खुसना पहने बैठे है । अल्ला खां , थल्ला खां , फत्ते खां, लत्ते खां, बैठे है। दाढ़ी में हाथ फेर रहे है पठान अल्हा - अल्हा, तोबा - तोबा कर रहे है भाई । जाकर बंदगी बजाते है नीलामन भाट हो कहता है साहब सलाम ! सहाब सलाम रूम बादशाह कहते है क्या खबर है रे भाट सच - सच बताना आकाश दीप किसने जलाया है ।

अब बता रहे है नीलामन हो ss
आपको क्या सुनाऊं रूम बादशाह रे दादा
पेमलशाह का लड़का हिरदेशाह रे राजा
हिरदे नगर बसाया है अपने नाम से बादशाह
उसी के आंगन में
गड़ा है खंबा
उसी में आकाश दीप जलाता है रे राजा ।
हिरदेशाह ने आकाश दीप जलाया है हो ss
हो ss यह सुनकर राजा पूंछता है । कैसा है हिरदेशाह और कैसा है उसका राजपाट ?
अब बता रहे है नीलामन भाट रे भाई ss
मत पूंछो राजा
इतना बड़ा राजा तो
पृथ्वी में नही है
बहुत सुन्दर है
सोना और चांदी का
नही है ठिकाना
महल और अटारी
सात खंडों के बने है
चांदी के खंबा में
मोतियों की झालर
हाथी और घोड़ा
लाव और लश्गर
का पता नही कितनी है।
बहुत धनवान राजा है हो ss

हो ss क्या बोल रहे है भाट । कहता है मेरा टैक्स और कर सोना और चांदी के सिक्कों में कुडो में नाप कर दे दिया है।

हो ss और क्या कहता है भाट कहता है राजा आपको क्या बतलाऊं । उनका नेगी इतना धनवान है कि वह भी सोना - चांदी कुडों में नाप कर देता है। यह सुनकर बादशाह को विश्वास नही होता है हो ss

हो ऽऽ कहते है बादशाह ! और क्या - क्या लाये हो वहां से भाट ने जूते निकालकर बादशाह के सामने रख दिये । कहता है यह जूता लाया हूँ राजा हो ऽऽ

जिस समय देखा है जूतों को बादशाह ने अपना चेहरा जूतों में देखकर आग बबूला हो गया गुस्से के कारण सिर के पांच बाल टूट कर जमीन में गिर गये ।

कहता है किसने बनाया है इन्हें ! भाट कहता है । बनाने को तो सुनार ने बनाया होगा सरकार पर इसे राजा हिरदेशाह ने बनवाया है वहीं पहनता है इन जूतों को ।

हो ऽऽ ऐसा सुनकर थरथराने लगा बादशाह रूम शाह और जोर से कहता है । कैसा है हिरदेशाह तुमने देखा है उसे ! भाट बोलता है देखा हूँ मालिक बहुत सुन्दर है। सोने के समान दमकता है आपकी जीभ के समान उसके तलबे है।

हो ऽऽ गुस्सा के मारे थरथराने तो लगा रूम बादशाह कहते है इस भाट को पत्थर के नीचे दबा दो यह झूठ बोलता है, झूठी तारीफ करता है हिरदेशाह की ।

अब तो रे दादा
क्या कहते है दादा
बारह मन का पत्थर
छाती के ऊपर रखा है
धूप में रे भाई
धरती में सुलाया है
दो चार जवान रे दादा
पत्थर ऊपर चढ़कर रौंदते है रे भाई हो ऽऽ

फिर से निकालते है भाट को बादशाह पूंछते है अब सच बता दो भाट। भाट फिर से वैसा ही कहता है , राजा आपकी जीभ के समान हिरदेशाह के तलबे है । बादशाह फिर गुस्सा होता है , कहते है साले को घोडे के पीछे बांधकर दौड़ा दो ।

अब मरना हो गया रे दादा
नीलामन भाट का रे भाई
सब आदर सत्कार निकल गया दादा
टैक्स और कर की कीमत रे भाई
चुकता हुआ जा रहा है रे भाई
घोड़ा के पीछे रे भैया
हाथों को बांधकर
दोड़ा रहे है भाई
मुंह से फसूकर बहता है रे दादा
टज़ूख्ज़ों से आंसू गिरते है भाई
धोकनी जैसे सांस फूलती है भैया
थककर गिर जाते है नीलामन
तब बुलाते है बादशाह
कहते है अब सच सच बता रे भाट

तब भी भाट वैसा की बताता है रे दादा ।

हो ss बोल रहा है भाट । क्या बोल रहे हो ? कहते है ये बादशाह चाहे तो आप मेरी जान ले लें । पर जो बात सच है मैं वही बता रहा हूॅ।**(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)**

तब राजा को विश्वास आया है हो ss

हो अब सज रही है रे दादा

पठानों की फौज रे भाई

अत्ते खां फत्ते खां

चुल्लुम खां आजम खां

बल्लुम खां मुंडे खां

सजे है दादा

बडे बडे खुसना

पहने है रे भाई

पगड़ी और मुरेठी

अंगा और झंगा

तीर और तलवार

बांधे है दादा

फौज और फाटा

हाथी और घोड़ा

सज गये है दादा

पठानों की फौज सज गई है हो ss

हो ss जब ललकारते है रूम बादशाह कहते है तुम सुन लो रे अत्ते खां , फत्ते खां जाओ हिरदेशाह से टैक्स वसूल करके ले आयो ।

हो ss कह रहे है बादशाह ? कहते है हिरदेशाह से सोलह करोड़ रूपया टैक्स लेना और उसकी बहन को साथ में लाना है । यदि मना करता है तो उसे हाथी से लड़ना पड़ेगा ।

हो ss और क्या बोल रहे है रूम बादशाह ? बोलते है यदि वह इतनी बात नही करता तो चोली और साड़ी पहन ले , चूड़ियां पहन ले और औरत का भेष रखकर राज करे।

इतनी बात सुनकर चली है पठानों की फौज हो ss

चली है पठानों की पल्टन रे दादा

अत्ते खां, फत्ते खां , चुल्लुम खां रे भाई

आजम खां, डोगर खां , मुंड़े खां रे दादा

रात दिन पड़ाव पर पड़ाव डालते जा रहे है।

कैसे चले जा रहे खुशी में हों ss

हो ss पठान सोच रहे हैं। अच्छा खूब माल मसाला खाने को मिलेगा । रूपया पैसा भी मिलेगा और क्या सोचते चले जा रहे है ? सोच रहे वहां खूब सोना चांदी लायेगें । खुरजी में भर भरकर अपनी अपनी औरतों के लिये जेवर बनवायेगे हो ss

ऐसा सोचते चले जा रहे है हो ss

अब एक जंगल पार करते है

दो जंगल रे भैया

चार जंगल पार करते है

पांच जंगल रे भाई

कहां तक गिनाऊं

जंगल पहाड़

वह छीता छापर

डोंगर दे बहारा

आम की झुरकी

और भूत वाला कोना

धमकी का दादर

करीया पटपर

मुरला का पानी

पार करके गये भैया

अब पहुंच गये है चौरा दादर में हो ss

हो ss राम नगर के पास पहुंच गये है। मां नर्मदा के किनारे पहुंच गई पठानों की फौज अब क्या कहना सरवर बांध आम के पेड़ों के बीच डेरा पड़ गया है पठानों का फूल - फुलवारी चंपा मोंगरा । जहां फूल रहे है वहां तम्बू गड़ गये है सेना का डेरा पड़ गया है रे भाई sss

हो ss कोई नहा रहा है

कोई बना रहा है

कोई उछल कूंद मचा रहा है

कोई अल्लम तल्लम कर रहा है

ऐसी फौज पड़ गयी है भैया

बारह कोस में तम्बू ही तम्बू दिखते है।

रामनगर की प्रजा रे भाई

देख देखकर कहती है रे दादा

यह कहां से आफत आ गई है हो ss

हो ss अब खबर भेजते है अत्ते खां , फत्ते खां बोल रहे है चुल्लु खां से जाओ रे चुल्लम खां रूम बादशाह का हुकुम सुनाकर आओ

अब चले है चुल्लम खां हो ss

चले है चुल्लम खां रे भाई

नौ हाथ की चिलम राखे

नौ सेर तम्बाखू भरे

बारह थान का झंगा पहने

सोलह थान के खुसना पहने

बत्तीस हाथ की पगड़ी बांधे

चले है दादा रे

हिरदेशाह के दरबार में जाकर पहुंचते है हो ss

हो ss जाकर पहूंचे है चुल्लम खां । देखते की हिरदेशाह उठकर आदर सत्कार कर रहे है पंलग पर बैठाल रहे है । चिलम तम्बाखू की हो रही है। अब खबर दबर पूंछ रहे है राजा रूम बादशाह की हो ।

हो ss तब बोलते है चुल्लम खां

तुम सुन लो राजा

तुमने राजा रूम बादशाह के हुक्म के बिना आकाश दिया जला दिया है उसके उजाले से बादशाह को नींद नही आती है। इसके लिये तुम्हें जुर्माना देना होगा ।

हो ss और क्या बोल रहे है चुल्लम खां । तुम सुन लो रे राजा तुम जुर्माना मे सोलह करोड रूपया और अपनी बहन बादशाह को सौंप दो तभी तुम्हारा कसूर माफ होगा । अ।ैर क्या बोले है चुल्लम खां बोल रहे है अगर तुम लड़ाई नही करोगे तो चोली और साड़ी पहन लो चूड़ियां पहन लो और औरत का भेष रखकर राज करों।

ऐसी खबर चुल्लम खां सुना रहे है हो ss

अब राजा हिरदेशाह रे भाई

गये है अपने पिता के पास

राजा पेमलशाह के पास

सुना रहे है संदेश

रूम बादशाह का रे भैया

कहते है रे दादा

अब क्या करेंगे हो ss

हो ss बोल रहे है राजा पेमलशाह ! क्यों बेटा इसलिये तो मैं तुम्हें मना कर रहा था कि न बढ़ाओं बेटा तुम अपना तीन तूफान इतना न फैलाओ । आखिर तुम नही माने और नेगी भगवत राय की बातों में आ गये , अब जो करना है तुम करो भाई मै क्या बताऊं मेरे पास तो नही है तुम्हारे जुर्माना देने के लिये रूपये तुम हारो चाहो जीतो जाओ करो हाथी से लड़ाई।

जो लड़का रे बेटा

नही मानता स्यानों की सीख

उनके ऊपर तो

ऐसी ही विपत्ति आती है

अब मैं क्या करूं भाई

अब तुम जानो हो ss

हो ss ऐसा राजा पेमलशाह

बोले है हिरदेशाह से रे भाई हो ss

अब क्या कहना है भैया

राजा हिरदेशाह

लौट आये वहां से

आ रहे है अपने दरबार में
बोलते है चुल्लम खां से
तुम सुन लो रे सरदार
मैं हाथी से लड़ाई करूंगा हो ss

हो ss कैसे बोल रहे है राजा हिरदेशाह कहते है चुल्लम खान जाओ मैं हाथी से लड़ाई करूंगा । आखिर जुर्माना मेरे पास नही है।

हो ss चुल्लम खां उठकर चल देते है हो ss
अब यहां रे भैया
सुना है जब रानी ने रे दादा
मेरा हिरदेशाह
हाथी से लड़ाई करने
दिल्ली जायेगा रे दादा
उस समय में
रो रोकर भैया
प्राण छोडे दे रही थी हो ss

हो ss रानी पोहपाल कलप कलप कर रो रही है। कह रही है ! एक ठन मेरा लड़का । एक ठन टज़ूख्ज़ के समान अंधे की लाठी । कैसे वह जा रहा है कौन जाने क्या होगा क्या नही । ऐसा कह - कह कर रानी रो रही है हो ss

मत जाओ रे बेटा ?
यह क्या कर डाला है
तुम्हें मैं कहां से पाऊंगी देखने को बेटा
क्यो हो गया भगवान बेटा हिरदेशाह रे
ऐसा रो रो कर कलप रही है उसकी मां रे हो ss

हो ss यहाँ हिरदेशाह नही मानते अपनी तैयारी कर रहे है भाई ।

हो ss कर रहे है तैयारी हिरदेशाह
पहने है राजसी पोशक अपनी
भीतर पहने है लंगोटी
लंगोटी के ऊपर चड्डी
चड्डी के ऊपर पींतांम्बर धोती
उसके ऊपर शंकर धोती
धोती के ऊपर फुर हुर जामा
जामा के ऊपर अंगा
आंगा के ऊपर झंगा
झंगा के ऊपर भसम कोट का अंगा
उसके ऊपर बारह गाड़ी के जिरह बख्तर
तेरह गाड़ी का सरहूं सिंगार

बरहू बाना
सिर पर बांधे है धागा
धागा के ऊपर रै मंडल पागा
पागा के ऊपर बनारसी पगिया
ऊपर सोन मेंहदी की कलगी
ऐसा श्रृंगार किया है राजा हिरदेशाह ने भाई ऽऽ
हो ऽऽ अब हाथ में रे दादा
लिये है हथियार रे भाई
बैरी मार भाला
फेंक मार खांडा
नाग दौन तलवार
सवांती रंग तेगा
गीला बंजर कटार
बाघ मार कुर्रा
हो ऽऽ और क्या रखें है अपने साथ में हिरदेशाह
अरन बाण, बरन बाण
चीथन बाण, चिलकन बाण
भाई बाण, बैरी बाण
हाथी बाण, दौहाती बाण
लुमरी बाण, ढुमरी बाण
अज्ञा सुर बाण, जिज्ञासुर बाण
भसम बाण , मथन बाण
हरन बाण, खरन बाण
मथन बाण, भरन बाण
डसन बाण, बजुर बाण
हो ऽऽ ये सब बाण सजाकर बांधे हैं भाई हो ।
हो ऽऽ अब हो रही है सेना तैयार हिरदेशाह की रे भैया ऽऽ
नौ सौ मटिया, सात सो सिंगी
तेरह सौ भूत - प्रेत साथ में जाने के लिये तैयार हो रहे है
अब नही है ठिकाना राजा हिरदेशाह की सेना का हो ऽऽ
हो ऽऽ कैसे सजे है मटिया, तुम नाम सुन ले रे भाई हो ऽऽ
अरन मटिया, बरन मटिया
बर्नडोर मटिया, सर्नडोर मटिया
अधासुर मटिया, बघासुर मटिया
उतहा मटिया, छुतहा मटिया
लुटान मटिया, मसान मटिया

अपने अपने घेरे में तैयार होकर चले है रे दादा ।

हो ss मत पूंछ धरती से आकाश तक लम्बे हो गये है मटिया पूरी धूल पत्ता , झाड़, झंकाड़ का उड़ाकर इक्ट्ठा कर लिया मटियों ने ।

धुंध , हवा, की दीवाल सी बना दी है हो ss
अब सिंगी रे दादा
सजी है सात सौ
नही है ठिकाना रे भैया
उताहीं सिंगी
छुताही सिंगी
अर्नडोर सिंगी और बर्नडोर सिंगी
अड़रामल सिंगी कुकरामल सिंगी
जैतामल सिंगी और सुरतामल सिंगी
खंता मल सिंगी और भरतामल सिंगी
उजाड़ सिंगी, डोहार सिंगी
ऐसे सिंगिन की सेना सजी है रे भाई अपने अपने
नरसिंहा रखकर सभी सिंगी तैयार हो रही है रे भाई
अब भूत - प्रेत को रे भैया
दिया है निमंत्रण राजा हिरदेशाह ने
पहुंच गये है दादा भूत - प्रेत रे भाई
कहते है अब अच्छा अच्छा खाने को मिलेगा रे भाई ss
पहुंचे है भूत - प्रेत हो ss
हो ss कौन कोन भूत चुडैलन जुडे है
तुम सुन लो रे मालिक भैया हो ss
कहैं नदी तो नदिया रे भैया
पनघट की पनहारिन
अवघट का मसान रे भाई
खोली का भुतवा रे दादा
घाट का घटवैया
ढ़ोढ़रा का करिया
हार का हरकुलारे रे दादा
सेमर की चुडैलिन
बामी का वासुक रे भाई
मेंडो के ठाकुर देव रे दादा
सबको निमंत्रण देकर बुलाया है हिरदेशाह ने रे भैया ss
हो ss हिरदेशाह की सेना तैयार हो गयी है
अब अपने घोड़ा को सजा रहे है हिरदेशाह हो ss

हो ss कैसे घोडे का श्रृंगार हो रहा है ?
चार पांव में नेवरा , नेवरा के ऊपर झंवरा
गिन गिन पुट्टा में हीरा
बिजली का सिंगौरा
सोने की डुमची
सोने का पलैचा
सोने की कचहरी
चंदा सूरज मनियारी
नौ लाख का हार
पांच लाख की ंिबदिया
छै लाख की मनियारी
रूपयों की रकाब
रेशम का कसना
मोती चूर की कलगी
एक एक रोम में हीरा जडे है
राजा हिरदेशाह हो गये है तैयार हो ss

हो ss कटार, छुरी, तेगा, तलवार, खुरजी, में निकाल निकाल कर भर लिये है हिरदेशाह रे दादा ! अब जा रहे है अपनी मां से भेंट - भलाई करने भाई हो ss

जिस समय में देखा है रानी पोहपाल ने हिरदेशाह को तुरंत दौडकर अपनी छाती से लगा लिया आंसुओ की धार बह रही है रानी की हिलकैया नही समा रही है । कहती है कौन जाने क्या होगा कि नही हाथी के साथ लड़ाई है बचकर आते है या नही । सोच सोच कर रो रही है माता ! बडा देव का स्मरण कर रहे है,

राजा अपनी मां के चरण स्पर्श कर रहे है रे भाई ।

हो ss हिरदेशाह अपने पिता के चरण स्पर्श कर रहे है। अपने संगी साथियों से जोहार , राम,राम, जै राम जी की कर रहे है। गांव ,बस्ती,मेडो, ठेढ़ो , हार - पहाड़ से जोहार कर रहे है अब चले है रे भाई ss

अब चले है रे भैया
राजा हिरदेशाह दादा
नौ सौ रे मटिया
सात सौ सिंगी
तेरह सौ भूत रखकर
उड़ना बछेडा में दादा
हो गया सवार हो
कूच कर दिया रे भाई
हो ss पठानों की सेना रे दादा
अत्ते खां , फत्ते खां

चिल्लुम खां, आजम खां
उखड़ गये है तम्बू
दिल्ली की ओर कूच कर दिया है रे भाई हो ss

चली जा रही है फौज ! चले जा रहे है हिरदेशाह जंगल, पहाड़, घाटी, दादर, नकते, झूड़ी झुडैया, नदियों को पार करते कछारों को पार करते अपनी मंजिल पर चले जा रहे है , अब क्या कहना आठ दिन और नौ रात में दिल्ली की सीमा में पहुंच गये है हो ss

वहां जाकर सागर बांध , धरमताल, अंधियारी कुंआ के पास आमों के बगीचा में तम्बू गाड़ दिया है हिरदेशाह कहते है अत्ते खां, फत्ते खां से जाकर अपने बादशाह को संदेश दे दो के हिरदेशाह हाथी से लड़ाई करने आ गया है। अब जाते है अत्ते खां , फत्ते खां रूम बादशाह के दरबार में रे भाई ss

जाकर पहुंच गये है रे भैया
रूम बादशाह के दरबार में रे भाई
अत्ते खां, फत्ते खां , चुल्लम खां ,आजम खां
राजा साहब को सलाम कर रहे है रे दादा
कैसे हाल - चाल पूंछ रहे है रूम बादशाह हो ss

हो ss कहते है बादशाह ! सरदार तुम बताओ लेकर आ गये सोलह करोड़ रूपया और हिरदेशाह की बहन को

कहते है मत पूछों राजा
वह मामूली गोंड़ राजा नहीं है
कहां का देता जुरमाना उरमाना
लड़ने आया है हाथी से

कहते है रूम बादशाह ! कहां है कौन - कौन आये है। कितनी सेना है ! कैसे है हिरदेशाह तुम बताओं रे सरदार लोगो ऐसा पूछ रहे है रूम बादशाह हो ss

तब बता रहा है पठान
तुम सुन लो रे बादशाह
अकेले आया है हिरदेशाह
उड़न बछेड़ा में चढ़कर
युद्ध का श्रृंगार पहनकर
नौ सौ मटिया, सात सौ सिंगी
तेरह सौ भूत और चुडैलिन है राजा
आग के समान चेहरा दमकता है रे दादा
बादल के समान गरजता है हिरदेशाह
वह आकर सागर बांध में डेरा डाले हुये है हो ss

हो ss जब सुना है रूम बादशाह ने उसको गुस्सा के कारण झार तो निकल गयी सिर से, कहते है यह मेरा बसाया हुआ गोंड़ इसे मैंने चौरादादर में बसने के लिये दिया और आज यह मेरे साथ उलझ पड़ा है देखता हूँ मैं इसे ।

हो ss जब हुकुम दिया है सरदारों को जाओं रे जौरा हाथी को तैयार करो लड़ने के लिये अब कर रहे है हाथी को तैयार लड़ने के लिये भाई

जौरामन हाथी पहाड़ के समान बड़ा है
पागलों जैसे रहता है भाई
उसे रे दादा
बारह कनस्तर शराब पिलाया
सोलह कनस्तर भांग खिलाया
नौ सेर गांजा पिलाया
उस हाथी को नशे में मतवाला कर दिया है भाई
बारह मन के मुगदर को
सूड़ में फंसा कर
अब ले जा रहे है सागर बांध में हो ss

हो ss हाथी को लड़ाई कि लिये तैयार कर लिया हाथी को मतवाला करके ले जाने लगे । बारह मन का मुगदरा पकड़ा है हाथी ने अपनी सूड़ से रास्ते के बडे बडे पेड़ों को चकौड़ा के समान उखाडते जा रहा है बडे बडे पेडो के डगाल को दातून के समान तोड़ते जा रहा है, कजरी पहाड़ के समान काला चला जा रहा है हाथी रे भाई हो ss

जब देखा है हिरदेशाह ने की हाथी आ रहा है उसी समय हो जाते है तैयार हाथी से युद्ध करने के लिये ।

पहना है युद्ध का श्रृंगार रे हिरदेशाह ने
रखा हुआ है गीला बंजर कटार तेगा रे भाई
लिये हुआ है फेंक मार बरछा रे दादा
नौ मत्ता भाला बाघ मार कुर्रा
इस प्रकार के हथियार अपने शरीर मे सजा कर रखे है हिरदेशाह ने हो ss ।

अब घोडे को सजाते है हिरदेशाह ।

सोने की डुमची सोने का पलैंचा
रेशम का कसना चांदी की रकाब
बिजली के सिंगौरा मोती चूर की कलगी
खुरजी में लगाये हुआ है रे भैया
छुरी, कटार , बरछा रे भाई हो ss
हो ss ऐसी तैयारी करके राजा हिरदेशाह निकल पडे है हाथी से लड़ने को रे दादा ।
अब तो रे भैया
देखा है हाथी ने
राजा को रे भाई
भरा है सपेटा
घुमाया है मुग्दर
जिस समय रे भाई

घोड़ा बिचक कर हाथी के पीछे तरफ पहुंच गया है हो ss

हो ss घोड़ा पीछे तरफ से इस तरफ और इस तरफ से उस तरफ । निकल निकल कर भंगा भंग, भंगा भंग चीरने लगा ।

हो ss घोड़ा की पीठ में जो छुरी कटारी खुंसी रही वह हाथी के पुट्ठों में खपै खप, खपै खप घुसने लगी । राजा हिरदेशाह अपने गीला बंजर कटार तेगा से छकै छक, छकै छक पेट को फाड़ने लगे।

हो ss अब क्या कहना हाथी का सब नशा उतर गया वह मुगदर को फेंक कर चिंघाड़ने लगा । पेट फट गया था हाथी का आंतें निकल गयी हाथी की, वह एक ओर लुढ़क गया राजा घोड़ा को कुंदाते - कुंदाते तंबू में आ गये हैं हो ss

हो ss अब भाग रहे हैं अत्ते खां, फत्ते खां । अल्ला अल्ला तौबा - तौबा कर रहे हैं! अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते - फेरते । जाकर पहुंच गये हैं रुम बादशाह के दरबार में । बता रहे हैं रुम बादशाह को ।

इतना सुनकर राजा जल्लाद हो गये हैं भाई रे ।

हो ss बादशाह ने जब हुकुम दिया है पठानों की फौज को । जाओ रे पूरी सेना को घेर लो । घेर लो राजा हिरदे शाह को ।

उसे पकड़ कर मेरे सामने हाजिर करो ?

अब चली है दादा

पठानों की फौज

बड़े - बड़े सूथना

बड़े -बड़े झंगा रे भाई

बड़े - बड़े बल्लम रखके

थल्लम - थल्लम चलते हैं भाई

माल मसाला के खाये हुये

तौंद भागी जा रही है भैया

कैसे चल रही है सेना

जाकर रे दादा सागर बांध में

राजा हिरदे शाह को

घेर लिया है भाई रे ss

हो s राजा की सेना ने हिरदे शाह को घेर लिया है। यहां पर राजा अपने तंबू में बिस्तर बिछाकर छै माह की गहरी नींद में सो रहे हैं। घोड़ा बंधा - बंधा दाना और घास खा रहा है।

हो ss जब देखा है मटिया ने

पठानों की सेना को रे भाई

तब चलती हैं नौ सौ मटिया

आंधी तूफान लेकर

जिस समय में घुमड़ी हैं

तब नहीं है ठिकाना रे दादा

हो ss मटियन के झुंड़ में पठान उड़ने लगे हैं हो ss

पूरी सेना उनके झुंड़ के साथ उड़ने लगी। वे वहीं - वहीं चक्कर खा रहे थे। कहीं घोड़ा उड़ रहा था । तो कहीं हाथी उड़ रहा था । कहीं साफा उड़ रहे थे। तो कहीं सुथना उड़ रहे थे ।

हो ss क्या कहना आकाश में सब पत्तों के समान उड़ रहे थे।

उनकी टज़ूख्ज़ ,कान में धूल भर रही थी। चले जा रहे हैं उड़ते - उड़ते कोई नाला में गिर रहा है तो कोई नदिया में । कोई पेड़ की ड़गाल पर लटक गया है ,तो कोई पत्थर में गिर कर पिचला हो गया है। ऐसा बुरा हाल कर दिया है मटियों ने पठानों की सेना का भाई ।

हो ss अब पहुंच रहे हैं अत्ते खां, फत्ते खां राजा के दरबार में सब हाल सुना रहे हैं। कहते हैं बादशाह पूरी सेना उड़ गई। अब हमारी हिम्मत नहीं है।

अब बादशाह कलारों की फौज भेजते हैं भाई रे । अब चली है कलारों की फौज रे भैया।

खोवन के लाही रे दादा

रख - राख के चटुआ रे

कैसे जाकर पहुंच रहे हैं

सागर के बांध में

जाकर घेर लिया है हिरदे शाह को भाई रे ।

हो ss जब सिंगियों ने देखा है

कलारों की फौज को

रख - रख कर छुरी चाकू

दौड़े है दादा

सात सौ सिंगी

फकै - फक ,फकै - फक,

नाक को काट लिया भैया

अब नैहा रे ठिकाना रे

नाक को पकड़ के

मैं म्ैां कर रहे हैं रे भाई

कहां गया चटुआ

अब कलारों की फौज भगी है रे दादा

हो ss बादशाह पूंछते हैं। कहो रे कलरा क्या हुआ रे! कैसे के भागकर वापस आ गये । वहां वे क्या बताते नाक को पकड़कर मैं मैं कर रहे हैं। राजा कहता है इनको भगाओ अब तेलिन की सेना भेज रहे हैं रे भाई ।

अब चले हैं तेली रे दादा

बड़े बड़े लाट रख रखकर

कोल्हू चलाने का लाट रे

रखे हुये हैं कंधे में

हुमकते जा रहे हैं रे दादा

जाकर घेर लेते हैं राजा हिरदे शाह को रे हो ss

हो ऽऽ जब देखा है भूतों ने तेलियों को तब तेरह सौ भूत दौड़कर उन तेलियों के पेट में घुस गये हैं। अब क्या कहना रे दादा दस्त लगने लगे तेलियों को।

दोनों सुर चलने लगे रे भैया । वे पेट पकड़कर नाला के रास्ते जाने लगे। पानी लेकर उठे नहीं की फिर से दस्त लगने लगे। बार बार दस्त लगने से तेलियों के हौसले पस्त हो गये रे भैया।

सब तेली लौटकर दिल्ली शहर में वापस आ गये रे भाई हो ऽऽ जब सुना है बादशाह ने और जिस समय उसने कुम्हारों की सेना भेजी है । कुम्हार अपना - अपना चका लेकर चले हैं युद्ध करने।

चले हैं कुम्हार
रखे हैं चका रे भैया
और रखे हैं चटुआ रे दादा
जाकर घेर लिया है राजा हिरदेशाह को हो ।

होऽऽ जब देखा है चुड़ेलिनों ने ! उसी समय वे छन - छन - छन - छन चूड़ियां बजाते निकलती है। तब क्या कहना है भाई एक एक कुम्हार को लपेट तो लिया है ।

अब कुम्हार रे दादा
अपने - अपने को रे भाई़
कूंदने फांदने तो लगे हैं
कोई नाचने लगता है
कोई कूंदने लगता है
कोई रोता है रे दादा
कोई तो हंस रहा है भाई
अब तो बताओ दादा
तमाशा सा हो गया है भैया
कुम्हारों के हाल बेहाल हो गये हैं रे भाई
सब कुम्हार भाग जाते हैं!अपने चके फैंक - फैंक कर रे भाई।
अब चली है महरों की सेना अपने - अपने मगठों को रख - रखकर भैया।
अब चली है सेना महरों की भैया
रख रख कर मंगठा
जब देखा है मटिया ने रे भाई
दूर से ही भाई चली हैं मटिया
धूल और गुबार
गोबर और कचरा
नौ सौ गाड़ी इकट्ठा करके
जिस समय रे भाई महरन को लपेटे हैं

महरो कीऑखं में धूल ही धूल, कचरा ही कचरा ,वे वहीं वहीं घूमने लगे महरों को कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। उनकीऑखं में अंधेरा छा गया। घर को भागे महरा अपना चरखा मंगठा

छोड़कर। जाकर राजा से बतलाते हैं हो ss

हो ss रुम बादशाह की पूरी सेना हार गयी। पठान पलटन , कलार पलटन, तिलियान पलटन, महरान पलटन, अहरान पलटन, पूरी पलटन हार गयी। अब रुम बादशाह हाथी पर सवार होकर अपने दरबारियों के साथ जा रहे हैं। सरवर सागर बांध में राजा हिरदेशाह के पास हो ss।

हो ss जब सिंगियों ने देखा की बादशाह आ रहे हैं। तब वे जगा रही हैं राजा हिरदे शाह को । राजा उठे । राजा अपने घोड़े पर सवार होकर दो कोस पहले राजा को लेने जा रहे हैं। आगवानी के लिये ।

राजा पीठ ठोंक रहे हैं राजा हिरदे शाह की शाबासी दे रहें हैं और कहते हैं रुम बादशाह!

धन्य है हिरदेशाह तुम्हारे बारे में जितना सुना था वैसे ही हो तुम । आज से तुम चौरागढ़ के राजा मान लिये गये। आज आप हमारे दरबार में आइये।

इतना कहकर रुम बादशाह अपने दरबार को वापस हो गये हैं हो ss

अब आ रहे हैं बादशाह
राज दरबार में रे भाई
खुदवा रहे हैं कुंआ
बारह हाथ का गहरा रे दादा
बीच आंगन में रे भाई
उसके ऊपर बिछा रहे हैं दरी
दरी के ऊपर रखे हैं मचिया
उसके चारो तरफ बैठक लगा दिये हैं।

हो ss इतनी व्यवस्था करके राजा हिरदे शाह को बुलवा रहे हैं। सरवर सागर बांध से रे भाई ।

अब हिरदे शाह रे भाई
कर रहे हैं तैयारी रे दादा
पहने हैं श्रृंगार रे भाई
पांव में चप्पल जूता
हाथ में बैंत की सांटी
गले में उतराजी माला
बगल में मृग छाला
हाथ में जन्तर
मुंह में मंतर
कानों में कुंड़ल
शीश नाग की टोपी
बादल का छाता
काली मेघ की ढ़ाल
गीला बंजर कटार तेगा रखकर तैयार हुये हैं हो ss

हो ss घोड़ा को सजाया है । राजा हिरदे शाह ने और सवार होकर चले हैं रुम बादशाह के

दरबार में हो ऽऽ

हो ऽऽ छन - छन, छन - छन,

नेवरा तो बज रहे हैं

उड़न बछेड़ा पर

राजा हिरदेशाह

कैसे चले जा रहे हैं भैया

जाकर पहुंच गये हैं

दिल्ली शहर में रे दादा

बारह फेरी का परकोटा

लगा है भाई

सात दरवाजे पार कर रहे हैं हिरदेशाह

महल अटारी खंड़ा सतखंड़ा

कांचे क्रंचन दहनारा

हीरा मोती के लगे हैं बजारा

चांदी के खंबा

मोती की झालर

सोने के कलश

चमक रहे हैं भाई

अब चले जा रहे हैं हिरदेशाह रे भाई हो ऽऽ

हो ऽऽ राजा हिरदेशाह दरबार में पहुंचे हैं ।

राजा रुम बादशाह आदर सत्कार कर रहे हैं । ले जाकर मचिया के ऊपर बैठाला है ! राजा हिरदेशाह को !

हो ऽऽ क्या कहने मचिया के ऊपर बैठते ही राजा हिरदे शाह धड़ाम से कुंआ में गिर गये। बादशाह ने ऊपर से पटियों को बिछवा कर पक्के पत्थरों से जुड़ाई करवा दी राजा कुंआ के अंदर फंस गये हो ऽऽ

उस कुंऐ में ऊपर की ओर से हवा आने के लिये राजा ने झरोखा बनवा दिया था। उसी जगह पर बादशाह ने अपने नहाने का पत्थर रख दिया था बादशाह ने।

हो ऽऽ रोज बादशाह उस पत्थर के ऊपर बैठकर स्नान करते और वहीं से पूंछते क्यों रे हिरदेशाह जी रहा है की मर गया। अभी जी रहा हूं राजा साहब कहते हैं हिरदे शाह।

हो ऽऽ राजा उन्हें खाने पीने को कुछ नहीं दे रहा था। राजा के नहाने के पानी से हिरदेशाह अपनी प्यास बुझा रहा था।

सूख कर लकड़ी तो हो गया हिरदेशाह

ऑखं में प्राण आ गये हैं हिरदेशाह के

अब तो मरना हो गया है रे दादा

कुंआ में पड़े - पड़े

बारह बर्ष हो गये

हमारा पूछने वाला कोई नहीं आया रे

तब याद करते हैं

बड़ा देव की दादा

तुम रे बड़ा देव

बुजुगरें के मानते के

जनम जनम से चले आये हो

आखिर आज के दिन हे देव

विपत्ति आ गयी है

संकट में सहाय हो जाओ हे देव होऽऽ

हो ऽऽ बड़ा देव राम नगर के महल में अटारी के ऊपर शंकर झूला झूल रहे हैं। जब राजा हिरदेशाह यहां प्रार्थना करते हैं । उसी समय वहां पर कड़ा - कड़, कड़ा - कड़, सोने की जंजीरें टूटने लगीं। अरर... गजब हो गया। राजा हिरदेशाह के ऊपर संकट पड़ गया है। बड़ा देव चले हैं सन - सना कर वहां की सीमा में पहुंचते हैं बड़ा देव। वे लोट - पोट कर बहुत बड़ा चूहा बन जाते हैं। अब खोदना शुरु किया है धरती को खोदते - खोदते जाकर पहुंच गये उसी कुंआं के पास। निकलकर आ गये कुंआ में।

हो ऽऽ क्या देख रहे हैं बड़ा देव । बड़ा देव देख रहे हैं कि राजा हिरदेशाह सूखकर लकड़ी के समान हो गये हैं। चमड़ी से चमड़ी, मांस से मांस, हड्डी से हड्डी जुड़ गये हैं हो ऽऽ

बड़ा देव वहां प्रगट हो गये हैं हो ऽऽ

अब बड़ा देव रे दादा

फेरते हैं अपना हाथ

राजा के शरीर में

जैसे थे वैसे ही हो गये भैया

बड़ा देव की माया है रे भाई

हो ऽऽ बड़ा देव फिर से चूहा का रुप धारण कर लेते हैं। अब खोदते हैं सुरंग! खोदते - खोदते सुरंग निकालते हैं। रुम बादशाह की पुत्री के महल में।

उस महल में रे भैया

चिन्ना मोती रानी

रुम बादशाह की कन्या

रहती थी रे भाई

सोलह सौ सखियां

सेवा में रे दादा

सोने के पलंग में

रेशम का गुथना दादा

सोने की सांकल में

झूलती है रे दादा

बहुत सुन्दर कन्या तो रही है रे भैया

चंदा के समान गोरी रे

सूरज के समान सुंदर रे

आम की कली के समान टॉख

कुंदरु और करेला के समान लाल औंठ

पके केले के समान बदन है रे भैया

मुंह के मुंहनिया रे भैया

जादू करती टॉख रे भैया

ऐसी कन्या है रुम बादशाह की रे भैया।

वहां राजा हिरदेशाह को पहुंचा दिया है बड़ा देव ने रे भाई।

अब बोल रहे हैं बड़ा देव । ले बेटा मैंने तुमको तुम्हारे जीवन साथी के पास पहुंचा दिया है। अब तुम जानो । अब तुमने अच्छा ससुर पा लिया है। दिल्ली वाले बादशाह को। मैं जा रहा हूं अपने राम नगर में।

चल देते हैं बड़ा देव हो ऽऽ

हो ऽऽ जब देखती है कन्या हिरदेशाह को और हिरदेशाह देख रहे हैं चिन्ना मोती कन्या का दोनों एक दूसरे को देख कर मुसकराने लगे।

कैसे हंस - हंस कर पूंछ रही है चिन्ना मोती । आप कहां से आये हो राज पुत्र। कैसे आये हो यहां पर।

हो ऽऽ किस प्रकार से हंस - हंस कर बता रहे हैं हिरदेशाह। तुम सुन लो राज कन्या।

हम चौरागढ़ से आये हैं राज कन्या। मेरा नाम हिरदेशाह है आपके पिताजी ने बुलाया था। इसलिये आया था।

हो ऽऽ उस राज कन्या ने हिरदेशाह का नाम सुन रखा था। किस प्रकार से युद्ध हुआ था सुन रखा था। पर देखा नहीं था । आज रानी राजा को देखकर उसके ऊपर मोहित हो गयी।

अब रहने लगे भैया

राजकन्या के महल में

हिरदेशाह राजा

उस राज कन्या से हो गयी

मित्रता भाई रे

कुछ दिनों बाद

राज कन्या गर्भवती हो गयी रही है रे हो ऽऽ

हो ऽऽ चिन्ना मोती कन्या गर्भवती हो गयी है नौ माह पूरे हो गये। उस राज कन्या ने एक पुत्र को जन्म दिया है।

कैसे छिपाकर रखे हैं भैया

उस लड़के को भाई

किसी को पता नहीं चलने दिया

हिरदेशाह ने दादा

कैसे दोनों पति - पत्नी बनकर

प्रेम से रह रहे हैं

हो ss एक दिन की बात है बादशाह का पुत्र नुंग डुंग वहीं से जा रहा था। अपने महल में बच्चे की आवाज सुनकर। वह धड़धड़ाते हुये सात मंजिल के महल में पहुंच गया।

हो ss वहां पहुंच कर क्या देख रहे हैं नुंग डुंग।

उसकी बहन तो हिरदेशाह के साथ बैठी है और लड़का झूला में पड़ा रो रहा है। उसकी बहन उसे झुला रही है।

हो ss यह देखकर नुंग डुंग उल्टे पैर भागा और राज दरबार में पहुंचकर हाय तौवा तौवा करने लगा।

रुम बादशाह कहते हैं क्या है रे बेटा क्या हो गया है रे

कहता है मत पूंछो अब्बा ! उस महल में तो हिरदेशाह मेरी बहन के साथ बैठा है।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

हो ss रुम बादशाह का तो नहीं है ठिकाना गुस्सा के कारण पैर की झार मुंह से निकल गयी। सिर के दो चार बाल टूटकर गिर गये धरती पर। कहते हैं महल को घेर लो पकड़कर कत्ल कर दो उसका तब बोल रहा है उसका बेटा नुंग डुंग होss

अब्बा आप उसका कैसे कत्ल करवाओगे। बहन की गोद में उसका पुत्र खेल रहा है फुदुर - फुदुर !

अब तो दमाद बन गया है हिरदेशाह।

रुमशाह सोच में पड़ गया है हो ss

अब उसने बुलाया है राजा हिरदेशाह को

भरे न्यायालय में रे भैया

आये हैं हिरदेशाह

साहब सलाम करके

बैठ गया दादा

रुमशाह कहते हैं

सुन ले रे राजा

हम मान गये तुमको

बहुत बहादुर हो तुम

तुमको हम अपनी बेटी देने के लिये

तैयार हो गये हैं राजा

परंतु एक बात है भाई

हमारे खान दान में चली आ रही है

हमारे तीन प्रण तुम पूरे कर दो रे राजा

हम तुमको अपना पक्का दमाद मान लेंगे हो ss

हो ss राजा हिरदेशाह पूंछते हैं बादशाह तुम्हारे कौन से तीन प्रण है। तुम बताओ भाई हो ss

अब बतलाते हैं बादशाह! कहते हैं सुन रे राजा।

पहला प्रण यह है कि हमारे कायर घोड़े को सायर कर के बता दे और दूसरा यह है कि कायर घोड़े को सायर करके बता दे। तीसरा प्रण यह है कि एक बकरा को एक ही वार में तीन टुकड़ा कर के बता दे।

इतना प्रण यदि तुम पूरा कर लेते हो तो मेरी कन्या से विवाह करके तुम अपने राज्य में जा सकते हो ss

हो ss राजा हिरदेशाह रे भाई

मन में सोचते हैं

कैसा करुं दादा

कुछ अकल काम नहीं कर रही है

सायर घोड़ा कैसे में कायर होगा

और कायर घोड़ा कैसे में सायर होगा

बकरा के एक ही वार में तीन हिस्से कैसे होंगे

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है रे भाई

ऐसा सोचते - सोचते

आ रहे हैं राज महल में रे भाई

अब पूंछ रही हैं राज कन्या रे दादा

कैसे हो राजा

आपका मन उदास है

तुम इसका कारण बताओ रे जोड़ी

हां ss अब राजा हिरदेशाह राजकन्या को राज दरबार के सब हाल चाल बता रहे हैं रे भाई ss

हो ss क्या बोल रहे हैं राजा! तुम सुन लो री रानी। आपके पिताजी ऐसी प्रतिज्ञा कर ली है

अब तो मेरा दिमाग कुछ भी काम नहीं कर रहा है भाई रे।

तब कन्या बोलती है रे भाई

तुम सुन लो मेरे साथी

बड़ा देव का स्मरण कर लिजिये

कायर घोड़ा को सायर

सायर घोड़ा को कायर

घड़ी भर में बना देंगे बड़ा देव

तब सोचते हैं राजा हिरदेशाह रे भाई!

फिर बोलते हैं बकरे के तीन हिस्से कैसे होंगे ? तब रानी कहती है! वह तो ऐसे ही हो जावेगा। सुनो ! बकरे की पूंछ में नमक लगा देना। जब बकरा अपनी पूंछ को चाटने लगे । उसी समय उस पर तलवार से वार कर देना उसके तीन टुकड़े हो जायेंगे।

हिरदेशाह रानी की बात को सुनकर खुश हो गये रे भाई ss

अब आये हैं राजा

दरबार में रे दादा

कहते हैं पूरा करुंगा प्रण मैं

आपका बादशाह

तब मंगाया है घोड़ा

कायर और सायर रे भैया

जिस समय मारा है दादा

बड़ा देव का स्मरण करके

बैठ गये हैं कायर घोड़ा में

उसी समय रे दादा

हवा में उड़ने लगा घोड़ा

बिजली के समान तेजी आ गयी घोड़े में

बारा कोस की मंजिल पूरी करके

हिरदे शाह वापस आ गये हैं रे हो ऽऽ

हो ऽऽ राजा देखकर प्रसन्न हो गये है रे दादा। अब बोल रहे हैं राजा। अब सायर को कायर बनाओ बाबू?

अब बड़ा देव का स्मरण करके

जिस समय रे भैया

बैठते हैं सायर घोड़ा में

खींचते हैं लगाम रे दादा

एक डग आगे नहीं बढ़ता है घोड़ा

मारते हैं कोड़ा

आखिर धन्य रे घोड़ा कायर हो गया

अर्रा कर बैठ गया रे दादा

हिरदेशाह घोड़े के ऊपर से कूंद पड़े।

हो ऽऽ रुमशाह देखकर हैरान हो गया। हार मान गया रुमशाह। जाओ मैं तुमको अपनी बेटी देता हूं।

अब कर रहे हैं बिदा अपनी बेटी की रुम बादशाह हो ऽऽ

पूरा श्रृंगार किया है रानी

चिन्ना मोती कन्या ने

सोलह सौ सखियां

साथ में चल रही हैं

सज गयी है ड़ोली

हाथी और घोड़ा

दान और दहेज

दिया है बादशाह ने

अपनी कन्या को रे दादा

अब चले है राजा हिरदेशाह चिन्ना मोती को लेकर राम नगर होऽऽ
अब आ गये हैं भैया
राम नगर की सीमा में
सरवर सागर बांध में
पड़ गया है ड़ेरा रे भाई
आम के बगीचा में
फूल और फुलवारी में गड़ गये हैं तंबू
चिन्ना मोती रानी
सोलह सौ सखियां
कर रही हैं किलोल रे
मां नर्मदा में
स्नान कर रही हैं रे भैया
नदी के कछार में
पड़ गया है ड़ेरा रे भाई

हो ऽऽ बहुत बड़ा ड़ेरा पड़ गया है। राम नगर की प्रजा देख - देख कर घबड़ा रही है। कह रही है पठानों की सेना आ गयी है । राजा हिरदेशाह को बादशाह ने मरवा ड़ाला होगा। अब हम लोगों को मारने आ गये।

हो ऽऽ क्या कहना महल में खबर हो गयी। राजा पेमलशाह, दूधनशाह, बूड़नशाह, आजमशाह सब सोच में पड़ गये। सभी चले जा रहे हैं आगवानी लेने को हो ऽऽ

हो ऽऽ जब देखा है राजा हिरदेशाह ने की पिताजी आ रहे हैं। उसी समय निकले हैं तंबू से नंगे पांव दौड़ते हैं ।

हो ऽऽ जब पास पहुंचे हैं तब क्या कहना। पहचाना है राजा ने अपने लड़का को।
उतार कर छाती से लगाये हैं हो
मिलना जुलना होने लगा भैया
बाप और बेटा
चूमा और चाटी
होने लगी है भाई रे
राजा हिरदेशाह रे दादा
सभी से मिल रहे हैं भाई
सभी खुश हो रहे हैं दादा हो
हो ऽऽ सभी हालचाल पूंछ रहे हैं। सब बता रहे हैं राजा हिरदेशाह।
लड़कियों को देखकर कहते हैं ये कहां से पठानों की लड़कियां लेकर आ गये हो।
अपना सब हाल - चाल बता रहे हैं हिरदेशाह हो। अब तो राजा पेमलशाह रे दादा
बहुत ही खुश हो जाते हैं रे दादा
अब आ रही हैं माता पोहपाल रे
ले जा रही हैं अपने नाती और बहू को महल में।

पैर धुलाकर पानी उतार रही हैं।
आनंद उत्सव होने लगा है दादा
राम नगर में बाजा बजने लगे।
हिरदेशाह का विवाह होने लगा है रे दादा
हल्दी ,तेल, मंड़प और मायनों
बरात और भांवर सब होने लगा है रे दादा
राज्य भर के छोटे बड़े
निमंत्रण में आये हैं
खाना और पीना
नाचना और गाना
आनंद और उत्सव
सब होने लगा है भैया
बस्ती में खुसयाली ही खुशयाली हो रही है।
हो ss राजा हिरदेशाह का विवाह रानी चिन्ना मोती के साथ हो गया।

हो ss हिरदेशाह ने एक महल बनवाया रानी के रहने के लिये। उस महल में रानी चिन्ना मोती अपनी सोलह सौ सखियों के साथ रहने लगीं। इस तरह से राजा हिरदे शाह के दिन खुशहाली से कटने लगे।

उसी महल को आज रानी महल कहते हैं वह आज भी रामनगर में बना है।
जैसे राजा हिरदेशाह के दिन बदले हैं वैसे सबके दिन बदलें रे भाई ss......

00ध्
ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्00

राजा बैहामारी

हो ss सुमरन कर लो भैया
रामचंद्र भगवान के रे हीरा
कैसे होते हैं संकट में सहाय
हरी का नाम हजारी हो ss
हो ss अब गाकर सुनाता हूं रे मेरे मालिक
बैहामारी के वृतांत को रे भाई
कैसे गोंड़ राजा का लड़का बैहामारी
कैसे अपने पिता से दुशमनी भंजाये है रे दादा
कैसे शादी रच गयी है रे भाई ss
हो ss अब तुम सुन लो मन से रे भाई ss
कैसे सिंगार द्वीप का राजा
श्री धरती पती थे रे भैया
कैसी थी पूंगारपूसे रानी
श्री धरती पती का रे भाई
कैसे राजा राज कर रहे हैं सिंगार द्वीप में हो।
हो ss सिंगार द्वीप में
श्री धरती पत राजा राज कर रहे हैं।
सोना और चांदी
महल और अटारी
हाथी और घोड़ा
लाव और लशगर
कमी नहीं है राजा को
हो ss पूंगारपूसे राजा की रानी हैं।
बोलने में मैना
देखने में मनमोहक
चाल में कबूतरी
बुद्वी में चतुर
ऐसी है रानी पूंगारपूसे !
ऐसे राजा रानी सिंगार द्वीप
में राज कर रहे हैं हो ss
राजा श्री धरती पत की भैया
एक ही बहन

नाम उसका घैलाक दामा

विवाह हुआ है झिंझरागढ़ में

राजा जलमन शाह के साथ में

विवाह हो गया है रे भाई

हो ऽऽ एक दिन राजा श्री धरती पत सोचते हैं अपने मन में ! क्या सोचते हैं। राजा श्री धरतीपत ?

कहते हैं जबसे माता पिता मरे हैं। उस दिन से बहन को नहीं लाया हूं। क्या सोचती होंगी अपने मन में मेरी बहन ! अपने मन में कहती होगी की जब तक माता पिता जिंदा थे। तब तक मुझे सभी तीज त्यौहार में बुलाते थे। अब भाई और भाभी हैं। तो वे नहीं पूंछते हैं। न होता तो बहन को कुछ दिनों के लिये घर ले कर आ जाता।

ऐसा सोच रहे हैं राजा धरती पत

अपने मन में हो भाई रे।

अब श्री धरती पत राजा रे

सोचत - सोचते

पहुंचे हैं महल में

रानी पूंगारपूसे को

बताते हैं रे दादा

अपने मन की इच्छा को रे भाई

हो राजा श्री धरती पत पूंछ रहे हैं पूंगारपूसे से। क्या बोलते हैं राजा! कहते हैं क्यों रानी जी। बहुत दिन हो गये हैं बहन को अपने घर नहीं बुलाया है। न होता तो लेकर आ जाते। रह लेती अपने भाई के घर दो चार दिन।

रानी कहती है । राजा आपने ठीक सोचा है ले आइये। बहुत दिन हो गये हैं उसे नहीं देखा। उसकी बहुत याद आती है मुझे भी। जाइये राजा उसे लेकर आ जाइये।

अब राजा श्री धरती पत झींझारगढ़ जाने की तैयारी कर रहे हैं भाई।

अब किये हैं तैयारी

श्री धरती पत राजा

कस रहे हैं घोड़ा

जीन और पलैंचा रे

रेशम की ड़ोरी से

सोने के पलैंचा रे

चांदी की रकाब रे दादा

सोने की करिहारी

लगाये हैं घोड़ा को

मोती चूर की कलगी

बांधा है घोड़े को

इस प्रकार से घोड़े को सजाकर

खड़ा किया है राजा ने हो ऽऽ

हो ऽऽ अब पहन रहे हैं श्रृंगार

श्री धरतीपत राजा

पैरों में चप्पल रे भैया

हाथ में चंदन की छड़ी

नीचे पहने हैं शंकर धोती

ऊपर पहने हैं झंगा

झंगा के ऊपर अंगा

सिर पर बांधे हैं पगड़ी

गले में सोने की सांकल

कान में पहने हैं लुरकी

हाथ में पहने हैं चूरा

अब हो रहे हैं घोड़े पर सवार राजा धरती पत हो ऽऽ ।

कहते हैं जा रहा हूं। रानी अपनी बहन को लिवाने तुम अच्छे से रहना घर में। रानी कहती हैं राजा से आप मेरी ज्यादा चिंता मत करना। परंतु तुम बहन के घर जाकर मुझे न भूल जाना।

ससुराल जाता तो भूल जाता रानी वहां क्या भूलुंगा।

इसी प्रकार हंसी मजाक करके घोड़े पर सवार हो कर चल देते हैं राजा हो ऽऽ

चले जा रहे हैं धरती पत रे भैया ऽऽ

कुछ चलते कुछ दौड़ते कुछ उड़ते रे दादा

एक वन पार करते दो वन रे दादा

तीन वन पार करते हैं पांच वन रे भाई

कैसे पार करते जा रहे हैं कजरी वन बिद्रा दौना गिरी पहाड़ हो ऽऽ।

हो ऽऽ चले जा रहे हैं राजा धरती पत ! बहन की याद आ रही है रे दादा। कैसे सोचते जा रहे हैं। अपने मन में । बहन और बहनोई के बारे में हो ऽऽ ।

हो ऽऽ जाकर पहुंचे हैं राजा झिंझरागढ़! बहन के महल के द्वार में पहुंच गये हैं रे भाई!

कैसे खबर भेज रहे हें राजा धरती पत हो ऽऽ

हो ऽऽ खबर पाते ही घेलाक दामा ने सुना है । क्या सुना ह।ै मेरा भाई आया हैं !

हो ऽऽ पिसाई कर रही थी उसने पीसना छोड़ दिया। पोत रही थी ! पोतना छोड़ दिया। सो रही थी बिस्तर छोड़ दिया। खाना की थाली छोड़ दी। पीने का पानी छोड़ दिया। तुरंत उठकर दौड़कर आ रही है भाई से मिलने को हो ऽऽ

लोटे में पानी रखकर

सिर पर कलश जलाकर

हाथ में सोने की थाली

हल्दी और चांवल के दाना

लेकर रे घैलाक दामा

सोलह सौ सखियां

के साथ में

निकलकर द्‌वार में आयी हैं हो ss

हो ss जब देखा है भाई को उसे घोड़े से उतार रही हैं। सोने की थाली में पैर धुला रही हैं। हल्दी चांवल का टीका लगा रही हैं। फिर अपने भाई के गले से लिपटकर भेंट कर रही हैं रे भाई ss

गले से लिपटकर बहन

रो रो कर मिल रही हैंऑखं में आंसू बह रहे हैं

सोच - सोचकर रो रही हैं

माता - पिता की याद करके

वह बाग और बगीचा

वह नदियां और झाड़ियां

वह जंगल और पहाड़

और वह छीता पतेरा

याद कर कर रे दादा

हिलक - हिलक कर रो रही हैं

राजा श्री धरती पत समझा रहे हैं अपनी बहन को हो ss

हो ss मिल जुलकर घैलाकदामा। भाई को ला रही है। महल के भीतर। बैठाल रही है पलंग पर। पूछ रही है भाभी के हाल चाल। घर बस्ती के हाल चाल । गांव बस्ती के हालचाल ।

कैसे पूछ रही है रे दादा।

हो कैसे पूंछ रही है घैलाकदामा राजा से । गांव बस्ती के हालचाल पूंछ रही है ।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

वह पूंगारपूसे

भाभी कैसी है भैया

वह पनिया बिल्लो बैगा

जी रहा है की नहीं

वह लंगड़ी फुआ

करौंदा की मां

वह कबरी गाय

कैसे पूंछ रही है बहन

सब बता रहे हैं राजा धरतीपत अपनी बहन से हो ss

हो ss खबर दबर पूंछ कर कैसे खाने की तैयारी हो रही है रे भैया ss

कैसे खुश हैं रे दादा

घैलाकदामा रे भाई रे

कैसे किसिम किसिम

के खाना रे भाई

बना रही है रे भैया

मेवा - मिष्ठान

पांचों पकवान

गेहूं के गोदला

चांवल के बबरा

उड़द के बरा

तेल की पुड़ी

केवलार की भाजी

भुट्टा का पेज

कुदई का भात

महुआ का लाटा

दूध की बियारी

मठा की महेरी

चना का चबैना

मसूर की दाल

कंचन की थाली

सोने का गडुआ

गंगा जमुना का पानी

हीरा मोती का पटा

कैसे घैलाकदामा अपने भाई को खाना खिला रही हैं भाई रे । कैसे पास में बैठकर आंचल से हवा कर रही है। ऐसा है बहन का प्यार रे भाई ।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

हो ऽऽ भोजन पानी हो गया है कैसे पलंग के ऊपर बैठे हैं। श्री धरतीपत राजा। कैसे आये हैं कचहरी से जलमन शाह राजा । कैसे दोनों साले बहनोई भेंट भलाई कर रहे हैं हो।

हो ऽऽ राजा जलमन शाह कहते हैं ! कैसे में हो रानी।

घर में चोर घुस गया पर मुझे कुछ खबर नहीं दी। राजा धरतीपत कहते हैं। चोर के समान तो तुम हो जीजा ! मेरी बहन को सिंगार द्वीप से चुराकर ले आये हो । वैसा ही मुझे मत समझों भाई ऽऽ

इस प्रकार से साले बहनोई दोनों मजाक कर रहे हैं।

खैर कुशलता पूंछ रहे हैं भाई ऽऽ ।

जलमन शाह पूंछते हैं ! कैसे आये हो बहुत दिनों बाद खबर की है। बता तो दे भाई !

तब बोले हैं राजा श्री धरतीपत हो ऽऽ

तुम सुन लो जीजा

बारह बर्ष हो गये

बहन ने रे जीजा

मायके का मुंह नहीं देखा है

इसलिये लिवाने आया हूं हो ऽऽ

हो ऽऽ तब बोलते हैं जलमन शाह। ले जाओ भाई में मना नहीं करता। परंतु जैसा ले जा

रहे हो वैसे ही पहुंचा देना। मेरे यहां काम ज्यादा है इसलिये मैं नहीं आ सकता।

अब कर रही है अपने मायके जाने की तैयारी घैलाकदामा हो।

हो ss कैसे कर रही है तैयारी घैलाक दामा ।कैसे निकालती है सिकोसी से अपने कपड़े।कैसे सज रही है घैलाकदामा रे भाई।

कैसे सोने की सिकोसी जी
चांदी की झांपी रे दादा
खोल रही है घैलाकदामा
निकाल रही है कपड़ा
कैसे बारह थान के लंहगा
चांदी मुठी की तिरनी रे
झींका तानी अंगिया हो
अठारह बैल की कानी रे
फरीया का नाम चारम चीरा
चारों कोनों में जले हीरा
तिरन के अंगिया
पूरब की चोली
झिन मझयावर का अलंगा
राय गजन की पैरी
रतन जोत के खीला
देश भंगान टोड़र
गबरी गजन की चूड़ी
चंदा सूरज मनियारी
सोने की बिंदिया
माथे में सुशोभित है
ऐसा श्रृंगार करके तैसार हो गयी घैलाक दामा हो ।

हो ss अब हो गयी है तैयारी। घर गृहस्थी के समान को । घर में अच्छे से ढ़ांक कर सुरक्षित रख दिया। भंड़ार गृह में ताला लगा दिया। रानी तब राजा से कहती हैं! देख राजा यहां कुछ नुकसान नहीं करना । सभी घर परिवार के लोगों को बतलाकर अपने भाई के साथ जा रही है हो ss

हो चली जा रही है रानी झिंझार गढ़ से! कई मंजिलों को पार करके आ गयी है सिंगार द्वीप। वहां जाकर राजा के महल के दरवाजे में खड़ी हो गयी है भाई!

हो ss पूंगारपूसे ने जैसे ही इन्हें देखा
दौड़ कर आ रही है भाई रे
लोटे में पानी रखकर
सोने की थाली में
धुला रही है पैर रे

गले से लिपटकर

कर रही है भेंट रे भाई

दोनों ननद भोजई

रो रो कर भेंट भलाई हो रही है भाई

हो ss कैसे - कैसे भेंट भलाई हो रही है। कैसे एक दूसरे को चूम रही हैं। कैसे ननद बाई को भीतर ले जा रही हैं। कैसे पलंग पर बैठाल रही हैं हो ss

अब दोनों भैया

ननद और भौजाई रे

हंस - हंस के रे हीरा

कैसे अपनी - अपनी बात को

सोच - सोच कर बताती हैं

कैसे धीरे - धीरे हंसती हैं

बारह वर्ष में रे दादा

ननद भैाजाई मिल रहे हैं रे भैया

कैसे बात करती हैं रे

हो ss अब राजा श्री धरती पत बोल रहे है ! क्या बोल रहे हैं राजा ? तुम लोग हंसती ही रहोगी की कुछ भोजन पानी की चिंता भी करोगी।

बहन के साथ रहकर मेरा पेट भर गया है । इसलिये भूल गई राजा।

तो ऐ भौजी तुम बहुत खराब हो कहकर हंसते हैं घैलाक दामा रे भाई !

हो ss रानी पूंगारपूसे उठी हैं। घर में कई किस्म के पकवान बने हैं।

चिन्ना मोती के चांवल,

गेंहूं के गोदला,

चांवल के बबरा,

तेल की सुहारी,

गुड़ की बड़ी,

रानी ने सभी प्रकार का खाना बनाकर सोने की थाली में परोसा हैं हीरा मोती के पटा बिछाये हैं। सोने के लोटे में गंगा जमुना का जल भरा है।

दोनों भाई बहन खाना खाने बैठाल रहे हैं । उसके पास में बैठकर मक्खी हकाल रहे हैं भाई रे ss

हो ss ऐसी है ननद और भौजाई

दोनों भैया

हिल मिलकर रहती हैं

कैसे हंस - हंस कर मजाक करती हैं

कैसे रंग - रंग का खाना खा रही हैं

कैसे रंग रंग का पहनती हैं

कैसे मायके में आ कर रे भाई

सभी लोग मिल जुलकर रहते हैं
घैलाकदामा राजा की बहन हो ss
भगवान की मरजी रे दादा
दोनों ननद भौजाई
दोनों गर्भवती हो गयी भाई
ऐसा लगता है दोनों एक साथ बच्चों को जन्म देंगी हो ss

हो ss एक दिन की बात है घैलाकदामा कहती है रानी पूंगारपूसे से। क्यों भाभी मुझे आये इतने दिन हो गये पर आज तक हरदी बजार नही गये हैं। बचपन में जाते थे उसी की याद आ रही हैं न होता तो एक बार हरदी बजार घूम कर आ जाते । तुम जरा भैया से पूंछना तो।

पूंगारपूसे कहती है ठीक है आज मैं पूंछूंगी।

जब आये हैं राजा
कचहरी से भैया
खाना खाने बैठे हैं
उसी समय पुंगारपूसे पूंछती है रे भाई।

हो क्या कहती है पूंगारपूसे । कहती है राजा! आपकी बहन हरदी बजार जाने को कह रही है। न होता तो मैं दिखा कर ले आती।

हां तो कल ही तो हरदी बजार है। जाओ दोनों घूम कर आ जाओ। परंतु शाम को जल्दी लौटकर वापस आ जाना। अब दोनों ननद भौजाई हरदी बजार जाने को तैयार हो गये हैं भाई रे।

अब कर रहीं हैं हरदी बजार जाने की तैयारी भैया
सुबह बहुत जल्दी उठकर दोनों
स्नान करके कैसे हल्दी तेल का चिकसा लगाती हैं भाई रे

कैसे सिर के बाल संवार कर मांग निकाल रही हैं।कैसे हाथ पैर को चिकना कर रही हैं हो ss

कहती है घैलाकदामा आज बारह वर्ष बाद हरदी बजार देखने को मिलेगा।

हो कैसे निकालती है पेटी संदूक रे भैया
निकाल रही है नये नये कपड़ा रे भाई
कैसे बारह थान का लंहगा
कैसी अंगिया रे झींका तानी
उसमें बारह बैल की लगी कानी
कैसी फरीया चारम चीरा
चारों कोनों में जलते हैं हीरा
इस प्रकार के वस्त्र पहन रही हैं
ननद और भौजाई हो ss
हो ss अब मत तो पूंछो भैया
निकाले हैं गहना

रंग बिरंगे दादा
सोना और चांदी के
हीरा और मोती के
देश भगान टोड़र
मतमुंहा चूरा छन छनाही पैरी
छाती में लोला हमेल
मुंह बर्रा बहुंटा
सोने की बिंदिया

इस प्रकार से सभी गहनों को धारण करके ननद भौजाई ने श्रृंगार किया है रे दादा। हो ऽऽ दौना में भोजन रख लिया है। सिर पर कपड़े रखकर चल दी हैं हरदी बजार देखने हो ऽऽ

हो ऽऽ हरदी बजार कैसी लगी है भैया
देश - देश से आये हैं व्यापारी रे भाई
गुरिया फुंदरा वाले
लाख की चूड़ियों वाले
गहना जेवर वाले
नमक तेल वाले
फरिया अंगिया वाले
चिलम तम्बाखू वाले
कांदा - कूंदी वाले
बड़े - बड़े व्यापारी
जुड़े हैं भाई हो ऽऽ

हो क्या कहना हरदी बजार का , किस्म किस्म के आदमी आये हैं। किस्म किस्म की लड़कियां आयी हैं। किस्म किस्म के लड़का आये हैं।

चिकने मुंह में तेल लगाकर
कोई कोई लड़कियों को देखकर मुस्कराते हैं
कोई कोई किसी कोने में लड़कियों से छेड़खानी कर रहा है।
कोई अपने सुख दुख बैठकर बता रहा है भाई रे
कोई कहीं दूसरी जगह जाने की सलाह कर रहे हैं हो ऽऽ
हो ऽऽ कैसी लगी है बजार
दो पैसा रख रखकर
सिंहार दमला रख रखकर
महुआ चार रख रखकर
आये हैं रे भाई
बजार करने रे दादा

हो ऽऽ दोनों ननद भोजई घूम रही हैं बजार। खरीद रहीं हैं सौदा। मिल जुल रहें हैं भेंट भलाई कर रहे हैं जान पहचान वालों से। दोस्तों से ।

हो बजार घूम लिया मिलना जुलना हो गया । मन भर गया है दोनों का। कहती हैं पूंगारपूसे न होता वापस चलें बाई। बहुत तो घूम लिया । दिल भर गया है भाई । हां तो भाभी चलो चलें। अब लौट रही हैं बजार से दोनों रे भाईं !

तपी है दोपहरी

कड़ी धूप पड़ रही है रे दादा

सिर का पसीना पैरों में गिर रहा है

कैसे जमीन की धूल गर्म है

दोनों ननद भौजाई

पैदल चली जा रही हैं

दोनों गर्भवती हैं

धूप के कारण रे दादा

आंय बांय होने लगी

कहती है थोड़ी देर छाया में बैठ लेते बाई ओ ss

बैठी हैं छाया में ननद भौजाई दोनों में बातचीत हो रही हैं। घर बार की। कैसे बातचीत होते होते । अपने - अपने दिल की बात तो होने लगी भाई हो।

एक बोलती है क्यों बाई । अपन दोनों गर्भवती हैं। दोनो्रं के बच्चे कुछ दिनों के अंतर से पैदा होंगे। कल यदि किसी को कुछ हो जाता है तो । क्यों न हम दोनों अपने पेट के बच्चों की आपस में सगाई कर दें। हां तो तुम बाई सच कहती हो। चल तो दस्तूर कर ड़ालते हैं।

अब दोनों ननद भौजाई रे दादा

निकाल कर हल्दी रे भाई

पत्थर में कूटने लगीं रे दादा

हरदी के गीत गा गाकर

हरदी को पानी में घोलते हैं

अब एक दूसरे के ऊपर हरदी छिड़कते हैं

पेट के बच्चे के ऊपर

हरदी छिड़कते हैं

इस प्रकार हरदी का दस्तूर हो जाता है। तब वे दोनों आपस में सोचकर कहती हैं क्यों बाई भांवर का दस्तूर भी हो जाता । यह जो साल का पेड़ हैं उसी में भांवर पाड लेते हैं। हां तुम सच कहती हो बाई ! चलो भांवर भी कर लेते हैं।

अब दोनों रे भैया

ननद और भौजाई

जोड़ती हैं गांठ रे भैया

कैसे होती हैं आगे पीछे

कैसे साल के पेड़ में

भांवर हो रही है हो ss

हो ss कैसे ननद भौजाई भांवर फिर रही हैं। आगे भौजाई है तो पीछे ननद है। कैसे पहाड़

की चिड़ियां चै - चैं करके विवाह गीत गा रही हैं। हो ss कैसे पहाड़ का अंधेरा सांय - सांय करके शहनाई बजा रहा है। कैसे बादल गरज - गरज कर नगाड़ा बजा रहे हैं! गड़ गड़ गड़ाम, धड़ धड़ धड़ाम,कैसे पुंगारपूसे और घैलाकदामा साल के पेड़ के आस पास भांवर फिर रहीं हैं हो ss

कैसे खेल - खेल में रे भाई

पेट के लड़कों की रे दादा

विवाह हो गया है भाई

कुछ अनरीत न हो रे भाई

ऐसी चाल चलत रही रे भाई हो ss

हो विवाह हो गया है शाम होने लगी। दोनों अपना अपना समान उठाकर घर को चली गयीं। शाम के समय दोनों अपने महल में पहुंच गई हैं हो ss

अब आये हैं राजा धरतीपत रे भाई

कहते हैं तुम लोग बजार से क्या लायी हो , मुझे बतलाओ। कैसे समान निकाल निकाल कर बता रही हैं रे भाई ! कैसे राजा मीठा नमकीन खा रहे हैं रे दादा!

आज बहन बाजार करके आई हैं ss

हो कैसे राजा पूंछ रहे हैं तुम बाजार से क्या क्या लाई हो रानी हो ss(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

हो कैसे कैसे किस्म - किस्म के मेवा - मिष्ठान, लाई ,फूटा,निकाल निकाल कर दे रही हैं घेलाकदामा अपने भाई को। कैसे - कैसे राजा खा रहे हैं खुशी हो हो कर के हो ss

हो ss कहते हैं राजा जब से मेरी मां मरी है तब से आज पहली बार बजार का मेवा मेरी बहन ने खिलाया है। इस प्रकार सभी लोग खुशी हो रहे हैं रे भाई।

रात के समय रे दादा

जब पलंग पर सो रहे थे राजा रानी

तब रानी कहती है सुनिये राजा

हम दोनों ननद भौजाई ने एक काम कर लिया है

हम दोनों ने अपने पेट के लड़को की भांवर कर ड़ाली है हो ss

हो साल के पेड़ के नीचे हम दोनों ननद भौजाई ने अपने - अपने पेट के लड़कों का विवाह कर ड़ाला है। आप नराज मत होना राजा होss

राजा यह बात सुनकर बहुत खुश हो जाते हैं भाई ss

हो ss कहते हैं धन्य हो तुम रानी। अच्दा ही किया। मां के दूध का पलटारा तो करना ही पड़ेगा।

हो ss कैसे घैलाकदामा की मेहमान बाजी हो रही है। अपने भाई और भाभी के घर में।

हो ss बहुत दिन हो गये मेहमानी करते। तब राजा सोचते हैं।अपने मन में ! न होता तो बहन को उसकी ससुराल भेज देता ।

अब भेजने जा रहे हैं राजा श्री धरतीपत रे भाई।

हो ss राजा अपनी बहन को झींझारगढ़ भेजकर आ गये। लौटकर आ गये राजा अपने राज्य में । कैसे प्रसन्न हो रहे हैं राजा रे भाई ।

हो ss नौ माह पूरे हो गये रानी पुगारपूसे ने एक पुत्र को जन्म दिया। राज्य भर में खुशी मनाई गईं ।

राजा के घर में लड़का पैदा हुआ है पूरे राज्य में खबर फैल गई।

दादा कैसे खुश हो रहे है।

नौ सौ बंदूक दाग दी

बारह टीन शराब रे भाई

बारह गाड़ी खाना रे दादा

निमंत्रित लोगों के लिये

बन गया है भैया

गांव बस्ती के लिये तो

नहीं है ठिकाना

सोने के छिटवा में

सोने की चाकू से

दाई नाल काट रही है।

बैगा बाबा आते हैं रे भाई

लड़के का नाम रखते हैं रे दादा

नाम रखते हैं बैहामारी

आमंत्रित लोगों को

उपहार दे रहे हैं रे भैया

कैसा नाच गाना आनंद हो रहा है रे भैया

हो ss बहुत आनंद मनाया जा हा है सिंगार द्वीप में कैसे जन्म लिया है बैहामारी ने रे भाई। हो यहां सिंगार द्वीप में बैहामारी ने जन्म लिया और वहां झींझारगढ़ में उसी समय घेलाक दामा के पेट से रामा नाम की लड़की ने जन्म लिया हो ss

हो ss राजा जलमन शाह आनंद उत्सव कर रहे हैं। गाजा और बाजा ढ़ोल और नगाड़े बज रहे है। नाच, गाना, खाना - पीना चल रहा है। बेटी के जन्म पर खुशी मना रहे हैं रे भाई ss

हो ss दोनों राज्य में खुशी है भैया

बैहामारी लड़का और रामा नाम की लड़की

गोदी में खेलते हैं

पालना में झूलते हैं

पेट के बल चलते हैं

घुटनों के बल चलते हैं

फुंदुर - फुंदुर दौड़ते हैं

दिन दो गुने रात चार गुने

चांद के समान भैया

बढ़ने लगे हैं भाई

माता पिता देख - देख कर प्रसन्न हो रहे हैं हो ऽऽ

हो ऽऽ एक दिन पुगारपूसे राजा से कहती है।लडत्रका तो बड़ा होने लगा राजा।नंदोई के पास जाकर देखते उनकी लड़की मांगते। क्या जाने उन्हें मालुम है कि नहीं। वह विवाह की बात ! राजा कहते हैं हां तो कर दो तैयारी! बारह वर्ष हो गये हैं बहन को नहीं देखा है।

अब राजा धरतीपत चले हैं सगाइ्र की बात करने। चले हैं राजा रे भैया

घोड़ा को सजाकर

साथ में लिये हैं सिंगी

किसी प्रकार की सेना नहीं है

साथ में

बहन और बहनोई के यहां

जा रहे हैं भाई रे

कैसे मन में खुशी भरे

चले जा रहे हैं राजा

एक वन पार करते

दो वन पार करते

पार कर लिया है रे भैया

सुल्फी पहाड़

मौहार घाटी रे

सांभर के दलना

रैंकुन्हा झाड़ियां

कैसे रस्ता पकड़ लिये हैं राजा ने झिंझारगढ़ के हो ऽऽ

हो कैसे पहुंच गये हैं राजा झिंझारगढ़ में । कैसे खबर भिजवायी है घैलाकदामा को । कैसे स्वागत के लिये निकली हैं घैलाक दामा भाई होऽऽ

कैसे साथ में सहेलियां रे

लोटा में पानी रखकर

हल्दी और चांवल रे

निकली हैं घैलाकदामा

पैरों को धुलाती हैं

हल्दी चांवल का टीका

माथे पर लगाती हैं

ले जाकर रे दादा

पलंग में बैठालती हैं

बाजू में बैठकर भौजी और भतीजे के हाल चाल पूंछ रही हैं।

हो ऽऽ कैसे पूंछ रही हैं घैलाकदामा अपने भाई से। गांव बस्ती के हाल चाल । कैसे राजा बता रहे हैं बैहामारी और गांव बस्ती के हाल चाल को।

हो ss रामा लड़की कैसे खेलते खेलते आयी है! अपने मामा के पास जाकर खड़ी हो जाती है। राजा देखकर प्रसन्न हो जाते हैं। चंदा के समान उजली, सूर्य के समान मनोहारी, सोने के समान तेज,जग जग जग जग चमकती है । राजा मन में कहते हैं यह लड़की मेरे घर में उजाला कर देगी। राजा अपनी बहन से कहते हैं।

बहन बहुत अच्छी जोड़ी रहेगी। शायद भगवान ने इनकी जोड़ी वहीं से बनाकर भेजी है।

इस प्रकार की बातें हो रही हैं बहन भाई में रे हो ss

जब सुना है राजा जलमन शाह ने

कि आये हैं राजा श्री धरतीपत भाई रे

तब वे चले हैं कचहरी से भैया

पहुंच गये हैं रानी महल में रे दादा

साले बहनोई आपस में मिलाप कर रहे हैं भाई रे!

हो ss कैसे समाचार पूंछ रहे हैं! राजा जलमन शाह और कैसे समाचार बता रहे हैं राजा धरतीपत! दानों हंस हंसकर किस प्रकार चिलम, बिड़ी, गांजा, तम्बाखू खा रहे हैं। कैसे अपने सुख दुख की बातें कर रहे हैं रे भाई!

हो ss कैसे पूंछ रहे हैं राजा जलमन शाह। क्यों भाई कैसे आये हो। क्या अपनी बहन को फिर से ले जाना हैं तब राजा कहते हैं नहीं जीजा जी अबकी बार अपनी भनेजन को लेने आया हूं। तुम्हारा भांजा बैहामारी है उसके लिये।

हो ss सुनकर राजा जलमन शाह के दिल में शंका आ गयी रे भाई ss

बारह वर्ष पहले के

विवाह के हाल

ननद भौजाई के रे दादा

राजा श्री धरतीपत

हंस हंस कर बताते हैं

उसे राजा जलमन शाह

सुन रहे हैं भाई रे

राजा कहते हैं यह बात तो रानी ने मुझे नहीं बतलाई हैं परंतु यह बात सही है। विश्वास न हो तो रानी से पूंछ लो ! वो सामने तो बैठी है। रानी हां कर रही है भाई ss

अब राजा रे भैया

अपने मन में सोचते हैं

एक तो मेरी लड़की है

किसी को लमसेना रखता

पर तुमने यह क्या कर दिया है रानी

आखिर कुछ भी हो जाये

मैं अपनी बेटी का विवाह रे

सिंगार द्वीप में नहीं करुंगा भैया

चाहे रात का दिन और दिन की रात हो जाये हो ss

हो ऽऽ ऐसा सोचरहे हैं राजा जलमन शाह! उनके मन में कपट आ गया है भाई रे ।

हो ऽऽ दोनों साले बहनोई खाना खा पी के फुरसत हो गये । अब राजा कहते हैं चलो बाबू आज शिकार खेलने चलते हैं बहुत दिन हो गये हैं मैं कही नहीं गया हूं।

अब चले हैं दोनों शिकार खेलने हो ऽऽ

अब क्या कहना भैया

झींझारगढ़ के वन में

बांस और झाड़ियों के रे भैया

लगे हैं पहाड़ रे

सांभर और चीतल

हिरन और घुटरी

जंगल के जानवर

बहुत हैं रे भाई

कैसे घोड़े को कूंदा कूंदाकर

शिकार कर रहे हैं रे भैया

राजा जलमन शाह के मन में कपट भरा था रे भाई

होऽऽ सांभर के पीछे दौड़ रहे हैं । दौड़ रहे हैं राजा श्री धरतीपत ! मारा है भाला सांभर को इस पार से उस पार निकल गया है । सांभर गिर गया है हो ऽऽ जिस समय राजा झुककर देख रहे हैं सांभर को । उसी समय पीछे से राजा जलमनशाह ने मारा है भाला! हो ऽऽ उसी समय वह भाला श्री धरती पत के आर पार निकल गया। राजा कहते हैं तुमने बहुत धोखा किया है जीजा। अपनी लड़की को नहीं देना था तो नहीं देते। पर तुमने तो मेरी जान ले ली। आखिर बैहामारी अगर मेरा असली पुत्र होगा तो तुमसे बदला जरुर लेगा। कहकर राजा श्री धरतीपत ने प्राण त्याग दिये हैं भाई रे !

अब सांभर का शिकार रखकर

आये हैं राजा हो

घर में बतलाते हैं

घैलाकदामा से रे दादा

तुम्हारे भाई को रानी

बाघ ने मार ड़ाला है

कैसे विलख - विलख कर विलाप

करके रो रहीं है रानी हो।

होऽऽ अब राजा का घोड़ा रे भैया

भागा है जंगल से दादा

भग रही हैं सिंगी रे भाई

पकड़ा है रास्ता सिंगार द्वीप का

रास्ते में धूल उड़ाते जा रहे हैं

आठ दिन नौ रात में

रात दिन दौड़ते - दौड़ते

जा कर पहुंच गया है सिंगार द्वीप में रे भाई ss

हो ss जब देखा है रानी पुंगारपूसे ने । घोड़ा खून से लथ - पथ है। उसमें बैठने वाले सवार का पता नहीं है। रानी अपने मन में समझ गयी की कुछ न कुछ अनहोनी जरुर हो गयी है। रानी विलाप करने लगी रे दादा! किस प्रकार सिंगी सब हाल बता रही है रानी पूंगारपूसे से रे भाईss

होss कैसे सब हाल बता रही है पुंगारपुसे से । कहती है राजा मारे गये हैं । झींझारगढ़ में राजा जलमन शाह उन्हें शिकार खिलाने ले गये और धोखे से राजा को भाला से मार ड़ाला । वह अपनी बेटी रामा को नहीं दे रहे हैं । ऐसा बता रही है सिंगी रे भाई ss

किस प्रकार गुहार मारकर रो रही है पुंगारपूसे रे दादा।

उसी समय में रे भाई

बैहामारी रे दादा

कही से खेलते - खेलते भैया

मां को रोते देखकर

गले से लिपटकर

पूंछते हैं रे बैहामारी

रानी पुंगारपूसे रो रोकर सब हाल बता रही हैं भाई ।

हो ss कैसे कैसे बता रही हैं मां अपने बेटे से । कहती हैं क्या बताऊं रे बेटा ! तुम्हारी बुआ की बेटी के साथ में तुम्हारी सगाई हुयी थी। जब तुम दोनों पेट में रहे तभी से। इसलिये तुम्हारे लिये उनकी लड़की मांगने तुम्हारे पिताजी गये थे। परंतु तुम्हारे फूफा ने उन्हें धोखा देकर मार ड़ाला।

इतना सुनकर बैहामारी जल्लाद हो गया है रे भाई ss

कैसे सुनकर बैहामारी रे भैया

गुस्सा के कारण रे दादा

लाल पीले हो गये हैं रे भाई

चोटी की झार ऐड़ी में उतर गयी है भैया

कैसे गुस्सा में थर थर कांपता है बैहामारी

कैसे बोल रहा है अपनी मां से रे भाई ।

होss कैसे बोल रहे हैं महतारी से । सुन लो हे माता। मैं अपने बाप का बदला जरुर लूंगा। अपने पिता के हत्यारे का सिर काटकर उसकी लड़की से शादी करुंगा। यदि मैंने ऐसा नही किया तो मैं गोंड़ का बच्चा नहीं । इतना कहकर बैहामारी तैयार हो रहा है रे भाई।

हो ss कैसे बैहामारी रे भैया

अपना श्रृंगार कर रहे हैं

नीचे चड्डी पहने हैं

उसके ऊपर धोती

धोती के ऊपर फुरफुर जामा

फुरफुर जामा के ऊपर अंगा

अंगा के ऊपर झंगा

झंगा के ऊपर भसम कोट का अंगा

उसके ऊपर जिरह

जिरह के ऊपर बख्तर

सिर पर पगड़ी

पगड़ी के ऊपर मोती चूर की कलगी

ऐसा श्रृंगार करके खड़े हुये हैं बैहामारी हो ऽऽ

हो ऽऽ हाथ में रखे हैं भाला ,फेंकमार भाला,बेला बंजर कटार,दुई धारा तलवार! बाघ मार कुर्रा जैसे हथियार रखकर तैयार हुये हैं भाई।

हो ऽऽ बैहामारी ने अपने घोड़े का श्रृंगार किया है जिसमें सोने का पलैंचा, रेशम का कसना,मोती के झूल,चांदी की रकाब,मोती चूर की कलगी लटक रही है। रोम रोम में हीरे जड़े हैं भाई । ऐसे घोड़े पर बैहामारी सवार हो गये हैं रे भाईं !

हो ऽऽ चले है बैहामारी! नौ सौ मटिया ,सात सौ सिंगी,तेरह सौ भूत और चुड़ैलनों को साथ में रखकर कैसे अपने पिता का बदला लेने जा रहे हैं ।

अब मंजिल पर मंजिल

जाते जा रहे हैं दादा

न दिन में विश्राम

न रात में आराम

दादर और घाट

ड़ोंगर और पहाड़

नदियां और नाले

पार करते जा रहे हैं भैया

आठ दिन नौ रात में

जाकर पहुंचते हैं

झिंझरागढ़ की सीमा में

सरवर सागर बांध में

तंबू तान दिया है दादा

लग गया है ड़ेरा

रुक गयीं हैं मटिया

रम गयीं हैं सिंगी

बस गये हैं भूत और चुड़ैलिन

रात भर में पूरे नगर को घेर लिया है भाई रेऽऽ

हो ऽऽ खबर भेजी है राजा ने जलमन शाह के पास। क्या खबर भेजे हैं ! कहा है सुन रे राजा। गले में गाय का गिरमा,दांत में तिनका,सिर पर घुरसी रखकर नंगे पैर आकर मेरे पैरों में गिरो और अपनी बेटी का विवाह मेरे साथ करो! नहीं तो लड़ाई करो।

हो ss इतनी खबर सुनकर राजा जलमन शाह आग बबूला तो हो गये हैं रे भाई होss

अब चली है सेना

गोंडन की भैया

बड़े बड़े बरछा

सांग और फरसा

कुल्हाड़ी और दतारी

तीर और कमठा

रख रखकर दादा

कैसे निकले हैं झिंझारगढ़ से हो ss

हो ss जब बैहामारी ने देखा है आ रही है गोंड़ों की फौज उसी समय लगाया है आदेश मटिया, सिंगी, भूतों को जब छूटे हैं मटिया, सिंगी, भूत उस समय नहीं हैं ठिकाना फौज का!

कोई्र पेट पकड़कर चिल्ला रहा है

कोई मुंह फाड़कर उल्टी कर रहा है

कोईऑखं से अंधा हो गया है

किसी की टांग टूट गई है

किसी को बुखार आ गया है

किसी के पूरे शरीर में दर्द हो रहा है

जो जहां फौज थी

सब को रे भैया

दस्त तो लगने लगे

पाखाना करने के लिये रे भाई

खेत की तरफ भागी पूरी पलटन फौज हो ss

हो ss अब बच गये हैं राजा जलमनशाह। जब ललकारा है बैहामारी ने । कहा है खड़े रहो तुम रे बैरी। कहां जाओगे अब बच कर ! अब दोनों राजा युद्ध करने लगे । हो ss क्या कहना !

लातन के गुरदा

मुरकन के मुरदा

झींका तानी मार पीट उठा पटक होने लगी दोनों में रे भाई !

हो ss बैहामारी ने निकाली है तलवार! मारा है जिस समय में राजा को तो राजा का सिर कटकर एक तरफ लुड़क गया है रे भाई हो!

हो ss अब पहुंचे हैं महल में बैहामारी ! राजा बैहामारी ने रामा लड़की का हाथ पकड़कर खींच लिया। राजा ने रामा लड़की को अपने घोड़े पर चढा लिया हो ss रामा लडकी को राजा लेकर आ गये सिंगार द्वीप में । लाकर अपनी मां के पास बैठाल दिया है रामा लड़की को । उसकी मां ने रामा लड़की को देखकर सीने से चिपटा लिया है रे दादा।

अब बैहामारी के विवाह की तैयारी हो रही है हो ss

पूछ रही हैं रानी पूंगारपूसे रे भैया

लड़का - लड़की दोनों जवान हो गये हैं दाऊ

इन दोनों की शादी कर देते तो अच्दा रहता दादा। हो ऽऽ चली जा रही हैं रानी पुंगारपूसे पनिया बिल्लो बैगा डुकरा के पास दो बोतल शराब रखकर। जाकर पहुंची है बैगा के घर में । हो ऽऽ रानी को देखकर बैगा अकबका कर उठ बैठा है । बैगा रानी को तुरंत पानी देता है और रानी के पैर धुलाकर रानी को मचिया में बैठालता है।

पूंछता है ड़ोकरा ! कहता है कैसे आयी हो बैया । रानी कहती हैं हमारी लड़की के शादी का मुहूर्त देखना है बाबा ! लड़की भी घर में आ गयी है । उनकी शादी और भांवर करा देते तो फुरसत हो जाते ।

ठीक कहती हो बैया चलो निकालो हमारा नैंग। पूजा पाठ होम, धूप का इंतजाम करना है।

अब निकाली है रानी पुंगारपूसे ने शराब की बोतल हो ऽऽ

अब बैगा डुकरा रे

कंड़ा की आगी रे दादा

चांवल के दाना रे भाई

सरई की गोंद रे भैया

मंगाया है बैगा ने थाली में पानी भरा है रे दादा

उसे ले जाकर गौ शाला में बैठे है हो ऽऽ

हो ऽऽ कैसे होम लगा रहा है बैगा । कैसे आजा पुरखा, बड़ा देव, मनिया देव का सुमरन कर रहे हैं । कैसे खेरमाई और दसाइन माई को मना रहा हैं बैगा । कैसे देवी, देवताओं का सुमरन करके होम, धूप कर रहे हैं भाई।

होम लगाते हैं रे

नाम ले लेकर

शराब चुंआते हैं भैया

अब छोड़े हैं चांवल के दाने पानी में हो

हो ऽऽ चांवल के दो दाने छोड़े हैं दाना पानी में तैर रहे हैं । दोनों दाना एक दूसरे को कतरा कर निकल जाते हैं। वे आपस में नहीं मिलते । बैगा परेशान हो जाता है बहुत देर बाद दाने आपस में मिलते हैं रे भाईं

हो ऽऽ बैगा कहता है राजकुमारी जी शादी का शगुन तो निकल गया है । पर बहुत दिनों बाद लड़का - लड़की का मन मिलेगा। परंतु वे एक दूसरे से मिल जायेंगे। इसमें घबड़ाने की कोई बात नहीं है। तो अब हल्दी और मंड़प की तिथि सुन लो । हो ऽऽ एक एक दिन गिन गिनकर बता रहा है बैगा। सोमवार को हल्दी, मंगलवार को मंड़प, बुधवार की भांवर, गुरुवार को बिदा, शनिवार को चिखल मांदी। इतना सुनकर वहां से चली हैं रानी पुंगारपूसे हो ऽऽ

अब पूरे गांव में कैसे निमंत्रण भेज रहें हैं रे भैया

चांवल और हल्दी रख - रखकर घर - घर में निमंत्रण दे रहे हैं।

कैसे दूर - दूर आदमी भेजे हैं रे दादा।

कैसे सीधा समान की तैयारी हो रही है हो !

अब कैसे

बाजा वाले आ गये भाई्र
हल्दी का टीका
एक बोतल शराब
बाजा वालों का दस्तूर
दे रहे हैं रे भैया
कैसे बाजा पर नकौड़ा की चोट पड़ रही है हो ss

हो ss विवाह के बाजा सुनकर गांव भर की लड़कियां प्रसन्न हो गयी हैं। दौड़ने लगीं अपना काम धाम छोड़कर सब लड़कियां विवाह वाले घर में । बड़े बड़े पुट्ठों वाली लड़कियां, छोटे - छोटे पुट्ठों वाली लड़कियां , काली लड़कियां , गोरी लड़कियां, लड़का बच्चा वाली बिना बच्चा वाली, पोपले दांत वाली बूढ़ी दाई लाठी टेकते आयी है मत पूंछो जुड गयी हैं आंगन में रे भाई।

कैसे गांव भर की औरतें
हल्दी कुचरौनी
का दस्तूर हो रहा है रे दादा
निकाली है हल्दी बारह खांड़ी रे भाई
कैसे गा - गाकर हल्दी कूट रहीं हैं हो ss
गाीत :-
तरना को नाना,नानी रे नाना,तरनी की नाना रीना
कौन नगर की सीली रे लोढ़ा,कौन नगर की हल्दी रीना
कौन तोरे हल्दी कौन घोरे रीना
कौन रे देवता को हल्दी चढ़ावैं कौन चढ़ावें हल्दी रीना
तरना को नाना नानी रे नाना,तरनी की नाना रीना
रुप नगर की सीली रे लोढ़ा
सोना नगर की हल्दी रीना
दाई तो कुचरें हल्दी रे देवा, काकी तो हल्दी घोले ना
बड़े देव को हल्दी चढाती फुआ हरैं हल्दी चढ़ावें ना
तरना को नाना, नानी रे नाना, तरनी की नाना रीना

हो ss ऐसे गा गाकर हल्दी कुचरैनी हो रही है। आजा, पुरखों को देवी - देवताओं को, खेरमाई को, कैसे - कैसे सुमर - सुमर कर गा रही हैं ।

लड़कियां हल्दी कुचल रही हैं रे भाई
अब हल्दी तो हो गयी
रात के समय मेरे भैया चली हैं लड़कियां
मंगरोहन और मिट्टी को
कलश जलाकर दादा
रखा है गैती सुवासा
साथ में है रे बैगा रे भाई
होम धूप रखकर

गाजा और बाजा
साथ में चल रहे हैं रे भैया
कैसी लड़कियां भड़ौनी गीत गा रही हैं रे भाई ss
कैसे बड़े बड़े ढ़ोलों के साथ
गा रहे हैं मिट्टी को हो धूप देकर
मारता है कुदाली बैगा
लाया है मंगरोहन की माटी हो ss
होss कैसे मागरमाटी हो गयी । गांव भर की लड़कियां राग मिलाकर गारी गा रही हैं भाईss
अब गांव भर के लड़का और सयाने
बैठे हैं अांगन में रे भाई रे
पी रहे हैं मड़वा की शराब रे
कैसे परोस रहे हैं टीभू बुद्वू
कैसे तरफदारी करके शराब दे रहा है भैया हो ss

हो ss टीभू बुद्वू शराब परस रहे हैं । लड़कों की तरफ से शुरु करता है । तो सयानों के पास आते आते शराब खतम हो जाती है। सयानों को थोड़ी - थोड़ी शराब दिलाकर पुजाता है भाई।

हो क्या कहना ! सयाने लोग कुड़मुड़ा कर मन ही मन रह जाते हैं हो ! कैसे सभी बूढ़े लोग टीभू बुद्वू के ऊपर गुस्सा हो जाते हैं।

कैसी शराब की गुस्सा रे बहुत सबेरे रे भाई्र
टीभू पर उतारी है रे दादा
कर रहे हैं सलाह सियाने
रखे हुये हैं मुंगरा एक एक हाथ में
कहते हैं टिभू बुद्वू नदी नहाने चलो हो ss
अब चले हैं सभी लोग नहाने नदी में
हो ss जब नहाने घुसे हैं नदिया में टिभू बुद्वू

उसी समय गांव भर के सयाने उन्हें पकड़कर मुंगरा से पिटाई कर रहे हैं। दे घमा - घम दे घमा - घम ! ऐ दाई ओ ! ऐ दाई ओ! चिल्ला रहे हैं टिभू बुद्वू। सयाने कहते हैं दोनों से क्यों अब मजा आया हैं शराब परसने का। हाथ पैर जोड़ रहे हैं टिभू बुद्वू । तब कही जाकर छोड़ा है स्यानों ने भाई हो ss

ऐसी पिटाई कर दी है अवगुण करने वालों की हो ss
अब दूसरे दिन भाई मंड़प का दिन रहा
बहुत सबेरे रे भैया
गांव भर के लड़का
चले हैं मंड़प की लकड़ी कटने
बड़ी बड़ी कुल्हाड़ियां रखकर
टोकनी में भोजन

रखे हुये हैं सिन्हा मंहगू

कैसे चले जा रहे हैं रे भैया

बिरहा गाते लड़के रे भाई

होऽऽ जाकर पहुंच गये हैं जंगल के किनारे में। सिन्हा मंहगू से कहता है तुम यही पर भोजन रखकर यहीं पर रुको। हम लोग मंड़प की लकड़ी काटने जा रहे हैं। वापस आकर खायेंगे।

मंहगू भोजन की रखवाली कर रहा है रे भाई ऽऽ

हो गांव के सब लड़के जंगल में फैल गयें लड़के मंड़प की लकड़ी काट रहे हैं रे भाई।

हो ऽऽ डूमर की ड़ाली, आम की ड़ाली, बांस और झाड़ी भैया! साल का पेड़ लुडका रहे हैं लड़के ! कैसे कंधों में रखकर ला रहे हैं भैया। एक दादर में सभी लकड़ियां जमा कर रहे हैं।

लकड़ी काटते काटते दोपहर हो गयी। सिर के ऊपर धूप आ गयी। लडके कहते हैं अब भूख लगी है चलो चलें खाना खाने । अब यहां मंहगू भैया

भोजन की रखवाली कर रहा था

अकेले बैठा था भाई

अपने मन में सोचता है

कैसा कैसा पकवान बना है भैया

रानी मां ने कैसा पकवान बनाया है

थोड़ा चींख कर तो देखूं

अब चींख रहे हैं थोड़ा सा भोजन हो

बहुत अच्छा लग रहा है थोड़ा सा और खा लूं। कहकर थोड़ा सा फिर निकाला।

फिर सोचा नहीं अपने हिस्से का तो खा ही लूं। मंहगू का मन नहीं माना रे भैया थोडा़ - थोड़ा करके पूरा भोजन समाप्त कर दिया। भोजन की टोकनी में पत्ते रखकर एक पेड़ के नीचे सो गया। जब दर्द हुआ है मंहगू के पेट में उस समय में अल्हों तल्हों हो रहा है मंहगू भैया। अब आये हैं मंड़प काटने वाले रे भाई

कैसे पटक रहे हैं मंड़प की ड़ालियां जमीन में ।

नाले में स्नान करके आ गये । जोरों से भूख लगी थी लड़कों को । कहते हैं चलो चलें अब खाना खाते हैं । कैसे टोकनी के पास आकर बैठे हैं हो ऽऽ ।

जब उघारा है छवला को तो वहां देखते हैं की उस टोकनी में पत्ते और पत्थर भरे हैं। ऐ दाई यह क्या है। सिनहा मंहगू के पास आकर पूंछता है क्यों रे मंहगू इस खाने को क्या हुआ ? कौन खा गया इस टोकनी के खाने को। तो मंहगू कहता है भैया बहुत से भटिया और भूत आये थे । उन्होंने पूरा खाना खा लिया और मुझे भी बहुत मारा इसलिये दर्द के कारण मैं रो रहा हूं।

हा ऽऽ मंहगू लोट पोट हुआ जा रहा था। उसका पेट नगाड़ा के समान फूल गया था। लड़के उसके पेट की मालिश करने लगे।

तब लड़के कहते हैं नहीं यही है रे वह भूत और भटिया जिसने पूरा खाना खा ड़ाला है। इसका पेट गुडुम ,गुडुम तना है फिर क्या कहना रे दादा। सिन्हा ने मंहगू को मारे तो लातें, जूते, मुक्का सब खबाड्र निकल गई रे भाई्र मंहगू की। लड़के कहते हैं इस मंहगू में आगी लग जाये रे । इसने

आज हम लोगों को भूखा मार ड़ाला है।
अब चले हैं लड़के
मंड़प को रख कर
पहुंच गये हैं आंगन में
सुवासिन ने आंगन लीपा है
चौक पूरा है सुवासिन ने
बैगा ने अजगर खंबा गड़ाया है
सब लड़के एकत्र हो गये हैं।
थोड़ी देर में रे दादा मंड़प गड़ गया हो
आज पूरे गांव में भैया
मंड़प गाड़ने का
कुदई का रे भाइर् निमंत्रण है हो। हो चले आ रहे हैं आमंत्रित लोग। झुंड़ की झुंड़ लडकियों की । बड़ी - बड़ी लड़कियां, जड़ंग - जड़ंग लती हैं। ठिगनी लड़कियां गुड़म - गुड़म चलती हैं। बड़े - बड़े कूल्हों वाली लड़कियां लंजर झप - लंजर झप चलती हैं। इस प्रकार से पूरे गांव के लोग एकत्र हो गये हैं भाई्र ss
कैसे गांव भर के लोग
लड़का औरतों से
जुड़ गये भैया
कोई नाच रहा है
कोई गाना गा रहा है
सब मिल जुल कर रे भैया
काम धाम कर रहे हैं हो
बड़े - बड़े सियानों की
पंगत अलग ही लगी है
सीरु वीरु दोनों भाई्र
आज शराब परस रहे भाई
सभी लड़के और सियाने खुशी हुये जा रहे हैं हो ss कैसे बैहामारी के आंगन में रे भाई
कैसे नचन हारी नाच रही है भैया
हो कैसे सभी का आदर सत्कार हो रहा है रे हीरा ।
हो ss ऐसे मंड़प और मायने हो रहा है हो ss
हो ss आज मंड़प कल मायने, परसों हल्दी है सभी नैंग दस्तूर हो रहे हैं रे भाई।
हो ss कैसे ड़ोली और बरात सज गयी हैबैहामारी की रे भैया।
कैसे रानी पूंगारपूसेऑखं में झर - झर आंसू बहा रही हैं। राजा श्री धरतीपत की याद कर - कर के रो रही हैं हो ss
हो ss कहती हैं आज के दिन राजा जिंदा होते तो उनकेऑखं के आंसुओं में ठंड़क आ जातीं
अब सज गयी है बरात रे दादा

कैसे दुल्हा को सजाया है रे भाई
नीचे पहने हैं चड्डी ऊपर पहने हैं धोती
उसके ऊपर झंगा हरे रंग का
कमर में अंगोछा बांधे हैं भैया
सिर पर पगड़ी पगड़ी के ऊपर मौर
मोतियों की झालर झूल रही है रे दादा
मोती चूर की कलगी
कानों में लुड़की
लड़का गले में हमेल पहने है
दुल्हा पैरों में चूते पहन कर चल रहा है
कैसे घोड़े पर सवार हुआ है हो ऽऽ

हो ऽऽ बरात को गांव में घुमा रहे हैं। बज रहे हैं बाजा, नगाड़ा शहनाई, नाच रहे हैं नाचने वाले रे भैया। झूम - झूमकर। आ गई बरात। हो रही है आगवानी। कैसे आंगन में दुल्हा को ले जाकर भांवर फेर रहे हैं हो ऽऽ

सात भांवर पड़ गई
रामा कन्या के साथ में
बैहामारी का रे भाई्र
धर्म तिलक हो गया
नेग दस्तूर रे दादा
सब कुछ तो हो गया
अब मझोटे में रे भाई्र
गये हैं दुल्हा दुल्हन
बैगा डुकरा रे
गांठ जुड़ाई्र करने लगा

बैगा कहता हैं दो बोतल शराब लाओ। वर वधू की गांठ जोड़ने के दस्तूर की। रानी कहती है क्यों रे डुकरा कितनी शराब पियेगा। जब से मंड़प गड़ा है! तब से पी रहा है। नहीं हैं अब शराब खतम हो गयी है। तुम तो दस्तूर करो फिर देखा जायेगा।

हो गया दस्तूर रे भैया
गांठ जुड़ाई्र का रे भाई
खाना और पीना
हो रहा है दादा
कैसे नाच गााना
कैसे आनंद उत्सव
कैसे नेगी जोगी
सबकी इच्छा रे भाई
पूरी की है रानी पूंगारपूसे ने

बेटे का विवाह

कैसे कर ड़ाला रे भैया

कैसे मन में प्रसन्न हो रही हैं हो ऽऽ

हो विवाह हो गया है । खूब आनंद उत्सव हुआ। सभी आमंत्रित लोग अपने - अपने घर को चले गये ।

परंतु यहां तो वर वधु का मन ही नहीं मिल रहा है । वर वधु की तरफ नजर भी उठा कर नहीं देख रहा है।

वधू भीतर तो वर बाहर वर बाहर तो वधू भीतर बिगड़ी हुयी लगुन तो थी।

मिलाप नहीं हो पा रहा है दोनों का

बैहामारी को लग गयी है कट मोहनी रे भैया

वधु का चेहरा तक नहीं देखता रे भाई

वधु की छाया से भी दूर भागता हे रे भाई

जहर के समान वधु लगती है रे भाई्र

कैसी बिगाडी है लगुन को बैगा ड़ुकरा ने हो ऽऽ

हो ऽऽ रात - रात भर वधु

पलंग के ऊपर बैठी

रो - रोकर हीरा

दूसरा दिन कर देती है

बैहामारी रे भैया

दुशमन के समान देखता है

वधु को रे भाई

सास देख देखकर

कुढ़ी जा रही है

न बोलती है

न बताती है

न उसके हाथ का खाती है

न उसके साथ सोती है

किस प्रकार इस लड़की के दिन कटेंगे भाई

ऐसा सोचती है सास रे भाई्र

हो ऽऽ साठ जोड़ी नागर फंदे हैं बैहामारी के खेत में । बैहामारी एक नागर फांद कर उसको जोत रहा है। रामा लड़की चली है भोजन लेकर खेत में।

मन में रे भैया

सोचती है रामा लड़की

आज खेत में रे हीरा

अपने घर वाले को

भोजन तो कराऊंगी

तब तो वह मेरी तरफ देखेगा

उसने आज तक मेरी तरफ नहीं देखा है हो ss

हो ss चली है रामा लड़की। एक बड़े बरतन में भोजन लेकर। बड़ी भारी टोकनी में भाजी और सब्जी रखकर। कैसे सिर के ऊपर रखकर चली जा रही है। सिर के ऊपर बरतन में पानी रखा है रामा लड़की ने । रामा लड़की चली जा रही है।

हो ss दोपहर हो गयी है । सिर के ऊपर सूरज आ गया है। सिर का पसीना पैर तक बहने लगा है। हरवाह कहते हैं समय हो गया है। भूख लग रही है । अब नागर ढ़ील दें। परंतु बैहामारी अपने नागर नहीं ढ़ीलता । जोत रहा है बैहामारी ।

अब पहुंच गयी रामा टूरी पेज रखकर हो ss

हो ss बैहामारी ने दूर से देखा हैं । वह कहता है जो भी उतारेगा । उसको कसम है। मेरी औरत को हाथ नहीं लगाना। नहीं तो तुम्हारी मां का तलाक हो जावेगा।

अब रामा लड़की मेढ़ में खड़ी होकर

आवाज देती है रे भाई

ओ दाऊ हरवाहा रे

पेज उतार लो भाई

बहुत वजन है

वजन के कारण मरी जा रही हूं

आओ आओ उतार लो भैया हो ss

हो ss कसम के कारण कोई भी पेज उतारने नहीं जाता है। रामा लड़की मेढ़ में खड़ी है। आवाज पर आवाज कर रही हैं परंतु कोई नहीं सुनता। तब कहती है रामा लड़की।

तुम लोग कोई्र भी नहीं सुनते हो तो मैं पटकती हूं। यही पर हंड़ी और भागती हूं अपने घर। फिर मरते रहना दिन भर भूखे। बहुत वजन हो गया है।

होss सोच रहे हैं हरवाहा अपने मन में यह कहीं सच में न भाग जाये रे ।

परंतु कसम रख दी है कैसे छुयेंगे। उसकी पत्नी को ऐसा सोच रहे हैं हरवाहा रे भाई ss

हो ss कैसे सोच रहे हैं हरवाहा! पेजहारिन पेज की हंड़ी को पटक कर भाग जावेगी। तो भूखे मर जायेंगे। फिर पेज कहां से पियेंगे।

नहीं चलो रे पैनारी लगाकर उतारेंगे। उसकी पत्नी को नहीं छुयेंगे ऐसा सोचकर चले हैं हरवाहा रे भाई।

हो ss किस प्रकार पैनारी में फंसाकर हंड़ी को उतारे हैं रे भाई ss

कैसे भर - भर कर दोनों में पेज पी रहे हैं । कैसे केवलार भाजी खा रहे हैं। पत्तों में रखकर। पर बैहामारी नागर जुताई्र में लगा हैं रे भाई।

रामा लड़की रे भैया

सभी को पेज पिला रही है

पेज पीकर हरवाहा

चले गये अपने काम में

लड़की सोचती है अपने मन में

मेरा पति पेज नहीं पिया

जाऊं उसे मनाऊं तो भैया

चलती है रामा लड़की

कहती है ये जोड़ी

पेज पी लो

नहीं सुनता बैहामारी कनबहरी ड़ाल लिया हो ऽऽ

हो ऽऽ चिल्ला रही है रामा लड़की ! पास में जा करके। विनती कर रही है। लेकिन बैहामारी ने कनबहरी दे खी है। वह अपने नागर जुताइ्र में लगा ा है।

गुस्सा आ गया रामा लड़की को उसने अपने हाथ में कीचड़ उठाया और जब मार है बैहामारी को तो उसकीऑखं में कीचड़ घुस गया।

हो ऽऽ गुस्सा तो आ गयी बैहामारी कों उसने उठाइ्र है पैनारी और पिटाई कर दी रामा लड़की की ! उसका हाथ पकड़ कर खेत में ले जाकर एक बैल की जगह नागर में फांद दिया है रामा लड़की को। जोत दिया है अपनी पत्नी को नागर में।

अब जोत दिया है नागर में रे भैया

फांदा है बैल की जगह में

रख दिया है कंधों पर जुआड़ी

पीछे से कोंच रहा है अरई रे दादा

उसी समय रे भैया

रछ,रछ,रछ,रछ,रक्त निकलने लगा है लड़की को !

हो ऽऽ बड़े देव का सुमरन करती है रामा लड़की। क्या कहती है बड़ा देव से। सुन लो रे बड़े देव । यदि तुम सत्य के होगे तो मुझे बारह बैलों की ताकत दे दो ।

हो ऽऽ बड़ा देव खुश हो गये। दे दी है बारह बैलों की ताकत । अब क्या कहना रे भाई ! रामा लड़की ने जिस समय में नागर को खींचा है उस समय रछ,रछ,रछ,रछ, करते हुये खेत जोतने लगी। मेढ़ों को फोड़ दिया! उसके साथ का बैल बैठ गया। वह आगे नहीं चल पा रहा था। उस समय रामा लड़की अकेले ही नागर जोतने लगी।

कैसे जुती है लड़की

नागर में रे दादा

मेढ़ फोड़कर भाग रही रे भाई

पसीना से लथपथ हो गयी

मुंह से फसूकर बहने लगा

कैसे नहीं छोड़ रहा है बैहामारी हो

उसी समय में रे दादा

बड़ा देव को दया आ गयी

चुहिया का रुप धरके रे भाई

कूंद गये हैं बैहामारी की झोली में

हो ऽऽ बैहामारी उचक पड़े हैं ये दादा ये क्या है कहते ही नागर की मुठिया छूट गयी। उसी

समय रामा लड़की नागर को छोड़ कर अंधा धुंध घर को भागी है रे भाई।

घर में आकर रे भैया

सब बातों को

खेत की बातों को

सास से भैया

रो - रोकर बताती है

सास कैसी चुपचाप हो गयी है हो ss

हो ss अब शाम को रामा लड़की खाना बनाती है। वह कहती है जो हुआ तो हुआ आखिर हरवाहों के लिये खाना तो बनाना ही पड़ेगा। ऐसा सोचकर वह खाना बनाने जुट गयी है हो ss

कैसे शाम होने लगी है रे भाई

हरवाहों ने नागर ढ़ील दिये हैं भाई

कैसे हल , बखर और जोता

रख - रखकर चले आ रहे हैं गांव में रे दादा !

हो ss सभी हरवाहे घर आ गये । बैहामारी नहीं आये रे भाई रात हो गयी। भोजन का समय हो गया हरवाहों को भूख लगी होगी। इसलिये रामा लड़की सबको खाना खिला रही है रे भाई।

हो ss खा पीकर जब हरवाहा चर्रा खेलने में भिड़ गये भाई हो ss

कैसे रामा लड़की मन में सोचती है

मेरा पति आयेगा तो वह भी चर्रा खेलेगा

न होता तो मैं भी चर्रा खेलती दाऊ

बहुत मजा आयेगा और पति से मिलाप भी हो जायेगा।

हो ss रामा लड़की ने लड़कों के कपड़े पहन लिये हैं और कैसे हरावहों के साथ में चर्रा खेलने लगी है हो ss

बैहामारी बैल चराकर आये हैं रे भैया

ले जाकर सार में बांधा है बैलों को

बैहामारी ने आकर घर में देखा

नहीं थी रामा लड़की घर में

निकालकर खाया है खाना

और खुद चर्रा खेलने चला गया।

हो ss बैहामारी चर्रा खेल रहे हैं। रामा लड़की पाली छैंक रही है। जिस समय बैहामारी नमक लेकर उचटा है। उस समय रामा लड़की रास्ता रोक कर खड़ी थी। उस समय भिड़ गये दोनों झना ।

हो ss एक दूसरे से लिपट गये । बैहामारी ने रामा लड़की को उठा कर पटक दिया। उसकी छाती में चढ़ कर बैठ गया।

हो ss जैसे ही उसकी छाती में हाथ लगाया बैहामारी ने तो कहता है ये दादा यह तो लड़की है।

बहुत हंसी होने लगी रे भाई

सभी हरवाहे

हंसते हैं रे दादा

कहते हैं धन्य रे बैहामारी

तुमको क्या हो गया

दस लोगों के बीच में

क्या करने लगे हो

अकेले में जो करना था तो करते

ऐसा कहकर हंस रहे हैं हरवाहा रे भाई। बैहामारी शर्म के कारण पानी - पानी हो गये । रामा लड़की बाजू से निकलकर अपने घर की ओर भाग गयी !

हो ss ऐसे दिन बीत रहे हैं रामा लड़की के कलप ड़ाह में । परंतु उन दोनों का मन नहीं मिल रहा था। बैहामारी रामा लड़की की ओर देखते भी नहीं थे।

कैसे सास रो - रो कर प्राण दिये जा रही है हो ss

धन्य हो लड़की तुम्हारी जिंदगी को । सोने के समान तेरा शरीर है पर मेरे लड़के में ही दोष है। कौन जाने किस की नाश हो गयी है धन्य है भगवान की माया।

हो ss रामा लड़की कहती है एक दिन सास से क्यों फुआ तुम्हारा लड़का तो मेरी तरफ देखता भी नहीं है मैं क्या करुंगी इस घर में रहकर।

मांड़ो गढ़ में मेरा छोटा भाई है मैं उसी के घर में जाकर रहूंगी। तुम क्या कर सकती हो बेटी मेरा लड़का तुम को अच्छा नहीं लग रहा है तो।

हो ss रामा लड़की अपने भाई के घर जाने के लिये तैयार हो रही है।

निकाले हैं पेटी से कपड़े रे भैया

कर रही हैं श्रृंगार रामा लड़की रे भाई

पांव में पैरी , हाथ में चूरा, कमर में कड़्डोरा, गले में हवाल, माथे में बिंदिया, कान में तरकुल और सिर के बालों में मांग निकाली है रामा लड़की ने भैया ss

कसकर जूड़ा बांधा है

जूड़ा में फूल लगाये हैं

ऑखं में काजल लगाकर

नैंनों को मटका रही है रे भैया

कैसा किया है श्रृंगार रामा लड़की ने रे

कैसे पहना है बारह थान का लंहगा

ऐंचातानी अंगिया रे भाई

कैसे चारम चीरा ओढ़नी ओढ़ा है लड़की ने

अब तैयार हुयी है

सामा राजा और कामा राजा

के पास जाने को हो ss

हो ss मन में सोचती है लड़की । मैं तो जा रही हूं जाते - जाते बैगा बाबा से भी तो मिल लूं। कही उसने लगुन तो नहीं बिगाड़ दी हो। अब तो भाई्र

रामा लड़की दो बोतल शराब रखकर
जाती है बैगा के घर में
पनिया बिल्लू बैगा के घर
बैगा घर में अपनी बैगिन के साथ बैठा था.
जाकर लड़की कहती है पांव लांगू दाई हो ss

हो ss बूढ़ा उस लड़की को देखता है। वह कहता है कहां जा रही हो बेटी। लड़की बोली मै ने सोचा बाबा से भेंट करके आ जांऊ इसलिये आयी हूॅं। इतना कहकर रामा लड़की ने बैगा के सामने दो बोतल शराब निकाल कर रख दी

हो ss बूढ़ा रे भैया
शराब को देखकर
रामा लड़की से कहता है
क्यों बेटी क्यों जा रही हो
यहां नही बनता है क्या
सही में तुम दोनों का मिलाप
नही हो पा रहा होगा
क्योंकि शुरू से ही लगुन बिगड़ गयी है ।
बूढ़ा कहता है हो ss
हो ss अब बोल रहा है बैगा बाबा
रामा लड़की से ।
क्या बोल रहा है बैगा ?

कहता है बेटी तुम बिलकुल चिंता मत करों मै तुमकों ऐसी मोहनी बना कर देता हूॅं कि वह तुम्हारे पीछे कुत्ते के समान न फिरे तो कहना जहां - जहां तुम लू लू करके बुलाओगी वही चला आयेगा। तुम जहां भी जाओगी वह तुम्हें सूंघते हुये आ जायेगा। रामा लड़की अपने मुंह को एक तरफ करके हंसती है हो ss

अब लगा रहा है शराब का तर्पण
मंगाया है लाल सिर का चूजा
टपका रहे है देवताओं को
लगा रहे हैं होम धूप दादा
काट रहे है चूजा को भाई
बना रहे है उसके खून से मोहनी हो ss
खरका डांड के मोहनी
पनघट की मोहनी
गली डोंगर की मोहनी
गली घाट की मोहनी
घर भीतर की , पलंग के ऊपर की
ठाठ भीतर की, ठाठ के ऊपर की

रास्ता खूंदान मोहनी, नदी नाकने की मोहनी

अचाट मोहनी - निचाट मोहनी

सभी प्रकार की मोहनी बनाकर सौंप रहे हैं बैगा बाबा हो ss । बैगा बाबा कहते बेटी अपनी कंघी तो लाकर देना ।

कैसे कंघी दे रही है रामा लड़की बैगा बाबा को हो । हो ss सब मोहनी को कंघी में ड़ालकर लड़की को दे दी । फिर बैगा बाबा ने कहा जा लड़की यह कंघी उसके घर की ठाठ में खोंस देना जहां वह सोता है । फिर देखना मेरी मोहनी का तमाशा । देखना वह तुम्हारे सामने विनती करते हुये दौडे आयेगा ।

अब चली है रामा लड़की रे भाई

कंधी को रखकर

धर में आ गयी

पलंग के ऊपर

ठाठ में रें भैया

कंधीं को खोंस दिया

वह धर से निकली श्रृंगार करकें

लड़की मिलती हैं सास से

रो रोकर दादा

सास भी हिलक - हिलक कर रो रही है रे भाई

हो ss रो रही है सास । कहती है आज मेरा धर सूना हो गया है मेरी सोने की चिड़िया उड़ी जा रही है। इसका कोई उपाय नाजर नहीं आ रहा है । कैसे दोनों सास बहू लिपट - लिपट कर रो रही है हो ss

हो ss भेंट भलाई कर के रामा लड़की जा रहीं है अपने छोटे भाई के पास धर लिया है उसने माड़ोगढ़ का रास्ता । चली जा रही है । रास्ते - रास्ते ।

हो रास्ते में बैहामारी नागर फांदे रहा वह कैसे देख रहा था उस अलबेली लड़की को झकमक - झकमक चली आ रही थी । कोई भी साथ में नही था कैसे सोच रहा था बैहामारी हो ss

हो ss उस लड़की को देखकर मन अकल बकल होने लगा बैहामारी का कहता है कैसी सुंदर युवती है राजी हो जाती तो उसे अपना जीवन साथी बना लेता ।

वह वहीं से आवाज देता है ।

ओ बैया। ओ पहुनिन।कहां से आ रही हो । थोड़ा सा आराम कर लो यहां पर छाया है धूप में क्यों मरी जा रही हो । कैसे मुस - मुस मुस्कराती है रामा लड़की वह कहती है बैगा बाबा की मोहनी अब अपना असर दिखा रही है । वह वहीं पर खड़ी हो गयी रामा लड़की रे भाई ।ं

कैसे बैहामारी रे भैया

फंदा हुआ नागर छोड़कर

पैनारी को रखकर भाई

आया है लड़की के पास
कैसे उसके रूप को देखकर रे दादा
मोह तो गया है बैहामारी
मत बताओ रे हीरा
कहता है कहां कि हो पहुनिन
आज हमारे धर में मेहमानी कर लेती
यह नहीं हो सकता है रे दाऊ
मुझे अपने भाई के पास जाना है रे
इसलिए मै नही रूक सकती मेरे साथी
कुछ देर छाया में आराम कर के
चली जांऊगी । मैं तो आगे ! े

हो ss ऐसा कहकर छाया में बैठी है रामा लड़की रे भाई ! अब बैहामारी का नही है ठिकाना । लल्लू कुत्ती होने लगा । पास में जाकर उसका हाथ पकड़ लिया ।

हो ss रामा लड़की चिल्लाकर कहती हे ये ये यह क्या कर रहे हो ऐसा मत करो मेरा पति पीछे से आ रहा है ! यदि वह यह सब देख लेगा तो मेरे टुकड़े - टुकड़े कर देगा दोनो के ! यह सुनकर बैहामारी ने हाथ छोड़ दिया है भाई रे ss
रामा लड़की हाथ को छुड़ाकर अपने रास्ते - रास्ते धर भग गयी भाई ।

अब बैहामारी के दादा
नहीं तो लग रहा है मन जुताई में
ढील दिये है बैलों को रे भाई
रखकर नहना और जोता
भागकर धर आ गया है रे भाई

उसकी मां उसे देखकर कहती है अभी तो शाम भी नही हुयी है यह खेत से कैसे वापस आ गया ।

मेरा मन कैसे नहीं कैसा लग रहा है मॉ । इसी कारण खेत से आ गया हूॅ ! ऐसा कहकर बैहामारी घर के भीतर घुस गया है हो ss

केसे अनमना दुनमना सा
बैहामारी रे भैया
जाकर पलंग के ऊपर
लेट गया है दादा
कैसे वह ऊपर को देखता है
उसकी नजर में रे भैया
वही लड़की झूल रही है
उसे उसके बिना कुछ भी अच्छा नही लगता
कैसे ठाठ में रे दादा
कंधी खुसी है ।

उसी कंधी पर नजर पड़ी है

बैहामारी की भाई हो ss

जिस समय में उसकी नजर कंधी पर पड़ी उसी समय उसके ऊपर अपनी पत्नि रामा लड़की की मोहनी छा गयी । उसकी नजर में झूलने लगी है रामा टूरी । वह बिस्तर से अकबका कर उठा और दौड़कर अपनी मॉ के पास पहुंच गया ।

कहता है दाई ओ दाई

मॉ कहती है

क्या है रे बेटा

वह कहता है तुम्हारी बहु दिखाई नही दे रही है कहां गयी है आज । क्या करेगा रे हीरा बहु का तुम्हारे दुख के कारण । वह आज भाग गयी है ।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

कहां भग गयी है दाई ।

गई है अपने छोटे भाई सोमा राजा, कामा राजा के पास माड़ोगढ़ में।

ये दादा अब क्या कहना । धबड़ा गया बैहामारी। पूछता है क्यों दाई वह किस रास्ते से गयी है ।

मॉ कहती है वही तो रास्ता है अपने खेत को होकर एक ही तो रास्ता है । वहीं तो तुमने नागर फांदा रहा होगा ।

हो ss तब याद आया है बैहामारी को ।

बैहामारी कहता है गजब हो गया भगवान वह औरत जिसे मैं पराई समझा था वह तो मेरी ही पत्नि थी भला मैने उसे क्यों भागने दिया । धन्य हो मेरे दिमाग को ।

अब बैहामारी रे दादा

कस रहे है घोड़ा रे भाई

सजा रहे है तीर कमान दादा

साथ में रखें है बाघ मार कुूर्रा

साथ में रखें है सिंगी

चल दियें है सरपट दौड़ते घोड़े में भाई

मॉ से बोल रहे हैं ।

दाई । ओ दाई ! चिंता मत करना । मै अभी लाता हूॅ तुम्हारी बहू को ऐसा कहकर राजा घोड़े को सरपट दौड़ा रहे ंहैं भाई।

हो ss चली जा रही है रास्ता पकड़े रामा लड़की डोंगर , पहाड़ , झोरकी दादर पार करके चली जा रही है ।

हो ss पीछे - पीछे बैहामारी धोड़े को हवा मे उड़ाते चले जा रहे हैं ।

हो ss अभी पहुंचता हूॅ ! तभी पहुॅंूचता हूॅ ! ऐसा सोचने लगा बैहामारी ।

हो ss शाम हो गयी है ।

दिन डूब गया है

कैसे जंगलों के बीच में

दिन अस्त हो गया भैया

अंधेरा हो गया है दादा

कहां करूंगी विश्राम

सोचती है रामा लड़की

वह एक पेड़ के नीचे खड़ी है रे दादा

उस पेड़ को देख रही

रामा लड़की हो ।

हो ss क्या देख रही है रामा लड़की । उस पेड़ पर एक चिड़िया का घौसला बना था । वह सोचती है न होता तो आज यहीं विश्राम कर लेती ।

ऐसा सोचकर रे भैया

चढ़ गयी है पेड़ के ऊपर लड़की

बैठ गई है धौसले के अंदर

दो खंड़ का धौसला रहा रे दादा

चिड़िया के बच्चे बड़े हो गये थे

चिड़िया उन्हें फुर्र से उडा़ कर ले गई थी

रामा लड़की उस चिड़िया के घौसले मे सो गयी

हो ss उसके पीछे,पीछे बैहामारी अपना धोड़ा दौडाते उसी पेड़ के नीचे आकर खड़े हो गये

सोचते है बैहामारी अपने मन में धन्य रे पत्नि तुम ऐसा भगी की मेरा धोड़ा तक तुम्हे नही पा सका । अब तो रात हो गयी है जंगल से कहां जायेगी यही कही होगी मै भी यही कहीं रात्री में विश्राम कर लूं ! ऐसा सोच रहे हैं ! बैहामारी हो ।

अब क्या कहना भैया

उस पेड़ को देखा

बैहामारी ने भाई

ओर देखा है चिड़िया का घौसला

मन मै सोचता है बैहामारी

इस घौसले में रे भाई

रात्री में विश्राम कर लेता

तो अच्छा रहता भाई ssः

हो ss चढ़ गया है पेड़ पर बैहामारी उस घौसले के दूसरे खंड में जाकर धुस गया है घोड़ा एक पेड़ से बांघ दिया है और घौसले में सो गया है ।

हो ss दोनो में से कोई नही जानता दोनों अलग - अलग अपने खंडो मे सो रहे हैं दोनों को नीद लग गयी है । हो ss बहुत सुबह रामा लड़की की नीद खुली ! वह उठ कर बैठ गयी थोड़ी देर बाद वह पेड़ से नीचे उतरी और घोड़े को देखकर पहचान गयी पर वह गुस्सा के कारण वहां नही रूकी और वहां से भाग गई है ।

अब यहां रे भैया

दिन उगने पर

जब खुली है नींद रे

उठे है बैहामारी

उतरे है उस पेड़ से

पकड़े है घोड़े की लगाम

उस घोड़े की लगाम में

साड़ी का टुकड़ा बंधा रहा हो

हो ss बैहामारी सोचते है । यह किसकी साड़ी का टुकडा़ है ! इस प्रकार की साड़ी तो मेरी पत्नि पहन कर भागी है ! हो न हो वह भी इसी गोदा में रात रूकी रही हो ।

ऐसा सोचकर बैहामारी फिर से उस पेड़ पर चढ़ा है हो ss

हों ss उस घौसले में क्या देखते है । दो चुटकी और मुंदरी वहां पड़ी थी । बैहामारी ने उनको उठाकर पहचाना । उसने सोचा मेरी पत्नि रात को यहीं थी । अब कहां बच कर जायेगी ऐसा सोचता है बैहामारी हो ।

अब बैठा है घोड़ा में रे भैया

दौड़ा रहा है घोड़ा रे भाई

सरपट कदम दुलकी रे दादा

नहीं देख रहा पत्थर

नहीं देख रहा खूंटा

नहीं देख रहा गढढा

नही देख रहा है झाड़ियां

नही देख रहा है नाला

नहीं जानता घाट

कूंदते चला जा रहा है धोड़ा

ऐसे चले जा रहें है ! बैहामारी रे भाई ss

हो ss क्या देख रहें है आगे । एक जगह पर झाड़ियों के बीच एक रेड़ा किसी मरे जानवर को खा रहा हे ।

हो ss बैहामारी को शंका हो गयी । खा लिया है मेरी औरत को इस बाघ ने ! बैहामारी लेकर बरछी जब दौड़ा है रेड़ा रको - पको ,रको पको । तब बैहामारी उसे देखकर कहता है यह तो रेड़ा हे यह क्या खायेगा । वह पास में जाकर देखता है तो एक मरा जानवर पड़ा था।

अब चला है बैहामारी घोड़े को कूंदाते हो ss

आगे आगे रामा टूरी

भागती जा रही है भाई

पीछे - पीछे बैहामारी

घोड़े को कुंदाते

चलते जा रहे हैं दादा

इस प्रकार की दौड़े दाड़ी हो रही है रे भाई

हो ss चढ़े जा रही हे रामा दूरी कजली वन,भुंआ डंड पहाड़ में अकेले चली जा रही है ।

उसी समय के बात है रे भैया

दो लड़के

राजाओं के बेटे

आये है वन में

शिकार खेलने

खेल रहे है शिकार

घूम - घूम के रे भाई

पा लिया रास्ता में

रामा लड़की को

सुंदर लड़की रे भैया

कहते हे अच्छा शिकार मिला हे भैया

न होता तो आज इसी को लेकर चलते

हो ऽऽ ऐसा सोचकर दोंनो लड़के पहुचें हे रामा लड़की के पास कहते है क्यो लड़की । कैसे भागती जा रही हो क्या तुम्हारी सास ने मारा है या पति ने घर से निकाला हे कुछ तो बताव लड़की कैसे उन लड़कों को देखकर शरमा जाती हे रामा लड़की ।

कहती हे क्या बताूर्ऊ भाई्र

न मेरी सास ने मारा है

न मुझे पति ने निकाला है

मुझे मेरा पति अच्छा नही लगता

इसलिए गुस्सा होकर परदेश

जाती हूॅ किसी भी ओर

अपना जीवन काटूंगी भैया

ऐसा बोलती है रामा टूरी रे भाई

हो ऽऽ उस लड़की की बातों को सुनकर लड़कों के मुंह में पानी आ गया वे कहते है चलो लड़की हमारे धर में हम लोग तुमको अपने पास रख लेगें ।

ऐसा कहकर रे भैया

पकड़ लिया लड़की को

उड़ाकर ले गये राजा लड़की को रे भाई

हो ऽऽ देखा हे बैहामारी ने क्या देखा है ? देखा है कि दो लड़के घोड़े में चढा़कर उसकी पत्नि को ले जा रहे हें । बैहामारी ने भी अपना धोडा उनके पीछे दौडाआ । बैहामारी का घोड़ा सरपट भाग रहा हे

हो ऽऽ जब देखा है राजा के लड़के ने बैहामारी को घोड़े में अपना पीछा करते । बहुत दूर - दूर तक नही पा रहे है बैहामारी उन लड़कों को रे भाई हो ।

कैसे भागता है घोड़ा

आगे आगे लड़कों के

बैहामारी के पीछे - पीछे

रामा लडकी को

घोडा में ब्ोठालकर

ले भगे जा रहें है

राजा के लड़का रे दादा

कैसी मुसीबत में पड़ गयी है

रामा लड़की रे भाई

कैसी मुसीबत में पड़ गये है

बैहामारी रे भाई हो ss

हो ss भागते जा रहे है । भागते जा रहे है भागते,भागते कहां पहुचते है ! नदी के किनारे ! हो ss वहां क्या देखते हे ? बहुत बडी - बडी नदी बह रही हे और घाट में एक नाव बंधी है ढ़ीमर का पता नही है ।

हो ss उतरकर घोड़ो से रे दादा

छोड़ रहें है नाव को

खूंटा से भैया

पकड़कर बैठाला है रामा टूरी को

नाव में रे भाई

एक लड़की रामा को पकड़े है

दूसरा लड़का नाव को चलाता है

लड़कों ने नाव को बीच घाट में छोड़ दी है

हो ss बैहामारी आया है घाट में देखता है नाव बीच नदी में पहुंच गयी है कैसे पकड़े है उसे ! नाव नदी के उस पार भागी जा रही है बेहामारी बहुत कठिन सोच में पड़ गया रे भाई ss

हो ss निकाल रहे है तीर कमान रे भाई । बेहामारी । मारा है तीर नाव में निशाना लगाकर क्या कहना बहुत बड़ा छेद हो गया ! उस नाव में बल बल - बल बल पानी भरने लगा । बीच धार में नाव डूव गयी हो ss

वे राज पुत्र तो तेरकर किनारे आ गये पंरतु रामा लड़की नदी के बीच धार में डूवने लगी ।

कंहा हे बैहामारी

पानी में भैया

डुबकी मार मार के

ढूंढ रहा है रामा लड़की को

नही मिल रही हे जोड़ी

दिल कांपने लगा है रे

कैसे मिलकर बिछड़ गये

याद कर - करके रो रहा है बैहामारी रे भाई

हो ss कैसे याद कर - कर के रो रहा हे बैहामारी । कैसा अपना माथा पीट रहा है भाई ! कहता है तुम्हारी मैरी जोड़ी बनी रहै उसके कारण अपने पिता को खो दिया तेरे कारण वन

वन में मारा मारा फिर रहा हूँ हो ! कहां मिलेगी मुझे तुम चंदा के समान उजली धन्य हो मेरी मति को, तुम्हें नही पहचान पाया ।

बहुत कष्ट दिया है तुमको
तुमने न पेट भर खाया
तुमने न नीद भर सोया
तुमने न मुझसे मुंह भर बोला
अपने पति के साथ रे
कोई भी सुख नही देखा
तड़फते - तड़फते
यहां से चली गयी
मुझे जिंदगी भर की तड़फन दे गयी हो

हो ss ऐसे तड़फ रहे हे बैहामारी । जंगल - जंगल भटक रहे है कहते हैं अब क्या जाऊंगा लौटकर । माँ से कहकर आ रहा हूँ की तुम्हारी बहू लो लेकर लौटूगा । परंतु अब खाली हाथ क्या जाऊंगा ऐसा सोच रहा है बैहामारी रे भाई ।

अब रामा लड़की रे भैया
पानी में डूबी है
एक बहुत बड़ी मछली
गट्ट से उसे निगल गयी
कैसे उस लड़की को पेट में रखकर
चली गयी है बीच घाट में

हो ss उस राज्य में एक बैगा डोकरा रहता था वह नदी में जाल से मछली मार रहा था उसी से अपना गुजर बसर करता था ।

कैसा था बैगा डोकरा
उस राज्य में दादा
उसके लड़का लड़की कोई नही था
नदी में जाल से मछली का शिकार करता
मदली मार - मार कर
पेट पालता था रे भाई

हो ss वही डोकरा जाल फॅेक रहा हे , उसी जाल में वह मदली जाकर फंस गयी । बहुत बड़ी मछली देख कर बैगा डोकरा खुूशी से नाचने लगा । वह मछली को अपने कंधे में रखकर केसे घर ला रहा है हो ss ।

कैसे मछली को भाई
कंधें में लाद कर
लाया हे बैगा डोकरा
घर में रे दादा
डाल दिया है आंगन में

मछली को भैया
बैगिन डोकरी देख के खुशी हो गयी भाई्र ss
लेकर हंसिया और कुल्हाड़ी
निकली हे बैगिन डोकरी
फाड़ रही हे मछली का पेट

पेट से रामा लड़की
जिंदा निकली रे दादा
उस कन्या को देखकर बैगा बैगिन अचरज में पड़ गये
हो ss अचरज में पड़ गये बैगा - बैगिन

हीरा के समान जग मग दमकती हे कन्या। चंदा के समान चंदेनी ,सूरज के समान मनोहारी है लड़की।

बैगिन कहती है। नै रे बैगा अपनी कोई संतान नही है न होता तो इसे बेटी मानकर पाल लेते बैगा राजी हो गया भाई्र ss।

अब उस लड़की को रे दादा
घर के अंदर ले जाकर
सेवा करती हे
बैगिन दाई भैया
पेट को फुलाकर
दो चार घर में जाती हे
कहती है ये बाई
आज कल में बाई
मुझे कुछ होने वाला है
एक दिन डोकरा ने हल्ला उडा़ दिया
मेरी डोकरी ने एक लड़की को जन्म दिया हे हो ss

हो ss रामा लड़की को पाल रहे है बैगा बेगिन। रामा लड़की भीतर - बाहर आने जाने लगी घाट में पानी भरने जाने लगी।

सब कहते हे रे भाई्र
बैगिन लड़की रे भाई
रामा लड़की रे भाई
अब बैगा लड़की बन गयी
बैगाओं के समान ओढ़नी पहने
बैगाओं के जैसे श्रृंगार किया
केसे निकली हे पानी लेने

कैसे देख रहे है बैहामारी रे भाई

हो ss उस लड़की को देखकर पहचान तो लिया हे बैहामारी ने अब वह अपने मन में कहता हे ! तुम बैगिन बन गयी हो तो मै भी बैगा लड़का बन जाता हूॅ तुम्हारे साथ फिर से शादी करूंगा

। मै तुम्हें सात जन्मों तक नही छोड़ूगा ।

कैसे नदी के किनारे में

बनायी हे झोपड़ी

बैगा झोपड़ी रे भाई

कैसा बनाया है अपना रूप

बैगा लड़का का रे भाई

कैसे बैगा डोकरा के यहां

आना जाना लगाया हे

हो ss तो तुम कहां के हो लड़के । तुम तो हमारी जात पात के हो।

हां बाबा । मेरे माता पिता कोई नही हे ।

खोद - खाद कर खाकर पेट पलता हूॅ।

सही कह रहे हो बेटा । हम डोकरा - डोकरी हैं ! हमारी एक लड़की है तुम मेरे घर में ही रहने लगो मेरा आसरा हो जायेगा ! तो लमसनाई रखोगे क्या बाबा कहता है बैहामारी तो डोकरा कहता है ठीक है बेटा तुम मेरे धर में लमसनाई ही लग जाओ । तीन साल में तुम लड़की को जीत लेना । अब लमसनाई बनकर रह रहा हें बैहामारी रे भाई ।

हो ss केसे डोकरा के काम को करता है बैहामारी ।

पहाड़ में जाता है रे भाई

कंद मूल खोदने

लड़की को साथ में रखकर

भाजी अैार पत्ते तोड़ने

जंगल में जाता हे रे दादा

बेमर को रखवाली करता हे

साथ - साथ धर का भी काम

दोनों मिलकर करते है

बैहामारी रे भाई

और रामा लड़की रे भाई

एक दूसरे को पहचान गये है दादा

परंतु दोनों एक दूसरे को नही बताते हैं हो ss

हो ss ऐसे दिन बीत रहे हैं बेगा लड़के के ।

बैगा डोकरा को बहुत आराम मिल रहा है । बैगिन लड़की खुशी है वह मन में सोचती है कि बेगा बाबा की मोहनी के कारण यह बैगा लड़का बना है कहां तो मुझे नागर में फांदा रहा

अब एक दिन की बात है

राजा के दोनां लड़के

राजा हो गये थे

वे धूमने निकले

गांव में रे भाई

जिस वक्त में रे भैया
बैगिन लड़की पर नजर पड़ी है
अक बका कर रह गये दोनों ही

कहते हे कितनी सुंदर लड़की हे चंदा के उजाले जैसी तो दूसरा भाई कहता हे क्यों न अपन इससे शादी कर लेते बनेगा की नहीं । कैसे नही बनेगा चलो बैगा से मांगते है उसे वह कैसे नही देगा । अब आये हैं दोनों भाई बैगा डोकरा के पास हो ऽऽ

हो ऽऽ क्या बोल रहे हे! कहते है सुन रे बैगा आज शाम को अपनी लड़की को हमारे महल में पहुंचा देना । हम पालकी भेजेगें इसके साथ हम शादी करेगे । यदि तुम इसे नही भेजोगे तो तुम्हें मार डाला जायेगा । बैगा डोकरा मारे डर के थर - थर कांपने लगा कहता है हां महाराज भेज दूंगा।

अब शाम के समय रे भैया
आयी है पालकी रे दादा
बैगिन लड़की को लेने
फौज और पियादा
आये है भैया
बेगिन लड़की को बैगा
पालकी में बैठाता है
कहता है जा बेटी अब राज रानी कहलाना
परंतु हम को भूल मत जाना हो ऽऽ

हो ऽऽ बैगिन लड़की कलप - कलप कर रोती है डोकरा भी रोता है कि बैगिन लड़की चल दी राजा के महल में रे भाई ।

जब आया हे डोकरा के पास बैहामारी भेया

देखता हे तो घर सूना लगता हे पूछता है बैगा डोकरा से भाई ! लड़की कहां गयी हे बैगा कहता हे राजा ले गया हे विवाह करने हो । हो सुनकर बैहामारी गुस्सा हो जाता हे बैहामारी कहता है तुमने उस लड़की को कैसे भेज दिया है ! डोकरा कहता है मै क्या करता भाई जब राजा उसे डोली मे चढ़ा कर ले गया । उसके पास ढेर सारी फौज थी मैं उसका क्या कर लेता । कल या परसों विवाह करेगें ऐसा कहते रहे ! जा भाई तुम में शक्ति हो तो अपनी पत्नि को वापस लेकर आ जाओ मेंने तो लड़की तुम्है सौंप दी थी ।

ऐसा बोलता है बैगा डोकरा हो ऽऽ
हो ऽऽ अब चला हे बैहामारी
पहुंचा हे घोड़े के पास
नदी के कछार में
घोडा़ धास चर रहा था
कैसे कसा है घोड़े को
ले चला घोड़े को उडा़ते
राजा के लड़कों के राज्य में

जाकर पहुचंता है रामा बगीचा में
डाल दिया हे डेरा बांध में
आम के बगीचा में
अब रखा हे बैगा का भेष
बैहामारी रे भाई
सिर पर अंगोछा
कमर में लंगोटी
गले में गुरियों की माला
कानों में उतरना
हाथों में चूड़ा
कंधे में चुलगी
टांगा हे भैया
चुलगी में कांदा
रखकर रे भाई
चला है नगर में हो ss

हो ss कहता है मैं बैगा का लड़का हूॅ कोई लगुन दिखवा लो शादी विवाह की दवा ले लो बीमारी की रे भेया।

हो ss देख रहा हे लगुन बैगा लड़का दे रहा है दवाईयां गांव वालो को बात फैल गयी राजा के महल तक में हो ss

अब राजा लड़का रे भैया
बुलाया है बैगा को
कहते है बैगा लड़का से
तेरा बाप कहां हे
कहता हे बीमार है मालिक
उसके बदला में मैं काम करता हूॅ
ऐसा बोलता है बैगा लड़का भाई

बैगा लड़का कैसे लगुन देख रहा हे राजा के लड़को के विवाह की हो ! हो ss कहता है राजा अच्छी जोड़ी बनायी है पर इनकी लगुन तो ठीक नहीं उतर रही हैं भाई गांठ जुड़ाई में लगुन का सगुन करना पड़ेगा ऐसा बोलता है बैहामारी रे दादा हो ss

हो ss बेगा लड़का लगुन लिखकर चला गया है कह गया है गांठ जुड़ाई के समय आऊंगा अब यहां विवाह की तैयारी हो रही हे रे भाई ।

कैसे हल्दी कुचरानी हो रही हे
कैसे मंडप गड़ौनी हो रही है
तेल और हल्दी रे भैया
नहडौल की रस्म हो गई
कैसे नगर में उत्सव हो रहा है

धर - धर में चरचा रे भाई
कैसे बैगा लड़की के साथ में
राजा के लड़का के रे दादा
विवाह हो रहा है रे भाई
खाना और पीना
नेंग और जोग रे
नाच और गाना
हो रहा है दादा
हो ss कैसे लगुन जुड़ाई हो रही है
धर के मंझौटा में
बैठे है दूल्हा - दुल्हिन
घेरी हैं लुगाई
गांव भर के रे दादा
बैठा है बेगा लड़का
कैसे गांठ जुराई के
नेग मांग रहे हैं रे भाई

हो ss केसे नैग मांगते - मांगते जब निकाली है कटार तो छक से गांठ को काट दिया । बैहामारी ने दूल्हा को एक लात मारी वह लडंग से गिर गया ।

हो ss दुल्हिन का हाथ पकड़कर पीछे के दरवाजे से ले भागा और भाग कर पहुंच गया अपने डेरा में हो ss ।

हो ss गजब हो गया । हल्ला मच गया कि बैगा लड़का दुल्हिन को लेकर भाग गया ले भागा दुल्हन को सभी लोग अकबका गये ।

अब नही है ठिकाना
बाजा अैार गाजा
गाना और बजाना
कहां गया दादा
सब ठंडें पड़ गये
अब राजा लड़को को
जोश आ गया दादा

अब वे ललकार रहे है !

फौज - फटाका को हो

हो ss ललकार रहे ंहै फौज - फटाका को हुकुम दिया है जाओ पकड़ो भागने ना पाये उस बैगा लड़के का सिर काटकर ले आना अब दौड़ी है पलटन रे भाई

घेर लिया है जाकर
आम के बगीचा में
पलटन ने भैया

घोड़ा और हाथी
फौज ओर फटाका
लाव और लश्गर
सात परत से
बगीचा को भैया
धेर लिया है जाकर हो ss
हो ss राजा बैहामारी के तंबू में भाला बरछी तीर तेगा पड़ने लगें है ।
अब क्या कहना भैया
नौ सौ रे मटिया
सात सौ ंिसंगी
तेरह सौ भूत
छूटी है चुड़ैलिन
क्या कहना भैया
रैना - रैन उड़ा दिये हे लश्गर के
हो ss झींका, झपटी गिद्‌ध मसानी होने लगी ।
मुटकन के धम गुरदा, लातों से धूल ।
पत्थर पिस गये
झाड़ी - झंकड़ चरपट हो गये
धरती खवर दवर हो गयी
कमर भर के गढढे हो गये
मेढ़ा लडाई हो रही हें
पड़वा लडा़ई हो रही है
मुर्गा लड़ाई हो रही है
बारह - बारह सिरों को
पेलते ले जा रहे हे
कैसे मची है लड़ाई रे दादा ss

हो ss जब छूटी हे बैहामारी की फौज जब निकला है बैहामारी हाथ में कुर्रा रखकर घोड़े पर सवार होकर उस समय फौज में खलबली मच गयी । खून की नदिया बह गई भेया ! लोथडों पर लोथडे के ढेर लगे हैं भाई ! खून और मिटटी का कीचड़ मच गया दादा कैसे चील अैार गिद्‌ध बैठ कर नौंच रहे ंहै कैसे हाल बेहाल हो गये राजा के लडकों की फौज के हो ss ।

हो ss सारी फौज कट गई हे हाथी - घोड़ा कट गये है सबको मार काट कर लौटी है सिंगी माटिया रे भाई ss ।

अब बेहामारी रामा टूरी से कहता हे ये मेरी जोडी मैंने तेरे लिए कितने कष्ट उठाये है कैसे हंस - हंस कर बोल रहे है दोनों तब बोल रहा है बैहामारी रामा टूरी से हो ss

मेरी जोड़ी हमारा तुम्हारा मिलना तो हो गया है दुख सहे कष्ट सहे फिर भी अपन आपस में मिल ही गये पर इनकी औरतें और लड़के तो तड़फ - तड़फ कर मर जायेगें ! इनकी औरतों

की श्राप हम लोगो को लगेगा । रामा टूरी बेहामारी से बोल रही है हो ऽऽ

तब बैहामारी बोला है तुम सही कह रही हो पर इसके बारे में मेरे पास कोई उपाय नहीं है ! मारने को तो मेंने सभी को मार डाला है पर इन्हें जिंदा करने की जबाबदारी तुम्हारी है जोडी सत्य की लाज रख लो । ं

अब रामा टूरी रे भैया
बड़े देव का मन में
करती हे स्मरण
जा रे बड़ादेव
पुरखों के मानने के देवता
सत्य के होगे तो
मेरे सत्य को रख लो
प्रगट तो हो जाओ

इन मरे हुए लोगो को जिंदा कर दो हे बडा ़देव हो ऽऽ इतनी विनती करके रामा टूरी हाथ जोड़कर बैठ गई है रे भाई । हो ऽऽ उसी समय में बड़े देव प्रगट होते है उनके हाथ में बेल की लड़की का डंडा अमृत का पानी तूमा में रखे हुए बडा देव आये है !ं हो ऽऽ बडा देव कहते है !ं रामाटूरी सत्य पर अटल रही हो तुमने अपने पति को प्राप्त कर लिया है ले यह अमृत का पानी तूमा में रखा हे और यह बेल की लकर्ड़ी का डंडा है ! यह डंडा इन मुरदों को जिला देगा ऐसा कहकर बडा़र देव अंर्तध्यान हो गये अब बेल की लकड़ी का डंडा अमृत का पानी लिया हे बैहामारी ने सीच रहे हैं ! सभी में सुंधा रहे हैं डंडा रे भाई सब मुरदा जीकर उठ जाते है ं! भाई हो ऽऽ पूरी फौज जी उठी फौज उठकर वहां से ऐसी भागी की लोट कर नही देखा अब बैहामारी घोड़ा कस रहे है रामा टूरी को धोडे में चढ़ा रहे है। फिर बैहामारी घोड़े पर सवार होकर अपने राज्य सिंगार दीप को चले जा रहे हैं ।

चल दिए है राजा
बैहामारी भाई
रामा टूरी को रख कर
रात दिन चलतें है।
आठ दिन नौ रात में
सिंगार दीप पहुंच जातें है ं।

रानी पुंगारपूसे उन दोनों को देखकर प्रसन्न हो जाती हैं हो ऽऽ आ गये हैं बेटा और बहू खुशी से रहने लगे मॉ की आखों में ठंडक आ गयी । जेसी बैहामारी की जोड़ी बनी ही वैसे ही सभी भाईयो की बनी रहे भाई हो ऽऽ

जय श्री सीताराम की हो ऽऽ ।

000ध्000---

–

राजा पाली बिरवा

कैसे राम का नाम सुमर ले रे भैया ss
कैसे मन में रख ले धीर मेरे दादा
पूरा काम वही सुधारेगा मेरे मालिक
रामचंद्र रघुवीर जी हरी sss
हो sss कैसे कैसे
राजा तपेसिरिया हो गये मेरे भैया
कैसे जोधा और धर्मात्मा
पृथ्वी पर अवतार लिये है दादा
जिनकी साख अभी तक चल रही है मालिक ss
हो ss कैसे अपने वचन के पक्के रहे है भैया ss
ऐसे पालीविखा की कहानी गाकर सुनाता हूं मालिक
हो ss हरी का नाम हजारी हो ss
हो ss इस संसार में
एक से बढ़कर एक गुणों वाले
राजा हो गये है, तपस्वी हो गये है, जोधा हो गये हे
हो ss उनकी साख अभी तक चली आ रही है।
ऐसे राजाओ में रे दादा

पाली बिखा राजा
गोंड राजा रे भाई
जग जाहिर हो गये हे
उनकी कहानी को
मैं गाकर सुनाता हूं।
तुम सुन लेना हो
मन लगाकर रे भाई ऽऽ

हो ऽऽ क्या कहना है अत्ताल कोट, पत्ताल कोट, भुंआ दंड, कजली कोट के बीच में पालीपुर नगर था।

हो ऽऽ कैसा रहा वह नगर।
मत पूछों रे भाईं।

अंचन परदा, कंचन परदा,
कांचे कपड़ दहनारा,
चीर बंधा हे स्वर्ग द्वार पर,
आवन खोरी बजार,
तिरपन खोरी नौ सौ हजार,
मूंगा मोती के लगे है बजार।
उसी पालीपुर नगर में
राजा तपेसुर राज्य कर रहे है हो ऽऽऽ
कैसे राजा तपेसुर रे दादा
जिसकी धन दौलत का नही है ठिकाना रे भैया
महल, मंदिर, दुर्ग, अटारी
कच्चे सोने की दीवाल
पक्के सोने का कलश
चांदी की चौपाल
सोने की कोठी में रूपयों का भंडार
खंबो में चौरासी मोती जुडे हे ।
राजा अपने राज्य में राज कर रहे हे हो ऽऽ
हो ऽऽ नौ सौ हाथी दरवाजे के आगे,
नौ सौ हाथी दरवाजे के पीछे झूम रहे हे ।
बाहर बाध का पहरा,
भीतर भालू का पहरा,
बिना आज्ञा के न कोई भीतर जा सकता
न कोई बाहर जा सकता है।
ऐसे हें राजा तपेसुर रे भाई ऽऽ
हो पालीपुर नगर का महत्व है

क्या कहना दादा
सरवर सागर बांध
धरम ताल, अधियारी कुंआ
आम अमरैया
ताल और तलैया
चम्पा और मोंगरा
लोंग और इलायची
नारियल के पेड़
चंदन की छाया
रैन चंदेनी
ऐसे पालीपुर नगर में
राजा तपेसुर राज्य कर रहै है हो ss

हो ss रानी निंगाल पालो ने एक पुत्र को जन्म दिया राजा के राज्य भर में खुशी छा गई। नाच और गाना खाना और पीना, रात दिन चला। भाई राजा का तो काम हे वहां कोन सी कमी रहेगी।

मेवा मिष्ठान पांचो पकवान ,
गेंहू के गोदला,चांवल के बवरा,
उड़द के बरा तेल की सुंहरी
केवलार की भाजी, भुटटा का पेज,
कुदई का भात, महुआ का लाटा,
दूध बियारी, मठा, महेरी,
चना चबेना , मसूर की दाल,
कंचन थाली सोने का गडुआ,
गंगा जमुना का पानी ,
हीरा - मोती के पटा !
कैसे राव रैयत के
आदर सत्कार किया गया है हो ss
कैसे राजा तपेसुर रे भैया
कैसे खुशी मना रहे है भाई
कैसे निंगाल पालो माता
राजकुंवर को खिला रही है
झुला - झूला रही हे भाई
कैसे राज्य भर में खुशी
मना रही है मालिक
कैसे पालीविखा धीरे धीरे
होशियार हो रहा हे भाई रे sss

हो ss एक रात माता ने सपना देखा क्या सपना देखा निंगाल पालो ने। उसने देखा की चांदो गढ में उसका भाई भोजा बल्लारे के यहां एक लड़की ने जन्म लिया हे

उसका नाम बाई बिलरिया रखा गया है और सपने में क्या देखा है माता निगांलपालो ने ?

देखा हे कि पालाविखा और बाई बिलरिया का विवाह हो रहा हे । बहू को घर लायें हे

सभी लोग आंनद उत्सव मना रहे है हो ss

बहुत सबेरे रानी ने इस सपने के बारे में राजा तपेसुर को बतलाया रे भाई ss(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

हो ss राजा अपने मन में विचार करतें है न होता तो समधी के पास जाता । देख आता लड़की को और शादी विवाह की बात भी कर लेता । अब हो रहे हैं राजा तपेसुर चांदोगढ़ जाने के लिए तैयार रे भाई ss

हो ss राजा कैसे तैयार हो रहें है ।
पैरों में जूता - चप्पल
हाथ में बैत की छड़ी
गले में उतरा जी माला
कानों में कुंडल
शीश नाग की टोपी
बंदर काछनी धोती
बादल को छाता
काली मेंध की ढाल
फेंक मार बरछा
गीला बंजर कटार
बाध मार कुर्रा

कैसे श्रृंगार करके खड़े है राजा तपेसुर रे भाई ss कहते है रानी जा रहा हूॅ समधियाने । रानी कहती है राजा समधियाने में जाकर मुझे भूल मत जाना राजा कहते है ! रानी तुमको छोड़कर कहां भूलूंगा ! अब कैसे घोड़ा को सजा रहे है राजा तेपेसुर हो ।

अब कैसे सजा है धोडा रे दादा
चार पांव में नेवरा
नेवरा के ऊपर झंवरा
गिन गिन बारों में हीरा
बिजली का सिंगार
चन्दा सूरज मनियारी
सोने की डुमची
सोने का पलैंचा
सोने की करिहारी
नौ लाख का हार

पांच लाख की बिंदियां
छैः लाख की मनिहारी
रूपयों का रकाब
रेशम को कसना
मोतीचूर की कलगी
एक एक राम में हीरे जड़े है
ऐसे घोड़ें पर सवार होते हैं राजा रे भाई ऽऽ

हो ऽऽ राजा चले जा रहे हैं धर लिया चांदो गढ़ की रास्ता धोड़ा कुछ उडें , कुछ दौड़े, कुछ चले, नदी नाला , झोड़ी - झंकार, डोंगर - पहाड़ के पास उस पार जा रहा है दादर - कछार , भुतवा दहरा , ंिसगोली धाटी कारी माटी , करिया - पटपर कैसे पार करते चले जा रहा है धोड़ा रे भाई

जाकर राजा कैसे पहुंच गये है चांदा गढ़ में हो ऽऽ

जब भोजा बल्लौर ने सुना की राजा तपेसुर आये है आया है भटवा मेहमानी करने तो कैसे निकल कर दूर से भेंट करने जाते है । कैसे राम रहीम हो रही है कैसे चूमा - चाटी करे जा रहे है दोनों राजाओं की आपस में रे भाई ।

हो ऽऽ अब भोजा बल्लारे ले जाकर बैठाल रहे है राजा तपेयुर को रे भाई । केसे हंस - हंस कर बात कर रहे है दोनों ! समधी कहते है कैसे रास्ता भूल पड़ें हो क्या? अब बता रहे है राजा तपेसुर रे भाई ।

तुम सुन लो रे भाटो
तुम्हारे पास कन्या है
बाई बिलरिया रे भाटो
मेरे पास हे पुत्र
पाली बिरवा रे भाई
मैं सोच रहा क्यों बाहर जाये
दूसरी जगह भाटो
अपने घर - घर में रे
फिरा लेते भांवर
यह सही रहेगा की नही ं
इसलिए में लड़की
मांगने को आया हूॅ भाटो
मै आया हूॅ आपके द्वार में
लाया हूॅ शराब
जिसे आपस में मिलकर पी लै जी
जाओ सेमर की डगाल लाओ
तुम्हारे आंगन में गाड़ता हूॅ
आज से तुम्हारी पुत्री पर

मेरा हक हो गया है हो ऽऽ

हो ऽऽ ऐसी बात कर रहे है राजा तपेसुर वे मन ही मन खुश हो रहे है परंतु भोजाबल्लारे को यह बात पंसंद नही आती । यह कैसे मेरी पुत्री पर कब्जा जमाने पहुंच गया है यह ! मेरी बहन को जबसे शादी करके ले गया है

उसके बाद एक बार भी वापस हमारे द्वार पर नहीं आया हे अब मेरी लड़की को अपनाने पहुंच गया है दूध लौटाने का काम इसका हे की मेरा, ऐसा मन में विचार कर रहा है भोजा बल्लारे रे दादा पर वह मुंह से कुछ नही की रहा है ।

कैसे मेहमान का भाई
आदर सत्कार होता है
कैसे बैठक और उठक
खाना और पीना
कैसे रंग - रंग का रे भेया
बन रहा है भोजन
कैसे बवरा सुंहारी
ठिठरा और गुदला
भजिया और महेरी
महुआ का लाटा
कोंदो की कुदई
चांवल की बासी
बरा और डुभरी
भाजी और भटा
रंग - रंग के मेवा
रंग - रंग के मिष्टान
रंग - रंग का भोजन

कैसे बन रहा है साले भटवा के लिए रे भाई ऽऽ

हो ऽऽ यहां तो रसोई बन रही थी वहां भोजा बल्लारे राजा तपेसुर से कहते हे चल भाटो थोड़ा कलार की दुकान तरफ चलते हैं ! अब ले चले हैं कलार की दुकान में राजा तपेसुर को रे भाई ऽऽ ।

अब चले हे भैया
साले और बहनौई
कलार की दुकान में
शराब पीने रे दादा
चढ़ी है महुआ की भटटी
पक रही है खुद बुद , खुद बुद लाही
टपक रही है , बांस के पोर से दारू
कैसे बैठे है शराब पीने वाले

नशें में हैं रे भेया

सुध - बुध भूल गये है

गिद्ध मसानी हो रहे हैं

आंय बांय बक रहे हैं

वहां पहुचे हे साले - बहनोई रे भाई

हो ss जब बोला हे भोजा बल्लारे कहते हैं तुम सुनरे कलार मेरा भाटो बहुत दिनों में आया है पाली पुर नगर की शुद्व शराव तो पिलाओं ।

हो ss कैसे राजा तपेसुर को बाहर बैठाल कर भीतर धुस गये हैं भोजा बल्लारे कहते है समधी जी आप बैठिये मैं भीतर से शुद्व शराब लेकर आता हूं! जे कलार शराब में पानी न मिला दे । ऐसा कहकर भोजा बल्लारे भीतर धुस गया है रे भाई ss

हो ss क्या बोलते है कलार से तुम सुनो रे कलार दो बोतल में अलग अलग शराव देना एक बोतल में विष मिलाना और एक बोतल शुद्व रखना , समधी का सत्कार विष भरी शराव से करूंगा । अब कलार वैसी दारू ही भर रहा है रे भाई ss

अब निकले है राजा

दारू की बोतल धर के

कहते है आओ समधी

मिल बांट कर पीते है जी

कौन जाने कब मिलेगें

सही कह रहे हो साथी

बोल रहे हैं राजा तपेसुर

कैसे दोनों राजा मिलकर

दारू पीने लगे भैया

कैसे भोजा बल्लारे

राजा तपेसुर को दारू परस रहे है हो ss

हो ss कैसे दारू परस रहे हे भोजा बल्लारे राजा तपेसुर को ! कैसे जहर वाली दारू राजा को पिला रहे है ! कैसे अच्छी दारू खुद पी रहे हे! कैसे पत्ता के दोना बनाकर दोनो समधी दारू पी रहे है । हो ss

अब मालुम पड़ा है नशा रे दादा

जहर वाली दारू रे भैया

राजा तपेसुर

लड़खड़ाने तो लगे

नशा चढ़ गया है

जहर वाली दारू का

टज़ूख्ज़ो में भैया

अंधेरा छाने लगा

कैसे धूमने लगे

भटटी और मदवारे
तब कहते हे समधी
चलो धर चलें
बोल रहे हैं भोजा बल्लारे
चल भाटो नदी में
डुबकी लगाकर नहा लो
उतर जायेगा नशा

कैसे ले जा रहे हे नदी में बाहों को सहारा देकर हो ऽऽ
हो ऽऽ भोजा बल्लारे राजा को
पकड़कर नदी मे ले गया है हो ऽऽ

कैसे ले जाकर पत्थर में बैठाला है राजा को ! कैसे बोल रहे हैं राजा से भोजा बल्लारे क्या बोल रहे हैं राजा से बोलते हे भाटो पानी में घुसकर थोड़ा नहा लो सिर को पानी में डाल दो नशा उतर जायेगा।

हो ऽऽ जिस समय डूबै हे राजा तपेसुर उसी समय भोजा बल्लारे ने एक पत्थर उठा कर दे मारा राजा के सिर में राजा तपेसुर की मृत्यु हो गयी । लाश को भोजाबल्लारे ने नदी में बहा दिया वह लौटकर अपने धर वापस आ गया ।

कैसा धोखा किया है भैया
अपने बहनोई के साथ में
न देता लड़की को
कुछ जबरन तो नही रही
आखिर कैसे में बैरी
धोखा देके मार डाला
कैसे कलपेंगें रे बेरी
उनके बाल बच्चे

कैसे अंधेर कर दिया हे भोजा बल्लारे ने हो ऽऽ
हो ऽऽ अब आये हे राजा
अपने महल में रे भैया
देख रहे हे धोडा़ को
बंधा था धोड़ा
छोड़कर रे रस्सा
लगाया है डंडा
भागा हे धोड़ा

रैया रेनी उड़ते कुंदते घोड़ा ने पालीपुर की रास्ता पकड़ ली रे भाई , हो ऽऽ अब पहुंचे हे राजा महल के अंदर।

कैसे - कैसे भोजन
बन रहा है भैया

मुंह बोले भाई के सम्मान में
कैसे बना रही है रानी
कहते है भोजा बल्लारे
वह मेरा जीजा तो रानी
गुस्सा होकर भग गया हे
अब किसके लिए मेहनत कर रही हो रानी
कैसे रानी पछता रही है रे भाई ss

हो ss धोड़ा भागते जा रहा हे भागता जा रहा है न भूख न प्यास , कहीं नही रूकता धोड़ा , पालीपुर का रास्ता पकड़कर उड़ते जा रहा है । आठ दिन नौ रात में जाकर पहुंच गया है रे भाई ss ।

अब जाकर रे दादा
पहुंचा है पालीपुर में
गया हे महल में
निकली हे निंगालपालो
धोड़ा को खाली देखकर
बहुत आश्चर्य करती है
कलप - कलप कर रोने लगी
कोन जाने क्या हो गया
राजा को दादा
राजा को कहां छोड़ आया रे
करनशाह
अपने मालिक को रे वीरा
केसे धोड़े की गर्दन से लिपटकर
कैसे विलाप कर रहीं है निंगालपालों हो ss

हो गांव भर के लोग इकठठे हो गये, जितने मुंह उतनी बातें कोई कुछ कह रहा है तो कोई कुछ , अब पुंछ रहीं है रानी निंगालपालो धोड़ा से रे भाई । तुम यदि सत्य के हो पंड़वानी घोड़ा कैसे सभी बातो को सही - सही बताना बेटा बोलो मेरे राजा को कहां छोड़ आयें तो करनशाह मुझे पूरे हाल कान में बता दे रे धोड़ा अब बता रहा हे करनशाह धोडा़ हो ss।

करनशाह कहता हे
सुन लो मेरी माता
राजा को न जाने कहां
छुपा दिया हे माता
मुझे उनका कुछ भी पता नहीं लगा हें उन्होने मुझे डंडा मारकर भगा दिया हे हो ss

ऐसा बता रहा है धोड़ा करनशाह , जब माता निंगालपालो ने सुना तो वे पूरी प्रजा से बोलती है कोई्र - कोई खबर लेने तो जाओं । राजा की खबर पता नही चल रहा हे अब हो रहे हैं राजा तपेसुर के छोटे भाई तैयार हो ss ।

केसे रास्ता पकड़ ली है
राजा के छोटे भाई ने
करनशाह केसे आगे - आगे
कुछ चलता है कुछ , दौडता है
कुछ उड़ता है रे दादा
रात दिन की मंजिल
डोंगर दवारी पार करते
दादर और घटिया उतरते
झोरी और नदिया फांदते
आठ दिन नौ रात में रे दादा
जाकर पहुंच गया है
चांदोगढ़ में रे दादा
कैसे भोजे बल्लारे
आदर सत्कार कर रहे है ं
छोटे समधी का
केसा बहाना बना दिया हे
राजा तपेसुर का
कैसे कलार की भटटी में
ले गया हे शराब पिलाने
कैसे मना लिया है दादा
तपेसुर के छोटे भाई को
ले जाकर नदीं में
कैसे सिर पर पत्थर पटका
उसके प्राण ले लिये हे
कैसे नदी में लाश बहाकर
धर में आ गया हे भोजाबल्लारे
कैसे पूरी धटना को देख रहा है
करनशाह धोडा
अब भाग रहा हे रे दादा
रैनी रेड़ उडते हुये रे भाई
आकर पहुंच गया हे
पालीपुर नगर में
कैसे सब हाल बता रहा हे माता ंिनंगाल पालो से हो ऽऽ
हो ऽऽ क्या बता रहा है धोड़ा
बोलता है धोड़ा
तुम सुन लो ओ माता कलेजा को थामकर सुनो राजा तपेसुर और उसका छोटा भाई दोनो

राजा चांदोगढ़ में मारे गये हे भोजा बल्लारे ने धोखा देकर दारू पिला कर मार डाला है उनकी लाश को नदी में बहा दिया हे ऐसा बता रहा है धोड़ा हो ऽऽ ।

हो ऽऽ जिस समय धोड़ा ने बताया हे माता निंगाल पालो ंको वह चीख - चीखकर रोने लगी ,नगर भर में कोहराम मच गया । बालक बूढे लोग लुगाई हाय - हाय कहकर रोने लगे है हो ऽऽ ।

केसे रा रहे है भैया
लुगाई और लुगवा
लड़का और स्याने
रैयत और प्रजा
वन की चिरैया
राजा के लिए
कैसे कलप - कलप कर रो रहे हे
कैसे माता निंगालपालो
छाती पीट पीटकर रोती हे
कहती है धन्य रे तुम राजा ़
इन राज महलों को
कैसे सूना करके भग गये हो
हिलक - हिलक दादा
कैसे रो रहीं हे रानी
पालीविरवा मॉ की गोद में बैठा कैसे टुकुर - टुकर देख रहा हे हो ऽऽ।

हो ऽऽ अब सोचती हैं रानी निंगालपालों राजा तो मर गये परंतु राजा अपनी निशानी छोड़ गये है पालीविरवा के लालन - पालन का पूरा भार मेरे ऊपर धर गये है अब मुझे यह बोझ ढ़ोना ही पडेगा जब यह जवान होगा तब अपने बाप का बदला जरूर लेगा ऐसा सोच रही है अपने मन में माता निंगालपालो हो ऽऽ ।

हो ऽऽ और क्या सोच रही हे माता निंगालपालो यह करन शाह धोड़ा मेरे पुत्र को अपने पिता का राज बता देगा , इसके लिए कोई उपाय सोचना पड़ेगा ऐसा सोच रही है माता निंगालपालो अपने मन में रे भाई।

अब बुलाया हे बारह भाई लुहासुर और तेरह भाई तपेसुर को । कैसे खुदवाया है बारह पुरूस का गढ्ढा जमीन में रे दादा लगवाया हे उसमें लोहा और तांबे के कब्जे और दरवाजे रे भाई । कैसे बंद कर दिया हे धोड़ा करनशाह को रानी ने वही दाना पानी की व्यवस्था कर दी थी भाई ऽऽ

हो ऽऽ कैसे धोड़ा करनशाह को कैद कर लिया है हो ऽऽ ।

हो ऽऽ इतनी व्यवस्था करके रानी ने अपना राज काज संभाला अपनी प्रजा को पालने लगी पाली विरवा चंद्रमा के समान बढ़ने लगे है रे भाई ऽऽ ।

अब पालीविरवा रे भैया
कैसे चंद्रमा के समान बढ़ रहे है

दिन दोगुने रात चोगुने रे हीरा
कैसे धुटनों के बल चलते है दाई
आंगन में खेलते है
कैसे रानी निंगालपालो
उसे देख देखकर अपना दुख भूला रही है
अब पाली विरवा
खोरी में खेलते हे
लड़को के साथ मे
टज़ूख्ज़ मिचोनी का खेल
आनी-पानी खेल
डंडा -डहोरी को खेल
कुकरा-बांसा खेल
खेल रहे है मालिक

कैसे दुख के दिन बीतने लगे हो ss पालीविरवा बारह वर्ष का होने लगा वह अपनी मॉ से कहता हे मॉ मुझे तीर कमान बनवा दे । मै जंगल शिकार खेलने जाऊंगा कैसे बनवाया है तीर कमान माता निंगालपालों ने हो ।

कैसे बारह मन की कमानी
नौ मन का तीर रे दादा
बारह भाई लुहासुर
तेरह भाई तमेसुर
बुलवाया है निंगाालपालों ने
कहती है मेरे बेटे के लिए
तीर कमान तो बनाकर लाना रे
जुटे हे लुहार और तमेरा
आठ दिन नौ रात में रे दादा
बारह मन का कमान
नौ मन का तीर रे भाई
लाकर आंगन में रख दिया है
पाली विरवा देखकर खुशी हो गया हे हो ss

हो ss तीर कमान बन गया हे पालीविरवा अपने सभी साथी के साथ में तीर कमान रखकर जंगल शिकार खेलने गये है हो ss

हो ss कैसे भारी - भारी जानवर मार रहे है पालीविरवा कैसे जानवरों को मार मार कर इकट्ठा कर रहे हे ! पालीविरवा को देखकर उनके साथी जले मरे जा रहे है हो ss ।

क्या बोल रहे हे साथ वाले लड़का चलो दाऊ खेल खेलने चलें । खेल मे जो तुरंत अपने बाप का नाम नहीं बता पायेगा उसे दांव देना पड़ेगा इस प्रकार का खेल, खेल रहे है लड़का रे भाई ss।

कैसे खेल खेलते लड़का रे भैया
सभी लड़के गोल धेरे में खड़े हो जाते है
एक छूने वाला लड़का बीच में है दादा
जिसके पास वह लड़का जाता हे
नाक पकड़कर अपने पिता का नाम
बतलाता हे रे भाई
कैसे पहुंचा है पालीविरवा के पास हो ss
अब कैसे पालीविरवा
अपने पिता का नाम नही बतलाता
वह एक जगह खड़ा हो जाता है दादा
नहीं जानता अपने पिता का नाम हो ss
सभी लड़के हंसी उड़ाते है रे भाई ss
कैसे नाराज हो गया हे पालीविरवा
शिकार को वही छोड़कर रे भैया
चला जा रहा हे माता निंगालपालो के पास हो ss

पाली विरवा गुस्से में है ऐड़ी की झार चोटी से निकल गयी है शरीर कांपने लगा , नाक से झार निकलने लगी, आया है दौड़ते - दौड़ते अपनी मॉ के पास हो ss

हो क्या बोलता हे पालीविरवा कहता है माता जी सुनो आज तुम मेरे पिता जी का नाम बताओ । कैसे असमंजस में पड़ गयी माता निंगालपालो हो ss ।

जो मै इसको इसके पिता का नाम बताती हूॅ
तो पूरी धटना बतानी पड़ेगी
यह अपने बाप का बेटा है
बदला लेने की जिद करेगा
मेरी आशा की डाल
मेरी छाती का लोला
अभी तो लड़का हे
उतने बड़े राजा से
कैसे पार पायेगा
कैसा करूं कैसा न करूं
कैसे सोच में पड़ गयी निंगालपालो हो ss

हो ss कह रही है निंगालपालो , बेटा तुम सुनो , तुम्हारे पिता जी नही हे ! तुम सपने से पैदा हुए हो , मॉ पालीविरवा को ऐसा समझा रही हे रे भाई ।

पालीविरवा ने मान लिया है
चला गया है खेलने को
लड़कों के साथ में
रखा है तीर कमान

कैसे तीर कमान का खेल खेल रहे है हो ऽऽ

हो ऽऽ अब कैसे रे भाई

खेलत - खेलत रे दादा

पहुंच गया हे कुटनी डुकरी के आंगन में

चर रहा था मुर्गा

कुटनी डोकरी का रे भाई

कैसे साधा है निशाना

मारा हे तीर रे भाई कैसे मुरगे को सिर खट्‌ट से कट गया हो ऽऽ

हो ऽऽ मुर्गा फड़फड़ाने लगा आंगन भर में लोटने लगा उचटने लगा।

हो ऽऽ कुटनी डोकरी धर में खाना बनाती रही फदफदाहट की आवाज सुनकर दौड़ी मुर्गा को देखकर बहुत ही नाराज होने लगी रे भाई ऽऽऽ ।

कैसे मुर्गा को डोकरी

हाथ में उठाकर

देख रही हे दादा

कैसे भुकुर - भुकुर के भैया

कोस रही हे डोकरी

कहती हे जारे मुरहा जैसे तेरा बाप चांदोगढ़ में जाकर मरा हे वैसे ही तुम भी मर जाओगे। हो ऽऽ

पालीविरवा ने जैसे ही गाली को सुना उसे अपने पिता का पता चल गया वह बहुत खुश हो गया । हो ऽऽ दौड़कर पहुंचा है कुटनी डोकरी के पास कहता है ये ओ दाई तुम्हारे पांव पड़ता हूॅ थोड़ी सी गाली और दें दो कैसे एक सोने की मोहर निकालकर देता है पालीविरवा डोकरी खुशी हो गयी है ।

हो ऽऽ अब पूंछ रहा है पता डोकरी से

पालीविरवा अपने पिता का

तुम बता दो ओ दाई

मेरा बाप चांदोगढ़ में

कैसे मारा गया हे

तुम्हारे पांव पड़ता हूॅ दाई

मुझसे कुछ मत छिपाना

कैसे बता रही है डोकरी पता हो ऽऽ

हो ऽऽ तब बोली है डोकरी

क्या बोलती है ?े

कहती है तुम सुनो बेटा तुम्हारा , बाप राजा तपेसुर बहुत ही सत्यवादी राजा थे तुम्हारा विवाह लगाने चांदोगढ़ गये थे । तब राजा भोजा बल्लारे ने उन्हें मरवा डाला । उसका धोड़ा जमीन के भीतर आज भी बंधा है वह सब हाल बतायेगा, ऐसा वचन बोलती हे कुटनी डोकरी रे भाई हो ऽऽ ।

अब नही हे ठिकाना
पालीविरवा के गुस्से का
चला है भैया
निंगालपालो माता के पास
जाकर फेंका हे तीर कमान
उठाया हे गीला बंजर कटार
कहता हे माता तुम सुन लो
सच - सच हाल बताओ मेरे पिता का
कोन चांदोगढ़ हे
कौन है भोजा बल्लारे
क्यों मारा है उसने मेरे पिता को
क्यों मारा हे उसने मेरे चाचा को
कौन सा घोड़ा जमीन के अंदर बंधा है
इसका तुम भेद बताओ मेरी मॉ
नहीं तो कटार मारकर मर जाऊंगा हो ss

हो ss पीछे पड़ गया जिस बात को निंगालपालो बारह वर्ष से छुपाकर रखी थी उस बात का भेद आज ख्ुल गया न जाने किस बैरी ने यह भेद खोल दिया कैसे सोच मे पड़ गयी माता निंगालपालो हो ।

अब बोल रही है माता
तुम सुन लो मेरे बेटा
तुम्हारे दादा के चढ़ने का घोड़ा
घोड़ा करनशाह है बेटा
उसे पूरी बात मालुम है
वह सब बात बतायेगा हो ss
हो ss अब बुलाया हे बारा भाई लुहासुर
तेंरह भाई्र तपेसुर

रख - रखकर गेंती फावड़ा पहुचें है लुहासुर और तपेसुर खोद रहे है जमीन को निकाल रहे है

मिटटी से कैसे निकला है घोड़ा करनशाह
जमीन से रे भैया
बारह वर्ष जमीन के अंदर था
हवा नहीं पाया रहा दादा
सूखकर ठठरी हो गया भैया
पकी कचरिया के समान पीला हो गया
जिस समय में पाया है हवा
देखा है उजाले को

झाकामक - झकामक
देखा हे घोड़ा शाहकरन ने
उसी समय में फूल के रे दादा
दो छानी के बराबर शरीर हो गया
उसकी अवाज स्वर्ग लोक में
पांडवों की घोड़ी के पास पहुंची हे भाई
वहां पर पाडवों की घोड़ी
अपने भाई की आवाज को सुनकर
चौंक गयी हे दादा
उस समय घोड़े का शरीर छोटे - मोटे पहाड़ के समान दिखने लगा है ।
अब सब समाचार बता रहा है शाहकरन घोड़ा ।
पालीविरवा से रे भाई ऽऽ
कैसो राजा भोजा बल्लारे
राजा तपेसुर को भाई
धोखे से जहर पिलाया
दारू में मिलाकर भैया
कैसे मतवाला बना दिया
नदी में नहाने के बहाने ले जाकर
कैसे धोखा में दादा
सिर के ऊपर पत्थर पटक दिया
कैसे लाश को भेया
पानी में बहा दिया
कैसे मेरी पीठ में डंडा मार के
मुझे भगा दिया
इन सभी बातों शाहकरन रो - रोकर पालीविरवा को बता रहा है हो ऽऽ हो ।
हो ऽऽ घोड़ा की बातो को सुनकर
माता रो रही है, प्रजा रो रही है
लड़का रो रहे है ! स्याने रो रहे है
वन की चिरैया रो रही है
सार के जानवर रो रहे है
कैसे पालीविरवा
हिलक - हिलक कर रो रहा है॰ भाई ऽऽ

हो ऽऽ अब बोल रहे है पालीविरवा क्या बोल रहे हैं कहते है तुम सुन लो मेरी माता मैं तो जाऊंगा बाप का बदला लेने जिंदा रहा तो मिलूंगा नही तो वही अपने पिता जी के समान मर खप जाऊंगा अब आप लोग कोई भी मेरा रास्ता मत रोकना । ऐसा कहकर पालीविरवा तैयारी करने लगे है हो ऽऽ

हो ऽऽ कैसे शाहकरन
घोड़े को सजाया हे ।
सोने की जीन
सोने की पलैचा
सोने की करिहरी ,
चांदी की रकाब
मोती चूर की कलगी
रेशम का कसना
चंदा सूरज मनियारी
रोम - रोम में हीरा जड़े हैं कैसे श्रृंगार करके घोड़ा तैयार हुआ है भाई ऽऽऽ हो ऽऽ अब पाली विरवा सज रहे है चांदोगढ़ के लिए भाई ऽऽ ।
भीतर पहने हैं ढीमर लंगोटी
उसके ऊपर चड्डी
चड्डी ऊपर शंकर धोती
उसके ऊपर फुरहुर जामा
उसके ऊपर अंगा
अंगा के ऊपर झंगा
झंगा के ऊपर भसम कोट का अंगा
जिसके ऊपर बारह गाड़ी का जिरह बख्तर
तेरह गाड़ी का शरीर में श्रृंगार
ऐसा श्रंगार करके तैयार हुये है
पालीविरवा रे भाई हो ऽऽ
और क्या पहने है पालीविरवा
पैरों में चप्पल,हाथ में बैत की छड़ी,गले में उतराजी माला,हाथ में तंत्र मंत्र,मुंह में मुंहनिया,कानों में कुंडल , सिर पर सीस नाग की टोपी,बादल का छाता, काली मेघ की ढाल,फेंक मार बरछा,गीला बंजर कटार, तेगा, नौ मत्ता भाला,बाघ मार कुर्रा रखकर कैसें तैयार हो गये है भाई हो ऽऽ ।
अब केसे साथ में लिये हे भैया
सोलह श्रृंगार, बरहूँ बाना रे दादा
अरन बान, बरन बान
चीथन बान, चिलकन बान
भाई बान, बेरी बान,
हाती बान, देहाती बान,
लुमरी बान, ढुमरी बान,
अजासुर बान,बघासुर बान,
भसम बारा,मथन बारा,

हरन बारा, खरन बारा,
डसन बान,बजुर बान,
ऐसे बान, अपने साथ लिये हे पालीविरवा हो ss
हो ss अब साथ में चलें हे रे दादा
पालीविरवा की फौज में भाई
मटिया और ंिसगी रे मालिक
नहीं हे परवान मटिया, सिंगिन के रे दादा
तुम सुन लो नाम रे सुनवैया
अरन मटिया, बरन मटिया
बर्न डोर मटिया, खर्न डोर मटिया,
अधासुर मटिया, बघासुर मटिया
उतहा मटिया, छुतहा मटिया
उडान मटिया, धसान मटिया
लुटान मटिया,खुटान मटिया
इस प्रकार से सात सौ
मटिया तैयार हुयी है रे भैया
अब मत पूंछो दादा
नौ सौ रे सिंगी
तैयार हैं रे दादा
उताही सिंगी, छुताही सिंगी
अर्न डोर सिंगी, बर्न डोर सिंगी
अडंरा मल ंिसगी,कुकरा मल सिंगी
जैता मल सिंगी ,सुरता मल सिंगी
कैसे नौ सौ ंिसंगी, भुतवा तैयार हुये है भाई
हो ss जोहार जीवित रहा तो फिर मिलूंगा ऐसा कहकर पालीविरवा घोड़े पर सवार होते हे भाई रे ss
हो ss जब बोले हैं घोड़े से पालीविरवा ने ।
क्या बोले हैं ?
कहा है देख बेटा शाहकरन ! लाज रखना । पीठ दिखाकर मत भागना चाहे टुकड़ा - टुकड़ा हो जावे। तब कैसा जबाव दिया हे शाहकरन ने हो ss ।
कर्रो करो रागे बांगै ढीली देव लगाम
मेरी पीठ पर हो जा सवार मत कर सोच विचार
मर्दे न छोड़े मर्दूनी सुअर न छोड़े पाल
खेडा राजा का छोडों चाहे टूक टूक उड़ जाय
नामी मरे नाम को ,कायर मरे बदनाम को
क्या कायर बन के कोठा मा प्रान बचांऊ

अठारह गढ़ के राजा मारो तेरह गढ़ के निधान
चौदह गढ़ के क्षत्री मारो ने धरों पछारू पांव
इतना कहकर घोड़ा शाहकरन उड़ चले है हो ऽऽ

हो ऽऽ केसे जा रहा हे घोड़ा , कुछ पैदल चले , कुछ दौड़े कुछ उड़े डौगर पहाड़, दादर कछार,नदी नाला, कैसे पार करते जा रहा है भाई हो ऽऽ ।

माधो पहारा
कुइली कछारा
करिया पहारा
बज्जुर पहारा
वह धमकी दादर
वह करिया पटपर
कैसे कूंदते जाता है
अंधर कुइयां
मालुम झोला
हीरा और भटकू नंदी
घोड़ा पलान झाड़ी में
कैसे कूंदते जा रहा है
दिन भर दौड़े
रात भर चलै
क्या कहना भैया

कैसे आठ दिन नौ रात मे पहुंचे हे पालीपुर पटपर में हो हो ऽऽ कहता है यहीं पर तुम्हारे दादा का तंबू तना था ! पालीविरवा उसी जगह पर उतरते हे उस पटपर को नमन करते है फिर घोड़े में चढ़कर आगे बढ़ जाते हे भाई रे ।

कैसे सरवर सागर बांध में
धरम ताल अंधियारी कुंआ
फूल फुलवारी
आम अमरैया
ताल तलेया
चंपा मोगरा
लोंग इलाइची
नरियल वृक्ष
चंदन की छाया
करिया पटपर
रैन चंदेनी

केसे अपना डेरा डाल दिया है पालीविरवा ने हो ऽऽ घोड़े को छोड़ दिया है राजा ने तंबू तान दिया है मेदान में मटिया और सिंगी नगर के हाल चाल जानने के लिए निकल गये हे

पालीविरवा तालाब के किनारे मैदान में अपना डेरा डालकर केसे मन में सोच रहें है वे सोचते है कि पहले नगर में घुसकर भेद लेना चाहिए । मेरी मंगनी की लड़की कहां है कैंसी है उसे देखना चाहिए । ऐसा सोचकर बेगा का भेस रखकर चला है पालीविरवा रे भाई हो ss ।

केसे बेगा का भेस रे भैया
रखा हे पालीविरवा ने
लगाया हे कमर में लंगोटी
बांधा है सिर पर चाक नुमा पगड़ी
खोंसा है कमर में चकमक पत्थर की थेली
टांगा हे कंधे में चुलगी
रखे हुये हे जंगल की जड़ी - बूटी
रखे हुये है एक हाथ में चोंगी
पहने हुये है गले में माला
कानों में लुरकी
बांधा हे कनकौआ जूड़ा

अब चला जा रहा है चांदोगढ़ नगरी में रे भाई ss

हो ss पहुंच गया है नगर में कहता है दवाई लेलो दवाई । लोग पूछते है क्या - क्या दवा रखे हो दवार ? कहता हे कई किस्म - किस्म की दवाईयां है ! खांसी की, सर्दी की, टोरन की, फोड़न की उझारन की ,मारन की ,जियावन की, तुम को जो दवा चाहिए मिलेगी । हो ss कैसे आवाज सुन सुन कर गांव वाले अपने - अपने पास बुला रहे थें कैसे घूम - घूम कर दवा बेच रहे है पालीविरवा रे भाई ।

कैसे बेचते - बेचते रे
गांव की गलियों को देखते
चले जा रहे हे आगे आगे
जाकर पहुंचे हे भेया
रानी के महल के द्वार में
जब देखा है लड़की की मॉ ने

तुरंत बुलाया है बैगा को भीतर रे भैया ss

हो ss कन्या बाईबिलरिया की मां ने बैगा को भीतर बुला लिया । एक मचिया पर बैठाला है बैगा लड़का को कहती है ये बेगा लड़का मेरी इस बेटी का विवाह होना हे, लांझीगढ़ से बारात आना है थोड़ा इसकी लगुन तो देख लो कैसी बनेगी की नहीं अब पालीविरवा लगुन देख रहे हे रे भाई sss ।

कैसे लगुन देख रहा है बैगा
सामने बैठाला हे बाईबिलरिया को
सगाई्र की हुयी लड़की को
कैसे देख देख मन में मुस्कराता हे

कहता हे यह विवाह कैसे हो सकता है
मे खोखले दुल्हा को देख रहा हॅू
फिर देखकर बता रहा है शगुन
कहता है तुम सुन लो ये रानी
शगुन में कुछ गड़बड़ मालुम पड़ता है रै भाई
इस दूल्हा के साथ जोड़ी नहीं बन रही है

कैसे आश्चर्य में पड़ गयी है महतारी बेटी हो ऽऽ हो ऽऽ क्या कहता है बैगा लड़का कहता है सुन ओ माता इस लड़की की लगुन तो दूसरे लड़का के साथ है कहीं बात चली रही क्या ? पालीविरवा पूंछता है हां दाऊ इसकी बात पालीपुर में चली थी पर अब वहां पर क्या होगा सब लोगे तो मर मिट गये होंगे नहीं माता जी इसकी लगुन वहीं बताती है और आगे भगवान जाने पर इस लड़की की शादी का मर्हूत वहीं बताता है ।

तुमने कैसे दुविधा में डाल दिया हे बेटा अब क्या होगा ,

तलाब की पूजा रह गयी है क्या रानी , वही देव शादी में विघ्न डाल रहा है ! हां रह तो गयी है बेटा पर अब कैसा करेंगे कुद नही ! यह लड़की अपनी सहेलियों के साथ तलाव जाकर पूजा कर आयेगी तो तुम्हारा काम बन जायेगा । परंतु उस लड़की के साथ किसी भी मर्द को नही भेजना । ऐसा समझा रहा है बेगा लड़का रानी को हो ऽऽ ।

कैसे रानी को समझाकर रे भैया
अब चला है पालीविरवा रे दादा
गली - गली , कुूलिया - कुलिया
घर द्वार देखते देखते
चला जा रहा है भैया
अपने मन में सोचता है
अच्छी लड़की है
चंदा के समान उजली
सूरज के समान मनोहारी
आग के समान जल रही है
देखने में नशा छा जाता हे
कैसे ले जायेगा रे दादा
वह खोखला दुल्हा
ऐसा कभी नहीं हो सकता रे दादा ऽऽ

हो ऽऽ ऐसा सोचते सोचते चला जा रहा है पालीविरवा ,जल्दी जल्दी डग भर कर चल रहा है आकर पहुंच गया है अपने डेरा में उतारा है बैगा का भेष पहन लिया है गांव गवई देहात के लोगों के जैसे कपड़े चीथरे अब ललकार रहा है पालीविरवा कैमूल शोधन के लड़का डंडा माछी कौवा को हो ऽऽ । होऽऽ क्या ललकारा है डंडा माछी कौवा को कहता है सुन रे तू कैमूल शोधन के लड़का चल थोड़ा लांझीपुर की बरात देखकर आते है ,खोखले दुल्हा की बरात आ रही है अब चले है बरात देखने भाई।

कैसे बरात में रे भैया
जाकर मिल गये दोनों
डंडा माछी कौवा
पालीविरवा रे दादा
कोई नही पहचानता
कोई कहता है घराती होगा
क्या कहना है बरात का
नहीं है ठिकाना
लुगवा और लुगाई
लड़का और स्याने
चले आ रहे है रे भाई ऽऽ

हो ऽऽ बड़े - बड़े सक्खी डुकरा सिर में बड़ी बड़ी पगडी बांधें चले आ रहे है सक्खी डोकरिया अपनी कमर को झुकाकर सिर पर साड़ी रखे लाठी टेकते आ रही है बड़े बड़े लडके जवान कूंदते फांदते आ रहे है बड़े बड़े पोंदो वाली लड़किया लंझर - झप, लंझर - झप करती आ रहीं हे दूल्हा पीठ के ऊपर लदे फंदे आ रहा है कैसे - कैसे बिरहा गाते हुये बरात चली आ रही है हो ऽऽ ।

बिरहा-(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

कुंआ के इस पार केला लगे है
अरे भला केला न तोड़ बेईमान
केला में हीरा जड़े है रे केला न तोड़ बेईमान ।।

इस पार उस पार टोला बसे है
अरे भला कौन टोला ढूंढने जांऊ
सेया को ले गई बिलैया रे
कोन टोला ढूंढने जांऊ ।।
बगीचा के पास बारी रूंधे है
अरे भला बारी न तोड़ बेईमान
बारी में कांटा लगे है
बारी न तोड़ बेईमान ।।

हो ऽऽ तरह तरह का आंनद उत्सव नाच गाना होते जा रहा है बरात में रे भाई ऽऽ

हो ऽऽ चली जा रही है बरात देखते जा रहा तमाशा पालीविरवा जाकर रूकी है बरात सरवर सागर बांध में कैसे । पड़ गया है डेरा तलाब के किनारे ,कैसे हो रहा है मिलाप बरात का हो ऽऽ

अब रात को रे भैया,
कैसे होता है तमाशा
बरातियो के रे भाई
कैसे नाच गाकर रे भैया

जमा है अखाड़ा ।

भड़ौनी गीत-

जामुन की घनी छाया
रूक जा जामुन की घनी छाया ।।
अंगुली छुओ तो छूने न दूंगी
आंचल का दुख नही है
रूक जामुन की घनी छाया ।।
आंचल छुवो तो छूने न दूंगी
बांहो का दुख नैहा
रूक जा जामुन की घनी छाया।।
बांहो को छुआ तो छूने न दूंगी
छाती का दुख नहीं है
रूक जा जामुन की घनी छाया ।।
छाती छूये तो छूने ना दूंगी
पिंडली का दुख नैहा
रूक जा जामुन की घनी छाया ।।
पिंडली छूये तो छूने ना दूंगी
जांघों का दुख नैहा
रूक जा जामुन की घनी छाया ।।
जांघें छूये तो छूने न दूंगी
कम्मर का दुख नैहा
रूक जा जामुन की घनी छाया ।।
कमर छूये तो छूने न दूंगी
साड़ी का दुख नहीं है
रूक जा जामुन की घनी छाया ।।
साड़ी खोलोगे तो खोलने न दूंगी
लिपटने का दुख नैहा
रूक जा जामुन की घनी छाया ।।

हो ऽऽ ऐसी भड़ौनी हो रहे है औरतों की तरफ रे भाई औरतें नाच रही है मजाक कर रही है हंसी ठटठा कर रही हैं कैसे कैसे चमत्कार देख रहे है पालीविरवा रे भाई ऽऽ।

कैसे कैसे आंनद हो रहा है भाई
कैसे खोखला दुल्हा बेठे है दादा
देख रहे है तमाशा
कैसे खाना - पीना खाकर
रात दिन के थके हारे आदमी
सो गये है इधर - उधर

नहीं है सुध अपने पराये की
उसी समय रे भेया
पालीविरवा और डंडा माछी कावा
कर रही है तमाशा रे भाई बरात वालों की रे दादा
तुम सुन लो मालिक हो ।

हो ऽऽ क्या कर रहे है तमाशा लड़कियों को बूढों के पास और बूढियो के पास लड़को को आपस में लिपटा कर सुला रहे है धोती की कांच खोल - खोल कर पोंदो में राख लगा रहे है और आपस में लिपटाकर सुला रहे है ऐसे अटपटे तमाशा कर रहे है रे दादा!

हो ऽऽ और क्या कर रहे है । खोखला दुल्हा के साथ में एक खक्खी बूढी को सुला दिया था । फेंटा से दोनों की कमर आपस में बांध दिये थे उड़द के बोझा के समान उनके मुंह में राख लगाकर आ जातें है हो ऽऽ ।

अब क्या कहना है भैया
हुआ है सबेरा रे भाई
चढ़ गया है दिन
आने लगी गांव की पनिहारिनें
तलाव में पानी भरने रे भाई
पड़ी हे बरात रे दादा
तलाब के उस पार रे दादा
कोई नहीं जागा
कही कपड़े हैं तो कही लत्तें
सो रहे है कैसे
लड़कियो के साथ बूढे
बूढ़ियो के साथ लड़के
दूल्हा के साथ में खक्खी बूढ़ी
फेंटा से बंधी है कमर
देख रहे है गांव के लोग
लड़का और लड़की
बूढें और जवान

हंसी के मारे लोट - पोट हुये जा रहे हैं हो हो ऽऽ गांव के लोगों की भीड़ लग गयी है । कहते है यह कैंसी बरात आयी है थोड़ा देख तो आयें जी । दौड़्र्र्रते चली आ रही है रैयत की जनता हो ।

अब कैसे उठा लिया हे मोहनी रे भेया
कैसे डंडा माछी कावा
बरातियों के ऊपर
केसे नींद खुल गयी है सबकी
कैसे अकबका कर देखते है दादा

हे दादा । मै किसके साथ में सो गया हूॅ

कहां गये मेरे कपडा

हो ss शरम के कारण

मरे जा रहे है रे भाई हो ss

कैसे शर्मा रहे है सब बराती , डोकरा डोकरी अपनी लंगोटी को ढूंढते है लड़का , लड़की अपने कपडों को ढूंढ रही है हाथों से मुंह को छुपा रही है अपने शरीर की लाज बचाने के लिए कपड़े ढूढंती है एक दूसरे के ऊपर गिद्‌ध मसानी हो रहे है हो ss

हो ss और वह खोखला दुल्हा की जब नींद खुली है ऐ दाई ओ । यह कौन डोकरी है चिपकाकर रखी है डोकरी, कहती है छोड़ रे मुरदार तुम कैसा कर रहे हो । तुम्हारा तो अभी - अभी विवाह होने वाला है मुझे तुम क्यो पकड़े हो ।

दुल्हा कहता है मैं पकड़ा हूॅ कि तुम पकड़ी हो तुम्हें शर्म नहीं आती खक्खी डोकरी मेरे साथ लिपटने आयी हो ।

कैसे बंधे है फैंटा से रे भैया

नहीं तो छूटता है दादा

मुर्गा - मुर्गी के समान फड़फडा़ते है

कैसे देखने वाले ताली बजाते है

कैसे हंसी उड़ रहीेें है भाई

हो ss दौड़े है डेरा वाले छोडा़ है कमर से फंटा को फंटा के छूटते ही डोकरी ऐसी भागी है कि जाकर सीधे तंबू में पहुच गयी है हो ss

हो ss कहते हैं बराती इन मेंडों में भूत - प्रेतों का वास है भाई इस गांव में विवाह नहीं करेगें चलो लौटकर वापस चलते है आग लग जाये ऐसे विवाह में हमारी सबकी इज्जत खराव हो गयी अब लौटकर अपने अपने धर जाने लगे बराती रे भाई ।

हो ss गांव वाले कहते हे ठीक ही हुआ, वे लांझी गढ़ के लोग बहुत खराब हैं ! उनकी नजर में लड़का - लड़की ,बूढा - बूढी सब बराबर हैं! ऐसे गांव में अपनी लड़की को नही देना ही ठीक होगा । इस कारण किसी ने भी उन बरातियो ं को नहीं मनाया। इस प्रकार खोखला दुल्हा की बरात लौट गयी है रे भाई ss।

हो ss यह सब देख रहे हैं पालीविरवा अपने डेरे से बाहर निकलकर ,कैमुल शोधन का टूरा डंडा माछी कौवा को लांझीगढ़ के बराती कैसे भाग रहे है हो ss ।

अब मच गयी है खलबली रे भैया

राजमहल में रे भाई

कैसे बरात वापस हो गयी है रे दादा

कैसे चांदोगढ़ को राजा

भोजा बल्लारे सोच में पड़ गये है

कैसे रानी बेटी को गोद में बैठाल कर

अपने सीने से चिपका कर

कैसे आंसुओ से अपना मुंह भिंगा रही है

क्या हो गया कर्म में ओ मेरी बेटी
कैसे बरात लौट गयी हो दादा ss ओ
अब क्या कंरूगी मेरी दाई ओ ss
किसके साथ तुम्हारी भांवर पड़वाऊंगी ।

धन्य हो मेरी करनी ओर बाईबिलरिया की कैसे में धैर्य में अपने प्राण रख्ूांगी । हो ss ऐसा रो रोकर विलाप कर रही है रानी बेटी को गोदी में बैठाल लिया है! उसके सिर पर हाथ फेरती है छाती से चिपकाती हे हल्दी लगी हुयी बाईबिलरिया बैठी है अपनी मॉ की गोद में उसी समय राजा भोजा बल्लारे आते है हो ss

हो ss क्या बोल रहे है भोजा बल्लारे कहते है तुम क्यों सोच कर रही हो हमारी बेटी के लिए एक से बढ़कर एक लड़का मिलेगा। भग जाने दो सालों को । वह लांझीगढ़ बस्ती ठीक नहीं है ! अपनी बेटी देकर पछताते है अब बोलती है रानी राजा से हो ।

हो ss क्या बोलती है रानी ! कहती है सुनो राजा कल एक बैगा लड़का आया था उसे सुदिन दिखाया था तो वह कह रहा था तलाब की पूजा बिगड़ी है इसके कारण लगुन ठीक नही बैठती है ।

ऐसा बोल रही है रानी हो ss
हो ss कैसे राजा रे भाई
गुनतारा लगा रहे हैं सही है दादा
तलाब खोदने की कुछ पूजा रह गयी है
वह बैगा बाबा रे भाई
गुस्सा होकर भाग गया था

जिससे कुछ काम अधूरा बच गया हे हो ss तब राजा बोलते है रानी तुम ठीक कहती हो जो पूजा बाकी रह गई थी उसे आज ही पूरी कर देते हें अब रानी ने आदेश दिया है गांव भर की सोलह सौ लड़किया तैयार हो गयी है तलाब में पूजा करने के लिए जाने को हो ss ।

सब चांदोगढ़ की लड़कियां
छोटी और बड़ी
दुबली और पतली
मोटी और थुलथुल
लंगडी और लूली
निकली हैं रे दादा
पहने है गहने और गुरिया
जूड़ा में झेला कानो में तरकी
माथे पर बिंदिया गले में सुतिया
ऊपर से हमाल बांहो में बोंहटा
हाथों में चूरा पैरो में पैरी
कैसे रून्न झुन, बजती है रे दादा

अपनी - अपनी साड़ी सिर के ऊपर रखकर चली जा रही है तलाब की ओर लाइन लग गई

हे लड़कियों की , सोलह सौ लड़कियां अपने वस्त्रों को रखकर कैसे तलाब के पास आ रही है !भाई हो ऽऽ

हो ऽऽ लड़कियों ने अपने शरीर के कपड़े तलाब के किनारे रख दिये है सभी लड़कियां बेपरदा होकर तलाब के भीतर घुस रही है कैसे तलाब में सौर मदली के समान खंदमंदा रही हैं ।

तलाब के पानी में सोलह सौ लड़की रे दादा
तैर रही है भाई
अपने तंबू से
देख रहा है पालीविरवा
कहता हे इच्छा तो पूरी हो गयी
आ गयी है बाईबिलरिया
कब्जे में रे दादा
कहता हे डंडा माछी कौवा से
तुम सुन लो रे लड़के
ले जाओ तुम भटियन को
दिखा तो कुछ तमासा

अब चला जा रहा है मटिया को लेकर डंडा माछी कौवा हो ऽऽ ।

कैसे उठी है धूल की भंवर रे भेया
धरती से आकाश तक दादा
धूल ही धूल रे भैया
धमर धमर धन्नाता है रे मालिक
कैसे सब लडकियों के कपड़ो को
उड़ाकर रे भाई
बगीचा की झाड़ियो में ले जाकर
टांग दिया है रे भैया हो ऽऽऽ

हो ऽऽ मटिया ने कपड़े उड़ा दिये ले जाकर तंबू के पास की झाड़ियों में टांग दिया है अब तो आफत आ गयी है लड़कियो को रे भाई हो ऽऽ ।

अब कैसे करै दादा
तलाब के पानी में
डूबी हे लड़कियां
सभी बेपरदा है
कैसे निकले अब बाहर
कैसे समय में हो गये प्राण लड़कियो के
इस आंधी में आगी लगे
कैसे बेलाज कर दिया हे दादा
कैसे बेशर्म होकर भाई्र
निकल रही है लड़कियां

तलाब के पानी से
कैसे अपने दोनों हाथों से
ढांक रही हे अपनी लाज को

कैसे पालीविरवा तंबू से निकलकर देख रहा हे हो ऽऽ

हो ऽऽ आस पास के पत्तों डगालियों को तोड़ तोड़ कर उससे ढांककर लाज बचाने लगती हे केसे कमर में लपेट रही है पत्तों को अब चली है लड़कियां पालीविरवा के तंबू के पास अपने कपड़ों को लेने भाई रे ऽऽ ।

कैसे चली जा रही हैं लड़कियां
शर्माते शर्माते दादा
पत्ता और डगाल ढांके
लाज में भाई
अपने दोनों हाथों को
छाती में लगाये हे
केसे जाकर पहुंचे हे
तम्बू के सामने रे दादा
कैसे सिर नीचा कर के
खड़ी हुयी है लड़कियां
सबसे आगे हे बाईबिलरिया रे भैया
कहती है ये रे मनसुतिया
हमारे कपड़े उतार दे डगालों से
कैसे निकला है पालीविरवा
तंबू से भाई
जब पड़ी हे नजर बाईबिलरिया की
पहचान गयी हे बैगा लड़का को हो ऽऽ

हो ऽऽ कैसे पहचानी हे लड़की पालीविरवा को कहती है क्यो रे बैगा , तुम ही तो कल हमारे धर आये थे लगुन देखने, सच बात हे की नहीं । सच बात है पालीविरवा ने कहा तब तुम क्यों बैगा का भेष रखे थे इसका भेद तो बताओ ऐसा पूंछ रही हे कन्या रे भाई । अब बोल रहे हे पालीविरवा रे भाई हो ऽऽ

हो ऽऽ तुम सुनलो री कन्या मै हूॅ पालीविरवा पालीपुर नगर के राजा का लड़का तुम्हारे पिता जी मेरे मामा है और तुम मेरी पत्नि हो मेरे पिताजी एक दिन आये थे तुम्हारे पिताजी के पास तुमको मांगने के लिए परंतु तुम्हारे पिताजी ने मेरे पिता को धोखे से मार डाला ! बारह वर्ष पहले की बात है अब मैं आया हूॅ तुमको ले जाने के लिए , तुम मेरे साथ जाने के लिए राजी हो की नहीं ।

इतना सुनते ही बाईबिलरिया रे कन्या
मन में खुश तो हो गयी रे भैया
साथ की लड़कियां रे दादा

गुदगुदाने लगी उस लड़की को
सही किया है बैगा
अपने नये दूल्हा को
अपने सभी अंग
खोलकर दिखा दिये
तुमने उसे मोह तो लिया बाई ओ
कैसे चिढा़ रही हैं लड़की को भाई
साथ की सखी सहेली हो sss
क्यों जीजा जी
हमारी बाई को
सस्ते में पा लिया
कुछ खर्च पानी
नहीेें किया जीजा
हम तुमको ऐसे मुफत में
नहीं छोड़ते जीजा जी हो ss

हो ss कैसे हंसी मजाक हो रही है पालीविरवा डांडी माछी कौवा से कह रहे हेॅ जिस जिसके कपड़े है सबको वापस कर दो अब छूटी है मटिया ,पेड़ों से कपड़ें उड़ाकर कुछ ही देर में लड़कियों के शरीर के ऊपर फेक दिये है कैसे सभी लड़कियां कपड़े पहन रही है रे भाई हो ss

हो ss कैसे बोल रही है सब लड़कियां अब तो अच्छा हुआ । बाई को जीजा मिल गया परंतु भाई कुंआरी में भगोगी तो बदनामी होगी थोड़ा सा हल्दी लगा लेती तो अच्छा होता ! कैसे सभी लड़कियां सलाह कर रही है हो ss ।ं

कैसे बाई बिलरिया को
बनाया है दुल्हन रे दादा
लगायी है हल्दी
कैसे पालीविरवा को
बनाया है दूल्हा रे भाईृ
लगाते हे उसे भी हल्दी
आधी लड़कियां इस तरफ तो
आधी लड़कियां उस तरफ
कैसे ताली बजा - बजाकर दादा
गा रही है लड़कियां
नाच रही है लड़कियां
गांव बाले सोच रहे है तलाब की पूजा हो रही हे हो ss

गीत :-

कारो गढ़ का सीली लोढ़ा

रम झिरिया का पानी

केसे हरदी बजार की हल्दी हो ss

आ जाये बेया मोरी बार्ईइबिलरिया ओ ,

हरदी चढ़ाउन की बेरा हो ss

कारोगढ़ का सीली लोढ़ा

रम झिरिया का पानी

कैसे हरदी बजार की हरदी हो ss

आ जाओ मेरे भाटो पालीविरवा रे

हरदी चढ़ाउन की बेरा हो ss

कैसे तलाब के किनारे पालीविरवा और बाईबिलरिया की हल्दी तेल हो रही है रे भाई ss हो ss कैसे बारह खंड़ी का भात औ्र डेढ़ खंडी की दाल बन रही है तलाब के किनारे , कैसे पालीविरवा बोल रहे हैं बाईबिलरिया से ।

क्या बोल रहे है पालीविरवा कहते हैं कन्या तुम अपने सत्य की परीक्षा दो तभी मैं तुम्हें अपने साथ ले जांऊगा पालीपुर नगर में , क्या सत्य देखोगे तुम मेरा बता दीजिए बोली है बाईबिलरिया यह तीन धागा कच्चें सूत की रस्सी से एक बाल्टी पानी इस कुंआ से भरकर मेरे लिए लाओगी तभी मै समझूंगा की तुम सत्यवादी हो । अब चली है गागर रखकर बाईबिलरिया पानी लेने हो ।

कच्चे सूत की रस्सी

तीन धा्रगा की रे भैया लिए है हाथ में

रखा है गागर सिर पर

चली है पानी को बाई बिलरिया

पहॅुची है कुंआ के पनघट पर

बांधी है गागर में रस्सी

डाला है कुंआ के भीतर में

भरा हे गागर में पानी

खींचे रही हे रे दादा

उस समय में भाई रे

दो धागें कड़ाकड़ टूट गये

हो ss दो धागे टूट गये सिर्फ एक धागा में पानी की गागर ऊपर आ गयी ,लाकर रख दिया पालीविरवा के सामने रे भाई । हो देखकर कहता हे पालीविरवा तुम्हारा विवाह दूसरे के साथ हो रहा था तुम्हारे मन में वह दुल्हा भा गया था । इसके कारण दो धागे टूट गये थे ,परंतु तुम्हारा सत्य बचा रहा जिसके कारण एक धागे से गागर खींच कर ऊपर ले आयी हो । अब कैसे आंनद उत्सव नाच गाना चल रहा है हो ss ।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

कैसे सब लड़कियां भोजन करने बैठी है भैया कैसे तानकर पिछौरा भीतर सो गया हे

पालीविरवा।

केसे बाईविलरिया की भाई रे दादा

कैसे बुड़राहिन रे भैया

नजर वचाकर लड़कियों की

कैसे सटक दी हे बस्ती में

कैसे जाकर बता रही हे सब भेद को रे भाई ss

हो ss कैसे बता रही है भेद बुडराहिन बाई

कहती है तुम सुन लो रे रानी माता पालीपूर से पालीविरवा आया है सरवर सागर बांध में रूके है वे बाईरविलरिया को हल्दी तेल चढ़ाकर ले जा रहें है सभी लड़कियां वहीं शादी रचा रही है हो ss ।ं

हो ss जब सुना है भोजा बल्लारे ने

इतनी बात रे मोर दादा

गुस्सा के कारण थरथराने तो लगा

ऐसी की झार चोटी से निकल गयी

सिर के दो चार बाल टूटकर

गिर गये हैं धरती पर रे भाई

अब लगाया हे आदेश फौज को रे भाई

कैसे चीटियो की तरह फौज तैयार हो गयी है हो ss

हो ss जब ललकारा हे भोजा बल्लारे ने कहता हे तुम सुनो रे गोंड़ो , तुम्हारी बेटी को कोई जबरिन ले जाये तो क्या तुम देखते रहोगे क्या ? तुम्हें तुम्हारी मॉ कर कसम जो तुम लोग घर में पानी पियो तो । अब कैसी सज रही हे फौज भोजा बल्लारे की रे भाई ss ।ं

कैसे चली है पलटन

गोंड़न की रे दादा

लाव और लश्कर

हाथी ओर घोड़ा

पैदल और सवार

बरछी और भाला

तेगा और कटार

लाठी ओर लुघरा

धर धर के भेया

दौड़े हे गोंड़ ठाकुर

घेर लिया हे बगीचा को

सात परत में रे भाई

कैसे टटिया पेल कर घेरे है हो ss ।ं

हो ss फौज पलटन को देखकर लड़कियां अकबका गयी , जिसको जहां से रास्ता मिली छूट कर घर भागी तंबू में पालीविरवा और बाईबिलरिया बच गये है भाई ss ।

कैसे सो रहे है पालीविरवा
जैसे छः माह की नीद रे दादा
जगाती है रे बाईबिलरिया
झकझोरती है रे भाई्र
परंतु नीदं नहीं टूटती पालीविरवा की हो ऽऽ
हो तब क्या कहना दादा
अतरा मक्खी बन कर
लड़की जब घुसी हे
नाक में रे दादा
उसी समय आंकछी - आंकछी करते
तड़ भडा़ कर उठा है पालीविरवा हो ऽऽ

हो ऽऽ पूंछ रहा है पालीविरवा , तुमने मुझे क्यों जगाया है तुम्हारे बरातियों के साथ था सोने दिया होता मुझे । तुम बाहर जाकर देखो तुम्हे घेर लिया है अब सोओगे की विवाह रचाओगे कहती हे बाईविलरिया । अब तंबू से निकलकर फौज को देखा है रे भाई ।

अब कहता है पालीविरवा
तुम सुन लो ये कन्या
तुम गुड़ का चूल्हा बना लो
एक पैर को बना दो लकड़ी
एक हाथ का बना लो तुम कलछुली
और पांच कुड़े लोहै की कुटरी
पकने को तो धर देरे संगी
तब तक मै तैयार हो जाता हूॅ
अब हुआ है तैयार पालीविरवा
इरचल किरचल फरसा
गीला बंजर कटार तेगा
फेंक मार भाला
बाघ मार कुर्रा
सजे है हथियार रे दादा
कैसे हथियार सजे है
बारह गाड़ी जिलही
बख्तर पहनकर निकला है पालीविरवा हो ऽऽ
हो ऽऽ कैसे घोड़ा को कसा है पालीविरवा
सोने का पलैचा सोने का कसना
चांदी की रकाब , सोने की करिहारी
मोती चूर की कलगी
सोने की मनियारी

कैसे टापू में बांधें है बाघ मार सेली
कैसे पूंछ में बांधा है गीला बंजर तेगा
कैसे दांत में दावे है बाघमार कुर्रा
कैसे सज गये हे घोड़ा रे भाई ऽऽ

हो ऽऽ पांच कुड़े लोहे की कुटरी लाल लाल दहकते अंगार के समान ,जिस समय में छर्राया है छर्र-छर्र उस समय लश्कर राजा रैया होने लगी । जब रपटा हे घोड़ा रे दादा कैसे बोल रहा है घोड़ा पालीविरवा से ढीली करदे रागें -बागें ढीली कर देलगाम मै घोड़ा मर्दाना हूॅ लश्कर को रनवन कर दूंगा ।

कैसे पालीविरवा रे भाई
कैसे मारा है झटका
फौज मे रे दादा
केसे मटिया ओर भुतवा
सिंगी ओर छुताही
टूट पड़ी हैं लश्कर पर भाई
उस समय में भैया
लोथड़ो पर लोथड़े गिरने लगे
रक्तन की नदिया बह गयी
कैसे खून का गारा मच गया
सब लश्कर रन बन हो गया है भाई रे

हो ऽऽ एक घड़ी में पूरी फौज की सफाई हो गयी कुछ मरे कुछ गड़े , कुछ भगें राजा भोजे बल्लारे को खवर लगी कि पूरी फौज तितर - बितर हो गयी है हो ऽऽ

अब चले है भोजा बल्लारे
एक बड़े से घोड़ा में चढ़कर
सरहूॅ श्रृंगार करके रे भाई
बरहो हथियार सजा के दादा
कैसे आ गया हे सरवर सागर बांध में हो ऽऽ

हो ऽऽ कैसे हो गये है आमने सामने मामा भानजे ललकारा हे भोजबल्लारे ने ,कौन है रे कायर लड़की को भगाकर ले जा रहा हे अपने बाप का बेटा हो तो सामने सीना तानकर आ जा ।

हो ऽऽ अब ललकारा है पालीविरवा ने कायर मै नहीं तुम हो मामा जी मेरे बाप ओर काका को शराब पिलाकर धोखे से मार डाला है वहीं बदला मैं लेने आया हे तुमको मारकर तुम्हारी बेटी ले जाऊंगा छोड़ूगा नहीं ,ऐसा बोल रहे हे पालीविरवा हो ऽऽ ।

अब तो दोनों तरफ रे दादा
मच गयी हे लड़ाई
भाला से भाला तेगा से तेगा
कैसे काट रहे है भैया

युद्ध मसानी कैसे हो रहीं है भैया
लातन के मरदा
मुटकन के घम गरदा
धरती में कीचड़ मच गया
टिंधरा भर गडडे हो गये
पत्थर आटा हो गये
डलिया दुई धूरा उड़ गये
कैसे पेला की पेली
पटका की पटकी हो रही हे भाई

कैसे जब आयी हे पालीविरवा को गुस्सा हो ऽऽ जिस समय में उठाकर पटका है भोजाबल्लारे को उसकीऑखं से प्राण निकल गये!, सिर काटकर टिकटी में टांग दिया हे । राजा का हो ऽऽ और उखाड़ दिया हे अपना डेरा को ! भाई ऽऽ ओर पकड़ लिया हे पालीपुर नगर के रास्ते को हो ऽऽ ।

अब चल दिया है पालीविरवा
पैदल चल रहा है शाहकरन घोड़ा
बैठाला है अपने पीछे
बाईबिलरिया लड़की को
साथ में चल रही है मटिया सिंगी
नाचते गाते खुशी से
आकर पहुंच गये हे पालीपुर
जब सुना है माता निंगाल पालों ने
सजाया है आरती और कलश
गांव के लड़के गांव की औरतें
सब जुड़ गये है महल में
केसे बहू की आगवानी करने हो ऽऽ

हो ऽऽ पालीविरवा घोड़े से उतर कर माता के पेर छूते है बाईबिलरिया अपनी सास के पैर पड़ती है । कैसे माता निंगालपालो सब को चूमा चाटी कर रही हैं बहू को अपने कलेजा से लगा रही हे केसे पालीपुर नगर में सुख आनंद हो रहा हे जेसी पालीविरवा की बनी वैसी सबकी बने भाई हो ऽऽ ।

0ध्
ध्ध्ध्ध्0

राजा लोहगुड़ी

राम नाम का सुमरन कर ले
मन में धर ले धीर रै भैया
बिगड़े काम वही बनायेगा
कृपा करें रघुवीर रे दादा
गाकर सुनाता हूँ में
राजा लोहगुंडी की किस्सा को मालिक
कैसे हरी के हजारों नाम रे भाई ss
कैसे सतयुग की बात है रे दादा
इस मृत्यु लोक में राजा पंच नरायण रहें
जिसकी बेटी का नाम हिरौली कन्या था रे भाई ss

हो ss कैसे सतयुग की बात हे राजा पंच नारायण की एक बेटी थी उसका नाम रखा था हिरौली ।

हो ss हिरौली का विवाह लोहारीपुर के राजा के बेटा लोहगुड़ी के साथ हुआ था ।

लोहारीपुर का राजा
लोहगुंडी रे भैया
माता जिसकी कंकालिन
बहन है विद्‍यासन
लोहारीपुर का राजा
कैसे बचपन में विवाह हो गया है रे भाई ss

हो ss छोटे - छोटे में विवाह कर दिया था अपने अपने लड़का - लड़की के, छोटे थे लोहगुड़ी और छोटी सी थी हिरौली न वह उसको पहचानती न वह उसको जानता ,खेल खेल में गुडडा - गुडडी के विवाह जैसे भाई रे ।

कैसे राजा पंचनरायण
मन में सोचते हैं भाई
क्या सोचते है मन में पंचनरायण
कहते हे बारह वर्ष हो गये
बेटी के विवाह हुये भैया
राजा ने खबर तक नहीं ली
बेटी जवान हो गयी है हो ss

हो ss क्या सोच रहे है राजा पंचनरायण

सोच रहे है बेटी जवान हो गयी हे अभी तक गोद में खेलती थी ! अब गोद में नही समाती हो ऽऽ और सोच रहे है पंचनरायण कहते है बारह वर्ष हो गये है विवाह हुये परंतु आज तक दमाद ने याद नही किया अपनी बेटी को न होता तो एक चिट्ठी भेज देता कि आकर अपनी पत्नी को ले जा मे फुरसत हो जाता ,

ऐसा सोचकर परवाना लिख रहे है लोहगुंडी को रे भाई ऽऽ ।

केसे लिखा है परवाना
तुम सुन लो ऐ राजा
राम राम लिखते है
जोहार जोहार लिखते है
घर और बाहर का
सब हाल चाल लिखते हे
फिर कैसे मजबूरी से दादा
बेटी के गौना की बात लिखते है
तुम सुन लो ऐ राजा
बेटी जवान हो गयी है
पंद्रह दिन के अंदर
लिवाकर ले जाओ
अपने माल धन को राजा
यदि नहीं आओगे राजा
तो मै जिम्मेदार नहीं रहूंगा हो ऽऽ

हो ऽऽ ऐसा परवाना लिखा है राजा पंचनारायण ने पंद्रह दिन के भीतर अपनी पत्नी को विदा करके ले जाओ बेटी जवान हो गयी है कुछ बात बन बिगड़ जायेगी तो उसका मै जिम्मेदार नहीं रहूंगा। अब खोज रहै है राजा किसी बिगारी को जो चिट्ठी ले जा सके , हो ऽऽ सिपाही गांव में घूम रहे है बिगारी को ढूंढ रहे हे पर पूरे नगर में एक भी बिगारी नहीं मिला ।

लोहारीपुर के नाम से भैया
सभी लड़के - जवान रे दादा
केसे डरते है रे भैया
कुछ बात नहीं बनती
कैसा है लोहारीपुर
तुम सुन लो रे मालिक
देखने जाने के लिए
इच्छा हो रही है क्या रे भाई ऽऽ

हो ऽऽ लोहारीपुर कैसा हे ? किस कारण सभी लोग वहां जाने के लिए मना करते है सभी लड़कें और जवान खांसी सर्दी का बहाना बनाकर घर - घर में सो गये हे तुम सुन लो रे भैया हो ऽऽ ।

लोहारीपुर रे भैया

कैसी अजब नगरी है रे दादा
जहां लगता है रे बजार
लुगाइन के रे भैया
बूढ़ी - बूढ़ी डोकरी
जवान - जवान लड़कियां
अलग - अलग
छाया में बैठी रहती है भाई
जब कोई मनुष्य
वहां से निकलता हें
तो बर्रइया के समान छूटती है
ऐसा बजार लगता है लोहारीपुर का रे भाई हो ऽऽ

हो ऽऽ औरतो को बजार भरवाता हे राजा लोहगुड़ी जवान, जवान लड़किंयो का अलग बजार और बूढ़ी, बूढ़ी औरतों का अलग बजार , बाहर से जो भी आदमी वहां जाता हे वह उनसे नहीं बच पाता। यह खबर पूरे राज्य भर में फैंल गयी है इसलिए लोहारीपुर जाने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता हे हो ऽऽ ।

अब घूमते हे सिपाही
गांव गांव में रे दादा
घर - घर में बोलते है चलो रे दाऊ हो
विगार करने राजा ने बुलाया हे
लोहारीपुर जाना है
परवाना लेकर जाना है
कैसे कोई नहीं निकलता
सिपाही हैरान हो गये है रे भाई ऽऽ ।

हो ऽऽ सभी लोग बेगारी करने वाले लड़के बहाना करके सो गये , किसी को खांसी आती है तो किसी को बुखार आ रही हे तो किसी को कुछ हो रहा है किसी को कुछ हो रहा है सभी लोग बीमार होने का बहाना बनाने लगे । अब राजा ने हुकुम दिया हे कि पवन दसौरी डोकरा को बुलाया जाय हो ऽऽ ।

अब चले है सिपाही
पवन दसौरी के घर में
पहुंचे है दादा
जाकर घर के सामने
ललकारते है सिपाही

कहते है ऐ रे पवन दसौरी डोकरा , चलो तुम्हें राजा ने बुलाया है जल्दी से घर से निकलो ऐ दादा ?डोकरा को चेहरा उतर गया कहता है क्यो री डोकरी मैने तो कुछ नहीेें किया राजा ने कैसे बुलाया है ! तब डोकरी कहती हे ! डोकरा राजा को इस साल की बेगार नहीं दी है इसलिए तुम जाकर बेगार पटाकर आ जाओ । सही बोल रही हो डोकरी तुम, तुम तो अक्ल में मुझसे

दो गुना ज्यादा हो ।

कैसे बोल रहा है पवन दसोरी डुकरा रे भाई ऽऽ
अब कैसे पवन दसौरी
काटा है लड़की
बनाया है कांवर रे भैया
बारह गाड़ी लकड़ी के
दो हिस्से बनाये हैं।
और जमीन में गड़े पैसो के हंडा
जो चूल्हा के पीछे गड़ा था भैया
डोकरी ने खोदा है
निकाला है पैसा
निस्तार के लिए
बांधा है पैसो को गांठ में
उठाया है कांवर

अब चला हे डुकरा रे दादा हो ऽऽऽ

हो ऽऽ जाकर पहुंचा हे दसौरी डोकरा राजा के दरबार में रख दी है कांवर , बारह गाड़ी लकड़ी आंगन में रख दी ! छोड़ रहा है अपनी गांठ निकाले हे रूपये खल खला कर उड़ेल दिये है सिक्को को राजा के सामने ।

अब कर रहा है जोहार !
राजा को दसौरी डुकरा हो ऽऽ
हो ऽऽ क्या बोले हैं राजा
यह क्या हे डुकरा , इसका तुम भेद बताओ

अब कहता है दसौरी डोकरा , तुम सुन लो राजा तुम्हारे राज्य में रहते है मजदूरी करते है आपके जंगल पहाड़ का उपयोग करते हे उसका यह टैक्स है । नहीं रे डुकरा , तुम्हारे टेक्स को माफ करता हूँ इन पैसो को अपने पास रख लो , लो जाओ अपनी लकड़ियों को कहीं जाकर बेच लेना, परंतु तुम मेरा एक काम कर दो कैसे बता रहे है राजा पंच नारायण रे भाई हो ऽऽ ।।

तब समझाते हैं राजा
परवाना की बात को
कहते है सुन रे दसौरी
इस परवाना को रे भाई
लोहारीपुर ले जाना है
लोहगुंडी राजा को
संदेश पहुंचाकर
तुरंत वापस आ जाना है

तुम्हारे सभी टैक्स माफ कर दिये है हो ऽऽ

हो ss जैसे ही दसौरी ने इतना सुना भौचक्का रह गया , मुसीबत हो गयी रे दादा अब नहीं बचता मुझे नोंच डालेगी वहां की डोकरियां ऐसा सोचते हैं दसौरी हो ss ।

परंतु क्या करते , राजा का डर , अगर राजा की आज्ञा नहीं मानते तो जुल्म होता है और मानते है तो वहां की डोकरीयां छीना झपटी करके नोंच डालेंगी ऐसा सोचता हे दसोरी रे । आखिर क्या करे राजा का डर , डोकरा सोचकर कहता है ठीक है राजा तुम परवाना लिख कर रखना मैं घर से तैयारी करके आता हूॅ ।

अब बांधा है रूपया
गांठ में दादा
उठाया हे कांवर
लकड़ी को भाई
चला हे घर को
अनमन से होकर

आकर कचेरा हे लकड़ी का गठठा आंगन में हो

हो ss डोकरी देखकर कहती है क्यो रे डोकरा, क्यों लौटाकर ले आये लकड़ी देने के लिए ले गये थे , अब डोकरा पूरी बात बता रहा है डोकरी को हो ss ।

कहता है सुन ले तू डोकरी मुझे जाना हे लोहारीपुर राजा का संदेश लेकर इसलिये कुछ कुछ नाश्ता बना दे ओ डोकरी ।

कौन जाने तुम्हारे हाथ को खाना अब मिलता हे कि नहीं , हो ss जब डोकरी ने इतना सुना रोने लगी चिल्ला - चिल्लाकर, फफक - फफक कर । कहती है ने रे डोकरा तुमको वहां की डोकरी तो फंसा लेंगी अपनी माया में रे ,तुम मुझे भूल जाओगे वहां जाकर , अब तुम्हारा साथ कैसे छूट रहा हे संगी आग लग जाये उस लोहारीपुर में हो ss ।

हो ss कैसे किलप रही है डोकरी , डोकरा कहता है डोकरी मत रो , मैं वहां पर कैसे फंस जाऊंगा तुम बूढ़ी हो गयी परंतु मेरा विश्वास नहीं है तुमको ,चलो थोड़ा सा पानी निकालकर मुझे स्नान तो करा दो ।

अब निकाल रही है पानी डोकरी
गरम - गरम पानी रे भैया
नहलाती है डोकरा को
घिस घिस कर मैल को छुड़ाती है
शरीर को चिकना कर रहीं है।
मन में कहती है डोकरी
न जाने किस डोकरी के लिए रे
तुमको स्नान करा रहीें हूॅ भाई
कोन नहीं कोन मजा मारेगा रे डोकरा
कैसे समझाता है डोकरा रे भाई

हो ss स्नान ध्यान करके हल्दी तेल लगा रही है डोकरी डोकरे को छेला बना रही है डोकरी

हो ss कैसे हर किस्म का खाना बना रही है डोकरी महुआ का लाटा , केवलार की भाजी

, कुटकी का पेज , गेंहूँ का गोदला, भुटटा का बबरा,कैसे बना - बनाकर खिला रहीं हे डोकरी रे भाई ss ।

कैसे खा पीकर डोकरा
कर रहा हे तैयारी रे दादा
कमर में अंगोछी पहने
शरीर में फतोही पहने
सिर में मुरैठा बांधे
पीठ में नाश्ता की पोटली
मुरैठा में बिड़ी खोंसे
कमर में तम्बाखू
पैर में चमारों के जूता
कैसे डोकरा तैयार हो गया है हो ss

हो ss डोकरी लिपट लिपट कर भेंट कर रहीं है कहती है डोकरा लोहारीपुर जादू की नगरी है वहां से कोई भी कभी वापस नहीं आता हे अब हमारी तुम्हारी दुवारा भेंट होती हे की नहीं । डोकरा रो रहा है कह रहा है जब मै जवान था तो बारह कोस तक उड़ जाता था अब मैं उड़ पाता हूँ की नहीं ।

इस बुढ़ापे की माया
कैसी बीतेगी संगी
वह जवानी का सपना
टज़ूख्ज़ों में झूलता है
कैसे अकल - बकल प्राण हो रहे है रे भाई ss ।

हो ss कैसे समझा कर चल दिया है डोकरा ने रे भाई ss दसौरी डोकरा राजा के दरवार में पहुंचता है कहता है दे राजा परवाना मै जा रहा हूँ लोहारीपुर!

कैसे दे रहे है परवाना हो राजा ss ।

हो ss रखकर चला है परवाना दसौरी, गली बस्ती पार करके चले जा रहा है उसी समय में कन्या हिरौली अपनी सखियो के साथ में बस्ती में खेल रही थी उसने डोकरा को देखा ।

उसने डोकरा से कहां जा रहे हो बाबा! पूंछ रही है हिरौली !

थोड़ा लोहारीपुर जा रहा हूं बवड़े ! तुम्हारी ससुराल के लिये चिट्ठी दी है राजा ने उसे लेकर जा रहा हूं !

थोड़ा बताओ तो पत्र में क्या लिखा है मेरे पिताजी ने !

कैसे खोलकर पत्र पढ़ रही है हिरौली रे भाई !

कैसे पत्र को पढ़कर सोच में पड़ गयी हिरौली वह अपने मन में सोचती है ।

क्या सोचती है हिरौली अपने मन में ?

कहती हे पंद्रह दिन का करार लिख दिया है दादा ने । अभी तो मैं अपनी सखी - सहेलियो के साथ खेल भी नहीं पायी, बजार - हाट से लहंगा चोली,नहीं लायी ! जंगल में चार तेंदू पके है उसे खाया नहीं कैसे इतने जल्दी ले जाने वाले आ जायेगे ऐसा सोचकर हिरौली ने तुरंत परवाने

में दो महिना का समय लिख दिया हे हो ss ।

अब दसौरी डोकरा भैया धर लिया है रास्ता लोहारीपुर के भाई

एक वन नकता है

दो वन रे दादा

तीन वन नकते है

कजरी रे घाटी

डोंगर पहाड़

धमकी रे दादर

आंधी कोल कछरा

वह सोन नदी

पार करते जा रहा है डोकरा

दिन में नहीं थकता

रात में नहीं सोता

कैसे बिगारी रे भाई

राजा को संदेशा

कैसे पहूंचता है

रात में चलना

दिन में दौड़ना

जाकर पहुंच गया लोहारीपुर की मेंड़ में हो ss

हो ss पहुंच गया है डोकरा लोहारीपुर के मेड़ में ! रोह ,रोह ,रोह रोह,! एक तरफ बजार भरी है लोहारीपुर की । गलवल हल्ला हो रहा है ।

डोकरा सोचता है अपने मन में ऐ रे दादा । अब यह क्या हो रहा हे सामने डोकरियो की बजार है मुझे नोंच डालेंगी कैसा करू,आखिर जाना तो पड़ेगा ही ।

ऐसा सोचकर चला जा रहा है डोकरा हो , हो ss जब डोकरीयो ने डोकरा को देखा है । गदबदी देकर जिस समय दौड़ी है नहीं है ठिकाना घेर तो लिया है डोकरा का,सभी डोकरियां मधु मक्खीयों के समान उससें चिपक गयी ।

हो ss ढेर सारी डोकरियों के बीच अकेला डोकरा सकपका तो गया

कोई उसके ऊपर हाथ रख रहा है कोई उसकी कमर पकड़ रहा हे कोई लिपट रही हे कोई झपट रहीं है सभी डोकरियां उस डोकरे को अपने अपने तरफ खींच रहीं हे ! डोकरे को चींथ डाला है ।

हो ss लद गई हैं ड़ोकरा के ऊपर बर्रइया के समान! ड़ोकरा चीखने लगा! कहता है ! छोड़ो छोड़ो तो री ड़ोकरी मैं तो राजी हूं तुम क्यों चिंता कर रही हो !अब सब ड़ोकरियां घेर के ले जाने लगीं ड़ोकरा को भाई हो ss

हो ss चला जा रहा हे डोकरा डुकरियों के साथ उसी समय उसे रास्ते में कुछ जगह दिखी तो वह चिड़िया के समान धोखे से उड़ गया,! सभी डोकरियां अकबका कर रह गई , ये दादा रे बहुत दिनों में पाया था पर वह बैरी धोखा देकर भाग गया । वे एक दूसरे के ऊपर दोष

लगाकर पछता रहीं है डोकरा वहां से सीधा राजा की कचहरी की ओर चल दिया है रे भाई !

कैसे पाया है छुटकारा
कैसे दसौरी डोकरा रे
वह चील के समान
मंडराने लगा
लोहारीपुर के ऊपर
जाकर उतर गया है रे दादा
राजा की कचहरी के ऊपर
छत पर रे भैया
कैसे बैठ गया है हो ऽऽ
हो ऽऽ कैसे कचहरी की छानी
के ऊपर से नीचे उतर गया है डोकरा ।
कैसे देख रहा है सभा कचहरी को ।
क्या देख रहा है डोकरा ?
कैसे महल और अटारी
कैसे सात खंड़ो वाले कमरे
सोने के कलस
हीरा मोती की झालर
केसे चांदी के चोपाल
केसे बावन रे बजारा
कांचो ही कांचों की दहलान
के ऊपर बैठक में
कैसे राजा लोहगुंडी बैठकर न्याय कर रहे हे हो ।
हो ऽऽ और क्या देख रहा हे डोकरा ?
देख रहा है ?
कैसे लोहा का परकोटा
लोहे के ईंट में
सीसा का गारा
लोहे की छतरी
लोहे के किवाड़
लगे है बुर्ज द्वार में
ऐसा किला रे भैया
बना है लोहारीपुर का हो ऽऽ
हो ऽऽ और क्या देखता हे डोकरा ?
देखता है !
चौदह सिपाही रे दादा

द्वार में लगे हे
पहरा में भाई
कैसे बाध भालू के पहरा
पंवर दुआर में दादा
कैसे चांदी के चौपाल में
लगी है कचहरी रे भाई
पंच और प्रजा बेठी हे
कैसे न्याय कर रहे है हो ऽऽ ।

हो ऽऽ वहां पहुंच गया है दसौरी , कैसे दड़म - दड़म जाकर घुस गया है कचहरी में, केसे झुक झुक कर राम रहीम कर रहा है राजा से रे भाई ऽऽ ।

हो ऽऽ राजा पूंछ रहै है ।

बाबा कहां से आना हुआ है ।

कहता है राजा तुम्हारी ससुराल से आया हूँ तुम्हारे लिये संदेश लाया हूँ यह पत्र लीजीये ।

कैसे पढ़ रहे है चिटठी राजा लोहगुंडी हो ऽऽ।

पढ़ते हैं चिट्ठी को रे राजा
क्या पढ़ते हैं भाई
क्या लिखा है चिट्ठी में
दो माह में आकर
आपनी पत्नी का गौना
करा कर ले जाओ
ऐसा ससुर ने लिखा है
कैसे मन में खुशी हो रही है
राजा लोहगुंड़ी को
कैसे डुकरा का मान सम्मान कर रहे हे हो,

हो ऽऽ केसे महल में ले जा रहे है डोकरा को । कैसे गरम - ठंडा पानी रखा है , कैसे स्नान करा रह है दसौरी को , कैसे किस्म - किस्म का भोजन बनाकर खिला रहे हैं राजा दसौरी को रे भैया !

हो ऽऽ क्या खाना खिला रहै है राजा ?
कैसे महुआ का लाटा
खमेर का टोला
माड़िया का भात
चांवल का गोदला
गेंहूं का बवरा
केवलार की भाजी
बैचांदी कांदा
नानमुन मुनगा

कुदई के ढपरा
कैसे किस्म किस्म का भोजन
खिला रहे है डोकरा को रे भाई।
हो ss बेगारी डोकरा
राजा लोहगुंडी के सत्कार को
देखकर खुश हो जाता हे
कहता है धन्य रे राजा बेटा ,
बलिहारी हो तुम्हारी ,
मेरे जैसे बिगारी का
इतना मानदान किया !
धन्य हो तुम्हारा ,
परंतु एक बात है
क्या बात है पूंछता है राजा ?

डोकरा कहता है और तो सब बात सही है राजा पर आप जो औरतों का बजार भरवाते हैं वह ठीक नहीं है !

यह भला क्या है कुंवारी लड़कियां कुंवारे लड़को को डोकरी है डोकरी के लिए यह भला काम नहीं है इसे बंद कर दो ।

हो ss राजा जब अपनी बदनामी उस डोकरे के मुंह से सुनता है उस समय वह शर्मा जाता है राजा कहता है ! बाबा आप सही कह रहे है। अब इसके बाद ऐसा नहीं होगा !

ऐसा राजा ने डोकरा से कहा हे भाई हो ss

अब लोहारीपुर में भाई मेहमानी करके खा पीकर हुआ है तैयार रे डोकरा अपने राज्य में जाने को रे भैया राजा उसे पहुंचाने जा रहे हे हो ss(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

हो ss जिस समय में आया हे डोकरा बजार में देखा हे डोकरियो ने डोकरा को कहती है वह रहा बैरी , केसे छूट कर भाग गया था ! अब उसे नही छोड़ूगी उसे चिपका कर पकड़ लेगें ।

कैसे दौड रही हैं डोकरी ?
घेर लिया है ड़ोकरा को
कहती है तुम ही हो वह बैरी
जो छूट कर भाग गये थे
अब फंस गये हो मेरे फंदा में
अब छूट कर कहां जाओगें !
ऐसा कहकर पकड़ लिया है
डोकरा को भाई !

अब नहीं है ठिकाना रे दादा

डोकरा की आफत हुयी जा रही है
पूरा खाना - पीना रे दादा
निकाल लेती है डोकरी रे
डोकरा अपने मन में कहता है
आग लग जाये इस राज्य में रे भाई
इतने में राजा आ गया
दड़म - दड़म पहुंचा है दादा

हो ss राजा को देखकर सभी डोकरीयों ने उस डोकरा को खर्र से छोड़ दिया । डोकरिया उसे छोड़ कर यहां वहां भागने लगी । राजा ने डोकरा को उठाकर उससे भेंट भलाई की ओर कहा बाबा यहां के हाल किसी को नहीं बताना। मैं यह पूरा कारोबार आज से ही बंद करा देता हूॅ।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

अब चल दिया है डोकरा
अपने राज को हो ss ।
अब जाकर पहुंचा है
राजा पंचनारायण के पास
जाकर रे भैया
खबर को सुनाया हे
राजा को भाई
सुनकर राजा खुशी हो गया हे रे भाई ss

हो ss जाकर डुकरा ने सब हाल चाल बताया हे राजा से लोहारीपुर की बजार के हाल चाल कैसे गिन गिनकर बता रहा है डोकरा कैसे राम रहीम करके चल दिया है डोकरा अपने घर में ।

हो ss डोकरी रास्ता देख रही थी दरवाजे पर खड़े होकर , कैसे डोकरा को देखकर लिपट गयी है डोकरा से कैसे भेंट कर रहीं है अपने आदमी से डोकरी !

कैसे रो - रोकर भेंट कर रही है रे भाई
डुकरा से डोकरी दादा
कैसे लोटा मे पानी रखकर
पांव धुलाती है डोकरा के
कैसे खाट के ऊपर बैठालती है
कैसे पूंछ रही है हाल चाल
कैसे बता रहा है डोकरा रे भाई ss

हो ss कहती है क्यों रे डोकरा, कैसे दुबले हो गये हो , यह महुआ के फूल के समान फूले - फूले गालों को वहां निकाल आये हो क्या ।

नहीं रे डोकरी, कहता है डोकरा, मै वहां की बजार को बंद करवा कर आ गया हूॅ ! अब कभी भी वहां पर कुंआरे - कुंवारियो और डोकरा डोकरियों की बजार नहीं लगेगी ।

डोकरी कहती है डोकरा तुम कैसे बचकर आ गये हो तो डोकरा कहता है चिड़ियां के समान

फुर्र से उड़ गया था इस कारण बचकर आ गया हूॅ नहीं तो कहां बच पाता ।

तुम्हारी माया के कारण रे डोकरी
ऐसी जुल्म वाली जगह से
बचकर आ गया हूॅ संगी
मत पछताओ गादी
मत करो क्रोध
मैं तुम्हारे पास बैठी हूॅ हो ss

ऐसी वातचीत हो रही है
उन दोनों में रे भाई हो ss

अब एक दिन भैया
रानी हिरौली कन्या
करती है विचार
अपने मन में दादा रे
आयेगें ले जाने वाले
ले जायेंगे मुझे
छूट जायेगें माता - पिता
छूट जायेगीं सखी - सहेली
यह डोंगर पहाड़
यह नाला और झाड़ी
यह हाट और बजार
नहीं मिलेगा देखने
न होता तो एक दिन

हरदी बजार देख आती हो ss

इस प्रकार से सोचकर
बुलाती है सखी - सहेलियो को
कहती हे ये बाई ओ
एक बात मेरे मन में है
चलो चलै सखी
बजार देखकर आ जाते
कौन बजार जाओगी दीदी
भाटा बजार हो आयी हो
जोड़ा बजार हो आई हो

करलू बजार हो आयी हो

अब कोन से बजार चलोगी

हरदी बजार चलेंगे कहती है हिरौली कन्या हो ss

हो ss हरदी बजार के नाम से सभी लड़कियां खुशी हो गयी है हो ! रानी कहती है बजार

जाने के लिए राजा से पूंछना पड़ेगा तब राजा से कोन जाय पूंछने सभी लड़कियां सलाह करती हे ।

एक बुड़राहिन डोकरी थी
सहेलियों के साथ में
वह अपने मने से कहती हैं
मै जाती हूॅ राजा के पास पूंछने
चल दी है बुड़राहिन
राजा से पूंछने भाई
पहूंची है राजा के पास
कहती है दादा
हरदी बजार जाने को
बाई लोग कह रहीं है
आप कह देते तो बजार कर आते हो
हो ऽऽ सुनकर राजा बोलते हैं

क्या बोलते हैं राजा ! हरदी नगर बड़ी माया नगरी है। हरदीगढ़ के राजा रामदरबाई बहुत जादू टोना वाले है जो वहां जाता है उसे जादू के बल पर वहीं रख लेते है उस राजा ने बावन राजाओ के सिरों को काटकर अपने दरवाजे में टांग दिया हे ।

हो ऽऽ और क्या बोलते है राजा वहां कोई नहीं जाना जो जायेगा तो समझो उससे मेरे से संबंध खत्म हो जायेगें।

ऐसा बोल रहे हैं राजा रे भाई ऽऽ
बुड़राहिन लौटकर आती है
आकर खबर बताती है
कहती हे दीदी जी
राजा ने कसम धराई है
हरदी बजार नहीं जाना है
वहां का राजा रे भाई
रामदरबाई रे दादा
बहुत बड़ा जादूगर है
जो लड़की जाती है
उसे जादू करके पकड़ लेता है
बावनगढ़ के राजाओं के
सिरों को काटकर दरवाजे में टांगे है
ऐसा बता रही हे बुड़राहिन रे भाई ऽऽ

हो ऽऽ हिरौली कन्या सुन रही है मन में गुन रहीं है मन में धुकुर - पुकुर हो रहा है । हो ऽऽ हरदी बजार देखने की इच्छा हे आपस में सलाह कर रहीं हैं । क्या सलाह कर रहीं हैं लड़किया ? कहती हैं

रात को नाश्ता बना लेगें
सुबह जंगल जाने के बहाने ,
कोई्र पानी के बहाने ,
कोई्र खेत के बहाने,
घर से निकल जायेगें ,
और उस जंगल में
कुरूल के पेड़ के पास
सभी लड़कियां आ जायेंगी
और शाम को लैटकर
घर वापस आ जायेंगी ।
मात - पिता को क्या पता चलेगा ।
इस प्रकार से साठ जोडी लड़कियां
आपस में सलाह कर रही हें हो ss ।
अब मुर्गा के बोलते ही भैया
उठ गई है गांव की लड़कियां
रखे है अपने नाश्ता की पोटली
अपने पहनने की साड़ी
पत्ता में रखा हे हल्दी
चुनिया में रखा हे तेल
निकल पड़े है घर से रे भाई
कोई रखे है गागर
पानी लेने के बहाने
कोई रखकर कुल्हाड़ी
जंगल से लकड़ी लोने के बहाने
कोई्र जा रहा है भाजी तोड़ने
कोई्र जा रहा है पत्ता तोड़ने
कोई जा रहा है खेत में निंदाई करने
ऐसा बहाना बनाकर
साठ जोड़ी लड़कियां
निकली है घर से रे दादा
मुर्गा के बोलते ही भाई
चल दी है लड़कियां
यह जवानी के दिन रे दादा
बहुत कठिन हैं रे भाई
जो मन मे आता है
कर के छोड़ते है हो ss ,

हो ss सभी लड़कियां घर से निकल पड़ती है कोई इस रास्ते से तो कोई उस रास्ते से जा रही हे जाकर एकत्र हो रही है कुरूल के पेड़ के पास जब सभी लड़कियां आ जाती हैं तो हिरौली कहती है बाई गिन तो लो सभी लड़कियां आ गयी है कि नहीं ! अब गिनती हो रही है रे भाई ।

हो ss एक लड़की गिनती हे वह सभी को गिनती है और अपन को छोड़ देती है जिसके के कारण एक लडकी कम हो जाती हे ! दूसरी लड़की गिनती है वह भी ऐसा ही करती है तीसरी गिनती है तो वह भी ऐसा ही करती है सभी लड़कियां परेशान हो जाती हैं आखिर बच गई है तो कोन लड़की बच गयी है ।

अब उठी है बुड़राहिन
लड़कियों की गिनती करने हो ss!
हो ss उठी है बुड़राहिन
अपने बहुत बड़े पेट को
संभालते हुये जिसकी
नौ हाथ की बोड़री ,
समेट कर उसने
अपनी कमर में लिपटा लिया हे
बोड़री ने !
वह कहती हे
एक एक से मेरे पास आओ
और भागते जाओ !
कैसे बुड़राहिन लडकी
अपनी बुडरी को संभालती हे
अरई के समान बुडरी में
लगी है तुतारी रे भेया
जो लड़कियां पास में आती
बुड़री ने उसे दिया एक तमाचा
बुड़री उसे कौचती है तुतारी से
चिललाकर भागती है लड़कियां
ऐसा करके भैया
सभी लड़कियो की गिनती
कर डाली बुड़राहिन लड़की ने हो ss

हो ss कहती है लड़कियों से तुम लोग यहां से निकलती जाओ और एक एक आने का सिक्का यहां पर ,रखते जाओ ।

हो ss कैसे साठ जोड़ी लड़कियों की
गिनती पूरी हो गयी है हो ss ।
अब चली है लड़कियां रे भैया

रास्ता पकड़कर चली जा रही हे
एक लाइन से जा रही है
पैरी और चुटकन की आवाज
झन - झन - झन - झन
केसे गदवद - गदवद भेया
कैसे हा - हा , ही - ही लड़कियां
हंसते जा रही हैं रे भाई
जंगल के फूलों को
जूड़े में खोंसा हे
झखरन की बेला को
गले में पहने हे
पत्थरों की चट्टानों में
कूल्हों को टिकाये हे
पेडों की छाया में
आराम करती हे
कैसे हंसते खेलते
चली जा रही है हिरौली रै भैया ss
हो ss केसे ददरिया गीत गा रही है लड़कियां
बारू तो बारू बड़ी तो बारू ,
तोरे संग में बैठाकर पिलाता दारू,
चले जाबो चिरैया के हरदी के बजार
चल जाबो रे दोस ,
महुवा के रूखवा गजब छाया
परदेशी के संग मा लगे है माया
चल देख आतों बैया व हरदी बजार ,
चुटुक देख आतों रे दोस ?
हो ssऐसी ददरिया गाते गाते जा रही है सब सखियां रे भाई हाss ।
हरदी बजार के हो ,
राजा राम दरबाई रे हरदी बजार के
बड़ा तो छिनरा रे ,
राजा राम दरबाई , रे हरदी बजार के
पाले हवै लरका हो ,
राजा राम दरबाई , हरदी बजार के
बीस झने लरका हो
राजा राम दरबाई , हरदी बजार के
ढूंढ - ढूंढ लानथे हो भैया

सुधरे उस टूरी राजा हरदी बजार के
कैसे धांध राखे हो ,
राजा राम दरबाई हो हरदी बजार के
कौन आंतर लगथै हो
बीस झने टूरा रे हरदी बजार के
देखत रहथे हो भेया
चीकन अस टॅूरी हरदी बजार के
पकर के ले जाथे हो भैया
चीकन अस टूरी हरदी बजार के
कैसन मन भाथै हो भैया
चीकन अस टूरी हरदी बजार के
का कहवै मालिक हो
चरित्तर राम दरबाई के हरदी बजार के

हो ss हरदी बजार के राजा राम दरबाई़ के चरित्र का क्या कहना ! राजा ने बीस लड़के पाल रखे हे अच्छा - अच्छा खाना खिलाकर मुसटंडा कर दिया हे उनको ।

राजा ने लड़के क्यों पाले है ?
जिस समय बजार भरती है
उस समय अलग - अलग
गलियों से लड़के निकलकर आ जाते हैं !
क्यों निकलकर आ जाते हैं लड़के ?
जो लड़की सुन्दर सी दिखी
उसको पकड़कर ले जाते हैं !
राजा राम दरबाई के पास ।

हो ss राजा के पास लड़कियां ही लड़कियां है इसी के कारण बावन गढ़ के राजा से लड़ाई हुयी थी जिसके कारण राजा रामदरबाई ने बावन गढ़ के राजाओं के सिर काटकर दरवाजे में टांगे थे राजा राम दरबाई ऐसा पापी है हो ss ।

तो आज दिन रे भेया
लगा हे लग्गा जैसे
वे बीस लड़के भाई
गली गली को छेंके है रे दादा
उसी गली में रे भाई
सिरहा और मंहगू
लगे हें ताक में
जिस गली से रे दादा
हिरौली रानी और सखियां
आती रही हैं भैया

उसी रास्ते में रे भाई

सिरहा और मंहगू

एक पेड़ के ढूंढ के ऊपर

सो रहे थे दादा

धीरे धीरे हवा चल रही थी

लग गई हे झपकी रे भैया

सिरहा और मंहगू सो रहे हैं हो ऽऽ ।

हो ऽऽ जिस समय लड़कियां निकली हैं झम - झम ,झन- झन,चुटकी ओर अंगूठियों को बजाते जब झनकार पड़ी हैं मंहगू के कान में हो ऽऽ

जिस समय जब जागा हे सिरहा और मंहगू लड़खडा़ कर गिर गया उस पेड़ से आगे के दो दांत टूट गये हैं मंहगू के वह लहू लुहान हो गया हो ऽऽ

देख रहे हैं मंहगू टज़ूख्ज़ी निटोर के लड़कियों को उसके मुंह से खून बह रहा हे इसका उसे पता ही नहीं हे ।

हो ऽऽ हिरौली कन्या को देखकर उसे चक्कर आ गया चंदा के समान उजली, सूरज के समान मनोहारी, आग के समान तपन , दीपक के समान ज्योति, सोने के समान सुंदर,सुंदरी को देखकर सिरहा और मंहगू की नजर उसके शरीर से नहीं हट रही थी कैसे देख रहे है सिरहा और मंहगू रे भैया ऑख की नजर नहीं हटती पलक नहीं झपकाते भाई्र।

केसे मन ही मन में सोच रहे हे भाई

ऐसी सुंदर लड़कियां आज तक नहीं देखा हे भाई

हो जाकर बताता हूॅ राजा रामदरबाई को भाई

हो चले हे मुंह में पटटी बांध के रे भैया ऽऽ

भगे है खुरदम - खुरदम राजा राम दरबाई्र के पास हो ऽऽ ।

हो ऽऽ कैसे बता रहे हे राम दरबाई से सिरहा और मंहगू कहते हें राजा साठ जोड़ी लड़कियां आयी है एक से बढ़कर एक, उसमें एक लड़की तो ऐसी है राजा जैसी की आपकी जीभ है वेसे उसके पांव की ऐड़ी है।

सुनकर राजा के मन में खलबली

तो मच गयी हे हो ऽऽ ।

अब राजा रामदरबाई रे दादा

बुला रहे है अपने बीसों लड़कों को

कहते है आज बहुत दिनों मेंरे साथी

अच्छी अच्छी हिरनी जाल में फंसी है

सब लोग तैयार रहो

वे भागने न पाये हो ऽऽ

हो ऽऽ सब लड़कों को बुलाकर समझा रहे है राजा। अपनी अपनी तरकीब बता रहै है लड़कों को फिर सजाया है घोड़ा को राजा ने और निकले है बजार घूमने रे भाई ऽऽ ।

हो ऽऽ सिरहा मंहगू मन में सोचते हे

क्या सोचता है सिरहा ?

कहता है क्या बताऊं रे भाई बहुत सुन्दर लड़कीयां हैं ! एक लड़की मुझे भी मिल जाती तो अच्छा रहता । अब भाग रहै है गदवद - गदवद सिरहा और मंहगू रे भाई ss ।

कैसे सिरहा और मंहगू
भाग रहै हे पीछे - पीछे
सोच रहे है अपने मन में
मिल जाता एक घोड़ा
तो सवार होता घोड़ा पर
मुझे देखकर कोई लड़की
लोभ में आ जाती तो
उसे अपनी पत्नी बना लेता भाई हो ss

हो ss सिरहा और मंहगू ऐसा अपने मन में सोच रहे है दौड़ - दौड़ कर घोड़े को ढूंढ रहे है तभी सिरहा देखता है क्या देखता है सिरहा ? एक रेड़ा (लकड़बग्घा) किसी मरे हुये जानवर को खा रहा है ।

अब मंहगू अपने मन में सोचता हे
यह अच्छा घोड़ा है रे दादा
इसी को पकड़कर इसमें सवार हो जांऊ क्या
चले जा रहे है सिरहा और मंहगू
कूंदा रहे है लकड़बग्घा को
उसे पकड़कर रे दादा
लगाई है लगाम रे भैया
रख रहे है ऊपर से पलेंचा
चढ़ बैठा हे मंहगू
अब चला हे कूंदाते लकड़बग्घा को हो ss

हो ss सवार हो गया है मंहगू लकड़बग्घा की पीठ के ऊपर हांक रहा है लकड़बग्घा को, भाग रहा है लकड़बग्घा लुसुर - लुसुर ? हो ss कैसे भाग रहा है लकड़बग्घा जंगल की तरफ कैसे लौटा रहा हे मंहगू उसे बजार की तरफ ,पर लकड़बग्घा नहीं लौटता । मंहगू उसे अपनी तरफ खींचता है, आखिर में मंहगू ने लकड़बग्घा को जंगल की तरफ भगा दिया , उसे ले जाकर जंगल के भीतर घुसेड़ दिया, मंहगू जंगल की कटीली झाड़ियो में उलझ गया , उसके शरीर से खून बहने लगा , उसके अंग - भंग हो गये । हो ss

उसी समय लकड़बग्घा एक गुफा में घुस गया , मंहगू धड़ाम से उस गुफा में के द्वार पर गिर प़ड़ा । घुटने ओर पीठ में चोट आ गयी है मंहगू को , वह कांखते - कूलते अपने घर में वापस आ गया । कहता है आग लग जाये ऐसी लड़कियों मैं रे, मैं अब इनके पीछे नहीं पड़ता ।

अब पहुंची है लड़कियां
नदी के किनारे

कूंद - कूंद कर नहा रही है
मल - मल कर नहा रही है
कंधी से बाल संवार रही हे
फिर तेल हल्दी रे दादा
पूरे शरीर में लगा रही हे
लंहगा चोली रे भेया
पहन ओढ़ के रे दादा
कैसे रूगबुग - रूगबुग ?
दिख रही है लड़कियां हो ss

हो ss नहा धोकर स्नान करके खड़ी हैं लड़कियां कैसे रंग बिरंगी लंहगा चोली पहने हे ! रंग विरंगी कपड़े पहने है कैसे कंधी करके चोटी करती हें ! कैसे हल्दी तेल से मुंह सहला रहीं है ।

कैसे सज संवर कर चली हे लड़कियां रे भाई ss
कैसे चली जा रही हैं लड़कियां एक लाइन से भैया
रंगी - बिरंगी लग रहीं है भाई
पहुंच गये है बाजार के अंदर रे भाई
बहुत भीड़ थी बाजार में रे दादा
देखने वालों की भीड़ लग गई हे रे भाई
हो ss कैसे देखने वालो के मुंह में पानी
आ जाता हे ऑखं की पलकें तक नहीं
झपकते , सांस ऊपर की उपर
नीचे की नीचे रह जाती है ।
ऐसे देखते है बजार के लोग कि देखते रह जाते हे हो ss ।
हो ss कैसे घूम - घूम कर
बाजार कर रही हे लड़कियां
कोई चुटकी,मुंदरी को देखती हैं
कोई चोली, साड़ी को
पटा पटाकर खरीद रहीं हें दादा
कोई गोदना वाले से
गुदना गोदाते है
कोई अपनी सहेलियों के साथ
हंसती, बोलती हैं
कोई अपने पहचान वालों के साथ
खड़े होकर बातें कर रहीं हैं
कैसे घूम - घूम कर बाजार
करती है लड़कियां भाई हो ss

हो ऽऽ हल्दी बाजार में घूम - घूम कर फिर रही है कुछ लेती है कुछ देती हें।
हो ऽऽ चारों तरफ से रैना रैना उड़ रही है ! घूम रही है लड़कियां।
उसी समय में रे भाई
कैसे आ जाते है रामदरबई
घोडा पर सवार है राजा
साथ में है बीस जोधा लडके
आ गये हैं बजार में रे भैया।
कैसे देख रहे है हिरौली कन्या को दादा
मुंह में पानी आ जाता है हो ऽऽ
और उनके पीछे - पीछे राजा
कुत्ता जैसे भैया
घूम रहे है।
जहां जहां लड़कियां जाती है
वहां वहां राजा जाता है।
देख देख कर दूर से
हिरौली कन्या को भैया
खुश हो जाते है।
सोंचते है कब दिन डूब जाए।
कितने जल्दी ले जांए।
कैसे हल्दी वाले राजा के दिमाग है रे भाई ऽऽ
हो ऽऽ बाजार हाट करके लड़कियां ।

चोटी, माला, पायल, नागमोरी खरीद कर चना - चबेना रास्ता के लिए रख लेती है। कहते है कि हम दिन के रहते ही घर लौट जाएगें । अपना गांव यहां से बहुत दूर है।

अब निकल पड़ी हैं लड़कियां
हल्दी बाजार से हो ऽऽ
कैसे निकली है लड़कियां,
सूनी पड़ गई बाजार रे भैया
कौआ उड़े जैसे हो गया
कैसे रास्ता धर ली अपने घर की
कैसे आपस में बातें करते जा रही हैं
कैसे हंसते, मुस्कुराते हुए जा रही हैं
कैसे राजा उनके पीछे पड़े है

हो ऽऽ राजा रामदरबई देखते हैं। चिड़ियां तो बाजार से उड़ चुकी है । उसी समय उरदा और चावल, के दाना रख कर धोड़ा दौडाकर लड़कियों के रास्ता को रोक लेता है।

हो ऽऽ उसी समय मारते हैं पढ़ - पढ़ कर जादू - मंतर। उसी वक्त रास्ता के दोनों तरफ बेरी के पेड़ लग जाते है और उनके मीठे मीठे सुन्दर फल लड़कियों का मन मोह लेते है।

अब क्या कहना भैया

बेरी के पेड़ में

लाल - लाल बेर लगी है

गुच्छा के गुच्छा

झूल रहे है ।

चिड़िया रे चुन गुंन

बेर कुतर कुतर भैया

धरती में गिराने लगीं।

खट्टी मीठी खुशबू रे भैया

उन पेड़ों से उड़ने लगी हो ऽऽ

हो ऽऽ रास्ता के दोनों तरफ जंगल भर में बेरी - बेरी के वन लगे थे। रास्ता में चलने वालों के जीभ में पानी आ जाता था।

हो ऽऽ अब पहुंच कर लड़कियां उसी रास्ते पर बेर देख कर अचकचा गई । यहां पर कितने अच्छे बेर फले है । ओह ! एक लड़की कहती है अभी सूरज नही डूबेगा थोड़ी बीनकर खा लें।

कैसे सभी लड़कियां बेर खाने लगीं भैया ऽऽऽ

हो ऽऽ ये पेंड़ से वो पेड़, वो पेड़ से ये पेड़

सब लड़कियां बंदर जैसे पेड़ पर चढ़ गई है । बेर तोड़ तोड़ कर अपने पल्लू में रखने लगी। कुछ तोड़ - तोड़ कर खाने लगी। उनके पल्लू बेर से नहीं भरते और न ही उनके पेट ही भरते । खाते जा रहीं हैं तोड़ते जा रहीं हैं,और रखते जा रहीं हैं ! भूल जाती है घर जाने को! दिन डूबने का ध्यान नही रहता । जब अंधेरा छाने लगता है।

अब निकलते है राजा रामदरबाई हो ऽऽ

आकर घेर लेते है राजा

साथ में हं वे बीस जोधा लडके

कहते है कौन गांव की हो तुम लोग बैया

राजा के बेर का बगीचा है

कैसे तुमने बेर खा लिये

बगैर पूछे क्यों बाई्र

तुम लोग जो बेर खाये हो रानी

उसके बदले में रानी

तुमको जुरमाना चुकाना पडेगा

तुम तैयार रहना लड़कियों हो ऽऽ

हो ऽऽ कैसे रामदरबाई बोलते हे लडकियों से

कैसे हमारे बगीचा के बेर खा लिए हैं तुमको जुरवाना देना पडेगा !

हो ऽऽ कैसे हिरौली कन्या कहती है क्या जुरबाना लोगे राजा बता दो मै अपनी घर से पहुचां दूंगी

तब हंस के बोले है राजा रामदरबाई हो

रूपया पैसा जुरमाना नही लगेगा
धान कोदों का जुरमाना नहीं लगेगा
तुम क्या जुरमाना भेजोगी रानी
जुरमाना में तुमको अपने साथ ले जांऊगा

हो ss इतना बोलकर राजा रामदरबाई रानी हिरौली को घोड़ा पर बिठाकर ले गये अपने महल मे हो!

हो ss अब क्या कहना रे दादा
उन जोधा लड़कों के बन आई
साठ जोड़ी लड़कियों में
अपनी अपनी पंसद की लड़कियां भाई
पकड़ पकड़ कर ले गये
सबको ले जाकर भैया
राजा के कोठा में बंद कर देते है

हो ss किस प्रकार बंद कर देते हे महल में !े रानी हिरोली कन्या के पास कोई लड़कियां नहीं पहुचाते उस समय हिरौली घबड़ा जाती है

कैसी हिरौली रे कन्या
किस प्रकार रोती है भाई
अब क्या होगा दादा
माता पिता छूट गये
साथी सहेली छूट गै
सात भांवर के पति छूट गया
ये किसके जाल साजिस में फंस गये दादा
अब किस प्रकार छूटकारा मिलेगा रे भाई ss
हो ss अब आये हैं राजा
राजा रामदरबाई रे भाई
हिरौली के लिए
कैसे पास पास में आता है
कैसे इधर उधर हाथ रखता है
हिरौली सोचती है अब मै अपनी
इज्जत नही बचा सकती हो ss

हो ss हिरौली सोचती हे अपनी मन में मै किस प्रकार अपनी इज्जत बचाऊं, कहती है राजा से राजा मैं तो तुम्हारे लिए ही बजार आई थी तुम मुझे पसंद हो लेकिन मैं अभी तक बारा बरस की नही हुई जब तक तुम्हैं मेरा इन्तजार करना पड़ेगा । राजा कहता है हॉ हम बारा वर्ष तक तुमको देख देखकर जी लेंगे इस प्रकार कहकर राजा राजदरवार में चले जाते है भाई हो ss ।ं

अब साठ जोड़ी लड़कीयों में

एक बुड़राहिन लड़की को छोड़ देते हैॅ
उसको कोई भी जोधा लड़का नहीं ले जाता
इसलिए वह लड़की छूट गई
अब बुड़ाराहिन भागती है
अपने गांव की ओर हो ss

हो ss बुड़ाराहिन लड़की रोते - रोते अपने गांव के लिए भाग गई ! जा के पहुंचती है राजा पंच नारायण के पास राजा पंचनारायण , कैसे रो रही है लड़की कलप - कलप के किस प्रकार पूछ रहे हैं राजा लड़की से ।

लड़की हरदी बजार की कहानी राजा को बता रही है हो ss

हो ss क्या कह रही है बुड़ाराहिन लड़की ! कह रही है राजा कन्या हिरौली को राजा रामदरवाई पकड़कर ले गये । मुझे किसी ने नही पूंछा , मैं उचक कर भाग कर आ गयी हूं! राजा बड़ी कोध्र में आकर रे भाई ss ।

कैसे क्या कर लिया है लड़कीयो
मेरा कहना नहीं माना
मैंने तुमको मना किया था
हल्दी बजार मत जाना बेटी
हल्दी बजार जाकर कैसे बंद हो गयी हो
राजा रामदरबाई रे भाई
बड़े योद्धा राजा हें
बावन राजा के सिर काटकर टांगे है
द्वार पर हो ss
सब गांव में कैसे
खबर फैल गयी है भैया
कैसे खवर पा गये है
रोना पड़ गया है दादा
घर घर में रे भाई
माता पिता सब रोते हैं
भाई बंद परिवार रोते हैं
साथी सहेली रोते हैं
कहां जाकर फंस गयीं हैं लड़कियां रे दादा
कैसे कलप कलप के रोते है दादा हो ss
हो ss राजा पंचनरायण सोचते हैं अपने मन में
क्या सोचते हे ?
कहते हैं यह सब दमाद का कसूर हे

पंद्रह दिन के अंदर ले जाने को कहा था लेकिन डेढ़ महीना हो गये, लेने नही आया तो मैं क्या करूं ।

अब फिरसे दूसरा पत्र लिखते है राजा
लोहगुंडी के लिए
क्या लिखते हैं

लिखते हैं सुनो राजा मैंने तुमको लड़की दिया तुम लड़की के पति कहलाये । मेरी लड़की बालिग हो गई है मेरे घर में रखना अच्छा नहीं है कह के तुम्हें पत्र लिखा था ! पंद्रह दिन का वादा किया था कि आकर अपनी पत्नि ले जाओ ! लेकिन तुम नहीं आये । अब तुम्हारी पत्नी को राजा रामदरबाई बंद करके रखे हैं तुम जानो उसको लाओ या ना लावों ।

इसका जवावदार में नहीं हूॅ

ऐसा पत्र लिखा है राजा पंचनारायण ने हो ss
अब आये हे सिपाही
पवन दसौरी के पास
चल चल रे डुकरा
राजा ने बुलाया है
पत्र लेकर जाना है हो ss
कैसे जब सुना है डुकरी ने
लिपट गयी है डुकरा से
नहीं रे डुकरा
तुम मत जाओ लोहरीपुर
बहुत परेशान होना पड़ता हे
लोहारीपुर की डुकरियों से रे

हो ss डुकरा समझा रहा है डुकरी को कहता है तुम सुनो डुकरी , वह बजार बंद हो गया है ! दमाद बाबू ने उसी बार बंद करवा दिया था तुम मेरे लिए चिन्ता मत करो । इस प्रकार समझाकर पवन दसौरी डुकरा सिपाही के साथ मा चले हैं रे भाई sss ।

जाकर पहुंचे है राजा के पास
लिये हैं पत्र पवन दसौरी
धर के रास्ता लोहारीपुर के दादा
कुछ चलते है कुछ दौड़ते हे कुछ उड़ते है
दिन के है धामन
रात के है रिंगना
कैसे चले जाते हे
दसौरी रे डुकरा
एक वन नकते हे
दो वन नकते है
तीन वन नकते हैं
क्या कहना भैया
केसे जा कर पहुंचा है लोहारीपुर हो ss

कैसे लोहारीपुर में रे भेया
कैसे अब औरत - मर्द की
बजार नहीं लगी है रे भैया
लड़का - लड़किन के
डुकरन के डुकरियन के
कुंआरा कुआंरिन के
बहुत अच्छा है
लोहारीपुर भैया
देख के पवन दसौरी डुकरा खुश हो गये हो ऽऽ

हो ऽऽ पवन दसौरी डुकरा पहुंच गये हे राजा के महल में राजा के सामने जाकर प्रणाम करते हे डुकरा पत्र देता है राजा को । हो ऽऽ पढ़ रहे हैं पत्र को राजा लोहगुंडी उनका शरीर गुस्सा के कारण आग के समान हा गया! वे गुस्सा में थर - थर कांपने लगे राजा की ऐड़ी का गुस्सा सिर से निकल गया राजा के सिर के दो चार बाल टूट के गिर जाते हैं! राजा कहता है देखता हूॅ उस राजा को जिसने मेरी पत्नी को बंद कर रखा हैं ! इसका बदला ले लूगां तब मै राजा के लोहगुंडी कहलाऊंगा ।

कैसे मां कंकालिन हो ऽऽ ।
देखती हैं बेटा लोहगुंड़ी को
उसके तमतमाये मुंह को
कहती हैं क्या हुआ बेटा
तुम इसका भेद बताओ मेरे हीरा
कैसे बता रहे हैं राजा
पूरी किस्सा अपनी मां को होऽऽ
कहता है सुनो माता
मै नहीं छोडता राजा रामदरबाई को
उसका सिर काट के दरवाजे पर लगाऊंगा
उसको उसके किये की सजा दूंगा हो ऽऽ

हो ऽऽ जब सुना है माता कंकालिन ने उनका मुंह उतर गया! उनकीऑखं से आंसू गिरने लगे । रो रो कर मना रहीं है राजा को और बोल रहीं हे ।

कहती है कंकालिन,
क्या कहती है ?

ये बेटा मत लड़ाई्र कर उस राजा से बहुत जुलमी राजा है बावन राजा के सिर काटकर किला के दरवाजे पर लगाया है ।

तुम मेरी एक ही
संतान हो बेटा
तुझे देख देखकर
जी रहीं हूॅ

तुम मेरे टज़ूख्ज़ की
पुतली के समान हो
मेरे सीने की धड़कन हो
तुम अपनी तैयारी करना छोड़ दो बेटा हो ss
हो ss क्या कहती हे कंकालिन ?
कहती है तुम कुआंरी चाहो तो कुंआरी, शादी शुदा चाहो तो शादी शुदा और जितनी अच्छी से अच्छी लड़कीे जो तुम्हे पंसद हो, उसको घर ला दूंगी, लेकिन उस औरत को छोड़ दो ।
बादल जैसी छाया रे बेटा
तुम क्या जानो औरत के मायाजाल को
एक पल में यहां तो दूसरे पल में वहां
उसके चक्कर में मत पड़ना हो ss
हो ss समझा समझाकर थक गई उसकी मॉ मगर लोहगुंडी राजा नहीं मानता । कहता है मेरी नाक कट गई, इतनी बदनामी हुई बिना इज्जत और आदर के जीने पर तरस आता है मुझे , मैं वहां जाऊंगा तुम अपने घर में बैठी रहों ।
कैसे नहीं मानता है राजा हो ss
हो ss मॉ समझाती हैं,
बहिन विंरासन समझाती हैं,
लेकिन राजा नहीं मानता
केसे हुकुम लगाता है अपनी फौज को रे भाई ss
हो ss क्या हुकुम देता है राजा ?
कहता है चलो मेरे दोस्त भाईयो , वक्त में साथ देने वाले , लड़ाई करने हल्दी बाजार में चलो सब लोग तैयार हो जाओ इस प्रकार हुकुम देते हैं पूरे नगर में हो ss ।
अब मॉ कंकालिन
बहिन बिंदरासन
दोनों झना भाई रे
घूम घूम कर नगरी में
साथ के सब लड़कन को
फौज के सब सिपाहियों को
मना कर देती हैं ।
कैसे कसम दे दी है नगर के सभी सिपाहियों को लड़कों को हो ss ।
हो s्s एक सूचना भेजी,दो सूचना भेजी,तीन सूचना भेजी, फौज का कोई भी सिपाही नहीं दिखता है! तो कोटवार को सूचित करने भेजता है कोटवार खबर लेके आता है और कहता है सब लोग बीमार हैं ! किसी के सिर में दर्द , किसी का पेट में दर्द , किसी को सर्दी खांसी किसी को बुखार लगती है ।
पूरे नगर वासी बीमार पड़ जाते है दादा हो ss
राजा लोहगुंडी मन में सोचता है चाहे कुछ भी हो मैं जाऊंगा , अकेले ही जाऊंगा, इस प्रकार

मन में प्रण करता हैं राजा हो ।
अब राजा रे भैया
कसे है रन बेंदुल को
सोने की लगाम
सोने के पलैंचा
रेशम के कसना
चांदी के रकाब
मोती की कलगी
रोम रोम में हीरा जड़ें
ऐसे घोड़ा को सजाया है राजा ने
हो ss कैसे सजाया हे घोड़ा को राजा ने
चारों पैरो में नेवरा
नेवरा के ऊपर झंवरा
गिन गिनकर पुट्ठा में हीरा
बिजली जैसा श्रृंगार
सोने के डुमची
सोने का पलैचा
चांद सूरज मनिहारी
सोने के लगाम
नौ लाख के हार ,
पांच लाख की बिंदियां
रूप के रकाब
रेंशम के कसना
मोती के ताज
ऐसे घोड़ा को सजाया है राजा हो ss
हो ss अब राजा लोहगुंडी अपना श्रृंगार कर रहे है
क्या श्रृंगार किया है राजा ने ?
अंदर पहने ढीमर लंगोटी
उसके ऊपर चड्डी
चड्डी ऊपर शंकर धोती
उसके ऊपर फुर फुर जामा
उसके ऊपर अंगा
अंगा के ऊपर झंगा
झंगा के ऊपर भसम कोट का अंगा
उसके ऊपर बारा गाड़ी जिलही बख्तर
तेरह गाड़ी सरहू श्रृंगार

चौदह गाड़ी के बाना
ऐसे सज कर तैयार हुए है राजा लोहगुंडी हो ऽऽ
हो ऽऽअब साथ में भूत प्रेतों की फौज चली है लोहगुडी के !
कैंसी पलटन ?
सात सो सिंगी , नौ सो मटिया तेरा सौ भुतवा चुड़ैलिन साथ में तैयार हैं रे दादा हो ऽऽ
हो ऽऽ कैसे कैसे सिंगी तैयार हुए है साथ में ?
उताही सिंगी , छुताही सिंगी
अर्न डोर सिंगी, बर्न डोर सिंगी
अड़रामल सिंगी, कुकरामल सिंगी
जैतामल सिंगी, सुरतामल सिंगी,
ऐसे सिंगीनकी फोज तेयार हो गई
हो ऽऽ और अब सज गये है मटिया
अरन मटिया, बरन मटिया
बर्नडोर मटिया, अर्नडोर मटिया
अधासुर मटिया, बघासुर मटिया
उतहा मटिया, छुतहा मटिया
उड़ान मटिया, धसान मटिया,
कैसे मटियन की फौज तैयार हो गये भाई हो ऽऽ
हो ऽऽ कैसे सिंगी की फौज तैयार हो गयी ,कैसे मटिया के फौज तैयार हो गयी । अब भूत चुड़ेलिन भी सज धज गये हैं ।
कैसे नदी के नादिया
पनघट क पनिहारिन
अवघट के मसान
खोली घर के भुतवा
खोरी रास्ता के शैतान
घाट के घटवैया
ढौढरा के करिया
हार के हरकुल
सेमर के चुड़ैलिन
बामी के बासुक
मेड़ों के ठाकुर देव
ऐसे सब भुतवा सज गये हैं रे भाई्र हो ऽऽ
अब कैसे राजा लोहगुंडी
मॉ बहिन के पैर छूकर के
घोड़ा पर सवार रे भैया
सवार होकर चले है रे दादा

उस समय घोड़ा क्या बोलता है हो ss
हो ss क्या बोला है घोड़ा रन बेंदुल ?
कहता है सुनो राजन ?
कर्रो करो रागें बागें रे राजा
ढीली कर देव लगाम रे भेया
मेरे पीठ पर राजा अब हो जाओ सवार हो ss
और कहता है
मर्द ना छोड़े मर्दानी
सुअर न छोड़े चाल
खेड़ा राजा को छोड़ों रे
चाहे तन टूक - टूक उड़ जाय
हो ss ओर क्या बोल रहा हे रन बेंदुल ?
कहता है नामी मरै नाम को राजा
कायर मरै, बदनाम को भाई
क्या कायर बन के मैं राजा
कमरा अन्दर प्राण बचाऊं
अठारह गढ़ के राजा मारों
तेरह गढ़ के निधान रे राजा
चौदह गढ़ के छत्री मारों
नहीं रखो पीछे पैर रे राजा हो

हो ss इतना वचन बोलता है घोड़ा राजा से उसी समय राजा घोड़ा के मुंह में हाथ फेरते है चूम लिया है घोड़ा को ओर कूंद कर पीठ पर सवार हो जाते हैं!

कैसे धर - धर आंसू निकलते है रे भैया
मॉ कंकालिन बहिन बिंदरासन के
किस प्रकार रो रहे है सिसक सिसक
कर रो रहे हे दादा
नगर भर की लड़कियां रो ही है भाई
कैसे राजा अकेले चल दिये हरदी राज को हो ss

हो ss रखे हैं राजा हल्दी, चांवल जादू वाले अपने हाथ में हो !े नौ मत्ता भाला, वाघ मार कुर्रा, फंकमार बरछी,गीली बंजर कटार, नाग दौन तेगा,पांचों हथियार राजा रखे हे ओर चल दिये हैं रन बेंदुला को एड़ लगाय के हो ss ।

हो ss दौड़ा दौड़ पड़ गये, घोड़ा कुछ चलता है कुछ दौड़ता है और कुछ उड़ता है नदी, खाई, घाट,पहाड़ को कुदते जा रहा है घोड़ा रेन बेंदुला ।

कैसे पूरा दिन चलते हे रे भैया
रात भर चलते है
केसे माधो पहाड़ ,

सुमेर पहाड़,

कैसे कोईली कछार

हरियर पहाड़

कैसे वन बिंदरा पहाड़

करिया पहाड़

कैसे नौ रंगी पहाड़

केसे बजरंगी पहाड़

निकलते है जाते है दादा

घोड़ा रेन बेंदुल

नहीं थके भाई

और धमकी ददरा

वा हीरा नदी

चूहरी रे घटिया

राम झिरिया कोन्हा

अटक नदी, कटक नदी

करपाल नदी जोहिला

कैसे वन वन नकते हैं

केसे डोंगर को पार करता हे

केसे दादर में कुंदाता हे

कैसे नदी में उड़ रहे हे

रन बेदुल घोड़ा

साथ है मटिया

सिंगी और भुतवा

राजा लोहगुंडी की

कैसी फौज है दादा

कैसे जाकर के पहुंचे गये है

हल्दी राज की मेड़ो में हो ,

हो ऽऽ राजा लोहगुंडी हल्दी राज के मेडों में पहुच गये है जाकर के विश्राम कर रहे है ! केसे मेडों में विश्राम कर रहे हें राजा ।

कहता हे सरवर सागर बांध, धरम ताल अंधेरी, अंधयारी कुंआ, फूल फुलवारी, चम्पा मोंगरा, ताल तलैया , आम अमरैया,रैन चंदेंनी वहां राजा लोहगुंडी विश्राम कर रहे है रे भाई हो ऽऽ ।

हो ऽऽ तंबू गड़ा लिये है राजा घोड़ा को बांध दिया है राजा ने ! कैसे अपने ड़ेरा में राजा विश्राम कर रहे हें राजा हो ऽऽ

हो ऽऽ सब सिंगी भूत प्रेत बोले हैं राजा से ! आप विश्राम करिये, हम लोग शहर जाकर कुछ खाने पीने का सामग्री ले आयें। राजा उनको हुकुम दे रहे हैं! ंिसंगी भुतवा राजा रामदरबाई के शहर में घुस गये। हो ऽऽ कोई्र तेली से तेल ले रहा है, कोई्र कुम्हार के घड़ा ले रहा है! कोई्र

बनिया का चॉवल,आटा ,दाल ले रहा है तो कोई ले रहा है,अहीर से दूध ले रहा है दही घी ले रहा है , शहर भर के रोजगारीयों से लूटपाट कर रहे हैं सिंगी, भुतवा रे भाई ऽऽ।

कैसे तेलीन डोकरी के डिब्बा का तेल
कैसे जल्दी खत्म हो गया है
कैसे तेलीन डोकरी रे भाई
सिर पर हाथ रखकर रोती हे
कैसे कुम्हरा के घड़ा भैया
कहां से कहां चले जाते है
कुम्हरा अकबका कर
टज़ूख्ज़ निकाल देखता रहता हे
केसे बनिया के चांवल ,और दाल ,
पूरा टिना खाली हो गये
कैसे बनिया रे भाई
सीना ,पीट,पीट रो रहे है
ये सब क्या हो रहा है दादा
सामने रखे हुए समान
सूपा और टपरी
थाली और लोटा
गघरी और कढ़ाई
बने बनाये खाना
कपड़ा और लत्ता
कहां - कहां चले गये
कुछ पता नही चलता
कैसे हाहाकार मचा है
शहर भर में भाई
कैसे लूट रहे है सिंगी
भुतवा और चुडैल
कैसे रो रही है जनता
रामदरबई की रे भाई

हो ऽऽ राजा रामदरबई के पास प्रजा दौडे - दौडे आ रही है और कह रही है हम मर गये राजा। ऐसा कभी नही हुआ था । यह क्यों हो रहा है। टज़ूख्ज़ के सामने से समाग्रीयां लुप्त हो जाती है। खाना खाने बैठे तो भोजन से भरी थाली लुप्त हो जाती है । पहनने के कपड़े लुप्त हो जाते है। हमारे घर के लोग, लडकी, लड़का , बच्चा सब बेपर्दा हो गये है।

अब देखे है राजा रामदरबई अपने जादू से हो ऽऽ

हो ऽऽ क्या देखते है राजा ! देखते है ! राजा लोहगुंडी आ गये है । सखर सागर बांध, धरम ताल अंधयारी,आमा अमरैया मे रूके है राजा ! अब राजा रामदरबई चले है देखने हो ऽऽ

कैसा घोडा है रे राजा का
धरे है तीर और कमान रे भाई
कैसे चले हे सखर सागर बांध में दादा
जाकर पहुंचे है आमा अमरैया में हो
सोचते हैं रामदरबई
कैसे के बैरी को मारूं
समाने अगर जाता हूं
हाथा पाई्र हो जाएगी
इसके साथी दोस्त
मुझे मार डालेंगे
इनकी वजह से नही बन रहा
कुछ बेईमानी करनी पड़ेगी
इस प्रकार मन में सोचते हैं राजा रामदरबई रे भाई ।

हो ss जाकर तालाब के पास ओट में छिप गया रामदरबई ! कहता है । अभी तो आयेगा बैरी हाथ मुंह धोने पानी लेने उसी समय मार दूंगा । किस प्रकार शिकारी की तरह पीछे बैठे हैं राजा रे भैया !

अब वहां पर भैया
राजा लोहगुंडीं
युद्ध करते - करते रे दादा
थक गये रहे भैया
अपने मन में सोंचते है
कैसा बेकार लग रहा है।
सब सिंगी भुतवा
गांव में चले गये
अकेले क्या करूगां
अच्छा नही लग रहा
थोडा टहलकर आउंगा
इस तालाब में हाथ मुह धोकर आंउगा हो sss

हो ss इस तरह सोचकर । अपने मन से राजा लोहगुंडी चल दिये तालाब की तरफ अकेले रे भाई ss

अब कैसे रे भैया राजा लोहगुंडी
जाकर पहुंचे थे तालाब के किनारे
कैसे देख रहे है तालाब के पानी को
किस प्रकार हंस, मछली
तालाब में किलोल कर रहे हैं।
कैसे बकुला पक्षी

गुंदला भीठ में बैठा है
मछलियों का इन्तजार कर रहा है
कैसे कुतरी मछली और मेंढक
पानी में डुब - डुब करते है
शिला उपर बैठकर
कैसे देखते हें राजा रे भाई
और कैसे वहां से छिपे - छिपे
राजा रामदरबई रे भैया
निशाना लगा रहे है राजा के हो ऽऽ

हो ऽऽ राजा लोंहगुंडी तालाब की सुंदरता को देख रहे थे और मन में खुश हो रहे थे । सोचते हैं अपने मन में बहुत थका हुआ हूं , वह हाथ पांव धोकर , पानी पीकर मन को हल्का करना चाहता था। ऐसा सोचकर राजा तालाब मे घुस रहे हैं रे भैया ऽऽ।

किस प्रकार पानी में उतारे है पैर राजा ने
कैसे शिला पर बैठकर चूल्लू में भरा है पानी
कैसे धो रहे हैं हाथ मुंह राजा
उसी समय ताक कर छोड दिया
बाण रे बैरी ,
हाय ऽऽ कैसे तालाब की भीट पर गिर गया राजा हो ऽऽ

हो ऽऽ बैरी राजा रामदबरई ने धोखा से राजा लोहगुंडी को मार दिया। बाण जाकर उनके सीने के आर पार उतर गया । कैंसे हाय हाय कहकर गिर गया राजा। कहता हे तुम कौन दुश्मन हो । धोखा से क्यों मारा। धोखा क्यों किये हो । फिर भी थोडा पानी पिला दो प्यासी आत्मा निकल रही है । इस प्रकार रो - रो कर कह रहे है राजा लोहगुंडी हो।

होऽऽ आवाज सुन कर दौडें है राजा राम दरबई । चुल्लू मे पानी लेकर पिला रहे है । एक घूंट पानी पीकर राजा ने प्राण त्याग दिया। उसे देखकर खुश हो गये राजा रामदरबई रे भाई।

अब किस प्रकार सोंचते है मन में राजा
इसके भूत की सेना भारी है
लाश का पता नहीं लगना चाही
इसका कोई उपाय करना पडेगा
इस प्रकार मन मे सोचकर रे भाई
उठाकर लाश को
लाद दिया है अपने घोडा के पीठ पर
और चल दिये अपने महल की तरफ
बारह पुरूष के गढ़ढा खोदकर
लाश को गढ़ढा में डालकर ऊपर से
मिट्टी डलवा दिया है राजा ने

गोबर की हेल रखवा दी हे दादा।

किस प्रकार गोबर के ढेर लगाये है

इस प्रकार लाश को छिपाकर राजा को खतम कर दिया !

हो ss शाम के समय रे भैया।

जब आये हैं सिंगी भुतवा । जब देखे हैं कि तम्बू खाली है । उस समय में ढूंढने लगे आस - पास । कहां चला गया राजा कौन उड़ाकर ले गया । इस प्रकार मन में सोच रहे हैं।

हो ss जब जाकर देखते है तलाब की भीट पर खून बह रहा है उसे देखकर कहते हैं कोई दुश्मन राजा को मार कर ले गया ! अब सब सिंगी रो रहे है हो ss

हो ss कैसे रो रहे है भैया

सिंगी और भूत

वन की चिड़िया

अब कहां से पायेंगे

राजा को भाई

क्या मुंह दिखाएंगें

लोहरीगढ़ में दादा

मां पूछेगी

तो क्या बताएंगें।

बहुत बड़ी समस्या खडी हो गई ।

अब क्या करें

कैसे समझा रहे है घितवा और ठूठी चुडैलिन हो ss क्या बोलती है घितवा तुम सुन लो रे भुतवा सिंगी क्यों रोते हो । जाओं ढूंढों राजा की लाश को ढूंढकर लाओ।

गांव ढूंढो रास्ता ढूंढो

अंदर और बाहर ढूंढो

पहाड़ के पत्थर में ढूंढो

नदी, नखा, में ढूंढो

ताल , तालाब में ढूंढो

अकाश की तरैया में ढूंढो

हाट बाजार में ढूंढो

महल ओर अटारी में ढूंढो

कहीं तो मिलेगा

जहां मन लगे वही ंढूंढो

मगर राजा को ढूंढो

हो ss कैसे बोली है घितवा। राई, रत्ती,तिनका, दाना - दाना, में ढूंढ लो क्यों नही मिलेगा । जाओ जल्दी जावो । अब चले दिये हैं सब भूत प्रेत सिंगी हो ss।

किस प्रकार चले है भूत प्रेत सिंगी रे दादा

जैसे राई के दाना वेसे बिखर गये हे भाई

कैसे गांव रास्ता घर के बाहर ढूढं रहे है दादा
केसे हाल बेहाल हो रहै है सिंगी भूत भैया
केसे लौटकर आ रहै है सिंगी भूत भैया
कहीं कुछ पता नहीं लगता, राजा की लाश का हो ऽऽ

हो ऽऽ थक गये है सिंगी, अपनी हार मानते हैं भूत भी क्या करें लौटकर तंबू पर वापस आ गये हे कहते है स्वर्ग पताल सब देख लिए कुछ पता नहीं चलता क्या करें सब अपनी हार मानकर बैठ गये भाई ऽऽ ।

हो ऽऽ तब बोलती है ठूठी चुडै़ैलिन चल रे घितवा अपन ढूंढ़ने चलें नहीं तो ये भूत और सिंगी बोलेंगे ये कुछ नहीं किये ! कैसे चली है ठूठी चुड़ैलिन औेर घितवा राजा लोहगुंडी को ढूंढ़ने हो ऽऽ।

हो ऽऽ कहती है ठूठी चुड़ैलिन सुन रे घितवा तुम बन जाना अतरा मक्खी और जाकर फूल में घुस जाना जब रानी हिरौली फूल सूंघेगी उसी समय उसकी नाक में घुस जाना और वहां से पेट में चली जाना मैं पेट मलने वाली डोकरी बनकर पहुंच जाऊंगी इस प्रकार सलाह करके दोनों चल दिये हो ऽऽ ।

अब चल दिया है घितवा
अतरा मक्खी बनके
क्या कहना दादा
भन्न भन्न जाती है
रानी के महल में
महल के बगीचा में
फूल में रे दादा
घुस के रे बैठ जाती है
किस प्रकार चाल खेलती है
घेतवा रे दादा
जब हिरौली कन्या
फूल को सूंघती हे
उसी समय में भैया
झट से रे घितवा
नाक अंदर घुस गई
नाक अंदर से भाई
पेट मे चली जाती है
अब क्या कहना भाई
अकल बकल हो रही है
हिरौली रे दादा
हलचल मच गई पूरे महल में भाई ऽऽ
हो ऽऽ दौड़कर आये राजा क्या हो गया कुछ नजर वजर तो नहीं लगी ।

राज भर के वैघ

जुड़ कर आ गये दादा

कोई दवा देते है

कोई झाड़ फूंक कर रहै हे

कोई मंत्र फूंक

कोई्र जल उतार रहा हे

सब अपने अपने दांव पेच कर रहे हे

सब कुछ कर के हार गये

मगर पेट दर्द नहीं मिटती हे हो sss

सब हार मानकर चले गये हो ss

हो ss उसी ही समय पर घुसे है नगर में टूटी चुड़ैलिन एक दुलिन डोकरी के वेश मे सिर पर तेल का डब्बा धरे कैसी अवाज देते आ रही हे ss ।

हो ss कैसे आवाज लगा रही हे डोकरी कहती है पेट मलवा लो पेट जिनके पेट में दर्द हो मलवा लो , ऐसा कहकर घूम रही हे ! चुड़ैलिन हो हो ss़ कैसे खवर लग जाती है राजा रामदरबाई को कहता हे जाब कोई्र बुलाकर लाओ डुकरो को अब चले हे सिपही बुलाने डोकरी को भाई्र ss ।

कैसे आ गई डोकरी महल मा

पेट मलने के लिए

रखकर डिब्बा में तेल

कैसे गये हे रानी हिरौली के पास

देखकर हिरौली को

अकल बकल हो रही हे

तब बोले डोकरी

तुम बाकी लोग सब

बाहर चले जाओ राजा

यहां कोई्र मत रहना

कैसे सबको भगाकर डोकरी हो ss

हो ss जब सूना पड़ गया तो दरवाजा बंद कर डोकरी रानी को लिटाकर उसके पेट में हाथ फेरती है।ड़ोकरी के हाथ के रखते ही रानी के पेट का दर्द्र समाप्त हो गया ,रानी खिल खिला कर हंसने लगी रानी डोकरी से कहती है हिरौली कन्या मॉ मेरी लाज रखी तुमने मेरे ऊपर ऐहसान कीया नहीं तो दर्द के कारण मर जाती , कहां से आयी हो कहां हे तुम्हारी डेरा । मै दूर गांव से आई्र हॅू । सरवर सागर बांध में मेरा डेरा हे मै यही पेट मलाई वाले काम करती हॅू इस प्रकार वातें हो रही हे रानी ओर बुढ़िया की रे भाई्र ss ।

अब कहती हे बुढिया

ऐ री बाई हिरौली रानी

बो राजा लोहगुंडी

तुम्हारे लिए आया रहा
उसको या तुम्हारे राजा
कोन जाने कहां नहीं कहां
छुपा के रखे हे
तब कहती हे रानी हिरौली रे दादा !

क्या कहती है हिरौली कहती हे क्या बताऊं तेरे से माता राजा को मारकर, उसके शरीर को आंगन में बारा पुरूष के गढ़ृडा खोदकर गड़ा दिये हे ऊपर से गोबर के थाल बंधवा दिया है ।

ऐसा सुनकर बुढ़िया हो ss

हो ss तब कहती हे बुढ़िया हो ss । अब मै जाती हॅू तुम्हारी पेट दर्द करे तो आ जाना उसी बगीचा में जहां पर डेरा हे मैं रात में नहीं आ सकती बुढ़िया हो गई हॅू ! इस तरह बोल के बुढ़िया अपनी डिब्बा उठाकर चली जाती है । अब जाके तंबू में चुड़ैलिन दाई!

बुढ़िया को रे भाई्र
आकर घेर लिये सब सिंगी भूत प्रेत
और कहती हे न ठूटी दाई
कुछ पता चला कि नही
कैसे हसं हसं ठूटी दाई बताय रहीं हे हो ss
हो ss क्या बता रहीं हे ठूटी चुड़ैलिन
कहती है सुनो रे तुम सिंगी भूत प्रेत
राजा की लाश का पता लग गया है

कहां सब कहते हे कहां है जल्दी से बता दो री दाई कहती है । राजा रामदरबाई ने धोखा देकर राजा को मार डाला और उसकी लाश को ले जाके आंगन में गढ़ृढां खुदवाकर गड़ा दिया हे चौकीदार पहरा में लगे है इस प्रकार लाश को छिपाकर रखा है राजा रमदरबाई हो ss

हो ss अब सबेरे सिंगी भूत प्रेत गुससा से किल बिलाने लगे किस प्रकार से हो राजा को निकालकर लाना है अब चले है सिंगी भूतवा के फौज हो ss ।

चले हे सिगी भूत प्रेत
कुत्ता ,बिल्ली बन करके
मक्खी और भुनका होकर
आंधी तूफान बन कर
पानी ओर बादल बन कर
चिड़िया ,कीड़ा बन कर
कीट और पंतगा बनकर
पवन अर पानी बनकर
कैसे चल दिये हे भैया
छा गये हेै पूरे महल में
घुस गये शरीर में
चौकीदार पहरेदार के

नाक से हवा बनकर
कैसे सो गये चौकीदार
वे भूल गये रे दादा
कैसे बिछाकर चादर
आंगन में सिंगी
हटाये हे गोवर रे भैया
मिटटी झारे है दादा
खोल डारे हे दादा
हटा लिए मिटटी
अब निकाले है राजा की लाश को
कैसे निकाल के बाहर रखे हे हो ऽऽ
हो ऽऽ सिंगी भूत गढढा से खोद खोद
के सब मिटटी को बाहर कर देते हे

राजा की लाश को बाहर कर लेते हे और गडढ़ा को फिर से बराबर कर देते हे । एक तिनका भी बाहर नहीं छोड़ते इस तरह साफ कर देते हे अब उस लाश को रख के अपने डेरा में आ जाते हे हो ऽऽ ।

हो ऽऽ केसे राजा को ढूढं कर ले आये सिंगी भूत प्रेत कैसे अमृत कुंड से पानी ले आये हे केसे राजा के मुह में डाले है अमृत पानी और कैसे बेल काठ का डंडा लाकर राजा को सुंधा दिये हे राजा लोहगुंडी उठ कर बेठ गये हो ऽऽ ।

पूछने लगे क्या क्या हुआ था। राजा क्यों मर गये रहे ! राजा को सब हाल समाचार सुना रहे है रे भाई्र ऽऽ ।े

अब सरवर सागर बांध में
राजा लोहगुडी के तंबू में
कैसे नाच गाना हो रहा है दादा
कैसे आनंद मना रहे है सिंगी
कैसे नाच रहें है भूत प्रेत
अपने राजा को ढूंढ लिये हे
इसी खुशी पर सब खुशियां मना रहे हे हो ऽऽ।

हो ऽऽ वहां राजा रामदरबई के महल में फिर से हिरौली कन्या के पेट में दर्द होने लगी। फिर कलबली हो गई । कहती है अपने मन में न हो न बुढिया के पास ड़ेरा में चला जावे। अब चले है हिरौली अपनी सब सखियन के साथ में हो ऽऽ।

हो ऽऽ कैसे हिरौली कन्या आई हे सवर सरवर सागर बंधा में । लगै है डेरा। नाच रहै है सिंगी भूत। वहां पहुंच कर हिरौली कन्या रे भाई ।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

जब देखी है चुडैलीन
हिरौली कन्या को भैया

झट से बुढिया बन के
जाकर के लड़की पास
कहती है क्या है रानी
आधी रात के
कैसे चले आये
कहती है पेट फिर से
दर्द करने लगा दाई
थोडी मल दे बुढिया दाई
मर रही हूं
दर्द से हो ऽऽ

कहती है । आ, आ जा अंदर तम्बू के अंदर चलो ! तुम्हारे पेट के दर्द अभी समाप्त हो जाएगा । कैसे घुसी है हिरौली तम्बू के अंदर।

हो ऽऽ जिस समय में नजर पड़ी है राजा लोहंगुंडी की दोनों की नजरें टकरा गई । उसी वक्त क्या कहना । महुआ के डुभरी के समान खुश हो गये। अंदर ही अंदर मन में मुस्काते हैं राजा लोहगुंडी ने रानी की बांह पकडकर पलंग में बैठा लिया । कहता है । तुम तो मेरी पत्नी हो सात भांवर के फेरा लिये है साथ में । क्यों शर्मा रही हो। हिरौली कन्या शरमाकर बातें करने लगी । अपनी सुख दुख की भाई ।

अपने अपने दुख सुख को
किस प्रकार बता रहे है
दोनों रे दादा
कैसे खिल खिलाकर हंसते हे
अपने दर्द भूलकर के हो ऽऽ

हो ऽऽ अन्दर मौजमस्ती हो रही थी। तम्बू के बाहर, साथ की सहेलियां राह देख रही है । कहती हैं क्या करने लगी रानी, कब तक पेट मलावाएगी। कोई एक जाओ देखकर आओ क्या कर रही है । अब देखती है झांककर लड़कियां तम्बू के अंदर सखियां हो ऽऽ

हो ऽऽ ये क्या हो गया । ये रानी कोई राजा के साथ मजे से सो रही है, क्या इसके पेट में दर्द है । सब संखियां भाग गयी महल में । जाकर राजा रामदरबई को खबर देती है रे भाई ऽऽ।

जब सुने है राजा रे रामदरबई
गुस्सा के बजह से थर्रा गये।
हुकुम फेर दिया फौज को
सब फौज तैयार हो गई रे भेया
हाथी और घोड़ा
लाव और लश्कर
पैदल सिपाही
सिंगी भूत

सज गये हे दादा
सज गये हैं राजा
किये है श्रृंगार
लड़ाई के रे भाई
कैसे जाकर घेर लेते है राजा लोंहगुंडी को ss
हो ss किस प्रकार फोज ने घेर लिया है। तंबुओं को सात दिशाओं से घेर लेते है । एक चिड़िया भी नही घुस सके न निकल सके ।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)
अब यहां रे राजा
लोहगुंडी भैया
अपनी लुगाई की गोदी ऊपर सिर
रख के सोए है
कुछ परवाह नही है
जगा रही है हिरौली
झिकझोर रही है भाई
लेकिन नही जागता
गजब हो गया दादा
हैरान हो गई हिरौली हो ss
हो ss जगाये - जगाये हार गई हिरौली नही जागे राजा । क्या करूं कहती है । किस तरह जगांऊ।
हो ss अतरा मक्खी बनकर के राजा के नाक में घुस रही हिरौली । जब छीके आई तब राजा जागे है । कहते हैं राजा क्यों जगा रही हो । क्या बात है।
कहती है । देखो तो राजा सिर के ऊपर दुश्मन के फौज आ गई । और तुम सो रहे हो। तब राजा निकलकर देखेत है रे भाई ss।
हो ss जब दिये है हुकुम सिंगी भूत प्रेत को जब छूटें है सिंगी भूत प्रेत मटिया । उस वक्त रानी रैना हो गयी फोज में ।
कैसे ठान लिये है लड़ाई रे भैया
सिंगी अर भुतवा के
कैसे खून कीे धार बह रही
एक घंटा में रे दादा
किस तरह रामदरबई की फौज
नष्ट कर दिये है रे सिंगी
अब बचे है राजा रामदरबई
बढा के अपन घोडा को भाई
जब ललकारे है राजा लोहगुंडी को
अब निकले है अपन श्रृंगार पहन कर के
कैसे दोनों राजा आमने सामने हो गये निकाले है अपने - अपने हथियार । बरछी और

भाला तेगा और कटार , चला रहे है । एक दूसरे के ऊपर।

हो ss कैसे गर्द - मसान हो रहे है । लात के गुरदा । मुक्का के मुरदा । धरती पर गढ़ढा हो गये पत्थर पिस गये । अकाश मे धूल उड़ रही ।

चांद सूरज छिप गये

हो ss ऐसी लड़ाई मच गयी एक स्त्री के पीछे रे भाई ss

हो ss राजा लोहगुंडी लड़ते - लड़ते गुस्सा हो गये । जिस वक्त में पटके है उठाकर राजा रामदरबई को। उस समय में टज़्रूख्ज्ञ से प्राण निकल गये राजा के । अब तो खुश हो गये सब लोग हो ss

कैसे खुश हो गये

भूत प्रेत और सिंगी

चुडेलिन आरै घितवा

राजा और रानी

अब राजा लोहगुंडी

सोलह सौ लड़कियां को

छुड़वा ददेतं हैं

लड़कियां बहुत खुश

हो गयी हो

हो ss राजा नेलड़कियों को छुडवा दिया। जितनी लड़कियां कैद में बंद थी। राजा रानी को आसीस देकर चली गयीं अपने - अपने घर । अब किस प्रकार घर वापस जाने की तैयारी हुई रे भाई । हो ss तब रानी हिरौली कहती है । राजा से क्या बोलती है हिरौली राजा से ! अपन तो मिल गये । सुख शांति से रहेगें । इनके पत्नी, बच्चे कलप - कलप मर जायेगे । इनको जिंदा कर दो।

कैसे अमृत पानी छिड़क के राजा रामदरबई और उसकी पूरी फौज को नयी जिंदगी दे दी राजा ने हो ss

अब उठ कर अपने डेरा में

राजा लोहगुंडी के

साथ में है रानी

हिरौली कन्या

वापस हुए अपनी राजधानी को

कैसे खबर लिये है सिंगी

राजा रानी आ रहे है

कैसे खुशी हो गये भैया

रैयत और राजा

कैसे आनंद उत्साह से हो रहा है हो ss

हो ss राजा लोहगुंडी वापस लौट के आ रहे है । सब जनता रैयत खुशी हो गयी। सुख से दोनों राजा - रानी रहने लगे।

जैसे उनकी बनी। वैसी सबकी बने हो ss

0000ध्000

राजा हीरा क्षान सिंह ख़ी

जय सेवा जय बड़ा देव,

राम नाम प्रेम का तारा , राम बिना सब जग अंधियारा

राम मिलेंगे ना बारंम्बारा, चक्र सुर्दशन है रखवारा

जल थल धरनी रचे, खड़े - खड़े अगाास

बिन थामा थुनी के , सरग थमे अगास,

दिया लगे न बाती, चन्दा सूरज के बरै मसाला

धन धन रे मालिक, तीनों लोक बनाने वाला

भूखे को भोजन, प्यासे को पानी

भूले को मारग अंधे को लाठी बताने वाला

बिना ड़ांड़ी तराजू के तौल रहा है संसारा हो sss

हो कैसे शारदा री माई

घरी भर हुई जा सहाई,

जिव्हा में बैठ जा ओ दाई

भूले अक्षर देवे तैं बताई

अब गाय के सुनाथों

हीरा खान क्षत्री ला

कैसे गोंड़ क्षत्री रे दादा

अपन जोर जांवर ले

कैसे जोधन के लड़ाई लड़े हैं हो sss

इजई के बेटा बिजई,

बिजई के बेटा ठाकुर देव ,

ठाकुर देव के बेटा श्री देव,

श्री देव के बेटा पालोगढ़ लिंगो,

पालोगढ़ लिंगो के बेटा कारी कामा ,

कारी कामा के बेटा हीरा खान सिंह कारीकामा

राजा कारी कामा एक दिन नेताम राजा तपेसिरिया के पास रैया सिघोला गढ़ गये. वहां पर किसी बात पर उनका वाद विवाद हो गया.

देवबली गोंड़ राजा कारीकामा ने एक दिन अपने वस्त्र - अस्त्र, शस्त्र उतारकर अपने खरदा को देवता के स्थान में रख कर देहरी में बैठे थे. उन्होंने अपने शरीर के सभी वस्त्र उतारकर जमीन में रख दिये और बाहर पाखाना करने बैठ गये ।

उसी समय राजा तपेसिरिया के दूतों ने आकर राजा के सिर को काट दिया और उसे दरवाजे की चौंखट में ठोंक दिया.

राज के घोड़े का नाम गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन के पीला था. घोड़ा घुड़सार में बंधा था. घोड़ा अपना बंधन छुड़ाकर बाहर निकल आया.

वहां सोने के झूले में कैन्ना कम्माल हीरो अपनी साठ सहेलियों के साथ झूल रहीं थीं. घोड़ा अपने मन में सोच रहा था. की मैं हीरा गढ़ से अपनी पीठ में राजा को लेकर आया था. अब खाली पीठ कैसे जाऊंगा.

कैन्ना कम्माल हीरो सोने के झुला में झूल रहीं थीं. कैन्ना कम्माल हीरो को घोडा गिद्व बाघ बछेड़ा ने देखा. तो घोड़ा अपने मन में सोचने लगा की मैं हीरा गढ़ से अपनी पीठ में राजा को लेकर आया था. अब खाली पीठ कैसे जाऊंगा.

कैन्ना कम्माल हीरो सोने के झुले में झूल रही थीं. घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा ने कैन्ना कम्माल हीरो को अपनी औंठों में दबा लिया और रैया सिंघोला से चलता बना. पूरे नगर में हाहाकार मच गया की घोड़ा कैन्ना को लेकर भाग गया हैं. रैया सिंघोला के सभी लोग हाथ मींजते रह गये. घोड़ा आठ दिन नौ रात तक चलता रहा.

ताई गढ, तुई गढ़,

भागू टोला,

नौ लाख छानियों में

बसी गोंड़वानी,

हीरा गढ़ के राजा रैया सिंघोला में मारे गये. घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा मुर्गे की बांग के साथ पौ के फटते ही रैया सिंघोला के सिरपुर नगरी हीरा गढ़ में पहुंच गया. जहां राजा कारीकामा का लड़का हीरा खान सिंह जन्म ले रहे थे.

घोड़ा हीरा खान सिंह की मां धम्माल घैलो के पास जाकर खड़ा हो गया. घोड़ा दरवाजे के पास जाकर खड़ा हो गया. कैन्ना कम्माल हीरो सिसक - सिसक कर रो रहीं थीं. रोने की आवाज सुनकर रानी धम्माल घैलो घर से बाहर निकलीं.

रानी को देखकर घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा ने औंठ में दबाये हुये कैन्ना को जमीन में रख दिया. कैन्ना को देखकर रानी अचंभे में पड़ गयीं.

रानी घोड़े से पूंछती हैं हे घोड़ा तुम्हारी सवारी कहां गई. तुमने इस कन्या को कहां से पाया हैं. घोड़ा बोला रानी साहिबा राजा मारे गये रैया सिंघोला में !

वहां राजा तपेसिरिया की बेटी कैन्ना कम्माल हीरो झूला में झूल रही थीं तो मैं उसे उठा कर ले आया हूं. ले जा दाई इसकी सेवा करना ।

मेरा सवार तो रैया सिंघोला में शहीद हो गया है. उसके बदले उसकी बेटी से राजा हीरा खान की शादी करा दो.

रानी धम्माल घैलो ने

नगर के लड़के - लड़कियों

हीरा खान के दोस्त,

इनहरिया, किनहरिया,बसुरिहा,

सिट्टादांत, मंहगू टूरा, घोड़सू,

मंदपरसू, अैजू, लेजू, मंदलैजू,

बोइखरिहा, मुनगातरिहा, पीपरतरिहा

और उनके साठ जंवरिहा,

सभी सियाने ,मर्द लांघा,
असड़िया का बेटा भुसड़िया,
भुसड़िया का बेटा कोल भसेड़ा,
कोल भसेड़ा का बेटा मृद लांघा,
इन सभी बाईस गढ़ों के व्यापारी ,कर्मचारी ,
तेईस गढ के जमींदार
और राज्य के सभी बूढे, बुजुर्ग
मिलकर राजा हीरा खान सिंह की
शादी में शामिल हो गये.
आंगन में भांवर पड़ी
वे दोनों बहुत छोटे थे.
एक ही मां से दोनों दूध पीते थे.
एक ही मां से लाड़ प्यार पाते थे.

वे धीरे - धीरे जवानी की ओर बढ़ने लगे. उन दोनों को यह याद ही नहीं की उन दोनों की शादी बचपन में ही हो गयी है. वे दोनों एक दूसरे के साथ भाई बहन के समान बर्ताव करते थे.

जब वे जवान हो गये और शादी के लायक हो गये. तो वे गांव बस्ती में देखते की उनके बराबर के लड़के - लड़कियों की मंगनी हो रही है, किसी की सगाई तो किसी की शादी हो रही है.

रानी कम्माल हीरो भी शादी के लायक हो गयी है.

रानी सोचती है कि मैं भी जवान हो गयी हूं. अच्छी - अच्छी बातें कर लेती हूं , मेरा माथा भी चौड़ा है.,पैर भी सुंदर है, मैं भी अपना घर बसाना चाहती हूं., और पराये घर से नाता तोड़ना चाहती हूं .

मेरी सभी सहेलियां जवान हो गयीं हैं. वे अपने सजने के लिये साड़ी, महावर, वंदन, टिकली संभाल कर रख रही हैं.

एक दिन रानी कम्माल हीरो सोचती है. की मैं बड़े घर की लड़की कहने को तो हूं पर हमारे साथ जवान हुयी सखी सहेलियों की शादी हो गयी हैं , वे अपने पति के साथ सास - ससुर के घर में रहने लगीं हैं. उनके एक - एक , दो - दो बच्चे भी हो गये हें. और एक हम हैं की अभी भी झूला में झूल रहे हैं।

रानी ऐसा सोचते हुये अपना सिर हिला रहीं हैं और मन ही मन पछता रहीं हैं ! उसी मय बोड़राहिन ने रानी को देखा की रानी अपना सिर हिला कर कुछ सोच रहीं हैं. वह रानी के पास आई और रानी से पूंछा ये रानी तुम किस बात की चिंता कर रही हो. तुमको कौन सी तकलीफ हो गयी है तुम अपने मन की बात हमें बतलाओ !

तब रानी ने कहा
बोड़राहिन हमारी सभी
सखी सहेलियों की शादी हो गयी हैं.

वे अपनी - अपनी ससुराल चली गयीं हैं.

अपने पति के साथ

सास ससुर के घर में रहने लगीं हैं.

उनके एक - एक , दो - दो ,

बच्चे भी हो गये हैं.

और एक हम हैं की अभी भी झूला में झूल रहे हैं.

तब बोड़राहिन ने कहा कि हे रानी मैं एक बात कहती हूं. वह यह की लड़कियों की शादी जीवन में एक बार होती हैं बार - बार नहीं।

तब रानी ने कहा बोड़राहिन हमारी शादी कब और किसके साथ हुयी है. हमको तो पता ही नहीं हैं ऐसा सुनकर बोड़राहिन जोर - जोर से हंसने लगी।

उसने हाथ जोड़कर विनती करते हुये रानी से कहा की रानी साहिबा अपकी शादी बचपन में राजा हीरा खान सिहं के साथ हो गयी है।

ऐसा सुनकर रानी

गुस्से में हड़बड़ा गई

और कहा की बोड़राहिन

जवान संभाल कर बात कर

एक बार कह दिया तो कह दिया

दोबारा कहा तो

खड़े - खड़े जमीन में गड़वा दूंगी ,

तुम्हारी ऐड़ी में दिया जला दूंगी

तुम्हारी खाल खींचकर उसमें

भूंसा भरवा दूंगी.

पांच कोड़ा मार कर

शहर से बाहर करवा दूंगी.

तब बोड़राहिन रानी से बोली रानी जी आपको मेरी बात पर विस्वास नहीं है तो रानी बोली तेरी बातों में मैं कहां से विस्वास करुं , मैं बचपन से उनको भैया - भैया कहते आ रही हूं. आज तुम उनके बारे में ऊट - पटांग बातें कहती हो. इसके कारण मुझे गुस्सा आ गया था.

तब बोड़राहिन ने कहा रानी मैंने यह बात हवा में नहीं कही आपको विस्वास न हो तो बगीचे की बूढ़ी मालिन से पूंछ लो. वह आपको सही - सही बात बतला देगी.

इतना सुनते ही रानी गुस्सा में वहां से चल पड़ीं . वे गुस्से में सात खंड़ नौ दुर्ग से उतर रहीं हैं. रानी महल से उतर कर बगीचा में आई. वहां लड़के - लड़कियों की भीड़ लगी थी.रानी चलते - चलते बगीचा में आ गई और बगीचे में पहुंचकर मालिन को बुलाने लगीं।

आवाज सुनकर बगीचा की मालिन आई उसने देखा रानी सोलह श्रृंगार किये हुये थीं. उनकी दस अंगुलियों में दस अंगूठियां पैरों से बिछिया की झनकार आ रही थी. रानी ने अपने शरीर में ओढ़नी पहन रखी थी. उनके वस्त्रों के नाम चारम छीरा जिसके चारों खूंट में हीरे जड़े थे. नौ लाख छानियों में बसे हीरा गढ की रानी कम्माल हीरो उन वस्त्रों में बहुत सुन्दर लग रही

थी।

उस बुढ़िया ने रानी से पूंछा रानी आपको किस बात की चिंता है ! मुझे बतलाईये! रानी बोली बूढ़ी माई मैं अपने मन की बात क्या बताऊं.

हमारे गांव के पास पड़ोस की सब जवान लड़कियों की शादी हो गयी है. हमारे साथ - साथ जवान हुयी लड़कियों के बाल - बच्चे हो गये हैं. मैं भी जवान हो गयी हूं मेरा भाई भी जवान हो गया है. परंतु न तो भैया की शादी के लिये कोई आ रहा है न ही मेरी शादी की बात कहीं पर चल रही है. दाई इसी बात को पूछने मैं आपके पास आई हूं ।

तब बूढ़ी दाई बोली ये बेटी तुमको किसी ने यह नहीं बतलाया की तुम यहां की बेटी नहीं हो तुम तो रैया सिंघोला के राजा तपेसिरिया की बेटी कम्माल हीरो हो. ये बेटी

ईजई का बेटा बिजई,
बिजई का बेटा ठाकुर देव
ठाकुर देव का बेटा श्री देव
श्री देव का बेटा पालो गढ़ लिंगो राय
पालो गढ़ लिंगो राय का बेटा कारी कामा
कारी कामा का बेटा हीरा खान सिंह

एक दिन राजा कारी कामा अपने बहन और बहनोई के राज्य रैया सिंघोला गये थे. देवबली कारी कामा अपने वस्त्र उतारकर मैंदान मैं पाखान करने के लिये बैठे रहे ! उसी समय धोखे से राजा कारीकामा के दूत सोमा - कामा ने राजा कारी कामा का सिर धड़ से अलग कर दिया. उस सिर को राज महल के दरवाजे पर ठौंक दिया ।

राजा कारीकामा का घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा अपने औंठों में तुमको दबाकर यहां ले आया था. उसके बाद यहां पर तुम्हारी भांवर करा दी गयी.

तब रानी बोली दाई मैं तो उनको बचपन से भैया - भैया कहते आ रही हूं. अब उनको क्या कहकर संबोधित करुंगी. तब बुढ़िया बोली बेटी अंजाने में कभी - कभी ऐसा हो जाता है हमने भी देखा है की कितनी लड़कियां पहले भैया - भैया कहतीं थीं बाद में वह उसका पति हो गया. तब रानी बोली दाई यह तो बहुत बड़ी समस्या है मेरे मुंह से उनके लिये पति शब्द कैसे निकलेगा.

तब बुढ़िया बोली ये बेटी तुम घर में जाकर नहा धोकर बड़े देव को फूल चढ़ाकर उनकी अर्चना करना उनको दाल - भात का भोग चढ़ाना । फिर राजा के लिये छत्तीस प्रकार की सब्जियां और बत्तीस प्रकार का भोजन जैसे-

राम चचेड़ा , कुंदरु भाजी,
अंदउरी बरी ,संदउरी बरी,
उस बरी को घी में तरी,
इस प्रकार उस बरी को सब्जी में
ड़ालकर अच्छा खट्टा मीठा भोजन तैयार कर देना .

जब राजा घर पर आयें तो लोटे में पानी लेकर घर के सामने खड़े हो जाना और अपने सिर पर लंबा सा घूंघट ड़ाल लेना और यह बोलना -

हे पति देव जल ग्रहण करें.

हे देवबली जल ग्रहण करें.

हे धनी राजा जल ग्रहण करें.

इन शब्दों को जब तुम तीन बार बोल दोगी तो तुम्हारी शर्म खतम हो जायेगी.

बुढ़ी मालिन दाई के बोलने से रानी कम्माल हीरो बड़े घरों की बहू जैसी श्रृंगार करके अपने सिर पर घूंघट ड़ालकर अपने सत खंड़ा महल को चली जाती हैं. वहां पहुंचकर रानी कम्माल हीरो अपनी सखी - सहेलियों को पुकारती हैं. वे कहती हैं . अरे चरिया - चोहरिया सभी मेरे पास आओ. तुम्हारा भाई भूखा है. उसके लिये जल्दी से भोजन तैयार करना है.

इतना सुनते ही रानी की सभी सहेलियां हड़बड़ी में सतखंड़ा वाले महल में पहुंच जाती हैं. उनके पीछे बोड़राहिन भी पहुंच जाती है. वह वहां जाकर देखती है की रानी कम्माल हीरो घूंघट ड़ाले बड़े घर की बहू जैसी दिख रही है. रानी दरवाजे पर खड़ी थीं. रानी कम्माल हीरो अपनी सहेलियों, चरिया और चोहरिया से कह रहीं है. तुम्हारा भाई भूखा आयेगा उसके लिये खाना बनाना है.

पानी भरने वाले पानी भर रहे हैं

दराई कुटाई करने वाले दराई कुटाई कर रहे हैं

आग जलाने वाले आग जला रहे हैं

राजा हीरा खान सिंह अपने साठ जवान मित्रों के साथ चित्र सागर के तलाब में स्नान कर रहे हैं.

राजबली , धनबली, जोरबली, देवबली राजा हीरा खान सिंह तलाब में स्नान ध्यान पूजा पाठ करके राज भवन की तरफ आ रहे हैं.

रानी कम्माल हीरो ने छत्तीस प्रकार का खट्टा , मीठा भोजन तैयार करके रखा है. राजा हीरा खान सिंह महल के आंगन में आते हैं . आंगन में साल वृक्ष लगा है. उसके नीचे तुलसी कोट में तुलसी लगी है. जिसमें बड़े देव विराजमान हैं. राजा जब वहां पहुंचे तो रानी कम्माल हीरो लोटा में जल लेकर सिर में घूंघट डालकर खड़ी थी . राजा के आते ही रानी बोलती हैं -

हे पति देव जल ग्रहण करें.

हे देवबली जल ग्रहण करें.

हे सिरपुरिहा जल ग्रहण करें.

रानी के मुख से इन तीन शब्दों के निकलते ही राजा घबड़ा जाते हैं. वे कहते हैं रानी को क्या हो गया. कहीं रानी को भूत प्रेत तो नहीं लग गया. तुरंत किसी गुनिया को बुलाओ जो रानी की झाड़ - फूंक कर सके.(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

राजा तुरंत लांघा के पास पहुंचे . लांघा घर में गरम - गरम जंड़री का पेज और कोईलार की भाजी पी रहा था.

राजा अचानक लांघा के घर के दरवाजे पर पहुंच गये और बोलते हैं - लांघा - लांघा ये लांघा चल - चल - चल कैन्या को भूत ने पकड़ लिया हैं. राजा की बात सुनकर पेज पी रहे लांघा को एक दम से हंसी आ गयी. जिससे लांघा ने अपने मुंह का कौर पास में बैठी लंघयाईन के ऊपर थूंक दिया. लांघा कहता है राजा कैसी बात कर रहे हो तो राजा ने कहा वह ऐसी - वैसी बात कर रही है.

तब लांघा ने कहा
राजा उस लड़की को
भूत - प्रेत नहीं लगे हैं.
यदि भूत - प्रेत लगे हौं
तो दो - चार जूते मारुंगा,
तो उसके भूत - प्रेत भाग जायेंगे.

इतना सुनते ही राजा घबड़ा गये. तभी भीतर से एक बूढ़ी मां निकली वह बोली ये राजा यह कैन्ना यहां की बेटी नहीं है. वह रैया सिंघोला के राजा तपेसिरिया नेताम की बेटी कैन्ना कम्माल हीरो है . ये राजा यह बात कोई बड़े - बूढ़े बता रहे थे. जिसको सुन कर रानी ने कहा ठीक है. इतना सुनते ही राजा को शर्म आ गयी.

राजा कहते हैं अब मैं महल में कैसे जाऊंगा. अपने ही घर में जाना हराम हो गया है. राजा हीरा खान सिंह घर नहीं गये वे दिन भर शहर में अपना समय काटने लगे।

इधर रनवास में जितनी चेरियां, चोहरियां थीं उनको रानी कम्माल हीरो आदेश दे रहीं हैं. ये चेरियां,चोहरियां आधी रात के समय मंड़ल पारा से एक चोर कुत्ता आयेगा. इसलिये सभी चेरियां बारी - बारी से सोना, ।

आघी रात के समय राजा हीरा खान सिंह रसोई घर में गये जहां साठ चेरियां सो रहीं थीं. जब वह रसोई घर में जा रहा था तब दरवाजे पर उसको बोड़राहिन मिली. बोड़राहिन की तीन हाथ की बोड़री थी. उसकी बोड़री निकली रही . बोड़राहिन चौदह हाथ के आंगन में यहां वहां घूम रही थी।

बोड़री को देखकर राजा का मन व्याकुल हो गया. राजा असमंजस में पड़ गया की अब क्या करैं तब राजा ने बोड़राहिन के चरण र्स्पश किये और महल में घुस गया ।

महल के चारों दरवाजे खुले थे. राजा ने सोचा अब क्या करें दासियां कहां सोई होंगी. राजा सोच में पड़ गये. राजा को बहुत जोर से भूख लगी थी. राजा रसोई घर में घुस गया ।

जब राजा चूल्हे के पास पहुंचा तो वहां पर पत्तलें पड़ी हुयी थीं. राजा अंधेरे में इस कोने से उस कोने में जाकर टकरा रहा था. राजा के पैर किसी के पैर पर पड़ रहे थे तो किसी के हाथ पर,इसके कारण घर के सभी लोग जाग गये.राजा शर्म के कारण चूल्हे के ऊपर जाकर बैठ गया।

कैन्ना कम्माल हीरो ने सभी दासियों को रसोई से बाहर निकाल दिया अैार अंदर से दरवाजे बंद कर दिये.रानी ने लैंप जलाकर उजाले में देखा की राजा हीरा खान सिंह चूल्हे के ऊपर बैठे हैं. रानी कम्माल हीरो ने राजा का हाथ पकड़कर राजा को जबरन चूल्हे से बाहर निकाल रही हैं. परंतु राजा शर्म के कारण चूल्हे से नहीं उतर रहे थे.

रानी कम्माल हीरो तंदरूस्त थीं उन्होंने राजा को पकड़ कर बाहर निकाल लिया. रानी ने एक मटका ठंड़ा पानी और एक मटका गर्म पानी से राजा के हाथ पैर धोये. उनके शरीर को पौंछा अैर कहा हे पति देव भोजन ग्रहण करें.

फिर रानी ने खट्टा - मीठा भोजन राजा को परोस दिया. राजा ने पांच कौर भोजन सानकर देवताओं को चढ़ाया और फिर आराम से भोजन ग्रहण किया. इस प्रकर राजा हीरा खान सिंह

क्षत्रीय और रानी कम्माल हीरो के विवाह वाली समस्या का समाधान हुआ.

राजा का काम राज्य को संभालना होता है. दूसरे दिन सुबह मुर्गा के बोलते ही कोहरा के फटते ही रानी की नींद खुल गयी.रानी ने उठकर घर में झाड़ू लगाई और इसके बाद दिन के निकलते निकलते एक मटका गर्म और एक मटका ठंड़ा पानी राजा की मुखारी तथा दातून के लिये रख दिया.

रानी राजा से बोलती हैं

पति देव टज़्रूख्ज़ी

कान धोने के लिये

पानी ग्रहण करें.

तब राजा ने अपने टज़्रूख्ज़ - कान धोये . शरीर की सफाई कर सूर्य भगवान की उपासना करने लगे. राजा ने भजन किया और जय बूढ़ा देव कहकर अपने काम में लग गये.

उसी समय मृद लांधा आते दिखे. राजा जी पान, सुपारी , लौंग, इलायची खा रहे हैं. तभी लांघा राजा के पास आकर राजा से नमस्कार करके उनके पास बैठ जाता है. वह राजा से उनके हाल - चाल पूंछता है ।

तो राजा कहते हैं लांघा यह सब अनजाने में हो गया हैं. तब लांघा ने सोचा की अब राजा को युवराज का पद दे देना चाहिये.तब राज माता बोलीं ये लांघा तुम तो सब जानते हो तो लांघा ने कहा रानी मां राजा का राज तिलक होना बहुत जरुरी है. बिना राजा के गद्दी सूनी पड़ी है. इसलिये

बाईस गढ़ के व्यापारी ,

तेईस गढ़ के जमींदार,

सभा में बैठने वाले

सभी सरदार इन सभी को बुलाकर राजा को पगड़ी बांधकर राज तिलक कर देना चाहिये. राज माता ने लांघा को आज्ञा दे दी. अब लांघा रानी की आज्ञा लेकर मुनादी करने शहर जा रहे हैं. लांघा मुनादी करता हैं और कहता हैं. भाईयो हीरा गढ़ के सभी सज्जनों राजा को युवराज के पद पर बैठाला जा रहा है. हाट, बाजार की साफ - सफाई करके पूरे राज्य को सजा दो.

ताईगढ़, तुईगढ़,

सिरपुर नगरी , भागू टोला

के सभी नागरिक खुश हैं.

जगह - जगह,

गांव - गांव

में ड़ोली सज रही हैं.

हीरा गढ़ के निवासी बहुत खुश हैं.

हीरा गढ के निवासी कहते हैं

कि इतने दिनों से हमारा राज्य

हीरा गढ़ बिना राजा का रहा है .

अब हमारे राज्य में

राजा हीरा खान सिंह
राज गद्दी में बैठ जायेंगे.
सभी नगरवासी आनंद मना रहे हैं.
लड़को के घर में विवाह जैसा आनंद
तथा नगर के मुखिया के घर में
महगिल हाथी बंधा है.
गड़े धन में जंग लग रहा है.
धन को घर में इकट्ठा कर रहे हैं.
घर में धन नहीं समा रहा है.
दूसरे गांव वालों को ललकार रहे हैं.

रानी कम्माल हीरो की सखी सहेलियां जिसमें नौ शादी सुदा और बत्तीस कुंवारी सभी मंगल गीत गा रहीं हैं. घर - घर में मंगल गीत गाये जा रहे हैं.

राजा हीरा खान सिंह अपने राजमहल में सज संवर रहे हैं. वे -
लोहा के साज बाज, लोहा के बाजू बंद
बारह मर्द की ताकत बराबर साजू
और तेरह मर्द की ताकत बराबर नकचुंदा
सिर पर पगड़ी बांधी है
उसमें रेशम की कलगी लगी है
सामने की कलगी लरौ - लरौ
पीछे की कलगी मीरो मीरो करती है.

राज महल की कचहरी की सजावट हो रही है. नवयुवतियां गारी गीत गा रहीं हैं. जिसमें बहुत निछावर आ रहा है. राजा के साथी हाथ में आरती रखकर गौना के गीत गगाते - गाते राज महल से कचहरी जा रहे हैं.

महरानी धम्माल घैलो
साफ थाली में
आरती जला रहीं हैं.
दही ,दूध, दूब,
गंगा जल पंचामृत,
तुलसी लेकर
राज तिलक की तैयारी हो रही है.
सभी लोग राज दरबार में पहुंचते हैं.

जहां लांघा और टहलू राजा हीरा खान सिंह को सोने के सिंहासन की व्यास गद्दी में ले जाकर बैठालते हैं.

महरानी धम्माल घैलो ने
दरबार में जाकर अपना सब
राज - पाट , खेती - बाड़ी,

गाय - बछड़े, धन - धान्य
सब कुछ राजा के
राज तिलक के समय सौंप दिया.
राज तिलक के अवसर पर
दासियां गीत गा रहीं हैं.
पूरे शहर में आनंद ही आनंद
जिसको परमानंद कहते हैं.
दिनों दिन आनंद बढ़ने लगा.
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
सुख से राज पाट चलाने लगे.
वे अपने राज्य की प्रजा से
पुत्रवत व्यवहार करने लगे हैं.
राजा राज सुख भोग रहे हैं.
ऐसा करते - करते बहुत दिन हो गये.

रैया सिघोला के गांव ,बस्ती,अड़ोस - पड़ोस मुहल्ला की बहू बेटियां अपने मायके आ जा रहीं हैं.

रानी कम्माल हीरो अपने मन में सोचती है और कहती है हे बूढ़ा देव, हे भगवान,इतने दिन हो गये मैं हीरा गढ़ की बेटी हूं. ब्रम्हा जी की कृपा से इसी घर की बहू बन गयी हूं.

सभी बहू - बेटियां
अपने मायके आती जाती हैं.
यहां तक की
लोहे के टूटे - फूटे टुकड़े
लोहार के यहां जाते हैं.
कांसा और पीतल के टुकड़े
तमेरा के घर जाते हैं.
सोना , चांदी के टूटे - फूटे टुकड़े
सुनार के घर जाते हैं.
सब दिन एक से नहीं रहते हैं.
इस शरीर में यदि कोई
बुराई आ गयी तो
मैं कहां जाऊंगी.

रानी कम्माल हीरो ऐसा सोचते हुये अपने मन में विचार करती हैं. वह मन ही मन कहती हैं कि जब राजा साहब कचहरी से वापस आयेंगे तो आज उनसे जरुर बात करुंगी और उनसे कहूंगी हे राजा मेरे स्वामी नाथ मुझे मेरा मायका दिखा दो.

ऐसा सोचकर रानी राजा के लिये छत्तीस प्रकार के भोजन तैयार करने लगती हैं.

इतने में राजा हीरा खान सिंह कचहरी से राज महल में आते हैं.रानी कम्माल हीरो सोने

के लोटे में गंगा जल लेकर राजा के पास पहुंची और उनसे बोली

हे राजबली, देवबली ,

धनबली, तेजबली

राजा जल ग्रहण करैं.

हाथ पैर धोकर भोजन ग्रहण करैं.

ऐसा रानी राजा हीरा खान सिंह से बोलती हैं.

राजा हीरा खान सिंह ने हाथ पैर धोये और भोजन करने बैठ गये. रानी ने छत्तीस प्रकार के भोजन राजा के लिये तैयार किये थे.

रानी ने छत्तीस प्रकार का

मीठा भोजन और बत्तीस प्रकार का

खट्टा - मीठा भोजन तैयार किया था.

स्वाद के लिये चटनी बनाई थी.

इसके साथ अंदौरी बरी,संदौरी बरी,

को देशी घी में तलकर

दाल में मिला दिया था.

राजा भोजन कर रहे हैं

भोजन बार - बार परोसा जा रहा है.

रानी चूल्हा के पास

बार - बार आ जा रहीं है.

रानी राजा को भोजन परोस रहीं हैं.

राजा ने भोजन करने के बाद

हाथ धोया और

लौंग, इलायची, पान , सुपाड़ी

खाकर राजा अपनी आसन पर

आकर बैठ गये

राजा के बाजू में

अलबेला हुक्का रखा था.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय हुक्का पी रहे हैं. रानी कम्माल हीरो राजा को खाना खिला - पिलाकर उनके पास आती हैं.

रानी अपने दोनों हाथ जोड़कर विनती करती हैं और कहती हैं - हे प्राण नाथ मैं आपसे एक निवेदन करना चाहती हूं. तो राजा बोले महरानी बताईये क्या बात है.

तब रानी बोली

हे पति देव

लोहे के टूटे - फूटे टुकड़े

लोहार के पास जाते हैं.

पीतल के टूटे - फूटे टुकड़े

तमेरा के पास जाते हैं.
सोना चांदी का टूटा - फूटा
सुनार के पास जाता है.
हे पति देव मेरी इच्छा है
कि आप एक बार
मेरा मायका दिखला देते.

राजा कहते हैं रानी जी सब बात करना पर ऐसी बात कभी मत करना. क्योंकी हमारी सात पीढ़ी के पूर्वजों के सिर रैया सिंघोला की चौखट में ठुके हैं. इस कारण से मैं वहां नहीं जा सकता.

ऐसा सुनते ही रानी मन ही मन में निराश हो गयीं. रानी राजा से कहती हैं राजा जी मैं यहां पर अच्छे से खाती पीती हूं. परंतु जब तक मां है तो मायका है और पति हैं तो ससुराल है. इस जीवन में अगर मैंने मां का घर नहीं देखा तो यह जीवन बेकार है. इससे अच्छा तो मर जाना हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
भोजन करके कचहरी को आ जाते हैं.
वहां राज महल में
रानी कम्माल हीरो
अपने जेवर ,गहने रखकर
फटे - पुराने कपड़े धारण करके
कोप भवन में आ जाती हैं.
रानी कोप भवन में जाते समय
अपने साथ एक टूटी खटिया
और फूटी घुरसी रखकर
आधी रात को कोप भवन के
अंधेरे कमरे में आ जाती हैं.

जब शाम को राजा राज महल में आये तो रानी कम्माल हीरो उनको कहीं नहीं दिखीं तो राजा सोचने लगे रानी इतनी रात को कहां चली गयीं हैं. राजा को रानी के बिना रात में नींद नहीं आ रही थी. राजा अपने पलंग से उठकर रानी का पता लगाने लगे. राजा ने पूरे राज महल और मोती महल में रानी को खोजा पर रानी नहीं मिली.

राजा हीरा खान सिंह मन ही मन में घबड़ाकर कोप भवन की ओर चले गये. राजा कोप भवन में जाकर देखते हैं तो वहां पर रानी टूटी खाट और फूटी घुरसी रख कर फटे - पुराने कपड़े पहन कर गहना, जेवरात अलमारी में रख कर बैठी थीं ।

राजा रानी को खोजतें - खोजते वहां पहुंच गये. वे अंधेरे में रानी से टकरा गये. जहां उनकी रानी साहिबा विराजमान थीं.

रानी की हालत देखते ही राजा घबड़ा गये. उन्होंने ड़र कर दासियों को आवाज दी की जल्दी से दीपक लेकर आओ. मेरे पैर में क्या लग रहा है. रानी की दासी चरिया और चोहरिया ने राजा को दीपक लाकर दिया.

राजा ने दीपक की रोशनी में रानी को देखा तो रानी टूटी खाट पर विक्षिप्त हालत में पड़ी हुयी थीं. जब राजा ने देखा की ये तो रानी साहिबा हैं. तब राजा ने अपनी शाल निकालकर रानी को उढ़ा दी.

राजा रानी से पूंछते हैं
ये रानी
तुम ऐसा वेश बनाकर
तुम कोप भवन में क्यों सोई हो.
किसने तुमको गाली दी है.
किसने तुमसे झगड़ा किया है.
किसने तुमसे क्या कहा है.
मुझको बतलाओ मैं उसको
जिंदा खड़े जमीन में गड़वा दूंगा.

उसकी खाल खींच कर उसमें भूंसा भरवा दूंगा.ानी झुंझलाकर बोलती हैं राजा आप चुप रहीये. मेरा सिर दर्द कर रहा है. राजा बोले रानी मैं तुम्हारी नाड़ी छूना चाहता हूं. इतना कहकर राजा ने रानी की नाड़ी पकड़ ली राजा धनबली , देवबली, राजबली, बोलते हैं. की रानी तुमको तुम्हारे मायके का भूत लगा है.

रानी ने अपना हाथ झटकारा और राजा से बोलती हैं राजा जी किसी का सिर दर्द करे या पैर आपको तो हमेशा मजाक ही सूझती है. तब राजा बोले रानी जी आप यहां पर कोप भवन में क्यों आई हो मुझको सच - सच बतला दो.

तब रानी बोलती हैं राजा जी आपको हम अपने सुख - दुख की बात बतलाते हैं तो आप उसे हंसी में उड़ा देते हो. पति और पत्नी दो शरीर पर एक अंग माने जाते हैं.

मैं आपको अपने माता - पिता के समान मानती थी. ब्रम्हा जी की इच्छा से मैं यहां की बहू बन गई. मेरे माता - पिता भाई बहन कैसे हैं . मैं नहीं जानती.

ऐसा कहकर रानी कम्माल हीरो अपने दोनों हाथ जोड़कर राजा से विनती करती हैं कि हे पति देव मी इच्छा मायके जाने की है. हे पति देव एक बार मेरी इच्छा पूरी कर दें. राजा बोले

रानी यह तो तिरिया हठ है ,
बालक हठ, जोगी हठ
और तिरिया हठ
ये तीनों कभी नहीं छूटते.
राजा रानी की दशा देखकर प्रण करते हैं
और कहते हैं कि रानी
मर्द न छोड़े मर्दागनी ,
सुअर न छोड़े खेत,
मैं गोंड़ वंश का क्षत्रीय राजा हूं
युद्ध में प्राण रहें या जायें.
राजा बोले रानी तुम अपनी

वेश - भूषा बदलो
अपने जेवरात पहन लो
खाना पीना खा लो ,
मैं आपको रैया सिंघोला
जरुर ले जाऊंगा.
परंतु इसके लिये
मैं अपनी मां धम्माल घैलो से भी आज्ञा ले लूं.
तब रैया सिंघोला चलते हैं.

रानी बोली राजा जी आप मुझे भुलावे में ड़ाल रहे हैं. कि मैं भूल जाऊं जिससे मैं न जा सकूं. रानी की बात सुनकर राजा खिल खिलाकर हंसने लगे. राजा ने कहा रानी आप मुझको गलत मत समझो मैं बूढ़ा देव की कसम खाता हूं जब तक मैं तुमको तुम्हारे मायके नहीं ले जाता तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगी. रानी ने देखा की राजा अपने ईष्ट देव बूढ़ा देव की कसम खा रहे हैं,तो मुझे अवश्य मेरे मायके ले जायेंगे.

इसके बाद रानी कोप भवन से उठकर राज महल में आ जाती हैं. राजा हीरा खान सिंह सोचते हैं कि मैंने अपने ईष्ट देव बढ़ा देव की कसम खा ली है । इसलिये अपनी मां से रैया सिंघोला जाने की आज्ञा ले लूं.

राजा राजमहल से
मोती महल की ओर जाते हैं.
वे मोती महल में
राज माता धम्माल घैलो से
मिलने जाते हैं.
मोती महल को जाते - जाते
सुबह हो जाती है.
मुर्गा बोलने का समय हो जाता है.
दिन निकल गया था.
राजा हीरा खान सिंह
मोती महल पहुंच जाते हैं.
मोती महल के शयन कक्ष में
माता धम्माल घैलो
सोने के पलंग पर
विश्राम कर रहीं थीं.

राजा जी राज माता के पास पहुंचकर बोलते हैं माता जी उठिये सुबह हो गयी है. राज माता ने अपने शरीर में शाल पिछौरा ओढ़ा और महल से बाहर आयीं.

राजा हीरा खान सिंह राज माता को हाथ जोड़कर विनती करते हैं. वे अपना माथा झुकाकर राज माता के चरण र्स्पश करते हैं. राज माता कहती हैं मेरे इकलौते बेटे इतने दिन बाद तुम आये । तुमको देखने के लिये मेरी टॉख तरस गयीं हैं. आज आप कैसे आये हैं.

तब राजा हाथ जोड़कर राज माता से बतलाते हैं कि माता जी आपकी बहू धम्माल घैलो अपने मायके जाने की तैयारी कर रहीं हैं. इसलिये माता जी आपसे आज्ञा लेने आये हैं.

ऐसा सुनते ही राज माता की टॉख में आंसू आ गये.राज माता कहती हैं बेटा सब बात करना पर रैया सिंघोला जाने की बात कभी मत करना ।

बेटे तुम मेरी
ऑखं के काजल ,
मेरी मांग का सिंदूर
बेटे तुम कहां जाओगे
सुनो बेटा रैया सिंघोला में
तुम्हारे खानदान की
सात पीढ़ियों के सिर टंगे हैं.
रैया सिंघोला दुश्मनों की जगह है.
जो रैया सिंघोला जाता है
वह लौट कर वापस नहीं आता.
रैया सिंघोला में हड्डीयों की बाड़ी
और कांटों का रूंधना है.
वे अपनी मां के सगे नहीं
बाप के विश्वास पात्र नहीं
रैया सिंघोला दुश्मनों की जगह है.
मैं तुमसे कैसे कहूं
कि तुम वहां जाओ

राजा हीरा खान सिंह हाथ जोड़कर एक पैर पर खड़े हैं । वे कहते हैं माता जी मुझे एक बार जाने की आज्ञा दे दे.

माता जी धर - धर - धर - धर रो रहीं हैं. की मेरा बेटा दुश्मनों की जगह रैया सिंघोला जाने के लिये अड़ा हैं. खड़े - खड़े राजा माता जी से आज्ञा मांग रहे हैं. मगर राज माता उनको आज्ञा नहीं दे रहीं हैं.

राजा बोलते हैं
दाई मुझको आज्ञा दे दीजिये
क्योंकी मर्द अपनी मर्दागनी नहीं छोड़ता,
सुअर कभी खेत खाना नहीं छोड़ता,
मैं गोंड़ वंशीय क्षत्रीय हूं
मैं भी अपना प्रण नही छोडूंगा
चाहे युद्ध में मेरे प्राण निछावर हो जायें.

राजा जी राज माता से कहते हैं माता जी आप अपने आंगन में एक तुलसी का पौधा लगा दें उस पौधे में रोज पानी छोड़ा करे जब तक वह तुलसी का पौधा हरा रहेगा तो आप समझना मेरा बेटा जिंदा है. जिस दिन तुलसी का पौधा मुरझा जावे उस दिन समझना मेरा बेटा युद्ध

में शहीद हो गया है.

इतना सुनते ही रानी मां की टॉख से मोती जैसे आंसू बहने लगे. राज माता कहती हैं बेटा अब मैं जान गयी हूं की मेरा प्यारा बेटा रैया सिंघोला जाये बिना मानेगा नहीं ।

राज माता बोलीं बेटा मना करना मेरा धर्म था । मानना न मानना तेरा काम, तब राजा हीरा खान सिंह बोले माता जी आप अपनी दसों इंद्रियों से मुझे रैया सिंघोला जाने की आज्ञा दे दें और कह दें की जा बेटा,

तब रानी मां रोते हुये कहती हैं की बेटा हीरा खान सिंह देवबली जा. ऐसा कहकर राज माता ने आज्ञा दे दी,तब राजा बोले माता जी मेरी तैयारी कर दो .

तब राज माता बोलीं चल बेटा राज महल में चल. ऐसा कहकर राज माता राजमहल में आती हैं राजा हीरा खान सिंह उनके पीछे - पीछे आते हैं. राजा जी और राज माता राज महल में आते हैं

राज महल में आकर राजा रानी से कहते हैं रानी आज का दिन काल का दिन समझो.

राजा अपनी रानी कम्माल हीरो से कहते हैं रानी रैया सिंघोला दुश्मनों की जगह हैं. वहां पर हमारी सात पीढ़ी के पुरखों के सिर टंगे हैं.

आपके मायके की सीमा में कांटों का रूंधना और हड्डीयों की बाड़ी लगी है.

मैं अपने देवी - देवताओं का होम धूप से तर्पण कर लूं । इसके लिये आप मुझे पांच मोहर दे दें और खूंटी में टंगी बैला आंखिन चुनिया निकाल कर दें . मैं जा रहा हूं हिम्मा कलार और हिम्मा कलारन के यहां जहां चटुआ कलार रहता है. इतना सुनते ही रानी कम्माल हीरो बड़े उत्साह के साथ पांच मोहरैं तिजोड़ी से निकालकर और बैला आंखिन चुनिया राजा को दे देती हैं.

राजा ने पांच मोहरें जेब में रखीं
और बैला ओखिन चुनिया को
बाजू में दबाकर
मखमल के जूता पहनकर
सिर पर शीश बंध की टोपी,
लोहे का जिरह बख्तर,
और लाहे के ही बाजू बंद
लगाकर हाथ में दुश्मनों
का बैरी शाल खरदा रखकर
राजा हीरा खान सिंह कलार पारा जाने लगे.
कलार पारा जाते समय
रास्ते में आवन गली ,
बावन बजार,टूरी हटरी ,
टूरन के लगे हैं दरबार,
राजा चले जा रहे हैं
उनके जूते से

चरमर - चिरमिर,
की आवाज निकल रही हैं.
नौ लाख छप्परों से बनी
गोंड़वानी में पहुंचकर
वे देखते हैं की गोंड़वाना का
शहर एक लाइन में बसा है
मकानों के एक छप्पर
दूसरे छप्परों से जुटे हुये हैं.

राजा चलते - चलते कुम्हार पारा पहुंच गये. कुम्हार पारा से राजा पहुंच गये कलार पारा जहां पर हिम्मा कलार औा हिम्मा कलारन रहती थी. राजा उनके घर पहुंच कर ये रे कलरा - ये रे कलरा कहकर आवाज लगाते हैं. उस कलार का घर एक घेरे में बना था ।

राजा वहां से चले और चटुआ कलार के घर पहुंच गये. चटुआ कलार की नई - नई शादी हुयी थी . उसकी नई - नई कलारिन अपने घर के आंगन में झाड़ा पौंछा कर रही थी.

उसी समय राजा हीरा खान सिंह चटुआ कलार के घर पहुंचे. कलारिन घर की सफाई में व्यस्त थी राजा ने अपने हाथ में रखे बैरी शाल खरदा को उनके घर के आंगन में गड़ा दिया.

उसी समय चटुआ कलारिन घबराकर घर से बाहर आयी और घर की परछी से झांक कर राजा को देखने लगी ।

राजा हीरा खान सिंह लोहे के साज बाज से सुशोभित थे. कलारिन अपने मन में सोचती है कि मर्द हो तो ऐसा हो,कलारिन ने इसके पहले इतना सुंदर और सजीला मर्द कभी नहीं देखा था.

राजा बोलते हैं कहां गया रे चटुआ कलार. तब चटुआ कलारिन बोली सरकार देश के मालिक कलार घर पर नहीं हैं. तब राजा बोले कलारिन तुम पांच मोहर लो और इस बैला आंखिन चुनिया में शराब भर कर ले आओ.

कलारिन अपने मन में सोचने लगती है आज हमारे घर देश के मालिक आये हैं वह ऐसा सोचती रहती है तभी राजा फिर से कहते हैं ये कलारिन कलार कहां गया है. तो कलारिन कहती है सरकार अन्न दाता कलार जंगल में जरवा काटने गया है.

कलारिन परछी से निकलकर आंगन में आती है और राजा से बैला आंखिन चुनिया मांग कर ले जाती हैं. चटुआ कलारिन अपने मन में सोचती है की आज राजा पहली बार हमारे घर में आये हैं . उनके स्वागत के लिये बिड़ी - तम्बाखू तो घर में नहीं है . तो राजा की सेवा क्या देकर की जावे .

ऐसा सोचकर कलारिन ने एक बोतल महुआ की फूल शराब राजा के सामने ला कर रख दी. और कलारिन राजा से निवेदन करने लगी की हे देश के मालिक बिड़ी समझो या तम्बाखू हमारे घर पर यही है.

तब राजा बोलते हैं ये कलारिन शराब पीना - पिलाना एक आदमी का काम नहीं है,यह दो चार आदमी के साथ बैठ कर पीने की चीज है.

तब कलारिन बोलती है महराज हम तो भट्टी तोड़ते ही पी जाते हैं. राजा हीरा खान सिंह

कलारिन को देख कर उस पर मोहित हो जाते हैं वह सोचते हैं की यह कलारिन अच्छी मस्त कलारिन है.

राजा कलारिन से शराब पीने के लिये पत्ता तोड़कर लाने के लिये कहते हैं. कलारिन राजा को नये - नये पत्ते तोड़कर लाकर दे देती है.राजा हीरा खान सिंह उन पत्तों का दोना बनाकर उसमें शराब ड़ाल कर शराब को हाथ में रख कर कहते हैं

जय बड़ा देव, ठाकुर देव,

मेरे पूर्वजों के देवता जागीये.

जिया जोगन , मिंया मोहन,

हुलक मार कटार, जागीये,

ठेला मार ठलुआ , जागीये.

ऐसा कहकर राजा उस शराब को पीने लगे. चटुआ कलारिन राजा को शराब पीते हुये देख रही थी. उसी समय राजा हीरा खान ने झुककर कलारिन का हाथ पकड़ लिया. राजा ने कलारिन के मुंह में शराब की बोतल लगा दी ।

कलारिन उस शराब को गटा गट करके पी गयी.जब शराब खतम हो गयी तो कलारिन कहती है राजा साहिब लोग क्या कहेंगे की चटुआ कलार की नई कलरिन राजा के साथ बैठकर शराब पी रही थी.

कलारिन को शराब का नशा छा गया वह शराब के नशे में झूमने लगी. तब राजा ने कहा कलारिन मेरी बैला आंखिन चुनिया भर कर ला दे. इतना सुनकर कलारिन परछी में चली गयी. कलारिन भट्टी में जाकर बैला आंखिन चुनिया में कई घड़े शराब भर रही है.ेकलारिन चुनिया में शराब भरकर राजा के सामने लाकर रख दी.

कलारिन शराब के नशे में धुत थी राजा को वहां से चलते समय मजाक सूझा तो राजा ने कलारिन की पीठ पर एक मुक्का जड़ दिया.

उसी समय कलार आ गया और उसने जरवा के बोझ को घर के एक कोनें में रख दिया. कलारिन की पीठ में राजा के मुक्का के पड़ते ही चटुआ कलार पसीना - पसीना हो गया. मुक्के की आवाज को सुनते ही कलार का दिल घबड़ा गया. कलार मन ही मन में कहता है कि अभी तो यह नई - नई है तो यह हाल हें जब यह पुरानी हो जायेगी तो न जाने क्या करेगी.

आज मैं अपनी पत्नी का तमाशा देखता हूं कि यह क्या - क्या करती है. कलार ने ऐसा विचार किया और बाड़ी में लगे सेमी के मंड़प में चढ़ गया. कलार अपनी कलारिन के रंग - ढ़ंग देखने के लिये सेमी के मंड़प में तो चढ़ गया । परंतु गुस्से के मारे वह कांप रहा था. उसके कांपने के कारण सेमी का मंड़प भी हिलने लगा.

कलार अपने मन में सोचता है की सेमी का मंड़प हिल रहा है इसके कारण में पकड़ जाऊंगा. सबको मालुम हो जावेगा तो क्यों न पत्ताली (छोटे टमाटर) की बाड़ी में घुसकर बैठ जाऊं.

ऐसा सोचकर कलार पत्ताली की बाड़ी में घुसकर बैठ गया. आंगन में कलारिन गोबर रखकर लीप रही थी. की उसी समय शराब लेने राजा आ गये थे. घर के अंदर शराब की भट्टी लगी थी.

राजा को शराब देने के चक्कर में वह भट्टी से शराब उतारना भूल गयी थी. उसने किसी

प्रकार राजा को वहां से बिदा किया और कलारिन शराब की भट्टी के पास गई और उसका गरम - गरम पानी निकाला और जहां कलार छुपा था उसी पत्ताली वाली बाड़ी में कलारिन ने गरम - गरम पानी फैंक दिया.

बेचारा चटुआ कलार गरम - गरम पानी के शरीर पर पड़ते ही तड़फने लगा. एक तो वह बड़ी में घुसा - घुसा वैसे ही परेशान था ऊपर से गरम पानी और पड़ गया. वह पानी के पड़ते ही हड़बड़ा कर खड़ा हो गया और कलारिन पर नाराज होने लगा.

वह कलारिन से कहने लगा तुमको दिखता नहीं है ? तो कलारिन कहती है हम तो सोच रहे थे की तुम तो जरवा काटने गये हो हमें यह थोड़ी मालुम था कि तुम यहां पत्ताली के बीच में छुपकर बैठे हो.

कलार बोला रूक जा तेरे को पत्ताली की मुंड़ी बतलाता हूं.कलार गुस्से में तो था ही वह उठकर कलारिन को घूंसों से मारने लगा. कलारिन की पीठ में दर्द होने लगा. दोनों में हाथपाई होने लगी.

कलारिन के घर पर चूल्हा में कढ़ी बन रही थी । कलारिन ने गरमा - गरम तीन चम्मच कढ़ी कलार के मुंह में ड़ाल दी. कलार का मुंह गरमा - गरम कढ़ी से भर गया. . कलार को अपने कपड़ों तक की खबर नहीं थी.(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

कलार घबड़ाकर पड़ोस के घर में जाकर घुस गया. उस घर की मालकिन दराई - कुटाई कर रही थी . कलारिन ने देखा की कलार बाजू वाले घर में घुस गया है तो कलारिन अपनी पड़ोसन को आवाज देकर कहती है.

ये पड़ोसिन तुम्हारे घर में बिजार घुस गया है और वह आनाज खा रहा है. इतना सुनते ही पड़ोसन एक मोटा ड़ंड़ा लेकर कलार को बिजार समझकर उसे दो ड़ंड़े जमा दिये. बेचारा कलार कहता है पड़ोसन क्या तुम्हारी टॉख फूट गयी हैं जो तुमने मुझे इस प्रकार से ड़ंड़ा मारा है.

इस प्रकार से राजा हीरा खान सिंह का पूरा दिन कलार पारा में गुजरा .

अब राजा हीरा खान सिंह कलार पारा से बैला आंखिन चुनिया लेकर राज महल की तरफ आते हैं. जहां पर नौ नारी , बत्तीस कुंवारी, छै आगर संगी ,सहेलियों के साथ रानी कम्माल हीरो रहती थीं.

राजा राज महल में पहुंचकर बोलते हैं. रानी कम्माल हीरो इस बैला आंखिन चुनिया को संभाल कर घर में रख दो. राजा कहते हैं रानी जी मेरे साठ जवान मित्र और तुम्हारी साठ जवान सहेलियों के लिये भोजन तैयार करना है.

तब तक सभी के साथ उठ बैठ लें उनसे सुख - दुख की बात कर लें । क्योंकी हम लोग अपने दुश्मनों की जगह रैया सिंघोला जा रहे हैं. जिवित रहे तो दुबारा मिलेंगे. यदि मर गये तो मिट्टी में मिल जाना ही बदा है.

इस प्रकार से

राजा और रानी

की बातचीत चल रही थी

कि उसी समय

असड़िया का बेटा भुसड़िया,

भुसड़िया का बेटा कोल भसेड़ा,

कोल भसेड़ा का बेटा मृद लांधा

को बुलाकर राजा हीरा खान सिंह जी कहते हैं

की ऐ लांघा मेरा तो रैया सिंघोला जाना पक्का हो गया है. तुम मेरे साठों जवान साथियों को बुला दो . दुश्मनों की जगह है रैया सिंघोला मैं अपने साथियों के साथ उठ - बैठ लूं. उनसे सुख - दुख की बातें कर लूं.

मैं स्नान करने जा रहा हूं तुम मेरे साथियों को खबर कर दो की मैंने बुलाया है. लांघा चला जाता है तो राजा रानी कम्माल हीरो से सोने का लोटा बुलवाता है और राजा स्नान करने चले जाते हैं. रानी कम्माल हीरो अपनी साठ सहेलियों के साथ भोजन तैयार करने में लग जाती हैं.

लांघा पूरे नगर अरैर मुहल्लों में मुनादी करवा कर सबको आमंत्रित कर रहा है. ताईगढ़, तुईगढ़, सिरपुर नगरी के लोग बाग राजा के जाने की खबर सुनकर चिंतित हो जाते हैं. प्रजा शोक मनाने लगती है की न जाने राजा कब वापस आयेंगे.

राजा हीरा खान सिंह

महल से निकल कर राज्य के

सागर,तलाब,बांधों में पहुंचकर

उन्हें प्रणाम करते हैं.

राजा कहते हैं मेरे पूर्वजो

तलाब, बांध सागर

मैं यदि जिवित रहा तो

पुनः आकर स्नान करुंगा

और मर गया तो यह संसार दुर्लभ है .

राजा अपने कंधे से धोती निकालकर बांध की दिवाल में रख देते हैं और लोटे को घाट में रखकर बांध में स्नान करने के लिये घुस जाते हैं. राजा बांध के पानी में तीन डुबकी लगाते हैं और बेल पत्री चढ़ाकर सूर्य भगवान को नमस्कार कर भजन पूजन करके अपने कपड़े बदलते हैं. राजा अपने कपड़ों की धुलाई स्वतः करते हैं. राजा उसी सोने के लोटे में पानी लेकर राजा अपने राज महल में आ जाते हैं.

रानी कम्माल हीरो राजा के लिये भोजन तैयार करवा रहीं थीं उसी समय राजा स्नान करके वापस आ गये. राजा ने रानी से ड़िब्बे में रखी हवन सामग्री बुलवाई. लोहे के चिमटा में आग मंगाई तथा बैला आंखिन चुनिया की शराब बुलवायी.

सभी पूजा की सामग्री लेकर राजा देवालय में चले गये. देवालय के देवता व्याकुल हो रहे थे. राजा ने उसी सोने के लोटे का पानी देवालय में सींच दिया. वे बैठ कर हवन करने लगे. शराब की धार से देवताओं को तर्पण दे रहे हैं. . उसी समय राजा के सभी देवता साक्षात विराजमान हो जाते हैं. जैसे

ब्राम्हण के देवता ब्रम्ह देव,

बनियों के देवता शंकर जी,
तेलियों के देवता मशान भूत,
अहीरो के देवता मिरचुक देव
इन सभी देवताओं को
राजा शराब की
धार से तर्पण देते हैं.
राजा जय बड़े देव
बूढ़ा देव ,गोंड़ समाज के देव
निशा भंगी,मरका देव,
जय हो दुल्हा देव,
दुलखुरी माई,
रात माई,मुड़खुरी माई,
जय हो गांव नगर के देवता
ठाकुर देव ,
सोलह सौ जिया
सत्रह सौ जोगनी,
ठेला मार ठेलुआ,
हुलक मार कटार,
तुल्ही , बख्तर,रक्त बूढ़ी छुरी,
गिद्वामल फरसा,
की राजा जय बोलते हैं.
राजा अपने पूर्वजों का स्मरण करते हैं
और कहते हैं.
मेरी रैया सिंघोला के लिये चढ़ाई हो गयी है.
हे तारा देव आप मेरा साथ देंगे की नहीं.
खरदा की अन्न माता,
बड़ा देव , बूढ़ा देव
देवालय में विराजमान हैं.
सभी देवता देवालय के
कण - कण में विराजमान हो जाते हैं.
सभी देवता राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय से
वार्तालाप कर रहे हैं.
सभी देवता राजा से कह रहे हैं
राजा जी जब तक आप
हम सभी देवताओं को अपने साथ रखेंगे.
आपका कुछ भी अनिष्ट नहीं होने देंगे.

यदि आपने हम सभी देवताओं को
अपने साथ से अलग कर दिया तो
फिर उस समय की बात हम लोग नहीं जानते.
देवताओं ने कहा राजा जी
जहां आप का पसीना बहेगा
वहां हम लोग अपना खून बहा देंगे.
सभी देवताओं ने
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय से
यह बात कही.

सभी देवताओं से वार्तालाप करके राजा ने पूजा अर्चना की और बैला आंखिन चुनिया को रख कर देवालय से बाहर आ गये.

उसी समय राजा के साठों साथी एक - एक करके आंगन में जमा हो गये. मृद लांघा ने यथा योग्य सभी को आसन प्रदान किया.

राजा हीरा खान सिंह अपने सोने के सिंहासन की व्यास गद्दी में अपने सभी साठ साथियों के सामने बैठ गये. राजा जी अपने सभी साथियों को समझाते हैं कि मेरे भाईयो मैं तो चला रैया सिंघोला जहां पर कहते हैं की हड्डीयों की बाड़ी ,कांटों का रूंधना लगा है.

वहां के लोग अपने मां - बाप के सगे नहीं हैं. रैया सिंघोला अपना दुश्मन देश है मैं वहां पर जा रहा हूं. जिवित रहा तो आकर वापस मिलूंगा और यदि मर गया तो मिट्टी में मिल जाऊंगा.

राजा सभी साथियों से कहते हैं की जब अपने राज्य से कोई जाये तो उसे पांच कोस तक छोड़ने जाना और जब कोई अपने राज्य में आये तो उसे पांच कोस पहले तक लेने जाना.

राजा अपने साथियों से कहते हैं. ये भाईयो आप लोग किसी के साथ लड़ाई - झगड़ा मत करना । मिल जूलकर राज्य को चलाना तथा मेरी मां धम्माल घैलो को समझा कर रखना.

राजा अपने साथी घरसू से बोलते हैं ये भैया घरसू इस बैला आंखिन चुनिया कर शराब सभी साथियों में बांट दो.

घरसू और परसू
बैला आंखिन चुनिया की
शराब सभी साथियों को बांट रहे हैं.
राजा के साठों साथी
चौदह वरन के आंगन में बैठ कर
अपने सुख- दुख की बातें कर रहे हैं.
बिड़ी - तम्बाखू खा पी रहे हैं.
बैला आंखिन चुनिया से
शराब निकाल कर पी रहे हैं.
राजा के साठों साथी
राजा को समझाते हैं

राजा महराज आप परदेश जा रहे हैं
अपने रास्ते आना
और अपने रास्ते जाना .
किसी के साथ लड़ाई झगड़ा मत करना.

इतना कहकर राजा के साठों साथी आपस में बातचीत करने लगे. बिड़ी तम्बाखू खा पी रहे हैं .

उसी समय रानी कैन्ना कम्माल हीरो अपने मायके जाने की तैयारी में अपनी सभी सहेलियों के साथ लगी हैं. रानी अपने भाई - बहनों के लिये ठठरी - खुरमी, भजिया बना बनाकर सोने के बरतन में रख रहीं हैं.

रानी की सहेलियां रानी को रो - रो कर समझा रहीं हैं. की ये भौजी राजा जी हमारे इकलौते भाई हैं. उनको जल्दी से जल्दी वापस लेकर आ जाना.

रानी कहती हैं सुनो सहेलियो तुम्हारे भाई को मैं जल्दी से वापस लेकर आ जाऊंगी. रैया सिंघोला में हड्डीयों की बाड़ी और कांटो का रूंधना लगा है.

इतनी बातचीत करते - करते राजा के जाने का समय हो गया. राजा के साथी आंगन में बैठे थे उसी समय बड़राहिन बाई लोटे में जल लेकर राजा के साथियों के पास आई और बोलती है - भाईयो

देवबली, धनबली, राज बली ,
जोर बली राजा हीरा खान सिंह की
आज्ञा है की सभी साथी
भोजन करने के लिये चलें.
राज महल में राजा की बिदाई की
तैयारी बहुत धूम धाम से हो रही है.
इतने में नगर के
ताईगढ़, तुईगढ़,
सिरपुर नगरी , भागू टोला
के सभी नागरिक राजा के
रैया सिंघोला जाने पर शोक मन रहे हैं.

राजा हीरा खान सिंह अपने साठ साथियों के साथ चौदह बरन के आंगन में भोजन करने के लिये पंगत में बैठ जाते हैं.

भोजन में छत्तीस प्रकार का मीठा
और बत्तीस प्रकार का भोजन बना है.
उसके साथ सब्जी में
बामी मछली की ठूंसी,
टहलते हुये सांभर का मटन,
उचटते हुये मयूर की चटनी बनी है
स्वाद के लिये अंदोरी बड़ी, चंदोरी बड़ी,

उस बड़ी को घी में तरी,

रानी उसे खाना में मिल रही हैं.

खाना खाने वाले बार - बार

खाना मांग रहे हैं.

खाना परोसने वाले बार - बार

चूल्हा के पास आ जा रहे हैं.

इस प्रकार राजभवन में भोजन बना था. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय अपने सभी साथियों के साथ बीच में बैठकर भोजन करने बैठ गये.

रानी की सहेलियां राजा के साठों साथियों को खट्टा - मीठा भोजन परोस रहीं थीं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय अपने सभी साठों साथियों के साथ भोजन करने बैठे थे वे सभी प्रकार के भोजन में से थोड़ा - थोड़ा भोजन निकालकर जमीन में रख रहे थे.

वे पांच कौर भोजन सानकर

देवताओं को अर्पित करते हैं.

राजा के दिये भोजन को

देवताओं ने ऊपर ही ऊपर

ग्रहण कर लिया.

राजा ने अपने देवताओं को

भोजन कराया.

उनको पानी दिया .

अब राजा स्वतः भोजन करने बैंठ गये.

उनके साथ उनके सभी साथी भोजन कर रहे हैं.

राजा हीरा खान सिंह

ने भोजन करके

अपने हाथ - मुंह धोया

और जाकर खूंटे से

सोने की करिहारी निकालकर

उसे घुड़शाल में ले गये.

राजा घुड़शाल में

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला को देखते हैं.

जब से राजा कारी कामा रैया सिंघोला से युद्ध करके वापस आये थे । तबसे घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा शाहकरन घुड़शाल में बंधा था.

राजा अपने हाथ में घोड़े की लगाम पकड़कर घुड़साल के दरवाजे पर सोने की करिहारी लेकर पहुंच गये. जब राजा हीरा खान सिंह ने घुड़साल का दरवाजा खोला।

तो घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राजा को देखकर हिनहिनाने लगा. राजा देवबली ने जाकर घोड़े की पीठ में हाथ फेरा तो घोड़ा बोलता हे राजा देवबली आप पर कौन सी विपत्ति आन पड़ी है

मैं इतने सालों से घुड़शाल में बंधा हूं . आज तक आपने कभी भी मेरी पीठ पर हाथ नहीं

फेरा ,

तब राजा बोलते हैं
घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
मुझे रैया सिंघोला जाना है .
तुम मुझे साथ दोगे की नहीं.
तब घोड़ा बोला
राजा जी जब मेरी जवानी रही
तब तो आपने रैया सिंघोला में
चढ़ाई की बात नहीं की
आज जब मैं बूढ़ा हो गया हूं
तो आप रैया सिंघोला में
चढ़ाई की बात कर रहे हैं.
रैया सिंघोला में आपकी
सात पीढ़ी के सिर टंगे हैं.
तब राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय कहते हें
मर्द अपनी मर्दागनी कभी नहीं छोड़ता ,
सुअर कभी खेत नहीं छोड़ता
और क्षत्रीय कभी भी
अपना क्षत्रीय धर्म नहीं छोड़ता है.
वह चाहे खेत में रहे
या युद्ध के मैदान में
वह अपने प्राण देने में
कभी भी पीछे नहीं रहता.

तब घोड़ा बोला राजा जी जब तक आप मेरी पीठ पर सवार रहेंगे. तब तक आपको कोई भी तकलीफ नहीं होगी . जिस दिन आप मेरी पीठ छोड़ देंगे उस दिन की बात मैं नहीं जानता. राजा हीरा खान सिंह से घोड़ा ऐसे बोल रहा था.

राजा हीरा खान सिंह घोड़े को चौदह बरन के आंगन में लेकर आते हैं . राजा जी घोड़े को खाना खिला रहे हैं. वे घोड़े को घी के लौंदा में चना की दाल मिलाकर खिला रहे हैं.

राजा घोड़े के गले में बारह बैलों की घंटी और तेरह बैलों का श्रृंगार कर रहे हैं. राजा जी घोड़े को सजा रहे हें. काले पीले चांवल घोड़े के सिर पर लगा रहे हैं.

इसके बाद राजा हीरा खान सिंह अपना श्रृंगार कर रहे हैं. राजा बारह मृद के साजू और तेरह मृद के बाजू बांध रहे हैं. लोहे के साज बाज और लोहे के जिरह बख्तर पहनकर राजा ने अपने पैरों में मखमल के जूते और शीश बंध की टोपी जिसमें कलगी लगी थी.अपने सिर में धारण की,

राजा हीरा खान सिंह
देवताओं को काले,पीले

चांवल मार रहे हैं.
राजा जय बड़ा देव ,
जय गोंड़वाना कहकर
देवताओं को अपने वश में कर रहे हैं.
घोड़े के चारों हाथ ,पैरों में
हथियार चाकू , छुरी बांध रहे हैं.
देवी - देवताओं को घोड़े के माथे में बैठाल रहे हैं.
राजा हीरा खान सिंह कं अंगों में
बड़ा देव, बूढ़ा देव, ठाकुर देव,
दूल्हा देव, दुलखुरी माई, रात माई,
मुड़खुरी माई , नारायण देव

ये सभी देवता राजा हीरा खान सिंह के अंग - अंग में विराजमान हो गये. जब देवताअेां ने सुना की राजा रैया सिंघोला जा रहे हैं । तो देवताओं का मन व्याकुल हो जाता है.

राजा हीरा खान सिंह अपनी ससुराल जाने की तैयारी कर रहे हैं. कैन्ना कम्माल हीरो अपने मायके जाने की खुशी में सोलह श्रृंगार कर रहीं हैं.

राजा हीरा खान सिंह जल्दी - जल्दी तैयारी कर रहे हैं. उनके साठों साथीयों के मन में खलबली मची है कि राजा जी से पुनः उनका मिलन हो पायेगा की नहीं.

इतने में राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय ओर कैन्ना कम्माल हीरो दोनों रानी मां के चरण र्स्पश करते हैं और कहते हैं माता जी हम लोगों को जाने की आज्ञा दैं.

राजा के वचन सुनकर
राज माता जोर जोर से
हिलक - हिलक कर रोने लगती हैं.
रानी कहती हैं बेटा
तुम मेरे इकलौते पुत्र हो,
जंगल में रहने वाले
भैंस के बिजार के समान,
गाय के सांड़ के समान
मेरा बेटा आज हम सभी को
छोड़कर युद्ध में लड़ने जा रहा है.
राज माता धम्माल घैलो
अपनी टॉखा से
मूंगा, मोती से आंसू बहाते हुये
राजा हीरा खान सिंह और रानी कम्माल हीरो को
रैया सिंघोला जाने की आज्ञा
और आर्शावाद दे रहीं हैं.
राज माता कहती हैं.

जा बेटा जुग - जुग जी

रण भूमि में तेरी सदा विजय हो

राजा - रानी बार बार राज माता के

चरण र्स्पश करते हैं.

राजा कहते हैं माता जी आप शांत हो जायें

किसी भी प्रकार की चिंता न करें.

राज माता कहती हैं

जा बेटा होशियार रहना

पूर्वजों का नाम चलाना

ऐसा सुनकर राजा - रानी

राज माता से बिदा लेकर जाने लगते हैं.

राजा हीरा खान सिंह घोड़े पर सवार होकर हाथ में बैरी शाल खरदा रक्त से बुझी चाकू लिये जिरह बख्तर को अपने बाजू में दबाकर राज महल से निकल पड़े.

राजा के साठों साथी और रानी की साठों सहेलियां के मन उदास हो जाते हैं . वे राजा को नगर के बाहर तक छोड़ने जाते हैं.

नौ लाख के छप्परों में बसे गोंड़वाना की प्रजा कहती है. राजा रानी दुश्मनों के देश रैया सिंघोला जा रहे हैं. सभी राज्य के निवासी और प्रजा मन ही मन पछता रही हैं. प्रजा राजा का अभिवादन कर रही है और कह रहे हैं राजा जी जल्दी से जल्दी वापस आना.

राजा जी सबसे हाथ मिलाते हुये चले जा रहे हैं. राजा रानी अपने साठ मित्रों और सखी - सहेलियों से मिलकर खुशी - खुशी रैया सिंघोला जा रहे हैं.

रानी कम्माल हीरो सोलह श्रृंगार करके चंद्रमा के समान निखर रहीं हैं. रानी की दसों अंगुलियों में दस जोड़ी मुंदरी, पैरों में बिछिया की झनकार, उनके वस्त्रों के नाम हाल्हा कलोरो जो आधे रास्ते में लहरा रहा हैं, धारण करके चली जा रहीं हैं.

रानी कम्माल हीरो मायके जाने की खुशी में सबके आगे - आगे अपनी सहेलियों के साथ चली जा रहीं हैं. चलते - चलते सभी लोग नगर की सीमा पर पहुंच जाते हैं.

तब सभी युवक - युवतियां और प्रजा के लोग राजा से बोलते हैं राजा जी अब हम लोग यहीं तक आप का साथ दे सकते हैं. हम लोगों का अभिवादन स्वीकार करैं. सभी युवक - युवतियां राजा - रानी के हृदय से मिलकर भेंट - भलाई कर रहे हैं. युवक - युवतियां कहती हैं भैया - भौजी जल्दी से लौटने की दया करना.

राजा हीरा खान सिंह बोलते हैं भाईयो आप लोग राज - काज देखो . सभी लोग मिलकर रहना. मेरी मां को समझाते रहना . जिवित रहे तो फिर मिलेंगे और यदि मर गये तो इस शरीर को मिट्‌टी बदी है. ऐसा कहकर राजा सबसे बिदाई्र लेकर चल देते हैं.

मायके जाने की खुशी में रानी कम्माल हीरो आगे - आगे चल रहीं हैं उनके पीछे - पीछे राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घोड़े पर सवार होकर चल रहे हैं. घोड़ा गिद्‌व बाघ बछेड़ा सरपट भागा जा रहा है. उसके भागने से फर - फर की आवाज आ रही है.

राजा देवबली कैन्ना से बोलते हैं कैन्ना अपने पैर जल्दी - जल्दी बढ़ाओ . तुम्हारा मायका

रैया सिंघोला बहुत दूर हैं. रानी रैया सिंघोला जाने के लिये तैयार तो हो गयीं पर चैत का महिना चल रहा था . कड़कड़ाती धूप थी. कड़कड़ाती धूप में रानी चल रहीं थीं.

रानी के घर में खाना तक दूसरे लोग बनाते थे. रानी कभी घर से बाहर तो निकली नहीं थीं. पर बेचरी रानी कम्माल हीरो क्या करे ? बहुत ज्यादा गर्मी थी चारों ओर से लू चल रही थी. जमीन बहुत गर्म हो गयी थी. जिसके कारण रानी के पैरों में फफोले पड़ गये थे.

राजा हीरा खान सिंह बोलते हैं कि रानी जल्दी - जल्दी चलो पर रानी के पैरों में चलन हो रही थी. रानी बोली महराज आपकी सवारी घोड़ा है . आप तो आगे बढ़िये. राजा ने घोड़ा को आगे बढ़ाया घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला आगे बढ़ गया.

घोडे की लगाम पकड़कर राजा चलने लगे घोड़ा भी हिरन की छलांग लगाकर दौड़ने लगा. घोड़ा सांय - सांय करके उड़ने लगा. घोड़े ने राजा से कहा राजा जी आप मेरी लगाम छोड़ दें . मैं आपको अभी रैया सिंघोला पहुंचाता हूं. राजा ने जैसे ही घोड़े की लगाम छोड़ी घोड़ा आकाश में उड़ने लगा.

यहां रानी कम्माल हीरो बहुत कष्ट के साथ चल रहीं थीं. उनके दोनों पैरों में फोड़ा पड़ गये थे. अब रानी कम्माल हीरो थक जाती हैं और चलने में असमर्थ हो जाती हैं. तो चारों हाथ पैरों से वे चलने लगती हैं. चलते - चलते रानी एक घनघोर जंगल में प्रवेश कर जाती हैं.

जहां पर बिलकुल सुनसान था.
उस स्थान पर
न चिड़िया चांव करें
न कौवा कांव करें.
रानी बियावान जंगल में
चली जा रहीं थीं
उनके हाथों में भी फोड़े पड़ गये थे.
तब रानी कम्माल हीरो ने
रोना शुरु कर दिया .
देखने में जंगल बिलकुल बियावान सुनसान
कोई जीव - जन्तु की आवाज तक नहीं आ रही थी.
बेचैन होकर रानी चिल्ला - चिल्ला कर रोने लगीं.
रानी रोते - रोते हतास हो गयी.

रानी अपने मन में सोचती हैं की यदि मेरे को मालुम होता की मेरा मायका इतनी दूर है तो मैं यहां पर कभी नहीं आती. रानी के चारों हाथ - पैरों में फोड़ा हो गये. रानी रोते - रोते व्याकुल हो गयी. उनमें और आगे चलने की बिलकुल ताकत नहीं थी.

अब बेचारी रानी ने घिसट - घिसट कर चलना चालू कर दिया. रानी घिसटते - घिसटते बीच जंगल में पहुंच गयीं. सूर्य नारायण अस्त हो गये तो रानी रास्ता छोड़कर घने वन में प्रवेश कर गयीं.

वहां पर रानी को एक बक्कल की बेला दिखाई दी रानी ने अपने पैरों में उस बक्कल की बेला को बांध लिया. दर्द के कारण रानी को हाथ पैर जमीन पर रखते नहीं बन रहे थे. रानी

को वहीं पास में एक नाला दिखा तो रानी ने उसी नाले में रात रो - रो कर काटी.

राजा हीरा खान सिंह मुर्गा बोलने के समय सुबह - सुबह आकाश के ऊपर रैया सिंघोला में पहुंच गये. राजा का घोड़ा रैया सिंघोला के ऊपर पहुंचकर बोलता है. राजा जी नीचे देखना कौन सा गांव और कैान सा शहर है.

राजा बोले रे घोड़ा मैं नहीं जानता कि यह कौन सा गांव और कैान सा शहर है. तब घोड़ा बोलता है राजा जी यही है आपकी ससुराल रैया सिंघोला.

इतने में राजा को रानी कम्माल हीरो की याद आई . राजा घोड़े से बोलते हैं - घोड़ा हम तो रैया सिंघोला पहुंच गये हैं अब दिन भी खतम हो रहा है. रानी कहां होगी हम दोनों का साथ छूटने से रानी की क्या हालत हो गयी होगी. हम तो रैया सिघोला पहुंच गये पर हमको यहां पर कौन पहचानेगा. बिना कैन्ना के हमको कोई नहीं पहचानेगा.

तब राजा घोड़े से बोलते हैं चल घोड़ा हम लोग चलकर रानी का पता लगाकर आते हैं. घोड़ा बोलता है राजा जी आप कैन्ना की ज्यादा चिंता न करें. परंतु राजा नहीं माने वे घोड़ा से कहते हैं घोड़ा कैन्ना की क्या गति हुयी होगी. चलो चलकर उसका पता लगाते हैं.

राजा ने घोड़े को वापस मोड़ा और उससे कहते हैं घोड़ा अब हमारा और कैन्ना का मिलन होना मुशकिल है. घोड़ा बोला राजा जी आप इतना ना घबड़ायें कैन्ना जिंदा है.

राजा बोलते हैं घोड़ा शाहकरन पूरी रात और पूरा दिन कट गया शायद ही कैन्ना जिंदा हो. तब घोड़ा अपने सिर पर सवार देवताओं से कहता है ये राजा के देवता

जिया जोगन , मिंया मोहन

सोलह सौ जोगनी , नौ सौ चित्तावर ,

जाओ रानी कम्माल हीरो कहां है

उसका पता लगा कर आओ.

राजा का हृदय चिंता से घबड़ाने लगा उनकीऑखं में आंसू आने लगे. राजा सोचने लगे की अब मेरी कैन्ना के साथ मुलाकात होना मुशकिल है. राजा के जितने देवता थे वे रानी की खबर लेने निकल पड़े थे.(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

सभी देवता रानी को जंगल - जंगल झाड़ी - झाड़ी में खोज रहे हैं. पर वे रानी को कहीं नहीं पाते. राजा ओर घोड़ा भी रानी को खोजते हैं पर वे रानी को कहीं नहीं पाते.

राजा हीरा खान सिंह रोने लगते हैं उनका घोड़ा राजा को धीरज बंधाता है और कहता है राजा जी हम लोग जीने मरने के लिये घर से तीन मू`िर्तियां निकले हैं. इसमें घबड़ाने की कोई बात नहीं है. राजा घोड़े से बोलते हैं ये घोड़ा रानी कम्माल हीरो तो मर गयी होगी.

इतने में राजा के देवता मिंया मोहन जिया जोगन रानी की खोजबीन करके वापस आ गये. पर कैन्ना का कहीं भी पता नहीं चला . घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राजा से बोलता है राजा जी थोड़ी दूर और चलें. रानी को और आगे चलकर देखते हैं.

राजा की आत्मा रानी के बिना व्याकुल हो रही थी. घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा रानी को खोजते - खोजते घने जंगल में घुस गया. रानी को खोजते - खोजते राजा और घोड़ा उस जगह पर पहुंच गये जहां पर रानी कम्माल हीरो घिसटते - घिसटते गयी थी.

उस स्थान पर राजा और घोड़ा पहुंच जाते हैं. घोड़ा अपनी नाक से सूंघकर आगे बढ़ा जा

रहा था. घोड़ा उसी रास्ते से आगे बढ़ रहा था जहां - जहां से कैन्ना गई थी. चलते - चलते कुछ दूरी पर जहां रानी कम्माल हीरो लेटी हुयीं थीं . घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा सूंघते - सूंघते रानी के पास पहुंच गया.

रानी घनघोर जंगल में झाड़ियों के बीच में पड़ी थी. राजा रानी को देखते हैं की रानी को अपने तन - बदन की बिलकुल खबर नहीं थी. रानी के हाथ पैर में फफोले पड़ गये थे. रानी दर्द के कारण कराह रहीं थीं.

राजा हीरा खान सिंह रानी के पास आकर आवाज लगाते हैं की रानी जी आप अपनी टॉख खोलिये . परंतु बेहोशी के कारण रानी ने उनकी आवाज नहीं सुनी. तब राजा घोड़े से उतरकर रानी को उन झाड़ियों से बाहर निकालते हैं.

राजा रानी से कहते हैं रानी जी चलिये यहां से. रानी जी कहती हैं हे धनी राजा ,हे पति देव अब हम अपने मायके रैया सिंघोला नहीं जायेंगे.

तब राजा बोलते हैं रानी जी यदि हम लौटकर अपने देश वापस जाते हैं. तो अपने राज्य के लोग हमारे संगी - साथी पूंछेंगे राजा जी कैसे वापस आ गये तो क्या जबाब देंगे.

रानी रो - रो कर अपने हाथ पैरों के फोड़ों के बतलाती हैं. तो राजा हीरा खान सिंह कहते हैं रानी मेरा नाम हीरा खान सिंह ऐसे ही नहीं पड़ा है. मेरे सीने में पारस और बत्तीसों दांतों में हीरे जड़े हें इसलिये मेरा नाम हीरा सिंह है.

राजा बार - बार रानी को चलने का आग्रह करते है. रानी कम्माल हीरो अपने दोनों हाथ जोड़कर राजा से निवेदन करतीं हैं. राजा जी अब मैं एक पग भी आगे नहीं चल सकती हूं. तब राजा रानी के कष्ट को देखकर कहते हैं. रानी जी चलिये आप मेरे साथ घोड़े पर सवार हो जाईये.

रानी जी ने अपने जीवन में कभी भी घोड़े की सवारी नहीं की थी. उसी समय राजा हीरा खान सिंह रानी कम्माल हीरो का हाथ पकड़कर घोड़े पर बैठाल देते हैं. राजा घोड़े से कहते हैं घोड़ा अब हम दोनों को ले चल रैया सिंघोला.

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा वहां से चलना शुरु करता है. राजा रानी की सवारी लेकर घोड़ा चल रहा है. घुरकी दादर रैन पतेरा में घोड़ा धीरे - धीरे चलता है. दिन रात घोड़ा चलता रहा. तपती धूप में भी घोड़ा भागा ज रहा था. तीन दिन चार रात के बाद घोड़ा एक बियावान जंगल में पहुंचता है. वह जंगल बिलकुल सुनसान था जिव - जन्तुऔं का नामो निशान तक नहीं था.

उस बियावान जंगल में दो भाई रहते थे. सोमा और कामा उन दोनों भाईयों में से किसी की भी शादी नहीं हुयी थी. उसी स्थान पर घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा पहुंचता है.

दोनों भाई

घोड़े पर सवार राजा रानी को देखते हैं.

तो छोटा भाई अपने बड़े भाई से कहता

हे भैया हम दोनों में से

किसी के पास भी औरत नहीं है.

तुम मेरा कहना मानो तो

तुमको एक बात बतलाऊं.

ऐ किसी राज्य के राजा रानी हैं

इनसे अपन लड़ाई में तो जीत नहीं सकते
इनके साथ मित्रता करने में ही भलाई है.
तो इनसे किस प्रकार से मित्रता की जावे.
तब उसका बड़ा भाई कहता है
तुम उससे कहो की वह
तुम्हारी बड़ी मौसी का लड़का है.
वह आज हमारे घर विश्राम कर लैं.
फिर रात को इनको शराब में
नशा की दवा दे देगैं
जिससे राजा मर जायेगा.
फिर इनकी रानी को हम दोनों रख लेंगे.

दोनों भाईयों ने ऐसा विचार करके बीच रास्ते में राजा हीरा खान सिंह को रोककर उनका अभिवादन किया. सोमा - कामा राजा रानी को रोककर कहते हैं भैया भाभी आप लोग कहां जा रहे हैं.

राजा हीरा खान सिंह ने उन दोनों को प्रेम से बात करते देखा तो राजा ने अपने मन में सोचा दिल में विचारा की हम तीन लोग तीन दिन की यात्रा करके इस निर्जन वन में पहुंचे हैं. क्यों न यहीं रुक कर अपनी थकावट मिटा लें. आज की रात्री इन लोगों के साथ रहकर काटी जाये.

राजा का मन घूम गया राजा ने उस जगह पर रात रुकने की स्वीकृति उन दोनों भाईयों को दे दी. दोनों भाई राजा के घोड़े की लगाम को पकड़कर अपने मकान में ले गये.

अब सोमा और कामा दोनों भाई आपस में सलाह करते हैं बड़ा भाई छोटे भाई से कहता है ऐ भाई ये हमारे बड़े भाई हैं हमारी गोंड़ समाज में महुआ की शराब का रिवाज है. इसलिये तुम जाकर कही से हमारे बड़े भैया के लिये शराब खोज कर लाओ.

इसके बाद दोनों भाई एकांत में जाकर आपस में बातें करते हैं । तब बड़ा भाई अपने छोटे भाई से कहता है. भाई तुम एक बोतल महुआ की साफ शराब लाना और दूसरी बोतल में जहर वाली शराब लाना. जहर वाली शराब राजा को पिलायेंगे और साफ वाली शराब हम दोनों भाई पियेंगे.

ऐसा कहकर बड़े भाई ने छोटे भाई को शराब लेने भेज दिया. छोटा भाई शराब के लिये दो खाली बोतल लेकर चला गया. बड़ा भाई मेहमानों की सब्जी के लिये शिकार करने चला गया.

रानी कम्माल हीरो रास्ते में बहुत थक गयीं थीं. इसलिये वे वहीं पर लेटकर आराम करने लगीं. रानी राजा के तीरों के तरकश को अपने सिराने में रख कर लेट जाती हैं. रानी को लेटते ही नींद आ जाती है.

उसी समय छोटा भाई दो बोतल शराब लेकर आ जता है. उसी के साथ - साथ बड़ा भाई भी जंगल से एक सुअर का शिकार करके ले आता है.

बड़ा भाई राजा हीरा खान सिंह के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है और कहता है राजा जी हमारे घर में खाना बनाने वाला कोई नहीं है आप भाभी से कहकर खाना बनवा दीजिये.

ऐसा कहकर बड़े भाई ने
दाल - चांवल लाकर
रानी के सामने रख दिया.
बेचारी रानी कम्माल हीरो क्या करे.
उसका शरीर दर्द के कारण
फटा जा रहा था.
वह बहुत ज्यादा थकी हुयी थी.
फिर भी रानी ने किसी प्रकार
उठकर चूल्हा जलाया
और खाना तैयार करने बैठ गई.
इतने में उसका छोट भाई
एक बोतल जहर वाली शराब
और एक बोतल साफ वाली शराब लेकर आता हैं
अ‍ैार अपने भाई से कहता है
सोमा तुम भैया के लिये पत्ते तोड़कर ला दो.
छोटे भाई्र ने खुशी - खुशी पत्ते लाये
और राजा को दे दिये .
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
जिसके सीने में पारस
और भुजाओं में हीरे जड़े हैं.
राजा के सामने दुशमनों का हथियार
बैरी साल खरदा गड़ा था.
बाजू में घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
राई रोझिन के पीला खड़ा है
जिसके माथे में सोलह सौ जिव
सत्रह सौ चितताावर,
नौ सौ जोगनी ,
विराजमान हैं.
उनके घोड़े के अंग - अंग में
देवता विराजमान हैं.
बड़ा देव, बूढ़ा देव ,
खरदा के अन्नी
तथा राजा के और
देवी देवता उन दोनों भाईयों का
तमाशा देख रहे थे.
पत्तों के दोना बना बना कर

बड़ा भाई सभी को दे रह था.
उसी समय राजा के देवता
बड़ा देव, बूढ़ा देव ,
दूल्हा देव , दुल्खुरी माई,
रात माई, मुड़खुरी माई,
नारायण देव, टिपटा के चूर ,
हेलिन माई

इन सभी देवी - देवताओं ने सोमा की मति बदल दी. तब दोनों भाईयों के मन में आया कि राजा को हम जहर वाली शराब देते हैं. उसी समय देवताओं की कृपा से उनकी बुद्वी बदल जाती है.

गोंड़ राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय दोनों भाईयों के बीच में बैठे रहते हैं. दोनों भाई राजा को साफ वाली शराब पीने को देते हैं और जहर वाली शराब को दोनों भाई पीने लगते हैं.

जहर वाली शराब पीते - पीते दोनों भाईयों को नशा छाने लगता हैं. राजा हीरा खान सिंह अपनी बोतल की शराब खतम करते हैं तब तक दोनों भाई जमीन में लोटने लगते हैं.

रानी कम्माल हीरो राजा से कहती हैं - हे पति देव सिरपुरिहा ये दोनों भाई कैसा कर रहे हैं. तब राजा कहते हैं महरानी प्राण प्यारी मुझे नहीं मालुम की ये दोनों भाई क्यों लुड़क गये हैं. उसे मैं नहीं जानता.

कैन्ना कम्माल हीरो
छत्तीस आलन बत्तीस भोजन
राम चचेड़ा कुंदरु भाजी
याने सभी प्रकार का
खट्टा - मीठा भोजन तैयार कर के
बड़ी खुशी - खुशी राजा जी को
भोजन के लिये बोलती हैं. .
देव बली, धन बली,
राजबली, जोर बली,
राजा हीरा खान सिंह
भोजन करने बैठ जाते हैं.

रानी राजा को छप्पन प्रकार के भोजन परोसती हैं. राजा ने पांच कौर भोजन सान कर देवताओं को अर्पित किया राजा के पांच कौर भोजन से राजा के देवता प्रसन्न हो जाते हैं.

राजा भोजन करने बैठ जाते हैं. उसी कमरे मैं दोनों भाई तड़फते - तड़फते बेहोश हो जाते हैं.

राजा हीरा खान सिंह अपने मन में सोचते हैं दिल में विचारते हैं की आज की रात के चार प्रहर कैसे कटेंगे. राजा और रानी ने रात के चार प्रहर शोक में काटे.

मुर्गा के बोलते ही सूर्य भगवान ने अपनी किरणों को बिखेरा उसी समय राजा का घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा हिनहिनाने लगा. कि राजा ने अपने ऊपर से चादर हटाई और बिस्तर से उठ

बैठे.

राजा रानी से कहते हैं रानी जी जल्दी से जाने की तैयारी करो. घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला राजा से कहता है राजा जी यहां से जल्दी चलिये कही इन दोनों भाईयों को होश न आ जाये. राजा - रानी घोड़े पर सवार हो जाते हैं.

घोड़ा राजा और रानी को अपनी पीठ में सवार करके चलने लगता है. घोड़े को चलते - चलते आठ दिन नौ रात हो जाते हैं. दसवें दिन घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला मुर्गा के बोलते ही सूर्य की किरणों के निकलते ही सुबह - सुबह रैया सिंघोला की सीमा पर पहुंच जाता हैं.

घोड़ा वहां पर एक बहुत बड़े तालाब के बांध की दीवाल को देखता है. तब घोड़ा कहता है राजा जी हम लोग रैया सिंघोला पहुंच गये हैं.

तब राजा बोलते हैं रानी हम लोग आठ दिन नौ रात के थके हारे और भूखे प्यासे हैं. पहले हम लोग खाना पीना खा लें इसके बाद तुम अपने मायके चली जाना. तब रानी राजा से कहती हैं राजा जी आप हमारे मायके नहीं जायेंगे क्या ?

तो राजा कहते हैं देख रानी मैं भी अपने राज्य का राजा हूं बिना आदर सत्कार के मैं तुम्हारे मायके कैसे जाऊंगा.

राजा रानी से कहते हैं रानी जी आप स्नान कर लिजीये. तब रानी कम्माल हीरो अपनी साड़ी वगैरह हाथ में रख कर बांध में नहाने के लिये चल देती हैं .

उसी समय
रैया सिंघोला की पनिहारिनें
बांध में पानी भरने आती हैं.
राजा ने बांध के किनारे
रंग - बिरंगे तंबू तान रखे थे
उनके तंबू के पास ही
राजा का घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
राई रोझिन का पीला बंधा था.
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
आसन लगा कर बैठे थे.
राजा ने अपने बाजू में
बैरी शाल खरदा
जमीन में गड़ा दिया था.

पनिहारिनें राजा को देख कर आपस में कहती हैं इतना सुंदर और वीर पुरुष हम लोगों ने अपने जीवन में कभी नहीं देखा. हमारे राज्य रैया सिंघोला में तो पुरुष जाति के दर्शन करना दुर्लभ हो गया है.

पनिहारिनें राजा को एक टक देख रहीं थीं. जिसके कारण पनिहारिनों के घड़े और मटके पानी में तैरने लगे.

रानी रास्ते की थकी हारी थी उनके दोनों पैरों में फफोले पड़ गये थे. रानी से चलते नहीं

बन रहा था . इसलिये वे धीरे - धीरे घाट उतर रहीं थीं.

उसी समय एक अस्सी वर्ष की बुढ़िया हाथ में लाठी लेकर ठुकरुक - ठुकरुक लाठी को ठोंकते हुये बांध में आई. वह बुढ़िया देखती है कि सभी पनिहारिनों के घड़े - मटके बांध में इस पार से उस पार तक तैर रहे हैं.

सभी पनिहारिनें राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय को एक टक देखे जा रहीं थीं.तब बुढ़िया बोलती है क्यों री पनिहारिनों तुम लो क्या देख रहीं हो.

तब सभी पनिहारिनें उस बुढ़िया से बोलती हैं ये दाई एक तो हमारे देश में मर्द जाति का दिखना दुर्लभ है । रैया सिंघोला में तो सिर्फ नारी जाति का ही राज्य है.

राजा हीरा खान सिंह तंबू के बाहर आसन लगाकर बैठे थे. सभी पनिहारिनें उस बुढ़िया को राजा के दर्शन कराती हैं.

बुढ़िया राजा को देखते ही आश्चर्य चकित हो जाती हैं और कहती है बेटी ये किसी गढ़ के राजा महराजा हैं. इतने में रानी कम्माल हीरो धीरे - धीरे घाट उतरने लगती है. रानी को उतरते देख बुढ़िया रानी से परिचय पूंछती है.

बुढ़िया रानी से कहती है
ये बेटी तुम कहां से आई हो.
रानी कम्माल हीरो कहती है
दाई्र हम तो ताई गढ़, तुई गढ़ ,
सिरपुर नगरी भागू टोला,
हीरा गढ़ के निवासी हैं .
बुढ़िया बोलती है
बेटी तुम कहां जाओगी
तो कैन्ना कम्माल हीरो कहती है
दाई हम जा रहे हैं रईया सिंघोला .
तब बुढ़िया बोलती है
रानी जी आप रैया सिंघोला में
किसके यहां जायेंगी.
तो रानी कहती है
दाई्र हम लोग राजा के
घर जा रहे हैं.
तब बुढ़िया कहती है
बेटी राजा तुम्हारे क्या लगते हैं.
रानी कम्माल हीरो कहती हैं
दाई्र राजा हमारे पिता हैं.

इतने में उस बुढ़िया को याद आता है. कि घोड़ा कैन्ना को अपने दांतों में दबाकर ले गया था.

तब बुढ़िया कहती है बेटा बहुत साल पहले कैन्ना को एक घोड़ा अपने दांतों में दबा कर

रैया सिंघोला ले गया था. उस घोड़े ने कैन्ना को किसी जगह गिरा दिया है या उसे अपने पैरों से कुचल दिया है . यह मैं नहीं जानती.
इतना सुनते ही रानी कम्माल हीरो को हंसी आ जाती है. रानी कहती हैं दाई मैं वही कैन्ना हूं.बुढ़िया कैन्ना को देखकर आश्चर्य में पड़ जाती है.

बुढ़िया और कैन्ना एक दूसरे से लिपट कर भेंट - भलाई करती हैं. बुढ़िया कहती है बेटी हम लोग तो समझे थे कि कैन्ना को घोड़े ने गिरा कर मार ड़ाला है. बेटी तुम्हारा और हमारा मिलन होने को रहा था तो हो गया.

ऐसे वचन उस बुढ़िया के मुख से निकलते हैं. इन वचनों को सुन कर पनिहारिनें बुढ़िया से पूंछतीं हैं. दाई ये लोग कौन हैं जो तुम्हारी इतनी जल्दी जान पहचान हो गयी है.

बुढ़िया बोली ये कैन्ना राजा तपेसिरिया की बेटी है. ये तुम्हारे बहन - बहनोई हैं. तुम लोग यहं से जल्दी जाओ और पूरे नगर में और रानी सिंघाल रामो को बतला दो की तुम्हारे बेटी - दमाद हीरा गढ़ सिरपुर नगरी से आये हैं.

इतना सुनते ही सभी पनिहारिनें अपने मटके और घड़े भर कर चली गयीं. वे चलती - चलती रैया सिंघोला में पहुंचती हैं.

रैया सिंघोला के गली कूचे टेढ़े - मेढ़े रास्तों से होते हुये सभी पनिहारिनें नगर में पहुंच जाती हैं. सभी पनिहारिनें अपना - अपना घड़ा मटका रख कर राज महल को जाती हैं और जाते ही बांध का यह सुखद समाचार रानी सिंघाल रामो को सुनाती हैं.

वे रानी से कहती हैं रानी जी आपके बेटी दमाद आये हैं. वे बांध में रुके हैं.

इतना सुनते ही रानी सिंघाल रामो झुंझलाकर कहती हैं ये लड़कियो तुम लोग बहुत मजाकिया हो मेरे बेटी दमाद कहां से आयेंगे. तब लड़कियां बोली रानी जी हम लोग आसे मजाक नहीं कर रहे हैं. आपके बेटी - दमाद ताई गढ़, तुई गढ़, सिरपुर नगरी भागू टोला से आये हैं वे बांघ पर रंग - बिरंगा तंबू लगाये हें और बांध के किनारे अपना भोजन तैयार कर रहे हैं.

उन लड़कियों की रानी जी से बातचीत चल ही रही थी उसी समय वह बुढ़िया अपनी लाठी को ठुक रुक - ठुक रुक करते हुये. राज महल में पहुंच जाती है.

वह रानी जी से कहती है ये रानी साहिबा हीरा गढ़ से बेटी - दमाद आये हैं. रानी कहती हैं दाई कौन बेटी दमाद तो बुढ़िया कहती है रानी जी वही बेटी जिसको घोड़ा अपने दांतों में दबाकर ले गया था.

इतने में रानी सिंघाल रामो को याद अती है. रानी और बुढ़िया दोनों आपस में बाते करने लगती हैं. तब रानी बोलती हैं दाई हमारे राज्य में तो सिर्फ औरतों का राज्य है तब हम लोग बेटी दमाद को यहां पर कैसे ला पायेंगे. क्योंकी हमारे राज्य में मर्द जाति का कोई नहीं है.

इतने में सभी पनिहारिनें और शहर की सभी युवतियां राजमहल में पहुंच जाती हैं. वे रानी जी से कहती हैं रानी जी अपने राज्य में मर्द जाति नहीं है तो क्या हुआ।

हम लोग आधी लड़कियां युवक का आरै आधी लड़कियां युवतियों का रुप धारण कर लेंगी अैार राजा को अदर सहित लेकर आ जायेंगे. इस प्रकार हमारे राज्य रैया सिंघोला की लाज भी बच जायेगी.

इतने में रानी की बेटी श्रीयाल जंगो हंसती हुयी आती है. और पूंछती है मां क्या बात है.

रानी सिंघाल रामो कहती हैं बेटी तुम्हारी बड़ी बहन रानी कम्माल हीरो और जीजा राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय आये हैं. जिनको आदर सहित बांध पर लेने जाना है.

इतने में सभी लड़कियां अपने - अपने घरों से कलश और आरती जलाकर ले आयीं अैार आधी लड़कियों ने लड़कों का रुप धारण कर लिया था. उन्होंने राजा के स्वागत की पूरी तैयारी कर ली थीं. लड़कियां मंगल गीत गाते और युवक बाजा बजाते बांध की ओर चले जाए रहे हैं.

वहां पर राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय अैार रानी कम्माल हीरो भोजन करके आराम कर रहे थे.

उसी समय
रैया सिंघोला के
सभी नर - नारी
राजा - रानी का
स्वागत करने पहुंच गये.
सभी लोग बाजा - गाजा
आरती दीपक जलाये हुये
बांध की दीवाल पर चढ़ रहे थे.
राजा और रानी उनको
आते हुये देख रहे थे.
रानी कम्माल हीरो कहती हैं
राजा देवबली चलने की तैयारी करो.
राजा हीरा खान सिंह
रंग बिरंगे तंबूओं को खोल रहे हैं.

उसी समय घोड़ा शाहकरन गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला कहता है राजा जी रैया सिंघोला में प्रवेश करते समय सर्तक रहना. आपकी सात पीढ़ी के सिर रैया सिंघोला में टंगे हैं.

राजा हीरा खान ने अपने देवी - देवताओं को नमन किया. बांध में सभी युवक - युवतियां मिलकर राजा को बिड़ी तम्बाखू खिलाते हैं.

युवतियां भड़ौनी गीत गा रही हैं. राजा रानी उन युवक - युवतियों के साथ राजमहल के लिये चल दिये.

रैया सिंघोला में प्रवेश करते हुये
राजा नगर का निरिक्षण करते जा रहे हैं.
रैया सिंघोला के आने जाने के रास्ते
बहुत मनमोहक हैं.
बाजार में युवक - युवतियों के झुंड़ लगे हैं.
रैया सिंघोला के बाग - बगीचे,
फूल - फुलवारी ,
चंपा की बाड़ी ,केतकी केवड़ा
और लौंग की बाड़ी लगी है.

रानी सिंघाल रामो राजमहल के द्वार पर सोने का कलश और कपूर की आरती लेकर खड़ी हैं. इतने में राजा - रानी सभी युवक - युवतियों के साथ महल में प्रवेश कर जाते हैं.

कैन्ना श्रीयाल जंगो सोने के लोटा में गंगा जल रखकर अपनी बहिन और जीजा के पैर धुलाती हैं.रानी सिंघाल रामो अपनी बेटी और दमाद की आरती उतारती हैं.

राज महल में आने के बाद

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय को

मोती महल में रहने के लिये

स्थान दिया जाता है.

घुड़शाल में घोड़ा को बांधा गया.

राजा हीरा खान सिंह

मोती महल में सोने के पलंग पर लेटे हुये हैं.

रानी कम्माल हीरो , सिंघाल रामो और श्रीयाल जंगो तीनों मां - बेटी अपने सुख दुख की चर्चा कर रहीं हैं.

राजा हीरा खान सिंह मोती महल में रास्ते के थके हारे गहरी नींद में सो रहे थे. शाम के समय राजा की नींद खुली .

वहां राज महल में मां - बेटी अपने सुख - दुख की बातें कर रहीं थी. उसी समय रानी कम्माल हीरो अपने पिता राजा तपेसिरिया के हाल - चाल पूंछती हैं.

रानी अपनी मां से कहती हैं मां सभी लोग दिख रहे हैं परंतु हमारे पिताजी कहीं नजर नहीं आ रहे हैं. तब रानी सिंघाल रामो बोलती हैं

बेटी तेरे पिताजी

बारा भाटी बंगाला को जीत कर

और राजा राय मुंड़ा को मारकर

आऊंगा कहकर गये थे.

अभी तक वापस नहीं आये.

उनके साथ छोटे - छोटे

लड़के गये थे

वे जवान हो गये

जो जवान गये थे

वे बूढ़े हो गये.

और जो बूढ़े गये थे

वे मर गये.

उस समय जो

कुंआ खुद रहा था

उसका लोग पानी

भी पीने लगे.

आम का जो

बगीचा लगाया था
उसमें फल लग गये.
तभी से तुम्हारे पिता
बारा -भाटी बंगाला में रह रहे हैं.

इतना सुनकर रानी कम्माल हीरो कहती हैं माता जी आपने मेरे को जो बात बतलायी हे वह राजा को नहीं मालुम पड़ना चाहिये. नहीं तो राजा युद्ध करने निकल जायेंगे. उनको हम बड़ी मुश्किल से तैयार करके लाये हैं.

यहां राजा हीरा खान सिंह मोती महल में लेटे - लेटे मन ही मन में सोचते हैं. कि उस समय तो इतने लड़के - लड़कियां यहां दिख रहे थे इस समय बिलकुल सुनसान है किसी का पता नहीं. यहां से बिना बाहर निकले सही स्थिति का पता नहीं चलेगा.

राजा हीरा खान सिंह रानी कम्माल हीरो को बुलाते हैं और कहते हैं रानी जी मुझे लोटा में पानी लाकर दो मुझे बाहर पाखाना जाना है.

रानी कहती हैं राजा जी बाहर मत जाईये. यहीं कहीं बाड़ी में बैठकर पाखाना कर लो. राजा बोले रानी तुम कैसी बात कर रही हो ससुराल की जगह है मेरी इज्जत खराब कराओगी. मुझे पानी दो मैं बाहर जाऊंगा.

इतने में रानी कम्माल हीरो लोटा में पानी रखकर गमछा की गुड़री बनाकर लोटा सिर पर रख कर राजा के साथ पाखाना जाने के लिये तैयार होती हैं.

राजा कहते हैं रानी तुम तो मेरी हंसी उड़ाती हो. तब रानी कहती है प्राण नाथ आप और हम दो शरीर एक जान हैं. इसमें किस प्रकार की लज्जा . राजा बड़े धर्म संकट में पड़ गये वे कहते हैं चलो भाई हम दोनों पाखाना के लिये चलते हैं. .

राजा - रानी चलते - चलते शहर के बाह एक खुली जगह में निकल गये. जहां पर सुनसान था. वहां पहुंचकर राजा रानी से कहते हैं. रानी जी लोटा का पानी मुझे दो. तुम खेत की मेढ़ की ओट में बैठे रहना.

राजा एक हाथ में लोटा और एक हाथ में बैरी शाल खरदा रखकर पाखाना के लिये जा रहे हैं. कुछ दूर जाकर राजा ने अपना खरदा एक स्थान पर गाड़ दिया. उसके ऊपर राजा ने अपना अंगोछा और साफा ड़ाल दिया. अैार उसकी आड़ लेकर राजा शहर की ओर भागने लगे.

रानी कम्माल हीरो मेढ़ के पास हाथ पर हाथ धरे बैठी रहीं.

राजा जी वहां से भागे तो सीधे शहर पहुंच गये. शहर में घर - घर - घर - घर मृद नामा का पता लगाया पर मृद नामा के घर का पता नहीं चला.

उसी समय एक मांझी अपने बैलों को रख कर अपने घर जा रहा था. मांझी और मंझयाईन दोनों एक दूसरे से उनके हाल चाल पूंछते हैं. मंझयाईन कहती है क्यों मांझी बारा भाटी टूटी की नहीं. मांझी कहता है मंझियाइन न तो सोन का सोन बरहा मरा न ही बारा भाटी टूटी मेरी मरम्मत रोज अलग से होती है. मंझयाईन कहती है तुम्हारी मरम्मत कैसे होती है तो मांझी कहता है. मैं लाख टांड़ बैला रखकर रोज आता जाता हूं. मेरे को वहां के पूरे हाल - चाल पता हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय उस मांझी के पीछे - पीछे आकर उसकी बातों को सुन रहे थे.

राजा मृद नामा को खोजते - खोजते उस मांझी के घर के दरवाजे तक आ जाता है.

मांझी आकर अपने घर के दरवाजे के सामने आकर बैठ जाता है. उसी समय राजा मांछी के छप्पर के ऊपर से मांछी के घर के अांगन में कूंद जाते हैं.

तो मांझी
राजा के श्रृंगार को देखकर
मंझयाईन की गोद में
जाकर छुप जाता है.
मंझयायिन कहती है
हट भड़ुआ यहां कहां
मेरी गोद में घुसा जा रहा है.
इधर राजा आवाज लगाते हैं
ये घर मालिक कहां गये हो
मंझयाईन मांझी से कहती है
देखो तो कोई परदेशी आये हैं
और तुम ड़रकर मेरी
गोद में घुसे जा रहे हो.
ऐसे में तुम लोग क्या मारोगे
सोन के सोन बरहा को.
मांझी दूर से झांककर देखता है
राजा को और पूंछता है
क्यों भाई कहां से आये हो
और आपको किस से काम हैं.
राजा हीरा खान सिंह
लोहे के साज और लोहे के बाजू बंद
लगाकर उसके घर के सामने खड़े हो गये.
मांझी घर से बाहर निकलता है
और राजा से पूंछता
ये भाई साहब आप कहां से आये हैं.
भाई मैं ताई गढ़, तुई गढ़ ,
सिरपुर नगरी , भागू टोला
हीरा गढ़ का राजा
हीरा खान सिंह क्षत्रीय हूं ।

तब मांझी को याद आती है कि कैन्ना को हीरा गढ़ का घोड़ा ही दांतों में दबाकर ले गया था. मांझी यह बात राजा से पूंछता है।

तो राजा हीरा खान सिंह क्श़त्रीय कहते हैं मांझी राम मैं उस कैन्ना का पति हूं. तब मांझी राजा से मेल मिलाप करने लगता है. मांझी कहता है राजा सरकार आप तो हमारे बहनोई लगे.

तब राजा मांझी से कहते हैं क्यों माझीं राम तुम दोनों पति - पत्नी आपस में क्या बातचीत करते आ रहे थे.

मांझी बोला

राजा सरकार

आपके ससुर बारा भाटी में रह रहे हैं.

कुआं खोदकर उसका पानी पी ड़ाला

आम के पौधे लगाये

और उसके फल - फूल तक खा ड़ाले.

वहां पर रहते बारह बर्ष

और तेरह पूर्णिमा हो गये हैं.

छोटे - छोटे बालक जो गये थे

वे बूढ़े हो गये

जो बूढ़े गये थे

वे मर गये.

ऐसा तो आपके ससुर के हाल हैं.

तब राजा कहते हैं ये मांझी तुम मुझे एक बात बतलाओ तुम वहां से कैसे आते जाते हो. तो मांझी बोला सरकार मैं लाख टांड़ बैला लेकर आता जाता हूं.

इतना सुनकर राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय सोच विचार करने लगते हैं. और राजा मन ही मन में सोचते हैं की जब हम लोग यहां आ ही गये हैं. तो अपने ससुर से मेल मिलाप करके ही जाते.

राजा मांझी से पूंछते हैं क्यों मांझी तुम कितने बजे जाओगे. तो मांझी बोला राजा महराज मैं चार बजे यहां से निकल जाऊंगा.

तब राजा कहते हैं मांझी मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा . तो मांझी ने कहा महराज ठीक है चलिये. मांझी कहता है तुमको चार बजे रास्ते में एक बूढ़ा साजा के खूंटा के पास मिलेगा . वहीं पर मैं तुमको मिलूंगा. जो आगे जायेगा वह एक ड़गाल तोड़कर वहीं पर रख देगा.

उसी समय राजा हीरा खान को अपनी रानी की याद आती है. की कैन्ना शहर के बाहर खेत में बैठी है. तब राजा जल्दी से रानी के पास पहुंच गये.

रानी बेचारी बीच मैदान में बैठ कर राजा का इंतजार कर रही थी. राजा ने जाकर पहले अपने खरदा को जमीन से उठाया और लोटे के पानी को गिरा दिया. इसके बाद राजा रानी के पास पुंहचते हैं.

रानी राजा से कहती हैं राजा जी गजब का तुम्हारा पाखाना जाना होता है. राजा रानी से कहते हैं रानी चलो अब चलते हैं.

ऐसा कहकर दोनों महल की तरफ आते हैं राजा मोती महल में चले जाते हैं और रानी अपनी मां और बहिन के महल में चली जाती हैं.

रानी कम्माल हीरो अपने मन में सोचती है दिल में विचारती हैं कि आज की रात कैसे कटेगी. मैं सुबह होते ही राजा को वापस हीरा गढ़ लेकर चली जाऊंगी.

इधर राजा हीरा खान सिंह मन ही मन में सोचते हैं कि कब चार बजै और मैं यहां से निकल भागूं.

कैन्ना कम्माल हीरो अपनी मां और बहिन को महल में छोड़कर राजा के महल में आ जाती हैं. रानी राजा से यहां वहां की बातचीत करके समय पास करती हैं . इतने में भोजन तैयार हो जाता है.

कैन्ना श्रीयाल जंगो लोटा में पानी रखकर राजा हीरा खान सिंह से कहती है जीजा जी भोजन तैयार हो गया है आप भोजन कर लें. राजा मोती महल से निकलकर राज महल में जाते हैं.

वे रसोई धर में पहुंचते हैं. वहां साफ थाली में राजा जी के हाथ धुलवाये गये. रानी श्री याल जंगो खट्टा - मीठा भोजन राजा को परोस रहीं हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय पांच कौर भोजन इकट्ठा करके देवताओं को भोग लगाते हैं. राजा भोजन करने लग जाते हैं.

राजा हीरा खान सिंह भोजन करके मुंह हाथ धोकर मोती महल वापस आ जाते हैं. राजा अलबेला हुक्का से तंबाखू पीते हैं जिससे उनको मस्ती आ जाती है. राजा सोने के पलंग में जाकर लेट जाते हैं.

रानी कम्माल हीरो भोजन करके मोती महल में आ जाती हैं. रानी अपने मन में सोचती हैं की मैं ऐसा क्या करुं की जिससे मुझे नींद न आये.रानी सोचती हैं की मुझे रात भर निंद्रा देवी न आती तो मैं सुबह राजा को लेकर वापस चली जाती. ऐसा विचार करके रानी एक चाकू से अपने हाथ की छोटी अंगुली को काट लेती हैं. जिसके दर्द के कारण नींद नहीं आयेगी.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
चादर ओढकर सो रहे थे
रानी को अंगुली में
दर्द के कारण नींद नहीं आ रही थी.
रानी जी रात भर
हाय - हाय करती रहीं .
सुबह चार बजे मुर्गा ने बांग दी
राजा ने देखा की रानी जी जाग रहीं हैं.
तब राजा निंद सोवन, निंद जागन
देवता का स्मरण करते हैं.
की कैन्ना को जल्दी नींद आ जावे.
निंद सोवन निंद जागन देवता
रानी कम्माल हीरो के ऊपर झपटते हैं.
जिससे रानी को नींद आने लगती है
रानी जाकर पलंग में लेट जाती हैं.

उसी समय देवबली हीरा खान सिंह क्षत्रीय अपने सभी देवी देवताओं का स्मरण करते हैं.

फिर राजा

मखमल के जूता
सीस बंध की टोपी
जिसमे रेशम की कलगी लगी थी.
लोहा के साजू , लोहा के बाजू ,
छाती का छत्र भुजा का पारस ,
बत्तीस दांतों में हीरा लगाकर
बैरी शाल खरदा को हाथ में रखकर
घोड़ा शाहकरन गिद्व बाघ बछेड़ा के पास जाते हैं.
राजा घोड़ा से कहते हैं
घोड़ा चलो अब चलते हैं.
घोड़ा बोलता है राजा जी
भाटी तो जा रहे हो पर संभल कर जाना.

राजा हीरा खान सिंह घोड़े की लगाम पकड़कर चौदह बरन के आंगन से बाहर निकलते हैं. उस समय महल के चारों दरवाजे बंद रहते हैं. अब राजा सोचते हैं कि कहां से निकलें.

तब राजा ने अपने देवताओं का सुमरन किया और घोड़ा सहित महल से बाहर आ गये. रैया सिंघोला के गली - कूचों में घोड़ा नाच रहा है. नाचते - नाचते घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा गढ़ भाटी का रास्ता पकड़ता हैं.

घोड़ा घुरकी दादर रैन पतेरा
होते हुये चले जा रहा है.
वह हिरणों के सामान
उचाट मार - मार कर भागते चले जा रहा है.
चलते - चलते घोड़ा
साजा के खूंटा के पास पहुंच जाता है.
घोड़ा राजा से कहता है
राजा जी यह है साजा खूंटा .
राजा साजा खूंटा की ड़गाल तोड़ते हैं.
तो घोड़ा कहता है
राजा जी सर्तक रहना.
राजा साजा खूंटा में
ड़गाल तोड़ कर आगे बढ़ जाते हैं.
चलते - चलते घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
भाटी में पहुंच जाता हे .

घोड़ा भाटी के बारह कोस लंबे मैदान को देखकर राजा को समझााता है राजा जी सर्तक रहना.

वहां पर राजा तपेसिरिया का दरबार लगा था. उस दरबार का एक नटखट मंत्री राजा हीरा खान सिंह को देख लेता हैं. वह मंत्री दरबार में जाकर महराज तपेसिरिया जी से बोलता है महराज

किसी गढ़ के राजकुमार घोड़ा पर सवार होकर इस तरफ आ रहे हैं. हम लोग जो यहां पर बारह बर्ष तेरह पूर्णिमा से यहां पर हैं. उसका क्या होगा. देखो वह धुरंदर इसी तरफ आ रहा है.

रैया सिंघोला के राजा तपेसिरिया
इतना सुनते ही बोलते हैं
पूरी फौज में युद्ध का ड़ंका बजवा दो.
राजा की नौ लाख फौज ने
जब ड़ंका की आवाज सुनी
तो सर्तक हो गयी.
फौज में से आवाज आने लगी
मारो - मारो ,पकड़ों - पकड़ों
दुशमन के खून से नहा लो.
इतने में घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
के कान में ड़ंका की आवाज
पड़ती है तो वह राजा जी से
कहता है राजा जी
आप ड़ंके की आवाज सुन रहे हैं.
तो राजबली, धनबली, जोर बली ,
राजा हीराखान सिंह क्षत्रीय
कहते हैं घोड़ा अब तुम संभल जाओ.
देवता के समान घोड़ा के शरीर में
बिजली के समान फुर्ती आ गयी.
घोड़ा घुरकी दादर ,रैन पतेरा में
तेजी से भाग रहा था.
राजा हीरा खान सिंह को
सात ओर से फौज ने घेर लिया.
घट - घट - घट - घट बादल के गरजने जैसे
सेना आ रही थी.
घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा बोला
महराज आप मेरी लगाम छोड़ दीजिये
और सजगता से बैठे रहिये.
इतने में घमासान युद्ध होने लगा.
युद्ध के बाजा बज रहे थे.
उनसे आवाज आ रही थी.
मार - मार बैरी के
रक्त में नहा लो.
मिट्टी के नगाड़ा

टुम - टुम कर रहे थे.
कांसा और पीतल के
बाजा बज रहे थे.
लोहे के बाजों की आवाज
नौ - नौ कोस तक
सुनाई देती थी.
घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
व्याकुल होकर लपक - लपक कर
बांस के बराबर छलांग लगा कर
दूसरे घोड़ों को पछाड़ रहा था.
घोड़ों के हौदा
एक दूसरे से भिड़ रहे थे.
एक पल के लिये रक्त की
धार बह गयी.
रक्त ऐसा बह रहा था
मानो नदी में
रक्त की बाढ़ आ गयी हो.
छल - छल - छल - छल रक्त की
धार बह रही थी.
घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा के माथे में
सोलह सौ जिया , सत्रह सौ चित्तावर ,
नौ सौ जोगनी चमक रहीं थीं.
घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
रक्त से नहा रहा था.
राजा का घोड़ा खून से सन गया.
वह सिंदूरी रंग का दिखने लगा.
थोड़ी देर की लड़ाई में
रक्त की नदी बहने लगी.
राजा तपेसिरिया की फौज का
बारह आना भाग खतम हो गया था.

राज दरबार के कोई दयावान राजा ने सोचा की ऐसे में तो राजा तपेसिरिया की फौज समाप्त हो जायेगी. इसलिये राजा को उस राजा के सामने शरणागत हो जाना चाहिये. वह राजा राजा को सलाह देता है.

तो राजा तपेसिरिया अपना मुख बंद कर गले में अंगोछा ड़ालकर राजा हीरा खान सिंह के सामने दंड़वत प्रणाम करने के लिये जाते हैं. वे चलते - चलते युद्ध के मैदान में देखते हैं कि चारों ओर खून के लोथड़े पड़े हुये हैं. खून की नदीयां बह रहीं हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घोड़े में चिड़िया के समान दिख रहे हैं. नौ लाख फौज को समाप्त कर राजा अपने घोड़े पर सवार होकर बैठे हैं.

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राजा से बोलता है राजा जी आपके खानदान के सात पीढ़ी के सिर टंगे हैं रैया सिंघोला में जिसका बदला आज आपने ले लिया.

रैया सिंघोला के राजा तपेसिरिया राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय के चरणों में झुक जाते हैं. जिससे घोड़ा वहीं पर खड़ा हो जाता है.

राजा तपेसिरिया अपने दोनों हाथ जोड़कर विनती करते हुये कहते हैं राजकुमार हमसे बहुत बड़ी भूल हो गयी है. आप कौन हैं हमें सही - सही जानकारी दें.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
घोड़े पर सवार बैठे - बैठे बोले
मैं हीरा गढ़ के ताई गढ़,
तुई गढ़, सिरपुर नगरी
भागू टोला के राजा
इजई का बेटा बिजई,
बिजई का बेटा ठाकुर देव,
ठाकुर देव का बेटा श्री देव ,
श्री देव का बेटा राजा कारीकामा ,
राजा कारी कामा का बेटा
मैं हीरा खान सिंह क्षत्रीय हूं.

इतना सुनते ही राजा कीऑखं से आंसूओं की धार बहने लगती है. राजा मन ही मन सोचते हैं कि मैंने अपने भानजा के लिये ही युद्ध के बाजा बजवा दिये हैं. और अपनी फौज का नाश करवा लिया.

राजा तपेसिरिया घोड़े की लगाम पकड़ कर राजा हीरा खान को आदर सहित राज दरबार में ले जा रहे हैं. जहां बाईस गढ़ के व्यापारी , तेईस गढ़ के जमींदार बैठे हैं. राजा का दरबार लगा है. राजा ने उसी दरबार में ले जाकर घोड़ा खड़ा किया. राजा को घोड़ा से आदर सहित उतारते हैं. परंतु राजा हीरा खान सिंह घोड़े से नहीं उतरते. वे घोड़े पर ही बैठे रहे.

राजा हीरा खान सिंह की यह पहली लड़ाई है छै लड़ाई अभी बाकी हैं.

राजा तपेसिरिया की सभा में बड़े - बड़े धुरंदर विद्वमान बैठे थे. राजा बारा भाटी जाने में असमर्थ थे उन राजाओं को बारह वर्ष और तेरह पूर्णिमा हो गये. पर बारह कोस लंबा और तेरह कोस चौड़ा लकड़ी के पुल को पार करना असंभव था.

दरबार में राजा तपेसिरिया अपने आसन पर विराजमान हैं. राजा कहते हैं बड़े - बड़े राजा महराजा इस सभा में बैठे हैं. बारह वर्ष हो गये तेरहवां साल चालू हो रहा है. न ही सोन का सोन बरहा मरा है न ही बारा भाटी ही ध्वस्त हुयी. औरतों जैसे घर का पानी ला - ला कर पी रहे हैं. यहां पर बैठे - बैठे कोई फायदा नहीं है. परंतु आज मैं यह प्रण करता हूं कि जो भी जाकर बार भाटी बंगाला को तोड़ेगा और सोन के सोन बरहा को मारेगा. उसके साथ मैं अपनी इकलौती बेटी श्रीयाल जंगो को के साथ शादी कर दूंगा. दहेज में रैया सिंघोला का आधा राज्य

दूंगा.

कौन मां का बेटा है जिसने अपनी शेरनी मां का दूध पिया है वही बार भाटी जायेगा. बड़े - बड़े धुरंधर राजा महराजा सभा में बैठे रहे वे सभी राजा अपनी सेना को युद्ध में हरा गये थे. कोई भी राजा रैया सिंघोला के राजा तपेसिरिया की बात पर ध्यान नहीं देता. सभी राजा सिर झुकाकर बैठे हैं.

राजा तपेसिरिया कहते हैं सभा में कोई वीर पुरुष नहीं है क्या. कोई भी राजा वहां जाने के लिये बीड़ा नहीं उठाता है.

उसी समय राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय कहते हैं . राजा जी इस सभा में मैं भी पहुंच गया हूं. मेरे सामने आपने ऐसी बात कह दी सुन कर हमें इस जीवन का धिक्कार है. तब राजा हीरा खान सिंह मन में सोचते हैं दिल में विचारते हैं कि बार - बार तो हम अपनी माता की कोख से जन्म नहीं लेंगे.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय कहते हैं
मर्द न छोड़े मर्दागनी ,
सुअर न छोड़े खेत
मैं भी क्षत्रीय गोंड़ राजा हूं
कभी भी अपने दुशमन को नहीं छोड़ता.
चाहे युद्ध में मेरी जान
क्यों न चली जाये.
राजा हीरा खान सिंह
घोड़े पर बैठे - बैठे
अपने हथियार
बैरी साल खरदा को
हाथ में रख कर प्रण करते हैं
कि वे सोन के सोन बरहा को
मार कर और बारा भाटी
बंगाला को तोड़ कर ही चैन लेंगे.
चलिये आप लोग सभी
बारा भाटी बंगाला चलने की
तैयारी करैं.
बड़े - बड़े धुरंदर राजा कह रहे हैं.
कि इतने बड़े लकड़ी के पुल को
यह राजा कैसे पार करेगा
चलो चलकर देखते हैं.

राजा श्री हीरा खान सिंह क्षत्रीय सभी देवताओं का स्मरण करते हैं. और सभी राजा महराजा राजा तपेसिरिया ये भेंट भलाई करके गढ़ भाटी की ओर जाते हैं. बहुत से छोटे - मोटे राजा कहते हैं. कि राजा उस लकड़ी के पुल को कैसे पार करेंगे.

राजा हीरा खान सिंह पुल के पास पहुंच जाते हैं. राजा बूढ़ा देव का नाम लेकर पुल पार करने लगते हैं. घोड़ा बोलता है राजा आप मेरी पीठ पर बैठे रहना. इस पुल पर सोन का सोन बरहा भाटी के लाहन को खाकर लौटता है. लकड़ी का पुल बारा कोस का चौड़ा और तेरह कोस का लंबा है. जहां घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला चला जा रहा है. घोड़ा अपनी चाल से चला जा रहा है.

सोन का सोन बरहा सोचता है मेरा काल करीब आ गया है. छपलक - छपलक घोड़े की टाप बज रही थी राजा बीच पुल पर पहुंचतें हैं

तो उसी समय राजा के देवता अपने मन में सलाह करते हैं की राजा और घोड़ा का साथ अपन लोग कुछ देर के लिये छोड़ देते हैं और देखते हैं की राजा पुल पार कर सकते हैं कि नहीं. राजा जैसे ही बीच पुल पर पहुंचते हैं तो राजा के सभी देवता राजा का साथ छोड़ देते हैं. तो राजा और घोड़ा दोनों पुल में धंसने लगते हैं. घोड़े के मुंह तक पानी आ जाता है राजा के हथियार और देवताओं में

बूढ़ा देव, चतुरभुजी शंकर देव,
रनबगिया, ब्रम्ह कालिया,
निराकार देव सभी देवताओं की
ऑखं में दिखना बंद हो जाता हैं
कानों में सुनाई देना
बंद हो जाता है.
उसी समय देवताओं के सरदार
बड़े देव देखते हैं
की राजा और घोड़ा दोनों
धंसने लगे हैं
तो वे सभी देवताओं को
ललकारते हैं
और कहते हैं
राजा के देवी देवताओ
इसीलिये राजा तुम लोगों को
देवालय में होम, दीप, फूल, शराब,
का तर्पण देते हैं.
नौ सौ जोगनी ,जिया जोगन
मिंया मोहन, निंद सोवन ,
निंद जागन,
इन सभी देवताओं को बड़े देव
ललकारते हैं और कहते हैं
तुम लोग सभी मिलकर
राजा और उनके घोड़े को

पुल से पार कराओ.
उसी समय सभी देवता मिलकर
राजा और घोड़े को जो पुल में
धंसे जा रहे थे निकालते हैं.

राजा और घोड़ा उस पुल को पार कर जाते हैं बाहर आकर घोड़ा अपने शरीर को झटकारता है. वहां से घोड़ा बारा भाटी के रास्ते आगे बढ़ जाता है. घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राजा से कहता है राजा जी वह सोन का सोन बरहा यहीं पर रहता है.पहले आप उसका शिकार करिये.

राजा हीरा खान सि्ंह क्षत्रीय
लोहे के साज - बाज
धारण किये थे.
घोड़ा बोला राजन
बरहा को ललकारिये.
राजा अपने हाथ में
बैरी साल खरदा रख कर
ललकार रहे हैं.
और कह रहे हैं.
डुर - डुर रे गांडू की जात
खड़े हो जा लड़ाई के मैदान में
इतना सुनते ही सोन का सोन बरहा
पुल के ऊपर लोट - पोट करने लगा
बरहा कहता है
कौन सूरमा का लाल है
जिसने मेरे ऊपर चढ़ाई कर दिया है.
इतना कह कर बरहा
पुल के ऊपर आकर
राजा से लड़ाई के लिये
तैयार हो गया.
राजा और बरहा में
कई दिनों तक घमासान
युद्‌ध होता रहा
देवबली बरहा के पास
सौ कुलहरिया देवों की
शक्ति थी.
बरहा को जब लड़ते - लड़ते
गरमी लगने लगती
और पसीना आने लगता तो

वह बीच पुल में जाकर

लोटने लगता था.

बरहा से लड़ते - लड़ते राजा

हताश हो जाते हैं.

तब राजा के बड़े देव कहते हैं राजन बरहा ऐसे में नहीं मरेगा. जब तक बरहा का साथ देने वाली कुलहरिया देव हैं तब तक यह नहीं मरेगा. तब सभी देवता इसका उपाय सोचते हैं तब बड़े देव सोलह सौ जोगनी से कहते हैं कि तुम जंगल - पहाड़ में जाकर ददरिया गाओ. तुम्हारी ददरियों को सुन कर कुलहरिया देव मोह जायेंगी.

सोलह सौ जोगनी जंगल पहाड़ में जाकर ददरिया गाने लगीें. ददरिया सुनकर कुलहरिया मोहने लगीं और सभी कुलहरिया देव बरहा को छोड़कर जंगल पहाड़ भाग गयीं .

तब बड़े देव ने कहा

राजन अब आप बरहा के पेट में

रक्त बूढ़ी छुरी घुसेड़ दें

उसकी गरदन बैरी साल

खरदा से काट दें.

और फरसा से उसके

टुकड़े - टुकड़े कर दें.

राजा और बरहा में

घमासान युद्‍ध होता है.

लड़ते - लड़ते बरहा

परास्त हो जाता है

तब तब राजा ने

बैरी साल खरदा,

रक्त बूढ़ी छुरी

और गड़दा मल फरसा

इन तीनों हथियारों को

एक साथ चलाकर

बरहा को जमीन पर गिरा दिया

और उसके टुकड़े - टुकड़े कर दिया.

बरहा के शरीर के आगे का भाग पीछे

और पीछे का भाग

आगे कर दिया.

लड़ते - लड़ते राजा को

काला पसीना निकलने लगा.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय

बैठ कर काले पसीने को

अपने अंगोछा से पोंछते हैं.

राजा के बाज़ू में

उनका देवता समान

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा खड़ा था.

राजा हीरा खन की यह दूसरी लड़ाई है.

राजा बोले घोड़ा से शाहकरन चलो अब बारा भाटी तोड़कर आते हैं. घोड़ा और सभी देवता अकुलाते हैं. और राजा से कहते है राजन चलिये बारा भाटी को तोड़ने. राजा हीरा खान सिंह ने अपने शरीर का पसीना पौंछा और थोड़ा विश्राम करके बूढ़ा देव का नाम लेकर घोड़े पर सवार हो जाते हैं.

सोन के सोन बरहा के मारे जाने की खबर बारा भाटी बंगाला के पूरे शहर में हवा की तरह फैल जाती है. पूरे शहर में शोर मच गया की बारा भाटी का रखवाला सोन का सोन बरहा मारा गया है.

सोन का सोन बरहा उस देश का रखवाला था. इससे पूरे देश में हाय - हाय मच गयी की सोन का सोन बरहा मारा गया. राज्य में किसी धुरंधर राजा ने चढ़ाई कर दी है. पूरे शहर में खलबली मच गयी कि कहीं वह राजा हमारे शहर में न घुस जाये.

बारा भाटी के सभी लोग

अपने बाचव के लिये

लाठी, तलवार, भाला, फरसा

लेकर बारा भाटी की ओर

चल देते हैं. और कहते है

देखो - देखो, मारो - मारो ,

पकड़ो - पकड़ो बच कर न भागने पाये.

ऐसा कहकर बारा भाटी की पूरी सेना

एकत्र हो जाती है.

सेना घर - घर - घर - घर हो रही है.

युद्ध के बाजा बजने लगे

बाजा से मारो - मारो ,

पकड़ो - पकड़ो की

आवाज आ रही है.

गम्मत बाजा कलार मोहल्ला में

बज रहा है.

इधर राजा हीरा खान सिंह का

घोड़ा भक - भक - भक - भक

करके दौड़ने लगा.

घोड़ा कहता है राजा

सेना बादल जैसे छा रही है.

सम्हल कर बैठिये पीठ में
और लगाम की डोर छोड़ दें.
घोड़े के माथे पर जोगन
झिक मिक - झिक मिक हो रहे थे.
तो देवता लक - लक - लक - लक हो रहे थे.
राजा के साथ में
बड़े देव , बूढ़ा देव,
चतुर भुजी भार वाले शंकर देव,
निराकार देव खरदा के
अन्नी में बैठे रहे.
इतने में घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
फौज के बीच में पहुंच जाता है.
घोड़ा बाजा की आवाज सुनते ही
और उत्साह से भर जाता है.
बाजा से मार - मार - मार - मार
की आवाज आ रही है.
तेगा ऊपर तेगा चलै
विकट चलै तलवार,
कठिन लडैया हीरा गढ़ के
राजा खूब करिन परहार,
हीरा खान सिंह क्षत्रीय
गोली पलट गोली वाले पर पड़ै.
मगर राजा और घोड़ा को
ताती बाव नही लग रही थी.
एक घरी तक चले सिरोही
बहै चलै रक्तन के धार ,
कठिन लड़ैया हीरा गढ़ के
राजा खूब करिन परहार,
खल - खल - खल - खल
रक्तन के चलै धार ,
अरराय - अरराय फौज के हाथी गिरैं,
बांस भर के घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
लै जायके सबको करै चपर चट्ट,
मुरदा ऊपर मुरदा दिखैं.
हाथी घोड़न के खरही गंजाय गई.
राजा बोले सोलह सौ जोगनी

नौ सौ चित्तावर से
रे सिंघी चित्तावर
घुस जाओ शहर में
जो जहां है वह वहीं रहै.
पूरा बारा भाटी को खतम करना है.
इतना सुनते ही
सोलह सौ जिया
सत्रह सौ चित्तावर
नौ सौ जोगनी सभी
शहर की ओर की ओर भागते हैं
वे शहर में जाकर पूरे शहर
में छा जाते हैं.
पूरे शहर में हैजा प्लेग फैला देते हैं.
जो जहां था वही पर वह तांड़व मचाये था.
राजा दुशमन की पूरी
सेना को खतम कर देता है.
पूरे शहर में तबाही मचा कर
सभी जिया जोगन मिंया मोहन
और देवता राजा के पास आते हैं
और पुनः घोड़े के माथे पर
सवार हो जाते हैं.
अब देवता और घोड़ा
राजा से कहते हैं
राजन हमने बारा भाटी को तोड़ दिया.
आप हमें बारा भाटी की
शराब नहीं पिलायेंगे.
तब देवताओं के राजा बड़े देव से
राजा हीरा खान सिंह कहते हैं.
जा रे देवता बारा भाटी की
शराब लेकर आओ.
देवताओं के राजा बड़े देव
बारा भाटी जाने के लिये
तैयार हो जाते हैं.
वे बारा भाटी जाते हैं
तो बड़े देव को रास्ते में
मांस के लोथड़े ही लोथड़े

चारों तरफ बिखरे नजर आते हैं.
पूरा शहर सुनसान हो गया था.
बड़े देव बारा भाटी जाकर
वहां की महुआ की शराब
एक मटका में भर कर
राजा के पास लेकर आ जाते हैं.
राजा ने उस शराब को
देवी देवताओं में बांट दी.
सभी देवी - देवताओं ने
छक कर शराब पी
जैसे - जैसे देवताओं को
शराब का नशा चढ़ रहा था
वैसे - वैसे वे उत्साह में आते जाते.
देवता नशा में कहते हैं
चलो - चलो चमरा मोहल्ला को तोड़ना है.
यहां की बात यहीं पर छोडो.

बंगाला के राजा राय मुड़ा को शहर से जानकारी मिली की सोन का सोन बरहा मारा गया है. अब बारा भाटी भी टूट गयी. इस प्रकार की खबर पूरे शहर में फैल जाती है.

अब राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय बारा भाटी को तोड़कर चमरा पारा को तोड़ने चल देते हैं. राजा के साथ देवता गण रम - धम, रम - धम हो रहे थे. सभी देवता शराब के नशे में धुत थे.

उसी समय चमरा पारा में हल्ला मच जाता है कि किसी गढ़ के राजा महराजा ने बारा भाटी को तोड़कर सोन के सोन बरहा को मार ड़ाला और इस तरफ आ रहा है ऐसा सुनकर चमरा पारा के पूरे चमार - चमारिन मांस के लोथड़े धर - धर कर राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय से लड़ने को तैयार हो जाते हैं. सभी चमार - चमारिन अपने बाल बच्चों के साथ अपने हाथों में मांस के लोथड़े धर - धर कर राज के साथ लड़ाई करने के लिये भिड़ गये.

देवताओं के समान
घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
राजा से कहता है
राजन आप सर्तकता से
मेरी पीठ पर बैठे रहना
इतना कहते ही
सभी चमार - चमारिन
बाल - बच्चों सहित
राजा से से लड़ने लगी है .
सेना घट - घट - घट - घट हो रही है.

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
बादलों के समान गर्जना कर रहा है.
हौदा से हौदा टकरा रहे हैं.
तेगा से कट - कट की
आवाज आ रही है.
तलवार छपक - छपक कर रही है.
एक घरी तक चली सिरोही
बह चली रक्तन की धार,
कठिन लड़ैया हीरा गढ़ के
उनको नहीं आय परवाह,
बड़े लड़ैया हीरा सिंह जी
जिये मरे के नहीं है परवाह,
राजा हीरा खान सिंह जी ने
चमरा पारा के औरत , मर्द
बच्चों सहित सबको
पूरे चमरा पारा को खतम कर दिया.
यह राजा हीरा खान सिंह की चौथी लड़ाई है.

अब घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा कहता है राजन इस युद्ध को तो हमने जीत लिया अब हम चलते है राजा राय मुंड़ा के देश उनका देश पठानों का देश है उस देश में बहुत जादू टोना चलता है. हम लोगों से जादू - टोना तो आता नहीं है. बिना जादू टोना के सीखे बंगाला देश में कैसे जायेंगे.

तब घोड़ा बोलता है राजन राजा राय मुंड़ा का गुरु आल नाथ जोगी बाल नाथ बाबा यहीं जामुन झिरिया में रहते हैं. वहां चलकर उनके गुरु से जादू - टोना सीख लिजिये.

तब राजा बंगाला पर चढ़ाई करने के लिये राजा राय मुंडत्रा के गुरु के पास जादू सीखने की सोचते हैं. जिससे वह समय पर काम आ सके.

राजा हीरा खान सिंह ने आलनाथ जोगी बाल नाथ बाबा के पास जाकर अपना परिचय दिया. और राजा ने बाबा से जादू टोना सीखाने के लिये निवेदन किया . राजा ने अपना घोड़ा वहीं पर बरगद के पेड़ के नीचे बांधा और आल नाथ जोगी बाल नाथ बाबा से जादू सिखने लगे. पूरे आठ दिन नौ रात में बाबा के पास जादू के जितने गुण थे सब सीख लिये. आल नाथ बाबा बाल नाथ जोगी राजा के ऊपर अति प्रसन्न थे. तब बाबा कहते हैं बेटा तेरे बराबर आज तक किसी ने मेरी इतनी सेवा नही की है तुमको जो बरदान मांगना है मांग लो.

राजा हीरा खान सिंह बाबा से बोलते हैं गुरु महराज आपका दिया मेरे पास सब कुछ है. मुझे सिर्फ राय मुंड़ा चाहिये. बाबा कहते हैं बैटा राजा राय मुंडा मेरा पहला चेला है. उसे मैं नहीं दे सकता हूं. परंतु राजा हीरा खान सिंह कहते हैं बाबा मुझे तो सिर्फ राजा राय मुंड़ ही चाहिये. बार - बार बाबा आल नाथ जोगी बाल नाथ बाबा इंकार करते हैं पर राजा हीरा खान सिंह ने हट पकड़ ली की मुझे वही चाहिये.

फिर गुरु महराज क्या करें उनने अपना छोटा चेला जानकर उन्हें हां कहना पड़ा. तब बाबा बोले बेटा मैं उसे मारुंगा तो नहीं पर मैं तुमको उसके पास ले जा सकता हूं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय अपने गुरु महराज से वहां से चलने के लिये बिदा मांगते हैं. आल नाथ जोगी बाल नाथ बाबा राजा को अपनी हार्दिक इच्छा से जाने की आज्ञा दे देते हैं. और बाबा राजा को आर्शीवाद देकर कहते हैं जा बेटा युद्ध में तेरी विजय हो.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय ने
काले ,पीले, चांवल लगााकर
अपने देवताओं को जाग्रत किया.
और घोड़े पर सवार होकर
राजा कहते हैं
जय बड़ा देव, बूढ़ा देव,
रनबगिया, ब्रम्ह कालिया,
त्रिकाल देव चलो बंगाला देश.
राजा हीरा खान सिंह
लोहे के साज बाज
धारण करके
बैरी साल खरदा हाथ में लेकर
घोड़े पर सवार हो जाते हैं.

राजा अपने गुरु आल नाथ जोगी बाल नाथ बाबा को बारंबार दंड़वत प्रणाम करते हैं. इसके बाद राजा जामुन झिरिया से प्रस्थान करते है.

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा के मस्तक में
जिया जोगन मियां मोहन
विराज मान होकर चमकने लगते हैं.
राजा के अंग - अंग में भी
देवता विराजमान थे.
राजा का घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
राई रोझिन का पीला
कुकुर लुंहगी , लावा ढुरकी ,
हिरना उचाट मारते हुये भागा जा रहा है.

यहां पर पूरे राज्य में हाहाकार मचा है कि सोन का सोन बरहा मर गया है. बारा भाटी टूट गयी है. चमरा मुहल्ला ध्वस्त हो गया. न जाने किस गढ़ के राजा ने चढ़ाई कर दी है. पूरे बारा भाटी बंगाला के लोग यह तबाही देख रहे हैं.

मुसलमान ताजिया बांधने लगे. राज्य के लोग तोप , बंदूक, तलवार लेकर खड़े हैं. कि न जाने किस समय दुशमन आकर शहर में घुस जाये. बारा भाटी बंगाला के राजा राय मुंडा नौ लाख फौज को तैयार करते हैं. वे फौज से कहते है दुशमनों ने मेरे देश के सेवक सोन के सोन बरहा को मार ड़ाला है. वह दुशमन यहां से लौट कर न भगने पाये.

मुसलमान बोल रहे हैं
अल्ला - अल्ला ,
बिसमिल्ला - बिसमिल्ला,
या खुदा या खुदा
कहकर चिल्ला रहे हैं.
वहां पर नौ मन का बाजा
मार - मार की
आवाज निकाल रहा है.
पकड़ो - पकड़ो बैरी के
खून में नहा लो.

इस प्रकार से बाजाओं की आवाज आ रही है. घट - घट - घट - घट बादल जैसे पठान राजा की फौज में आवाज आ रही है. जब बाजा की आवाज घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन के पीला ने सुनी तो घोड़ा राजा हीरा खान सिंह से कहता है. राजन आप मेरी पीठ पर सजगता से बैठे रहें और मेरी लगाम छोड़ दें.

राजा ने जैसे ही
घोड़े की लगाम छोड़ी
घोड़ा दौड़ कर फौज के
बीच में पहुंच गया.
मिट्टी के नगाड़ा
टुम - टुम कर रहे हैं.
कांसे और पीतल के बाजे
टनकार रहे हैं.
इन बाजों की आवाज सुनकर
घोड़े में उत्तेजना आ जाती है.
तेगा ऊपर तेगा चलै,
खूब चलै तलवार,
एक घड़ी तक चली सिरोही
बहे चलै रक्तन की धार,
हौदा के संग हौदा मिल गये.
बहुत लड़ैया हीरा गढ़ के
नहीं चिन्हें अपना बिरान,
बांस भर के घोड़ा लड़ै
नहीं बचै बंश निशान,
एक घरी तक चली सिरोही
खल - खल - खल - खल बहै
रक्तन की धार.

राजा हीरा खान सिंह ने
फौज का तीन बार चक्कर लगाया.
बंदूक के ऊपर बंदूक चल रहीं हैं.
गोली के ऊपर गोली बरस रहीं हैं.
परंतु राजा के शरीर में
एक भी नही लग रही हैं.
राजा हीरा खान सिंह ने
अपने पूरे शरीर में
जिरह बख्तर पहन रखा है.
जिसकी गोली उसी को लग रही है.
युद्ध के मैदान में
चारों दिशा में
नर मुंड़ - नर मुंड़ दिखाई दे रहे हैं.
हाथी , घोड़े घायल होकर
जमीन में गिर रहे हैं.
और मृत्यू को प्राप्त हो रहे हैं
हीरा गढ़ के राजा हीरा खान सिंह
तलवारों से दुशमन का संहार कर रहे हैं.
राजा ने पूरी फौज के
टुकड़े - टुकड़े कर दिये
पठान राजा राय मुड़ा की
पूरी फौज को
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय ने
खतम कर दिया.
पर पठान राजा राय मुंड़ा बच गये थे.
वह अपने जादू टोने के
बल पर बचे रहे.
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
राजा रायमुंड़ा के पास पहुंचते हैं.

राजा राय मुंड़ा बवरा नंद हाथी पर सवार होकर राजा हीरा खान के सामने आ जाते हैं. राजा राय मुंड़ा राजा हीरा खान पर अपना जादू चलाते हैं.

राजा राय मुंड़ा अपने
जादू के बल पर कभी शेर
तो कभी कुत्ता बन जाता है.
वह शेर , कुत्ता बनकर
राजा के साथ युद्ध करने लगते हैं.

तब राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
सुनहा कुत्ता बनकर
पठान राजा को घायल कर देते हैं.
उसी समय राजा राय मुंड़ा
काला नाग का रुप धारण कर लेते हैं.
तब राजा हीरा खान सिंह
उसी समय सपकटही बन जाते हैं.
राजा राय मुंड़ा सोचते हैं कि
ऐसे में काम नहीं चलेगा
तो वे उसी समय
भरही चिरैया बन कर
आकाश में उड़ने लगते हैं.
तब राजा हीरा खान सिंह
तुरंत चचान बाज बनकर
उसे पकड़ लेते हैं.
तब राजा राय मुंड़ा ने
तलाब में जाकर
मछली का रुप धर लिया
तो राजा हीरा खान ने
तुरंत मछली को खाने वाला
ऊद बिलाव बनकर
तलाब में छलांग लगा देते हैं.
राजा हीरा खान सिंह
राजा राय मुंड़ा को पकड़ लेते हैं.
तब मुसलमान राजा राय मुंड़ा
तुरंत हिरन का रुप धारण कर
जंगल की तरफ भागने लगते हैं.
तब राजा हीरा खान सिंह
बाघ बन जाते हैं
और बाघ बनकर हिरण को दबोच लेते हैं. .
तब राजा राय मुंड़ा सोचते हैं की
अब मैं नहीं बच सकता
तो वे चूहा बनकर
शहर में घुस जाते हैं
उसी समय राजा हीरा खान सिंह
बिल्ली बनकर

उस चूहे को पकड़ लेते हैं

तब राजा राय मुंड़ा सोचते हैं

कि ऐसे में काम नहीं चलेगा.

मेरा पूरा वंश का नाश हो जावेगा.

तब राजा राय मुंडा

शरणगत हो जाते हैं

राजा रायमुंड़ा मुंह में घास चबाकर गले में अंगोछा ड़ालकर राजा हीरा खान सिंह के सामने दंड़वत प्रणाम करने चले जाते हैं.

राजा हीरा खान सिंह सोचते हैं कि जो मेरी शरण में आता है. तो उसे शरण देना चाहिये. ऐसा सोचकर राजा हीरा खान सिंह ने अपने हाथ खींच लिये और कहा की जाओ तुमको माफ किया. अपने पूर्वजों के लिये मैंने तुमको जीवन दान दे दिया है.

राजा हीरा खान सिंह ने अपने जेब से कोंहरी के दाने निकाले और उसे खाने लगे. इस प्रकार हीरा खान सिंह क्षत्रीय का यह पांचवां युद्ध समाप्त हुआ.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घोड़े से कहते हैं शाहकरन हमने बारा कोस लंबी और तेरह कोस चौड़ा लकड़ी का पुल और सोन के सोन बरहा को मारा बारा भाटी को घ्वस्त किया. चमरा मोहल्ला को तहस - नहस कर दिया. बंगाला देश में भी विजय प्राप्त कर ली है. अब क्या रह गया है करने को .

तब घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला कहता है राजन चलिये बारा भाटी के टिकरा में राजा तपेसिरिया का दरबार लगा है वहां चलते हैं.

अब राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय अपने घोड़े गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन के पीला पर सवार होकर तीन दिन की यात्रा पर निकल जाते हैं . तीन दिन बाद राजा बारा भाटी पहुंचते हैं वहां पर राजा तपेसिरिया का दरबार लगा था.

राजा और उनका घोड़ा आठ दिन नौ रात की लड़ाई़ में कीचड़ और खून से लथपथ हो जाता है. राजा और घोड़ा दरबार में पहुंचते हैं. तो राजा तपेसिरिया ने देखा की राजा खून से लथपथ हैं . उनके पूरे शरीर में खून लगा था. जिसके कारण राजा हीरा खान सिंह का रुप रंग बदल गया था.

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा भक - भक करते हुये चले आ रहा था. सभी राजा राजा हीरा खान सिंह और उसके घोड़े को देखकर थर - थर कांपने लगते हैं और अपने - अपने आसन सिंहासन को छोड़कर राजा हीराखान के समक्ष प्रणाम करने के लिये खड़े हों जाते हैं. राजा हीरा खान सिंह जी दरबार में पहुंच कर सभी राजाओं को युद्ध के समाचार सुनात हैं.

राजा हीरा खान सिंह कह रहे हैं कि सोन का सोन बरहा मर गया बारा भाटी टूट गयी, बंगाला देश में हमारा कब्जा हो गया हैं. इतना सुनते ही दरबार में बैठे सभी सभासदों ने राजा हीरा खान सिंह की जय जयकार की , राजा हीरा खान सिंह के ऊपर फूलों की बरसात होने लगी. राजा तपेसिरिया की पूरी सेना कह रही थी जय जय हो राजा आपकी जो आपने हम सभी को इस कठिन जेल से छुटकारा दिलाया. ऐसा कहकर सभी राजा महराजा और जमींदार राजा हीरा खान सिंह को धन्यवाद दे रहे हैं.

तब राजा तपेसिरिया कहते हैं की पूरी फौज को यहां से कूच करने के लिये ड़ंका बजवा दिया जावे. इतना सुनते ही राजा के कार्यकर्ता और सैनिकों ने अपने - अपने पाल - परदे , तंबुओं को उखाड़ना चालू कर दिया. सभी लोगों को अपने - अपने घर की याद आने लगी. सभी अपने अपने घर की याद करते हुये चलने की तैयारी कर रहे थे. सभी राजा अपने - अपने देश और नगर को प्रस्थान करने लगे.

राजा हीरा खान मन ही मन में सोचते हैं की हमारी सेना के लोग तो बहुत दिनों से अपने परिवार से बिछड़े हुये हैं. मैं तो अभी एक दो माह पहले ही अपने घर से निकला हूं. मेरा पूरा शरीर खून से लथपथ है क्यों न मैं स्नान ध्यान करके ही प्रस्थान करुं.

ऐसा सोचकर राजा अपने घोड़े से बोलते हैं ये रे घोड़ा गिद्‌व बाघ बछेड़ा अगर तुमको कहीं कुआं, तलाब दिखे तो रुक जाना मैं स्नान ध्यान कर लेता. घोड़ा राजा से कहता है राजन यहीं बाजू में आठा नारा बीसा झोरी हैं क्यों न आप यही पर स्नान ध्यान कर लें. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय और घोड़ा आठा नारा बीसा झोरी की ओर मुड़ जाते हैं.

राजा आठा नारा बीसा झोरी में उतर कर अपने अस्त्र - शस्त्र और वस्त्र उतार रहे हैं. वे अपने वस्त्रों को उतार कर वहीं पास की दीवाल के ऊपर रख देते हैं. घोड़ा गिद्‌व बाघ बछेड़ा को आगे पीछे से सांकल से एक साजा के पेड़ के नीचे बांध देते हैं.

राजा अपने और घोड़े के सभी देवी देवताओं जिया जोगन मिंया मोहन नौ सौ सिंघी चित्तावर अदि सभी देवताओं को एक तूमा में भरकर उस तूमा में ड़ांट लगा देते हैं. उस तूमे को राजा एक साजा के वृक्ष में टांग देते हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घाट में स्नान करने के लिये चले जाते हैं. वहां पर कारी पटपर पर बैठ कर राजा मजे से रगड़ - रगड़ कर स्नान कर रहे हैं.

इतने में राजा तपेसिरिया की फौज में सोमा - कामा आकर बोलते हैं राजा तपेसिरिया आपके देश में शोर हो रहा होगा की बारह बरस हो गये एक युग खतम हो गया पर अभी तक आपने न ही सोन के सोन बरहा को मारा न ही बारा भाटी को तोड़ा और न ही ं आपने बंगाला देश को ही जीता.

यह समाचार सब जगह फैल जायेगा की राजा हीरा खान सिंह ने इन सभी पर विजय प्राप्त कर ली है. राजा तपेसिरिया बोलते हैं सोमा - कामा अब तुम्ही बतलाओ की क्या किया जावे. तब सोमा - कामा कहते हैं

राज जी राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय इस समय अपना साज बाज उतार कर आठा नारा बीसा झोरी में स्नान कर रहे हैं. राजा ने अपने घोड़े को सांकल से बांध दिया है. राजा ने अपने देवी - देवताओं को अपने से अलग करके तूमा में भर कर पेड़ से लटका दिया है. वे आठा नारा बीसा झोरी में रगड़ - रगड़ कर स्नान कर रहे हैं. यदि कोई होशियार हो तो इसी समय राजा को धोखे से मारा जा सकता है.

सोमा - कामा राजा तपेसिरिया को ऐसी सलाह दे रहे हैं. तब राजा तपेसिरिया कहते हैं कि ऐसा करने वाला कौन होगा यदि कोई देवबली राजा हीरा खान सिंह को मार देगा तो मैं उसको अपना आधा राज्य दे दूंगा . आधा राज्य की लालच में सोमा - कामा राजा हीरा खान को मारने का बीड़ा उठाते हैं. वे कहते हैं कि हम दोनों भाई्र राजा की हत्या कर देंगे.

वे राजा से कहते हैं महराज आप पूरी फौज में यह चेतावनी दे दें की जिस ने भी यह बताया की राजा को मारने की योजना बनाई जा रही है. उसकी खाल खींच कर उसमें भूसा भरवा दिया जावेगा. उसे खड़ा गड़ा कर उसकी ऐड़ी में दिया जलवा दिया जावेगा. ऐसा कहकर सेनापति ने पूरी फौज में सूचना दे दी और सोमा - कामा को आदेश दिया कि जाकर राजा हीरा खान सिंह की हत्या कर दें.

सोमा - कामा अपने तीर कमान रख कर चले जा रहे हैं. वे देखते हैं कि राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय कारी पटपर के ऊपर बैठकर रगड़ - रगड़ कर स्नान कर रहे हैं. उसी समय सोमा - कामा अपने तीर - कमान से राजा पर वार करते हैं. एक तीर जाकर राजा के मस्तक में लगता है दूसरा तीर उनकी छाती मे जाकर लगता है.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय राम - राम कहकर भगवान की शरण में पड़ जाते हैं. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय जय सेवा , जय बड़ा देव, जय बूढ़ा देव , का जप करने लगते हैं.

राजा तपेसिरिया की पूरी फौज रैया सिंघोला के रास्ते आगे बढ़ने लगती है. राजा तपेसिरिया ने पूरी फौज में आदेश कर दिया कि किसी ने यदि रैया सिंघोला में जाकर इसकी चर्चा की तो उसकी खाल खींच कर उसमें भूसा भरवा दिया जायेगा. उसे जिंदा खड़े करके गड़वा दिया जावेगा उसकी ऐड़ी में दिया जलवा दिया जावेगा. इतना आदेश सुनते ही पूरी सेना रैया सिंघोला के रास्ते चल दी.

राजा हीरा खान सिंह
आठा नारा बीसा झोरी में
कारी पटपर के ऊपर
लेट कर तड़फ रहे हैं
वे राम नाम का
जाप कर रहे हैं.
राजा का घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा
राजा को देख - देख तड़फ रहा हैं.
उसके चारों पैर सांकल से बंधे हैं.
राजा के देवता जिया जोगन
मियां मोहन नौ सौ चितताावर
राजा हीरा खान के तूमा में
बंद अंदर भड़ - भुड़ कर रहे हैं.
राजा हीरा खान सिंह
भारी संकट में पड़ गये हैं.

यहां पर ताई गढ़, तुईगढ़, भागू टोला में भारी अपशगुन हो रहे हैं. राज माता धम्माल घैलो की एक टज़ूख्ज़ अपने आप फूट जाती है. उनकी कमर भी अचानक टूट जाती है. पूरे राज्य में अपशगुन होने लगता है.

यहां पर राजा तपेसिरिया की पूरी सेना रैया सिंघोला राज में पहुंच जाती है. रानी कम्माल हीरो अपने महल की छत से राजा की सेना को आते देख रही थी. रानी सोच रही थी की हमारे

राजा जी अब आते ही होंगे.

उसी समय राजा तपेसिरिया अपनी सेना के साथ राज महल में पहुंच जाते हैं. राज माता रानी सिंघाल रामो उनकी बेटी श्रीयाल जंगो और रानी कम्माल हीरो अपने पति और पिता की आरती उतार रहीं है. राजा तपेसिरिया राज महल में पहुंच कर सभी को सुखद समाचार सुना रहे हैं.

रानी कम्माल हीरो अपने पिता से पूंछती है पिता जी आपके दमाद घुड़सवार नहीं आये क्या. तब राजा तपेसिरिया कहते हैं बेटी मैंने किसी घुड़सवार को नहीं देखा है आप किस घुड़सवार की बात कर रही हो.

इतना सुनते ही रानी के शरीर की देह सुन्न हो जाती है रानी घबड़ाकर कहती हैं मेरे राजा कहां गये. ऐसा कहकर रानी कम्माल हीरो राज महल से निकल कर शहर की ओर भागती है. रानी शहर के घर - घर में जाकर राजा का पता लगाती है. परंतु कोई भी राजा का पता रानी को नहीं बतलाता है.

उसी राज्य के एक घर में एक बालक अपनी मां के पास खाना खाने बैठा था. कि उसी समय उस बालक को राजा हीरा खान की याद आ जाती है. वह बालक मन ही मन पश्चाताप करता है कि हे राजा हीरा खान सिंह तुमने हम सभी को उस कठिन जेल से निकाला और राज तपेसिरिया ने तुमको ही मारवा ड़ाला. उस बालक की मां बालक से पुूंछती है क्यों बेटा क्या सोच रहा है राजा के घर का खाना खाते - खाते तुमको घर का खाना अच्छा नहीं लग रहा है क्या. तब बालक बोलता है मां मैं खाने का पश्चाताप नहीं कर रहा हूं एक दूसरी बात है जिसके बारे में सोच रहा हूं.

इतना सुनते ही उस बालक की मां पूछने लगी बेटा क्या बात है मुझको तो बतला . परंतु बालक अपनी मां को कुछ नहीं बतलाता है. परंतु उसकी मां अपने बच्चे के सामने हट पकड़ लेती है कि तुमको बतलाना ही पड़ेगा. फिर क्या करे उस बेचारे बालक को बतलाना ही पड़ा.

वह कहता है मां पूरी फौज में यह आदेश कर दिया गया है कि यह बात जो भी बतलायेगा उसे खड़ा जिंदा जमीन में गड़वा दिया जावेगा. उसकी ऐड़ी में दिया जलवा दिया जायेगा. ऐसा आदेश है राजा तपेसिरिया जी का.

तब उसकी मां कहती है बेटा ऐसी बात है तो मत बतला परंतु बालक अपनी मां को बतलाने लगा . उसी समय रानी कम्माल हीरो उस बालक के घर में पहुंच जाती हें. रानी कहती हैं ये भाई तुम मां बेटा कौन सी बात कह रहे हो. उस बात को मुझे भी बतलाओ रानी की बात सुनकर बालक भारी चिंता में पड़ जाता है.

रानी कम्माल हीरो कहती हैं ये भैया मुझको चुपके से बतला दो मैं किसी से नही बतलाऊंगी. तब वह बालक कहता है ये बहन यदि राजा को मालुम पड़ गयी की यह बात मैंने आपको बतलाई है तो राजा मुझको खड़ा जिंदा गड़वा देगा ।

वह अपने राज्य रैया सिंघोला से देश निकाला दे देगा. फिर भी तुम्हारी तकलीफ देखकर मुझे वह बात बतलानी ही पड़ेगी चाहे राजा इसके लिये मुझे जिंदा गड़वा दे. ये बहिन उसका नाम है राजा हीिरा खान सिंह क्षत्रीय वह आठा नारा बीसा झोरी में कारी पटपर के ऊपर भगवान राम की शरण में पड़े हैं.

रानी कहती हैं भैया उनके साथ जो घोड़ा था वह कहां गया . तो बालक कहता है बहिन उनका घोड़ा आगे पीछे से बंधा था.

इतना सुनते ही रानी कम्माल हीरो वहां से आठा नारा बीसा झोरी का रास्ता पकड़ लेती हैं. वे कुछ दूर चलती हैं तो कुछ दूर दौड़ती हैं . रात्री के चार पहर तक रानी चलती रहतीं हैं. रानी चलते - चलते, सुबह - सुबह आठा नारा बीसा झोरी में पहुंच जाती हैं.

रानी देखती हैं की आठा नारा बीसा झोरी में साजा के वृक्ष के नीचे घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला तड़फ - तड़फ कर किलकारी मार रहा था. घोड़े की आवाज सुनकर रानी कम्माल हीरो आठा नारा बीसा झोरी में पहुंच जाती हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय दर्द के कारण मछली के समान कारी पटपर के ऊपर तड़फ रहे थे. रानी ने जैसे ही राजा को देखा वे उनसे जाकर लिपटकर रोने लगी. राजा का अंतिम समय आ गया था ।

राजा हीरा खान सिंह रानी को देखते हैं तो वे कहते हैं - हे प्राण प्यारी रोने धोने से कुछ नहीं बनेगा. मेरे माथे और छाती का तीर निकाल दे जिससे मेरे प्राणों को मुक्ति मिल जाये. इतना सुनते ही रानी राजा के मस्तक और छाती से तीर निकालती है . तीर के निकलते ही राजा के प्ारण निकल जाते हैं. राजा मृत्यू को प्राप्त हो जाते हैं.

रानी कम्माल हीरो राजा से लिपट - लिपट कर विलाप करने लगती हैं. रानी को समझाने वाला वहां पर कोई नही रहता रानी ने अपने आप समझ कर रोना बंदकर दिया.

रानी मन ही मन में कहती है राजा आपकी तो मृत्यू हो गयी है अब मैं क्या करुंगी, मेरा जीवन ही बेकार है, मैं भी अपने पति की चिता बनाकर उसमें राजा को लिटा कर आगी लगा दूं. फिर राजा के साथ सती हो जाऊंगी.

ऐसा रानी ने मन ही मन
निश्चय किया
फिर रानी ने जंगल जाकर
चंदन की लकड़ी लायीं
और राजा के लिये चिता तैयार की.
रानी ने राजा हीरा खान सिंह को
उस चिता पर लिटाया.
और उसमें आग लगा दी.
चिता धूं - धूं करके जलने लगी.
राजा के जितने देवता - धामी थे
वे सब तूमा में बंद थे
वे सभी तूमा के अंदर
भड़ - भड़ - भड़ - भड़ हो रहे थे.
उसी समय रानी कम्माल हीरो ने
उस तूमा को देखा
और सोचा की राजा तो

स्वर्ग वासी हो ही गये हैं.
अब उनके देवी - देवताओं
और समान को कौन
संभल कर रखेगा
क्योंकी मैं भी तो राजा के
साथ सती हो रही हूँ.
राजा के देवी - देवताओं को
भी अग्नि के हवाले कर दिया जावे.
ऐसा सोचकर रानी कम्माल हीरो ने
तूमा को साजा के वृक्ष से निकाला
और उसका ढ़क्कन खोल दिया
तूमा के ढ़क्कन के खुलते ही
जितने देवी - देवता
तूमा के अंदर थे
वे सभी भड़ भड़ाकर बाहर आ गये.
राजा के जोगनिन और कुलहरिया देव
कौवा और गिद्व बन बन कर
उड़ने लगे.
देवताओं के राजा
बड़े देव , बूढ़ा देव
सभी देवताओं से कहते हैं
कि कोई - कोई चिता की
आगी को बुझा दो.
और कोई अमृत लेने चले जाओ.
और कोई देव जाकर
राजा हीरा खान सिंह के
जिव को पकड़कर ले आओ.
बूढ़ा देव और बड़ा देव ने
सभी देवताओं को ऐसा आदेश दिया.
तो अमृत को लाने वाले देवता
अमृत लेने गये.
जिव को पकड़ने वाले
जिव को पकड़ने गये.
और जितने जिया जोगन मिंया मोहन ,
सिंघी चिततावर,
वे कौवा और गिद्व बनकर

वहीं आठा नारा बीसा झोरी से
पानी ला - ला कर
चिता की आग को बुझा रहे हैं.
जब सब देवता आग बुझा रहे थे
उसी समय रानी कम्माल हीरो सोचती है
कि मैं अपने पति के साथ सती हो जाऊं.
परंतु कौवा और गिद्वों को
भगाने के कारण
रानी कम्माल हीरो सती होन भूल गयीं.
इतने मैं सभी जोगनी और चित्तावर ने
मिलकर चिता की आगी को बुझा दी.
उसी समय जिव को लेने गये देव
जिव लेकर आ गये.
अमृत को लेने गये देवता
अमृत लेकर आ गये.
उसी समय बड़ा देव, बूढ़ा देव,
दुल्हा देव , दुलखुरी माई,
रात माई़ , मुड़खुरी माई,
श्री नारायण देव
सभी ने मिलकर राजा की
खारी का पिंड़ बनाया.
उसमें राजा के जिव को
प्रवेश करा दिया.
और अमृत का पानी मिलाकर
ड़ंड़ा से राजा के पिंड़ को
ठोंकने लगे
इतने मैं
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय देवबली
राम राम कहकर उठ बैठे
ड़ंड़ा से राजा के पिंड़ को
ठोंकने लगे
इतने मैं
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय देवबली
राम राम कहकर उठ बैठे
रानी ने जब ऐसा आश्चर्य देखा तो उसे देख कर वे अपने सुहाग को धन्य मान रहीं थीं रानी राजा के देवी देवताओं को धन्यावाद देती हैं.

रानी राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय को अपने गले से लपेटकर अपनी किस्मत को धन्य मान रहीं थीं. रानी बोलती हैं मेरे धनी राजा पति देव मैंने तो आपको अग्नि के हवाले कर दिया था. परंतु धन्य है मेरा सुहाग और मेरी किस्मत कि जो आप फिर से जिंदा हो गये.

तब राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय बोलते हैं रानी कम्माल हीरो मैं आठ दिन नौ रात का भूखा प्यासा और थका हारा हूं. जल्दी से मेरे लिये भोजन की व्यवस्था कर दें.

रानी कम्माल हीरो ने जब इतना सुना तो वे तुरंत स्नान ध्यान करने के लिये आठा नारा बीसा झोरी में चली गयीं और वहीं कारी पटपर पर बैठ कर स्नान - ध्यान करने लगीं. रानी कम्माल हीरो ने बड़ी प्रसन्नता के साथ स्नान ध्यान करके पूजा - पाठ किया और अपने वस्त्रों को बदल कर कीचड़ लगे कपड़े साफ किये और जहां राजा और गिद्व बाघ बछेड़ा थे वहां पर आ गयी.

रानी ने घोड़े की खुरजी से दाल - चांवल निकाला और राजा के लिये छप्पन प्रकार के खट्टा - मीठा भोजन तैयार करने लगीं. भोजन तैयार होने के बाद रानी राजा से कहती हैं जाओ धनी राजा आप भी स्नान ध्यान कर लो. तब राजा हीरा खान सिंह ने वहीं आठा नारा बीसा झोरी में जाकर स्नान किया. इसके बाद राजा रानी ने साथ बैठकर भोजन किया.

वहां राजा हीरा खान सिंह के राज्य ताईगढ़, तुई गढ़, सिरपुर नगरी भागू टोला हीरा गढ़ में शोक छा गया. की राजा हीरा खान सिंह जी अपने राज्य में कब वापस आयेंगे

हीरा गढ़ की बात हीरा गढ़ में छोड़ो.

अब रैया सिंघोला में पठान राजा ने अपनी अस्सी लाख की फौज के साथ रैया सिंघोला पर धावा बोल दिया.

पठान राजा ने
रानी कैन्ना श्रीयाल जंगो को
कैद करने के लिये
रैया गढ़ में चढ़ाई कर दी
सात दिशाओं से सेना ने
रैया सिंघोला को घेर लिया.
रैया सिंघोला के पनघट में
न पनिहारिन जायें
और न ही गौ शाला में
जानवर जा रहे थे.
पनघट की छूटी पनिहारिनें
और गौ शाला की छूटी गायें
और उनके बछड़े परेशान है.
रैया सिंधोला के राज्य में
हाहाकार मच गया है.
राज्य का कोई भी आदमी
कहीं नहीं जा सकता.

राजा तपेसिरिया को

मन ही मन में पछताना पड़ रहा था

कि आज मेरा दमाद रहता तो

इस मुसीबत में मेरे काम आता .

राजा तपेसिरिया ने अपना दरबार लगाया उनके दरबार में बड़े - बड़े सभापति और सेनापति मन ही मन में विचार कर रहे हैं कि आज राजा हीरा खान सिंह होते तो हमारे काम आते दूर - दूर से आये धर्मात्मा राजा बोले की महराज तपेसिरिया जी राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय जीवित हैं और आप लोग कह रहे हैं कि राजा मर गये हैं. परंतु राजा जीवित हैं. वह मरे नहीं हैं राजा के देवी - देवता राजा को मरने नहीं देंगे.(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

तब राजा तपेसिरिया कहते हैं सभा के सभपतियों अब यह बतलाओ की क्या करना चाहिये. तब वहां पर उपस्थित धर्मात्मा राजाओं ने कहा राजन यदि हो सके तो कैन्ना सिंघाल रामो की छोटी बेटी श्रीयाल जंगो को राजा हीरा खान सिंह के पास भेज दीजिये. तब कोई दुष्ट राजा बोलता हैं राजा हीरा खान सिंह तो मर गये हैं. रानी श्रीयाल जंगो को कहां भेजोगे. तब एक राजा कहता हैं कौन कहता है राजा हीरा खान सिंह मर गये हैं वे तो देवता हैं वो नहीं मर सकते.

राज सभा के सभी सदस्यों में ऐसा विचार विर्मश चल रहा था. तब राजा तपेसिरिया बोलते हैं कैन्ना श्रीयाल जंगो को राजा के पास कैसे भेजा जावे. तब एक राजा ने कहा कि कैन्ना श्रीयाल जंगो को अहीरन की भेषा - भूषा में दूध - दही रख कर शहर से बाहर भेजो. तब एक राजा कहता हैं यदि ऐसे में पठान लोगों ने कैन्ना श्रीयाल जंगो को पकड़ लिया तो क्या करेंगे.

तब राजा तपेसिरिया

अहीरन की भेष - भूषा में

श्री याल जंगो को

दूध - दही , बेचते - बेचते

महल से बाहर भेजते हैं.

कैन्ना श्रीयाल जंगो

आठा नारा बीसा झोरी के रास्ते

दूध - दही बेचने के बहाने निकल पड़ीं.

रैया सिंघोला में हाहाकार मचा था.

पैदल चलते - चलते

कैन्ना श्रीयाल जंगो

आठा नारा बीसा झोरी में पहुंचती हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय भोजन करके लौंग - इलायची खा रहे थे. उसी समय कैन्ना श्रीयाल जंगो थकी हारी हांफते हुये वहां पहुंचती हैं. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय ने जैसे ही कैन्ना श्रीयाल जंगो को देखा तो कहा साली जी आप यहां कैसे आ गई हैं.

तब श्रीयाल जंगो कहती हैं. जीजा जी रैया सिंघोला को पठान राजा ने सातों ओर से घेर लिया है. तब राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय कहते हैं मेरे रहते हुये मेरे सास - ससुर को उनके राज्य में पठान लोगों ने कैसे घेर लिया है.

राजा हीरा खान सिंह ने रानी कम्माल हीरो से कहा रानी तुम दोनों बहन यहीं पर रहो मैं रैया सिंघोल से होकर आता हूं. राजा के ऐसा कहने से रानी कम्माल हीरो गुस्से में झुंझलाने लगीं. राजा जी आप हम लोगों को वहां जाने के लिये मना कर रहे हो और आप दूसरों की बातों में आकर अपना जीवन गवां रहे हो. बड़ी मुशकिल से आप को जीवन दान मिला है उन देवताओं की जय हो जिसके कारण हम दोनों एक दूसरे के सामने खड़े हैं. मैं चाहती हूं कि मेरा सुहाग हमेशा अमर रहे. परंतु राजा हीरा खान सिंह जी नहीं मानते और कहते हैं रानी

मर्द न छोड़े मरदूनी ,
सुअर न छोड़े खेत
मैं क्षत्रीय का छोड़ों
चाहे रण में रहैं प्राण की जायें.

रानी कम्माल हीरो अपनी बहन से कहती हैं क्यों बहन अपनी बड़ी बहन के पास खाली हाथ आयी हो. उसी समय राजा हीरा खान सिंह अपना घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा को निकाल कर उस पर सवार हो जाते हैं और राजा रैया सिंघोला के रास्ते चल पड़ते हैं. रास्ते में घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा कुत्ता, हिरन, बाघ की चाल से चले जा रहे हैं. रास्ते में लावा और मोर पक्षी अपनी सुरीली आाजें निकालते हैं. चलते -चलते राजा रैया सिंघोला पहुंच जाते हैं.

रैया सिंघोला में युद्ध के बाजा बज रहे थे. घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा अस्सी लाख फौज को देखकर खुश हो जाता है. घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा छलांग लगाकर अस्सी लाख फौज के बीच में पहुंच जाता है. युद्ध के मैदान से ऐसी आवाज आ रहीं थीं

घुर्र - घुर्र चकीया बाजै,
छपक, छपक, तलवार,
कठिन लडैया हीरा गढ़ के
बहुतय मारत हैं तलवार,
तेगा ऊपर तेगा चलै
कट - कट - कट - कट घोड़ा होवै.
हौदा के संग हौदा भिड़ गये.
राजा - राजन के संग मा भिड़ गये.
कठिन लडैया हीरा गढ़ के
करैं भाला खरदा के मार
तीन घरी तक चली लड़ाई
बहे चलै रक्तन के धार
देखैं फौज पठान के
अब बचना नही हय अवसार.
भगै सिपाही पठान के
लै लै अपनी जान.
खल - खल - खल - खल
बहैं रक्तन के धार.

कुछ काटें कुछ मार गिरायें

रुंड़ - मुंड़ के खरही गंजाय

बहोत लड़ाई भई रैया सिंघोला मा

जिसका वर्णन करे ना जाये.

यह राजा हीराखान सिंह का छठवां युद्ध है.

इस युद्ध में पठान राजा की पूरी फौज को राजा हीरा खान सिंह ने ध्वस्त कर दिया. सभी पठान सैनिक अपने अस्त्र - शस्त्र युद्ध के मैदान में छोड़ कर अपनी जान बचाकर भाग गये.नौ लाख सेना का सफाया हो गया. रैया सिंघोला में पठानों की ऐसी भगदड़ मची की उसका वर्णन किया नहीं जा सकता.

राजा हीरा खान सिंह के रैया सिंघोला आ जाने के कारण आठा नारा बीसा झोरी सुनसान हो गयी थी. दोनों बहनें रानी कम्माल हीरो और कैन्ना श्रीयाल जंगो आठा नारा बीसा झोरी में अकेले रह गयीं. उसी समय हरदी शहर के राजा भंवरासुर ने आठा नारा बीसा झोरी पर चढ़ाई कर दी और रानी कम्माल हीरो और श्रीयाल जंगो को अपने कब्जे में कर लिया. राजा भंवरा सुर दोनों रानीयों को बंदी बनाकर हरदी नगर ले गया.

रैया सिंघोला में राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय राजा तपेसिरिया से मिलने राम जोहार करने उनके दरबार में जा रहे हैं. राजा देवबली घोड़े पर सवार होकर सरपट भागे जा रहे हैं.

राजा तपेसिरिया के दरबार में जाकर राजा हीरा खान सिंह राजा तपेसिरिया के सामने जाकर दंड़वत प्रणाम करते हैं. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घोड़े के ऊपर ही बैठकर राजा तपेसिरिया से कहते हैं मम्मा जोहार , जोहार मम्मा कहते हैं. राजा तपेसिरिया सोने के सिंहासन पर व्यास गद्दी के ऊपर विराजमान थे.

राजा तपेसिरिया सिंहासन से उतरकर राजा हीरा खान सिंह के चरण छूने आते हैं. वे राजा हीरा खान सिंह से कहते हैं बेटा दमाद घोड़े से उतरकर हुक्का - चिलम पी लेते.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय कहते हैं मामा आपकी दोनों बेटी आठा नारा बीसा झोरी में अकेली हैं वहां पर जाना जरुरी है. मैं घोड़े से नहीं उतरता मैं वहां जा रहा हूं. इतना कहकर राजा ने अपने ससुर राजा तपेसिरिया से राम जोहार की और आठा नारा बीसा झोरी के लिये निकल गये.

राजा हीरा खान सिंह चलते - चलते आठा नारा बीसा झोरी में पहुंचते हैं. राजा वहां जाकर देखते हैं तो वहां पर बिलकुल सुनसान था . वहां पर न तो कम्माल हीरो थीं न ही कैन्ना श्रीयाल जंगो ही थीं. वहां पर सुनसान देखकर राजा हीरा खान सिंह सोचते हैं कि कैन्ना कहां गई होगी.

राजा अपने मन में सोच विचार करने लगे. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घोड़े से उतरकर घबड़ाते हुये ड़ेरा में प्रवेश करते हैं पर वहां पर कोई भी नहीं रहता देखकर बहुत पछताने लगते हैं.

राजा अपने मन में सोचते - सोचते

अपने देवी - देवताओं

जिया जोगन, मियां मोहन,

निंद सोवन, निंद जागन,

सोलह सौ जोगनी,
नौ सौ चित्तावर
सभी से कहते हैं
तुम लोग जल्दी से जल्दी जाकर
कैन्ना का पता लगाकर आओ.
इतना सुनते ही
सिंघी चित्तावर
रन - भन, रन - भन
तैयार हो जाती हैं.
और देश - देश, शहर - शहर
चारों दिशा के लिये प्रस्थान कर जाती हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय अपना सिर पकड़कर पछता रहे हैं. और अपने देवताओं से कहते हैं - हे बड़े देव, बूढ़ा देव,कैन्ना कहां पर है उसका पता लगाओ.

देवता गण चारों दिशा में पता लगाने को निकल जाते हैं. राजा अत्यंत विचलित होकर आठा नारा बीसा झोरी में मन मार कर बैठ जाते हैं. इतने में घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला कहता है . राज ज्यादा घबड़ाने की जरुरत नहीं है कैन्ना श्रीयाल जंगो और रानी कम्माल हीरो दोनों जिंदा हैं. वे दोनों पश्चिम दिशा की ओर हैं.

राजा घोड़ा से कहते हैं - हे घोड़ा देवता रानियां हमारे हाथ लगेंगी की नहीं. तब घोड़ा कहता है राजन कैन्ना और रानी कम्माल हीरो तो मिलकर ही रहेंगी. परंतु भयानक युद्ध होगा. इतने में बातचीत करते - करते सभी देवता गण रानीयों को खोज कर आ जाते हैं पर रानी का कहीं पता नहीं चलता.

राजा भंवरा सुर ने दोनों रानियों को सात खंड़ों वाले सतखंड़ा महल में कैद करके रखा था. इसके बाद राजा के सभी देवता भंवर , तुहमेल, भंवरा और तीखुर बन - बन कर रानीयों का पता लगाने निकल जाते हैं.

राजा भंवरासुर की सेना में
भंवर, तुहमेल, बर्रई, तीखुर
यही उस राजा की सेना थी.
उसी समय
राजा हीरा खान सिंह के देवता
सोलह सौ जोगनी,
नौ सौ चित्तावर,
भंवरा, तुहमेल बनकर
राजा भवंरासुर की सेना में
शामिल हो जाते हैं.
वे जाकर राजा भंवरा सुर की
जोगनियों के साथ में जाकर मिल जाते हैं.

उनके साथ मिलकर वे सभी
राज महल के सतखंड़ा में चढ़ जाते हैं.
वे वहां जाकर देखते हैं कि
रानी कम्माल हीरो और कैन्ना श्रीयाल जंगो
दोंनों उदास बैठी हैं.
कैन्ना श्रीयाल जंगो रानी की
सेवा कर रही थीं.
सभी जोगनी मक्खी, भंवर
और तीखुर बन के गयीं थी.
वे उन्हें देखकर
राजा हीरा खान सिंह के पास वापस आ गई.
वे आकर राजा को बताती हैं
कि राजा कैन्ना श्री याल जंगो
और रानी जी का पता चल गया है.

उसी समय बड़े देव भी पहुंच जाते हैं और कहते हैं राजन कैन्ना श्रीयाल जंगो और रानी कम्माल हीरो हरदी शहर में हैं. वहां के राजा का नाम भंवरासुर है. रानी जी उसके राजमहल में हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय कहते हैं सभी देवता गण हरदी गढ़ की तैयारी करो. घोड़ा बोलता है राजन जल्दी से जल्दी चलो.

राजा हीरा खान आठा नारा बीसा झोरी में बड़ी चिंता के साथ हरदी गढ़ जाने की तैयारी कर रहे हैं. नौ सौ सिंघी चित्तावर नौ सौ जोगनी सोलह सौ कुलहरिया सभी देवी - देवता जल्दी - जल्दी तैयार हो रहे हैं. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा के ऊपर सवार होकर हरदी गढ़ की ओर कूच कर गये.

घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा राई रोझिन का पीला हिनहिनाते हुये चले जा रहा है. घोड़ा लावा ढुरकी, कुकुर लुंहगी, हिरन उचाटा की चाल में चले जा रहा है.

राजा हीरा खान सिंह लोहे के साज बाज मर्द का बाना, तुल्ही बख्तर,बैरी साल खरदा, हाथ में रखे घोड़े पर सवार होकर चले जा रहे हैं. चलते - चलते कई दिनों की मंजिल पार करके राजा हीरा खान सिंह हरदी गढ़ पहुंच जाते हैं.

हरदी गढ़ की सीमा में राजा हीरा खान सिंह अपना तंबू गड़ाते हैं. राजा का घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा कहता है राजन आप पहले साधू को वेश बनाकर रानी का पता लगाओ.

हरदी गढ़ के नगरों में सुख शांति व्याप्त है. पूरे नगर में चारों ओर चहल पहल हो रही है. वहां का राजा भंवरासुर रानी कम्माल हीरो और कैन्ना श्रीयाल जंगो के साथ शादी करने के लिये दोनों का हरण करके लाया था. इस कारण पूरे नगर में आनंद छाया था. जिस दिन राजा हरदी नगर गये थे उसी दिन दोनों रानीयों को चूड़ी पहनाने की रस्म होना था.

राजा हीरा खान क्षत्रीय
जोगी सन्यासी का रुप धारण करके

हरदी गढ़ में प्रवेश कर गये.
राजा हरदी गढ़ में प्रवेश करते हैं
तो देखते हैं
दक्षिण दिशा में फूल - फुलवारी
चम्पा की बाड़ी , केतकी की क्यारी,
लगीं हैं.
बाग - बगीचों को देखते - देखते
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
पहुंच जाते हैं हरदी गढ़ के
राजा भंवरासुर के राजमहल में
वहां जाकर राजा अलख जगाते हैं.
राजा भिक्षा मांगने
राजमहल के द्वार पर पंहुंच जाते हैं.

वे राज महल के द्वार पर भिक्षा मांगते हैं तो राजा भंवरा सुर की सेविकायें साधु के लिये भिक्षा लेकर आतीं हैं तो राजा उन सेविकाओं को वापस कर देते हैं. राजा कहते हैं बालिका मुझे आपके हाथ से भिक्षा नहीं लेना है. राज महल में वन से दो कन्यायें आई हैं उनसे ही मैं भिक्षा ग्रहण करुंगा.

राजा कहते हे देवीयो वे कन्यायें बहुत भाग्यशाली हैं. साधू के मुख से इतना वचन सुनकर रनवास की सभी नारियां कहती हैं साधू महराज बहुत पहुंचे हुये हैं. साधू महराज को महल के भीतर की सभी बातें मालुम हैं. सभी सेविकायें रनवास में जाकर यह खबर रानी को सुनाती हैं. कि साधू बाबा ने बिना बताये नई रानीयों के बारे में जान लिया है. उन्हें नई रानियों के हाथ से भिक्षा लेना है.

सभी सेविकायें रानी कम्माल हीरो और कैन्ना श्रीयाल जंगो को भिक्षा लेकर राजमहल के द्वार पर ला रहीं हैं. राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय साधू का रुप धारण करके बीच दरवाजे पर बैठे हैं.

रानी कम्माल हीरो ने जैसे ही साधू को देखा तो राजा के रंग रुप को देखकर रानी पहचान गयीं कि राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय पहुंच गये हैं. राजा को देखते ही रानी कम्माल हीरो ने सूपा में रखी भिक्षा को वहीं फैंका और राजा के चरणों में गिर गयीं.

कैन्ना श्रीयाल जंगो रानी के पीछे खड़ीं थीं. राजा हीरा खान सिंह भिक्षा का अनाज कहां धरते, उन्होंने अपना ड़ेरा उठाया और अपने तंबू की तरफ रानी को लेकर भागने लगे. दोनों रानी राजा के पीछे - पीछे दौड़कर भागने लगीं.

हरदी गढ़ के राजमहल में हलचल मच गई. सेविकायें चिल्ला - चिल्ला कर कह रहीं हैं वन में रहने वाली कन्यायों को साधू सन्यासी बाबा भगाकर ले जा रहे हैं. पूरे राज्य में शोर मच गया. यहां पर राजा हीरा खान सिंह रानी कम्माल हीरो और कैन्ना श्रीयाल जंगो लाल, पीले, काले, तंबूओं के पास जाने लगे. तंबू में राजा का घोड़ा गिद्व बाघ बछेड़ा बंधा था . वहीं पर तीनों पहुंच जाते हैं.

वहां पूरे हरदीगढ़ में
देखो - देखो , पकड़े - पकड़ो
की आवाजें आ रहीं थीं.
हरदी गढ़ के राजा भंवरा सुर
अपनी सेना को तैयार कर रहे हैं.
उनकी सेना में
भंवर, मक्खी, तुहमेल मक्खी,
बर्रई, तीखुर , भंवरा
आदि सभी प्रकार की
जहरीली मक्खीयां राजा की सेना में थीं.
राजा ने पूरी सेना को आदेश दे दिया
की उस साधू को पकड़कर लाओ.
पूरी सेना में मारो - मारो ,
पकड़ो - पकड़ो की
आवाजें आ रहीं थीं.
हाथी पर चलने वाले हाथी की सवारी,
घोड़े पर चलने वाले अपने घोड़ों पर
सैनिक अपने - अपने हाथी , घोड़ों पर
सवार होकर अपने
अस्त्र - शस्त्रों से लैस हो गये.
पूरी सेना में मार - मार की
आवाज से बाजा बज रहे हैं.

यहां पर तंबू में जब घोड़े ने मार - मार की आवाज को सुना तो घोड़े ने राजा से कहा राजन मार - मार की आवाजें आने लगीं हैं. मेरे दिल में यह आवाज सहन नहीं हो रही है आप युद्ध करने के लिये तैयार हो जायें.

ऐसा कहकर घोड़ा व्याकुल हुआ जा रहा है. राजा हीराखान सिंह क्षत्रीय लोहे के साज बाज लगाकर बैरी साल खरदा को हाथ में रखकर घोड़े के ऊपर सवार हो जाते हैं.

राजा भंवरा सुर की फौज ने
राजा हीरा खान सिंह के
तंबू को सातों दिशाओं से घेर लिया.
हरदी गढ़ के राजा बहुत लड़ाकू हैं
मारो - मारो पकड़ो - पकड़ो
दुशमन के खून से नहा लो.
सेना के बीच में
बाजा - कुबाजा बज रहे हैं.
राजा भंवरासुर की सेना ने

राजा हीरा खान सिंह को घेर लिया .
राजा हीरा खान सिंह ने
जब युद्ध चालू किया तो
तेगा पर तेगा चलै
और चलै तलवार
बहुत लडैया हीरा गढ़ के
मार दिया पूरा परिवार.
राजा हीरा खान सिंह ने
हरदी गढ़ की
नौ लाख फौज को मार गिराया.

युद्ध के समाप्त होते ही राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय रानी कम्माल हीरो और कैन्ना श्रीयाल जंगो तीनों राजा रानी हरदी गढ़ से रैया सिंघोला के लिये प्रस्थान करते हैं.

राजा हीरा खान सिंह चलते - चलते आठ दिन नौ रात के बाद राजा हीरा खान रैया गढ़ की सीमा पर पहुंचते हैं. राजा हीरा खान सिंह राज्य की सीमा में तंबू गड़ाकर रैया सिंधोला संदेश भेजते हैं कि राजा हीरा खान सिंह रानी कम्माल हीरो और श्रीयाल जंगो को लेकर वापस आ गये हैं.

ऐसी खबर सुनते ही हीरा गढ़ के जिन सिपाहियों ने राजा हीरा खान सिंह को तीर मारा था. उनके सीने में धक - धक हो रही थी वे बुरी तरह घबड़ा रहे थे कि कहीं राजा उनसे बदला न ले. रैया सिंघोला राज्य की पूरी प्रजा स्त्री - पुरुष, युवक - युवतियां, राजा हीरा खान सिंह और दोनों रानियों को आदर सहित राजमहल की ओर ला रहे हैं.

रैया सिंघोला गढ़ में रैया सिंघोला के राजा तपेसिरिया अपने मन में सोचते हैं दिल में विचारते हैं. कि राजा हीरा खान सिंह बारा भाटी की सभा में मेरी बेटी श्रीयाल जंगो को जीत चुके हैं.

अब राजा हीरा खान सिंह और कैन्ना श्रीयाल जंगो की शादी करवा देना चाहिये. ऐसा मन में सोचकर राजा तपेसिरिया अपने मंत्रीयों को बुलवाते हैं. राजा तपेसिरिया अपने सेनापति से कहते हैं कि जाओ पूरे राज्य में मुनादी करवा दो कि गोंड़ राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय की शादी कैन्ना श्रीयाल जंगो के साथ होना पक्का हुआ है.

राजा के आदेश से राजा के मंत्री , नौकर - चाकर, और सिपाहियों को लेकर शहर के टोला मोहल्ला में चले जाते हैं. वे पूरी प्रजा से कहते हैं कि रैया सिंघोला गढ़ में आप सभी लोगों का निमंत्रण है. कैन्ना श्रीयाल जंगो की शादी गोंड़ राजा हीरा खान सिंह के साथ हो रही है. पहले दिन मंड़प दूसरे दिन मायनों तीसरे दिन भांवर है. इस समाचार के सुनते ही पूरे रैया सिंघोला में चहल - पहल हो जाती हे. सभी जगह आनंद उत्सव मनाया जाने लगा.

यहां की बात यहीं रहने दें हीरा गढ़ की बात करते हैं.

हीरा गढ़ में
राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय की
मां राज माता धम्माल घैलो की

कमर टूट गयी थी
उनकी टॉख फूट गयी थीं.
तुलसी कोट की तुलसी
मुरझा गयी थी.
जैसे ही हीरा गढ़ में
राजा हीरा खान की
वापसी की खबर पहुंची.
उसी दिन राज माता धम्माल घैलो की
ऑखं में दिखने लगा.
उनकी कमर ठीक हो गयी.
तुलसी कोट की तुलसी में
नई - नई कपोलें आने लगीं.

पूरे हीरा गढ़ में खुशी मनायी जा रही है कि राजा हीरा खान सिंह की शादी कैन्ना श्रीयाल जंगो के साथ हो रही है.

हरदी गढ़ से हल्दी मंगाई
तेली के घर से तेल मंगाया.
सात पुरी का चौंका पूरा
नगर के सुवासा सुवासिन ने
मंड़प - मंगरोहन गड़ाया.
नौ नारी बत्तीस कुवारियों ने
मंगल गीत और गारी गायीं.
उन पर बहुत निछावर हो रहा है
इस प्रकार से
राजा हीरा खान सिंह का विवाह
कैन्ना श्रीयाल जंगो के साथ हो जाता है.

रैया सिंघोला में तीन दिनों तक शादी की बहुत धूम - धाम रही चौथे दिन राजा तपेसिरिया ने अपनी दोनों बेटियों को गहने - जेवर पहनाये और सभा के बीच में राजा तपेसिरिया जी अपनी दोनों बेटी और रैया सिंघोला का आधा राज्य, आधी खेती - बारी, आधे गाय, बैल, आधे हाथी ,घोड़े दहेज में दिये. मानों घर परिवार की सभी आधी - आधी चीजें राजा हीरा खान सिंह को दहेज में दे दी.

रैया सिंघोला की पूरी प्रजा नौकर , चाकर, मंत्री, सैनिक सभी रानी के पांव पूज रहे हैं. खाने पीने के बाद खूब धूम धड़ाका हुआ. अब राजा हीरा खान सिंह हीरा गढ़ जाने की तैयारी कर रहे हैं. रानी कम्माल हीरो और उसकी छोटी बहिन कैन्ना श्रीयाल जंगो के लिये पालकी सजायी जाने लगी.

रैया सिंघोला के राजा तपेसिरिया से राजा हीरा खान ंसिंह राजमहल में जाकर बिदा मांगते हैं. वे राजा तपेसिरिया से कहते हैं ससुर जी अब हम लोगों को बिदा दें.

इस प्रकार राजा हीरा खान सिंह अपने राज्य हीरा गढ़ आने की तैयारी करने लगते हैं. इतने में राजा तपेसिरिया ने राजा हीरा खान सिंह को बिदा किया. पालकी में बैठ कर दोनों रानी हीरा गढ़ के लिये चल दीं.

राजा रानी को बिदाई देने रैया सिंघोला की पूरी प्रजा फौज फटाका सहित रैया सिंघोला से बिदा कर रहे हैं.

राजा हीरा खान सिंह अपने राज्य ताईगढ, तुई गढ़, सिरपुर नगरी भागू टोला हीरा गढ के रास्ते में चल पड़ते हैं. चलते - चलते पंद्रह दिनों की मंजिल पार करके हीरा गढ़ को आते हैं

हीरा गढ़ के मुरझाये वृक्षों में
नई - नई कपोलें आने लगतीं हैं.
गांव के बूढ़े लोग
जवानों के समान खड़े हो गये.
हीरा गढ़ के पाचों राज्यों में
खुशयाली छा गई.
देवबली राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय
हीरा गढ़ की सीमा में पहुंच गये.
वे हीरागढ़ की सीमा में
हरे, काले, पीले, तंबू तान रहे हैं.
शहर बस्ती के लोग
अपने आप में वजन महसूस कर रहे हैं.
सभी नगर वासी
एक दूसरे से कहते हैं कि
भाई आज मेरा शरीर बहुत वजनदार लग रहा है.
एक युवक कहता है
मेरी दांहनी टज़ूख्ज़
और दाहिना अंग फड़क रहे हैं.
न जाने राजा के आने की खबर न हो.

उसी समय राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय के दूत राजमहल में आ जाते हैं और कहते हैं भैया लोगो हम लोग रैया सिंघोला से वापस आ गये हैं.

चलो सभी प्रजा जन मिलकर राजा को आदर सहित महल में लेकर आ जायें. राज्य के पांचों शहरों में निमंत्रण भेज दिया गया बातों - बातों में सब को पता चल गया कि राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय हीरा गढ़ वापस आ गये हैं.

राजा के आने की खबर राजमहल में भी पहुंच गयी. नौ नारी, बत्तीस कुवांरी,सोलह सौ सडवा, सत्रह सौ हैवाती ने जब यह समाचार सुना की राजा वापस हीरा गढ़ आ गये हैं और बांध में रुके हैं ।

तो सभी लोग अपने - अपने घर में कलश दीप - आरती को सजा रहे हैं. मृद लांघा ने पूरे

शहर में ड़ंका पिटवा दिया कि शहर हीरा गढ़ और पांचों राज्यों के पुरवासी आनंद उत्सव के साथ राजा हीरा खान ंिसंह को राजमहल तक आदर सहित लाना है.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय की
मां ने सुरही गाय का गोबर मंगाया
उससे आंगन के चारों खूंट को लिपवाया
गज मोतिन से चौंक पूरा गया.
कंचन का दीपक जलाया गया.
चरिया चोहरिया सभी जंवरिया युवतियां.
मंगल गान कर रहीं हैं.
उसमें बहुत निछावर आ रहा है.
राजा हीरा खान सिंह
अपनी प्रजा को उत्साह के साथ
नाचते गाते देख रहे हैं.
राजा शहर का भ्रमण करके
दर्शन कर रहे हैं.
साठ जावन युवक और साठ जवान युवतियां
राजा की परघौनी के लिये प्रस्थान करते हैं.
उनके साथ - साथ
बाजे वाले बाजा बजाते जा रहे हैं.
राजा हीरा खान सिंह की
परघोनी चल रही है.
रानी अपने पुत्र और पुत्र बधुओं को
गाते बजाते धूम धड़ाके के साथ
राजमहल में ला रहीं हैं.
सभी लोग चलते - चलते
राज महल में पहुंच जाते हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय राज महल में प्रवेश करते हैं.राजा के महल में पहुंचते ही प्रजा राजा रानी के चरण स्पर्श करने लगती है. साठों जंवरिया युवतियां दोनों रानियों को बीच में करके आगे पीछे चल रहीं है. राजा हीरा खान सिंह और दोनों रानियां राज माता धम्माल धैलो के चरण स्पर्श करते हैं. राज माता तीनों से प्यार करती हैं. उनसे सुख दुख की चर्चा करतीं हैं.

हीरा गढ़ के पांचों राज्यों के सभासद और बुजुर्ग मिलकर कुल की रीति के अनुसार सभी स्वाजातिय बंधुओं और सभी पुरवासियों को भोजन कराते हैं.सबसे अभिवादन करके उनसे आर्शीवाद लेकर उन्हें बिदा करते हैं.

राजा हीरा खान सिंह क्षत्रीय परतेती गोंड़ राजा हीरा गढ़ में अटल राज्य करने लगे. यह गाथा परतेती सिंह बंशी राजा हीरा खान सिंह और रैया सिंघोला के नेताम राजा तपेसिरिया के

दो गोत्रौं की है.

जैसे राजा हीरा खान सिंह के दिन फिरे वैसे सब के फिरें.

0ध्0

गोंडत्रवान

राजा कुही मांछा एवं राजा बायोडत्र

सतयुग की बात है !

जब गोंड़वाना में

गोंड़ राजाओं का राज्य था।

तब एक महा सम्राट राजा हुये

राजा कुही मांछा !

राजा कुही मांछा का राज्य

चांदा गढ़, देव गढ़, देवहार गढ़, में था।

राजा के राज्य में अस्सी लाख राज गोंड़, महराज गोंड़, माड़िया, टोरिया और अन्य जातियों के साथ गोंड़ भाई निवास करते थे!

जहां के राजा का नाम कुही मांछा उनके खरदा का नाम वेद मांछा कर्रा का पानी रखकर उस खरदा को पांच किलो नमक से मंजवाते थे।

बारह सांगा का खरदा मांछी बैठे तो मांछी कट जाती थी! झक झक - झक - झक रोशनी करता खरदा!

राजा कुही मांछा के घर में एक कन्या ने जन्म लिया। जिसका नाम था मंछाल रामो

राजा का नाम कुही मांछा

खरदा का नाम वेद मांछा

बेटी का नाम पिली बाविन मंछाल रामो

राजा कुही मांछा का राज्य तीन गढ़ों में था। राजा महाप्रतापी थे। जिसके घर में बारह सांगा का खरदा

जिसका राज्य

देवगढ़ ,देवहारगढ़, चांदागढ,

अस्सी लाख की छानी

जिसमें बसा गोंड़वाना !

धन को मिट्टी खाये

खुसे धन को धुगिया पिये

घर का धन घर में नहीं अमाता

तो दूसरे गांव में बम्कारी देते हैं।

राजा कुही मांछा का दरबार लगा है! राजा सोने के सिंहासन में व्यास गद्दी पर बैठे हैं। राज दरबार में सभा के सभापति, बाईस गढ़ के बाबू, तेईस गढ़ के जमींदार,बैठे हैं बड़े - बड़े रणधीर सरदार बैठे हैं । बड़े - बड़े न्याय कर रहे हैं!जुर्म कायम कर रहे हैं। बहुत सारे नौकर चाकर लगे हैं।

असड़िया का बेटा भुसड़िया

भुसड़िया का बेटा कोल भसेड़ा

कोल भसेड़ा का बेटा मृद्व लांघा

मृद लांघा के भाई का नाम मंहगू

उसके बेटे का नाम पुंदगू

ये सभी राजा कुही मांछा के टहलू थे।

राजा कुही मांछा देवगढ़ चांदा में अटल राज्य कर रहे हैं।जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती!

राजा कुही मांछा के महल में कैन्ना मंछाल रामो दिनों दिन बढ़ रही थी। जैसे दिया की बातीवह पूनम के चांद के समान जवान होने लगी। उसकी दस अंगुलियों में दस जोड़ी मुंदरी, पैरों से बिछीया की झनकार उठती है!

कैन्ना मंछाल रामो के साथ बत्तीस कुंवारी,सोलह सड़वा, सत्रह हैवाती रानी के साथ रहते थे।कैन्ना मंछाल रामो राजमहल में रहती थी।

राजा का नाम कुही मांछा।

उसके खरदा का नाम वेद मांछा,

सात खंड़ों की हवेली,

नौ खंड़ों की ओवरी

जहां शंकर जी का

त्रिशूल गड़ा था।

वहां दिनों दिन

कैन्ना मंछाल रामो जवान हो रही थी।

ऐसे होते होते बहुत दिन बीत गये।

कैन्ना मंछाल रामो शादी के योग्य हो गयी। उसकी मां सिंघाल रामो अपनी साठ सहेलियों के साथ घूमती फिरती अपनी बेटी को जवान होते देख रही थी।रानी कहती हैं कि हमारा कोई सगा संबंधी लड़की के रिश्ते के लिये नहीं आ रहा है नहीं तो मैं उसकी शादी कर देती। रानी अपने मन में ऐसा सोचती रहती थीं।

एक दिन राजा कुही मांछा अपने दरबार से राजमहल में भोजन करने आते हैं। रानी सिंघाल रामो कंचन लोटा में जल भर कर लाती है और कहती है प्राणनाथ चांदा के राजा जल ग्रहण करें। राजा ने जल ग्रहण किया। अपने हाथ - पैर धाये और भोजन करने बैठ गये।

रानी ने राजा के लिये

छत्तीस आलन बत्तीस भोजन

सभी प्रकार के खटारस व्यंजन

राजा की थाली में परसा!

राजा ने थोड़ा - थोड़ा भोजन

निकालकर धरती में चढ़ाया !

पांच कौर भोजन निकालकर

देवताओं को अर्पित किया।

राजा भोजन करने बैठ गये।

रानी सिंघाल रामो राजा से कहती हैं । राजा महराजा पतिदेव हमारी बेटी जवान हो गयी है! कहीं से भी उसके रिश्ते के लिये कोई सगा संबंधी नहीं आ रहा है ! आप बतलाईये इसके लिये क्या करें। इतना सुनकर राजा ने भोजन समाप्त किया और अपना मुंह ळाथ धोकर राज दरबार में आ गये।

राज दरबार में बाईस गढ़ के लाला बाबू, तेईस गढ़ के जमींदार विराजमान थे । राजा कुही मांछा दरबार में जाकर अपने राज सिंहासन की व्यास गद्दी में विराजमान होते हैं। सभा में बड़े - बड़े छत्रधारी महारथी अपने सिर में पगड़ी बांध कर बैठे हैं।

राजा कुही मांछा दरबार में बैठे दरबारीयों से कहते हैं। मेरे घर में पिली बाविन मंछाल रामो होशियार और जवान हो गयी है पर बात यह है कि उसके विवाह के लिये कहीं से भी रिश्ते नहीं आ रहे हैं। राज सभा के सभा पति इस बात का कोई जबाव नहीं दे पाते हैं।

उसी समय

राज दरबार में बैठा

असड़िया का बेटा भुसड़िया,

भुसड़िया का बेटा कोल भसेड़ा ,

कोल भसेड़ा का बैटा मृद लांघा कहता है राजा साहिब आपने अपनी बेटी का जब चौक , बरहों किया था! तब क्या आपने सबको निमंत्रण दिया था कि नहीं ! राजा साहिब आपके घर में कन्या का जन्म हुआ है कि बेटे का किसी को कैसे मालूम पड़ेगा।

तब राजा कहते हैं मृद लांघा अब तुम ही बतलाओ की अब क्या किया जावे। तब मृद लांघा राजा से कहता है राजा साहिब आप देश - देश के राजा महराजा पूरे बावन गढ़ के राजकुमारों

को पत्र भेज दो जिसके भाग्य में होगा! उसकी शादी आपकी बेटी मंछाल रामो के साथ हो जायेगी।

राजा कुही मांछा मृद लांघा के कहने पर पूरे देश के सभी राजाओं के लिये पत्र लिखवा रहे हैं। पूरे गोंड़वाना के सभी बावन गढ़ों के राजाओं को पत्र भेज रहे हैं।

पूरे बावन गढ़ के राजा उस पत्र को पढ़ रहे हैं देख रहे हैं । देवगढ़,देवहार गढ़,नगर चांदा से पत्र आया है पत्र में लिखा है !

श्री हरी शुभ स्थान नगर चांदा
जहां जन्म लिया है!
पिली बाविन मंछाल रामो ने
राजा का नाम कुही मांछा
जिसकी बेटी पिली बाविन मंछाल रामो
आज तक उसकी शादी के लिये
कहीं से संबंध नहीं आये हैं।
क्या बात है
यह पत्र में लिखा है।

पत्र को पढ़कर बावन गढ़ के राजा कहते हैं ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा। सभी गढ़ के राजकुमार राजा कुही मांछा के राज्य में जाने की तैयारी कर रहे है।

सभी राजकुमारों के माता - पिता चांदा गढ़ जाने के लिये अपने लड़कों को मना करते हैं। वे अपने लड़कों से कहते हैं ।

बेटा चांदा में नौ लाख फांदा,
जो जायेगा चांदा उसको लगेगा फांदा !

परंतु राजकुमार अपने माता - पिता की बात नहीं मानते। वे चांदा गढ़ जाने की तैयारी करते हैं। बावन गढ़ के राजकुमार खुशी - खुशी तैयार होकर अपने लाव - लश्गर के साथ चांदा गढ़ में पहुंचते हैं। राजकुमार आठ दिन नौ रात की यात्रा करके चांदा गढ़ पहुंच रहे हैं।

पूरे चांदागढ़ में
लाल, पीले, काले रंग के
तंबू तन गये हैं।
राजकुमारों ने सात दिशाओं से
नगर चांदा को घेर लिया है।
राजाओं की फौज - फटाका
हाथी, घोड़ा शोर मचा रहे हैं।
एक तंबू से दूसरा तंबू घिर गया है!
चांदा गढ़ की जमीन में
न तो गाय चारा चर सकती हैं
और न ही पनिहारिनें
पनघट पर जा सकती हैं।

चांदा गढ़ के निवासी यह दृश्य देख रहे थे। अनगिनत मकानों वाले चांदा शहर में गोंड़ लोग

जगह जगह पर हाथी, घोड़ों से अपनी खेती- बारी कर रहे थे। राजकुमारों के तंबुओं के कारण देव गढ़, देवहार गढ, नगर चांदा में हाहाकार मच गया। कि राजा कुही मांछा की एक बेटी है और उसके विवाह के लिये राजा ने बावन गढ़ के राजाओं के साथ पूरे देश के राजाओं को बुला लिया है। यह देखकर सभी नगरवासी उदास हो जाते हैं।

राजा कुही मांछा को दूसरे राज्य एवं उनके राज्य के देशवासी तरह - तरह की सलाह दे रहे हैं। राजा कुही मांछा अपने सतखंड़ा महल और नौ खंड़ की ओवरी पर खड़े होकर देखते हैं कि पूरे राज्य में तंबू ही तंबू नजर आ रहे हैं । राजा कुही मांछा घबड़ाकर अतयंत सोच में पड़ जाते हैं। कि मृद लांघा के कहने पर मैंने पूरे देश के राजाओं को पत्र भेजकर बुलवा लिया हैं । सभी देश के राजाओं ने आकर अपने - अपने तंबू गाड़ दिये हैं।

राजा इतने सारे राजाओं को देखकर चिंतित हो जाते हैं कि मेरी तो एक ही बेटी है मंछाल रामो मैं उसकी शादी किसके साथ करुं या किसके साथ न करुं। ऐसा सोचकर राजा कुही मांछा पश्चाताप करते हैं। राजा का मन वुद्वी विवेक काम नहीं करता है। उस दिन मृद लांघा के भाई मंहगू की जबावदारी राजा की कचहरी की देखभाल तथा चौकीदारी करने की !

राजा कुही मांछा राज दरबार में आते हैं और झुंझलाकर मंहगू से कहते हैं क्यों रे मंहगू लांघा कहां गया है। मंहगू बोला राजा जी लांघा भोजन तैयार कर रहा है। राजा ने कहा उसकी पत्नी कहां गयी है तो मंहगू कहता है महराज जी लंघयाईन गई है जंगल लकड़ी लेने।

इतना सुनते ही
राजा की ऐड़ी का गुस्सा
माथे में चढ़ गया।
राजा की टॉख
गुस्से के कारण लाल हो जाती हैं।
उनका दिमाग भन्ना जाता हैं।
राजा ने अपने कोड़े
सटकमार को पानी में िभगोया
और उसे फटकार कर राजा कहते हैं !
जाओ जल्दी से लांघा को बुलाकर लाओ।
नहीं तो कोड़ों से मार पड़ेगी।

इतना सुनते ही मंहगू ने अपनी धोती में पेशाब कर ड़ाली! मंहगू ड़र के कारण थर - थर कांपने लगा। मंहगू राजा से कहता है माई - बाप मै। अभी लांघा को बुलाकर लाता हूं ।

मंहगू घर में आता है ! मृद लांघा ने भोजन बनाकर के देश - देश से आये राजाओं के तंबू में पहुंच गया।

मृद लांघा बावन गढ़ से आये राजकुमारों के पास आता है वे अपने सिर में बड़ी - बड़ी पगड़ियां बांध कर बैठे थे ! लांघा उन राजाओं के पास आकर कहता है ये राजाओ इसमें मेरा नाती दमाद कौन बनेगा! आप लोग मेरे लिये क्या - क्या लेकर आये हो।

सभी राजा अपने - अपने को कहते हैं कि राजा का दमाद मैं बनूंगा! सभी राजा मृद लांघा को एक - एक सोने की मोहर देते है। लांघा मोहरों को देखकर खुश हो जाता है। लांघा सोचता

है मैं ये मोहरें कहां पर रखूं जिससे किसी को मालुम न पड़े। खासकर मंहगू को पता नहीं चलना चाहिये। ऐसा सोचते हुये लांघा वहां से अपने घर वापस आता है। घर पर आकर लांघा सोचता है कि हंड़िया में जो पेज रखा है उसे पी लूं ।

ऐसा सोचकर लांघा ने अपने लड़के पुंदगू को बुलाया और दोनों बाप- बेटे ने मिलकर उस हंड़िया का पेज पी ड़ाला। लांघा ने उसी हंड़िया में सभी मोहरें रख दीं। लांघा अपने बेटे पुंदगू से कहता है पुंदगू देखना घर में कोई कुत्ता , बिल्ली न घुसने पावे। मैं जा रहा हूं कचहरी!

इतना कहकर लांघा कचहरी की ओर चल देता हैं ,उसी समय बीच रास्ते में लांघा को मंहगू मिल जाता है तो मंहगू लांघा से कहता है भैया राजा आपके लिये सटक मार कोड़ा पानी में िभगो कर रखे हुये हैं राजा आपके ऊपर बहुत नाराज हो रहे थे। इसलिये तुम जल्दी से राजा के पास जाओ। ऐसा कहकर मंहगू वहीं पर खड़ा हो गया और लांघा राजा के पास जाने लगा।

मंहगू घर आ जाता है और घर में आकर लांघा के लड़के पुंदगू से कहता हैये पुंदगू घर में कुछ पेज - भाजी है कि नहीं? पुंदगू कहता है हमने दादा के साथ पूरे पेज - भाजी को पी ड़ाला है। इतना सुनते ही मंहगू घर में घुसकर हंड़िया को देखता है! मंहगू को हंड़िया में पेज की जगह मोहरें भरी मिलती है। मंहगू हंड़िया से मोहरों को निकाल लेता है।

मंहगू उन मोहरों को देखने लगता है । उसी समय लांघा कचहरी न जाकर आधे रास्ते से मोहरों की चिंता में घर वापस आ जाता है। लांघा जैसे ही घर आता है तो वह देखता है कि मंहगू हंड़िया में रखी मोहरों को गिन रहा था। तब लांघा मंहगू को देखकर कहता है क्यों मंहगू तुम यह क्या कर रहे हो तो मंहगू कहता है चलो में तुमको राजा के पास ले जाता हूं। चल राजा के पास तेरी शिकायत करता हूं कि ये मोहरें तेरे पास कहां से आयी है।

इतना सुनते ही
लांघा घबड़ा जाता है
और वह मंहगू से कहता है
मंहगू भाई चार आना भाग मोहरें
तुम ले लो पर राजा को मत बतलाना।

मंहगू कहता है तुम्हारे कारण राजा ने मुझे बहुत ड़ांटा है। तुमको राजा के पास ले जाये बिना नहीं छोडूंगा। तब लांघा कहता है भाई तुम आधी मोहरें ले लो पर राजा के पास मेरी शिकायत मत करना। पर मंहगू नहीं मानता तब लांघा बेचारा चार आना भाग मोहरें अपने पास रखता है और बारह आना भाग मंहगू को दे देता है। लांघा मोहरों को घर में छिपाकर रख देता है फिर कचहरी की ओर चला जाता है।

मृद लांघा राजमहल की कचहरी में पहुंचता है तो वहां देखता ह। कि कचहरी में बहुत से लोग पगड़ी बांधकर बैठे हैं उस सभा में बड़े - बड़े राजा और मंत्री चांदा गढ़ की सभा में बैठे हैं और राजा से कह रहे है।

महराजा कुही मांछा आपकी मात्र एक बेटी है जिसके कारण आपके राज्य में देश - देश के राजा महराजा और आपके रिश्तेदार आये हैं। उसी बात की आज यहां पर चर्चा की जावे।

उसी समय मृदलांघा राजदरबार में पहुंचता है और सभी सभापतियों से राम जोहार करके

राजा कुही मांछा के पास आकर उन्हें दंड़वत प्रणाम करके राजा के बाजू में खड़ा हो जाता है!

राजा कुही मांछा देश - देश के राजाओं को आमंत्रित करके अतयंत उदास थे। राजा कुही मांछा मृद लांघा से कहते हैं मृद लांघा मैंने तुम्हारे कहने पर देश - देश और बावन गढ़ के सभी राजकुमारों को बुला लिया है!

मृद लांघा कहता है राजा जी
आपका नाम राजा कुही मांछा
आपके खरदा का नाम वेद मांछा
उस खरदा को राजा तीन बार उठा लेगा
उसका विवाह चांदा गढ़ की बेटी के साथ होगा
इतना सुनते ही राजा कुही मांछा को थोड़ा संतोष हुआ!

राजा का प्रण सुनकर जितने राजा बावन गढ़ और देश - देश से आये थे वे कहते हैं चलो भाई अपने - अपने देश वापस चलें ! चलो सभी अतिथीगण चलकर देवगढ़, देवहार गढ़ ,नगर चांदा के राजा कुही मांछा से राम जोहार करके अपने देश वापस चलें।

ऐसा चांदा गढ़ जहां
लाख फांदा, अनगिनत छप्पर
जहां बसा गोंड़वाना
कांच और तांबे की सड़क
मोर के पीठ में ओले रखे हैं
दक्षिण दिशा में फूल - फुलवारी
केतकी, केवड़ा, चंपा की बाड़ी
ऐसी जगह पर बसा गोंड़वाना

सभी राजा गण राजा से राम जोहार करने जाने लगते हैं। सभी राजा एक दूसरे का अभिवादन कर रहे हैं घोड़े वाले राजा घोड़े पर, हाथी वाले राजा हाथी पर,जैसा राजा उसकी वैसी सवारी! कचहरी के द्वार खोल दिये गये थे सभी राजा लोग राजा कुही मांछा से बिदा लेने जाते हैं राजा से जोहर मम्मा,जोहार मम्मा कह रहे हैं।

उसी समय मृद लांघा राजदरबार में आकर कहता है - सुनो सभी राजा महराजा देश - देश के राजाओ -

हमारे राजा का नाम कुही मांछा
उनके खरदा का नाम वेद मांछा
जो राजा इस खरदा को तीन बार उठा लेगा
उसी की जोहरनी है
उसके अलावा चांदा गढ़ में
कोई भी राजा
जोहार मम्मा नहीं कह सकता
उसके बदले उस राजा को
बिना कोई कारण बतलाये कैद कर लिया जावेगा

चांदा गढ़ के दरबार में लांघा का यह आदेश सुनते ही रभी राजाओं में शांति छा जाती है! सभी राजा जोहार मम्मा कहते हुये राजा के पास आ रहे थे।

उसी समय लांघा फिर से कहता है

राजा का नाम कुही मांछा

खरदा का नाम वेद मांछा

उस खरदा को जो राजा तीन बार उठायेगा

उसी की जोहरनी है

नहीं तो चांदा गढ़ में सात पाटी में सिर मुंड़ाना पड़ेगा

नाक ,कान में भिलमा ,कौड़ी बाधी जायेगी

हाथों में हाथकड़ी लगेगी

पैरों में बेड़ी पहना दी जावेगी

उस राजा को बिना कोई कारण के

हवालात में बंद कर दिया जावेगा।

इतना सुनते ही सभी देश - देश के राजाबहुत घबड़ाने लगे! राजा कुही मांछा ने बावन गढ़ के सभी राजाओं को एक कतार में बैठाल दिया। तब मृद लांघा कहता है बावन गढ़ के राजाओं बतलाइये इसमें कौन राजा इस खरदा को उठायेगा। इतन सुनते ही बावन गढ़ के राजा बहुत घबड़ाने लगे। राजा कहते हैं तीन बार तक खरदा उठाते - उठाते तो हमारे प्राण ही निकल जायेंगे।

किसी राजा की हिम्मत नहीं हुयी की वह खरदा को उठा सके। सभी राजा अपने सिर नीचा करके बैठे हैं

मृद लांघा फिर से कहता है कि जाओ भाई खरदा उठाओ उसके बाद भी सभी राजा चुपचाप बैठे रहते हैं !

तब मृद लांघा राजमहल के सैनिकों को आदेश देता है कि राज महल के सभी दरवाजे बंद कर दिये जावें! इसके बाद लांघा राजा से कहता है कि राजा जी देवगढ़, देवहार गढ़, नगर चांदा में जहां तक आपकी सीमा है वहां पर बारह हाथ का लंबी चौड़ी और बारह बांस की गहरी खाई खुदवा दी जावे। उस खाई में भला ,बरछा ,तलवार गड़वा दो।

ऐसा लांघा राजा कुही मांछा से कहते हैं राजा ने अपने सभी नौकर - चाकरों को खाई खोदने का आदेश दे दिया और कहा कि बारह हाथ की लंबी चौड़ी और बारह बांस की गहरी खाई खोदी जावे और उसमें हथियार गड़वा दिये जावें। राजा ने आदेश दिया और अपनी व्यास गद्दी पर विराजमान हो गये।

इसके बाद मृद लांघा

फिर से कहता है

कोई भाई खरदा उठाता है कि नहीं !

परंतु बावन गढ़ का कोई राजा

नहीं कहता है कि वह खरदा को उठा लेगा।

इसके बाद लांघा अपने

नौकर - चाकर सद्दी और मुसद्वी ,

लाल बाबू से कहते हैं
चलो भिलमा और कौड़ी गुथो।
छुरा उस्तरा रखने वाले नाई
छुरा उस्तरा रखो।
बावन गढ़ के जितने राजा आये हैं
सभी की सात पाटी निकालकर
मुंड़न कर दो!
उनके सिरों में उल्टे छुरे चला दो
परंतु उनके सिर पर चोटी छोड़ देना।
इतना करने के बाद
सटक मार कोड़ा से
सभी राजकुमारों को पांच कोड़े इनाम में दो।
अब भिलमा कौड़ी गुथैया
भिलमा कौड़ी गुथ रहे हैं
छुरा उस्तरा रखने वाले नाई छुरा डस्तरा रखे हैं
बावन गढ़ के राजाओं का
बारी - बारी से मुंड़न कराया जा रहा है
सिर पर सात पाटी बनाई जा रहीं हैं
राजाओं के नाक ,कान में
भिलमा कौंडी पहनाई जा रहीं हैं
हाथों में हथकड़ीयां पहना दीं
पैरों में बेड़ी ठोंक दी
सभी राजाओं को
हवालात में बंद कर दिया गया।
इतने में नगर चांदा गढ़ में हाहाकार मच गया
राजाओं के हाथी, घोड़ा,लाव लश्कर
पर राजा कुही मांछा ने कब्जा कर लिया

इसके बाद सबसे पीछे बिरहुल गढ़ के राजा वीर महर सिंह राज दरबार में आते हैं और राज सभा में आकर राजा कुही मांछा से राम जोहार करते हैं! वीर महर सिंह जैसे ही राजा से जोहार मम्मा कहते हैं उसी समय मृद लांघा कहता है ।

ये मुसाफिर हमारे राजा का नाम
कुही मांछा,
खरदा का नाम वेद मांछा
वेद मांछा खरदा को तीन बार उठाने की शर्त है
जो राजा तीन बार खरदा उठा लेगा
उसी की जोहरनी स्वीकार है।

यदि उस खरदा को न उठा सके तो
बिना कसूर हवालात में कैद कर लिये जाओगे
इतना सुनते ही वीर महर सिंह कहते हैं
राजा मैं उठा लूंगा खरदा!
ऐसा कहकर वीर महर सिंह
अपनी छाती को ठोंकते हैं
वीर महर सिंह बारह सांगा के खरदा को
बार - बार उठा - उठा कर मार रहे हैं
वीर महर सिंह खरदा को
झुला - झुला कर मार रहे हैं
एक खरदा महर सिंह की
छाती में गड़ गया
दूसरी बार खरदा उठाने से
वीर महर सिंह की छाती फट गयी
वीर महर सिंह तीसरा खरदा उठाते हैं
वे राजा से पूंछते हैं
राजा तीसरा खरदा कहां मारें
वीर महर सिंह लांघा से कहते हैं
लांघा एक खरदा से
मेरी छाती फट गयी है
लांघा भाई अब तुम्हारी छाती बची है!
तब लांघा कहता है
वीर महर सिंह तुम्हारी तो छाती फट गयी है
तीसरा खरदा कहां मारोगे।
तब वीर महर सिंह कहते हैं लांघा भाई
जैसा आपका मन करे
आपकी छाती तो बची है
तब लांघा पूरी सभा से पूंछता है
भाईयो बतलाईये वीर महर सिंह
तीसरा खरदा कहां मारे
परंतु सभा का कोई भी सभापति कुछ नहीं कहता
तब मृद लांघा कहते हैं
एक खरदा की पूर्ति में वीर महर सिंह
बारह वर्ष तक राजा कुही मांछा
के पास लमसना बनकर रहेगा
वह रोज बारह कांवर पानी लायेगा

बारह आंगन को राज लीपेगा
बारह कमरों से गोबर निकालेगा
बारह नगरियों के लिये भोजन बनायेंगा
बारह नगरियों को पेज - भाजी
खेत में ले जाकर
बारह वर्ष तक देगा
इतना काम करने के बाद
कजली वन बिद्रा दौना गिरी पहाड़ से
हंस राज भैसा को लाकर
अपने नागर में फांदेगा
बारह नगरिया एक तरफ रहेंगे
तो बारह नगरियों की जगह
एक तरफ महर सिंह अकेले रहेंगे
उसके बाद एक खेत ज्यादा जोतना पड़ेगा
जब नागर ढ़ील कर आयेगा
तो मेन की कुल्हाड़ी से
बबूल की लकड़ी को काटेगा

इतना सब काम महर सिंह को लमसना की अवधि में रहते हुये करना होगा। मृद लांघा वीर महर सिंह से पूंछते हैं कि महर सिंह तुम यह सब लमसनाई की अवधी में करने के लिये तैयार हो की नहीं!

तब वीर महर सिंह कहते हैं कि हां भाई मैं यह सब काम करने के लिये तैयार हूं। इस प्रकार वीर महर सिंह राजा कुही मांछा के महल में रहकर लमसनाई करने लगे।

यहां पर राजा कुही मांछा ने देश - देश और बावन गढत्र के सभी राजकुमारों को हवालात में ड़ाल दिया है।

ऐसा होते करते बहुत दिन बीत गये! एक दिन पिली बाविन मंछाल रामो अपनी साठ सहेलियों के साथ सतखंड़ा महल में जहां नौ खंड की ओवरी है और शंकर जी का त्रिशूल गड़ा है उसके पास में लगे झूले में बैठी पिली बाविन मंछाल रामो अपनी सहेलियों से कहती हैं! चलो सखी बांध में स्नान करने चलते हैं ! ऐसा कहकर पिली बाविन मंछाल रामो अपनी साठ सहेलियों के साथ महल से उतरती हैं और बांध की ओर जाने लगती हैं।

आवन गली बावन बजार
टूरी हटरी टूरन के लगे है दरबार

पिली बाविन मंघ्छाल रामो अपनी सखियों के साथ चित्र सागर बांध में पहुंच जाती हैं ! बांध में पहुंचकर सभी लड़कियां अपने वस्त्र उतार कर बांध के किनारे रख कर स्नान करने लगती हैं!

रानी और उसकी सहेलियां बांध में स्नान कर रही हैं !नगर के स्त्री - पुरूष बुजुर्ग जवान बाल - बच्चे सभी कैन्ना मंछाल रामो को बांध में स्नान करते हुये देख रहे हैं।

चांदा गढ़ के लोग रानी को नहाते हुये देखकर कहते हैं - यह राजा कुही मांछा की अकेली संतान है! इसके पीछे देश - देश एवं बावन गढ़ के राजकुमारों राजा ने हथकड़ी लगाकर जेल में बंद कर दिया है।

सबके पैरों में बेड़ी ठुकी हैं,नाक ,कान में भिलमा और कौंड़ी गुथीं हैं। इसका पाप तो राजा की लड़की कैन्ना मंछाल रामो को लगेगा ही!

इतना सुनते ही कैन्ना पिली बाविन मंछाल रामो अपनी सहेलियों से कहती हैं! क्यों री सखी ये स्याने जवान लोग जो नहा रहे हैं वे किस की बातें कर रहे है। तब रानी की सहेलियां कहती हैं कैन्ना पिली बाविन वे लोग आपकी ही बात कर रहे हैं और आपको ही कह रहे हैं!

इतना सब सुन समझकर मंछाल रामो बांध से स्नान करके महल में आ जाती हैं । रानी महल में आकर अपने अच्छे वस्त्र उतारकर फटे पुराने वस्त्र धारण कर लेती हैं। उसने अपने जेवर और श्रृंगार को उतारकर अलमारी में रख दिया और सत खंड़ा महल के सातों खंड़ों में ताला लगाकर एक पलंग पर आकर बैठ जाती है कैन्ना कहती है आज मैं अपने पेट में कटार मारकर आत्म हत्या कर लूंगी!

उसी समय रानी का तोता रायमेघिन जो सोने के पिंजरे में बंद था ! वह कहता है

दीदी मंछाल रामो

सीता राम , सीता राम

चित्र कोटी, दूध रोटी,

दीदी मुझे दूध रोटी दे दे मुझे भूख लगी है!

तब मंछाल रामो सुआ से कहती है रायमेघिन तुम को तो किसी प्रकार की चिंता नहीं है1 तो सुआ कहता है दीदी मुझे तो सिर्फ खाने की चिंता है! पर दीदी आप क्यों रंज कर रही हो तुम अपने आदमी के रंज में क्यों मरने जा रही हो। तोता फिर कहता है दीदी मिट्ठू चित्रकोटी दूध रोटी दीदी मुझे खाना दे!

सुआ मंछाल रामो से कहता है दीदी आपको अपने पति का गम है। मैं सब जानता हूं ! तो मंछाल रामो कहती है अरे सुआ मैं तुझे जिन्दगी भर घी की लौदी और चना की दाल खिलाई है तुम अपना मुंह सभाल शब्द नहीं निकाल सकते हो। आज से तुमको मैं खाना नहीं दुंगी!

तब सुआ कहता है दीदी तुम मुझे खाना दो तो मैं तुमको एक बात बतलाता हूं। तब मंछाल रामो कहती है पहले तुम अपनी बात बतलाओ फिर तुमको खाना देंगे।

तब सुआ कहता है दीदी आपके पिताजी ने देश - देश, बावन गढ़ के राजाओं को बुलाकर हवालात में बंद कर दिया है। राजा ने आपका स्वंयवर रचाया है। जिस पर आपका दिल कहे उसे स्वीकार कर लो। एक राजा वीर महर सिंह ने राजा के खरदा को उठाया है उसने दो खरदा उठा लिये हैं और वह महल में लमसनाई कर रहा है। इतने में भी आपका मन नहीं करता तो एक राजा और है वह आपके मामा - फुआ का लड़का है!

तब मंछाल रामो कहती है अरे सुआ वह राजा कहां रहता है और उसका क्या नाम है। तुमको कैसे पता चला की हमारा उससे मामा फुआ का रिश्ता है।

सुआ बोला

दीदी तुम्हारी मां और उसकी मां

दोनों गयी रहीं चिरपोटी के बजार!
तुम्हारी मां और उसकी मां
दोनों रिश्ते में ननद - भौजाई लगती है
तब उसकी मां ने लिया
हंसा नाम का कबूतर
और तुम्हारी मां ने मुझको लिया
मतलब मैं रायमेघिन को!
दोनों रानी बजार करके
घर वापस लौट रहीं थीं!
चलते - चलते दोनों थक जाती हैं
तो दोनों एक महुआ के पेड़ की
छाया में बैठकर विश्राम करने लगती हैं।
तुम्हारी मां के पेट में तुम रहीं
और वह भी गर्भवती थी।
तब तुम्हारी मां ने कहा
भौजी तुम्हारी बेटी और
मेरा बेटा हुआ तो तुम
मुझे दे देना और कहीं
मेरी बेटी होगी तो
मैं तुमको दे दुंगी!

उसी समय उस महुआ के पेड़ से उसके फल गिरे तो दोनों ननद भौजाई ने एक एक महुआ उठाकर उसका रस अपने अपने ब्लाउज में टपकाया।

तो दीदी वह रानी रहती है खैरागढ़, बैरागढ़ में । उसके लड़के का नाम है बायोड़।ड़ी मारा क्षत्रीय वही उठायेगा चांदागढ़ के खरदा को।

तब कैन्ना मंछाल रामो बोलती हैं सुआ से ये रे सुआ उस राजा का पता कौन लगायेगा। सुआ कहता है दीदी किसी खबरिया को भेजना पड़ेगा तो कैन्ना कहती है ये रे सअुा मैं। बिना जाने पहचाने किस से कहूं ? ऐसा करो तुम ही चले जाओ खबर लेकर। तब सुआ कहता है दीदी मैं नहीं जा सकता। कैन्ना कहती है सुआ तुमको जाना ही पड़ेगा जब तक तुम जाने के लिये मना करोगे तब तक तुमको खाना नहीं मिलेगा। ऐसा करते - करते रात बीत गयी।

तब सुआ कहता है दीदी मैं जाऊंगा तो लौटकर वापस नहीं आ सकता। कैन्ना मंछाल रामो कहती है कैसे वापस नहीं आओगे। सुआ कहता है दीदी मेरे रास्ते में तीन जगह काल हैं तो मंछाल रामो कहती हैं सुआ तुम्हारे लिये कौन - कौन से काल है।

तब सुआ कहता है
दीदी जब मैं घर से निकलूंगा
तो खुसरा पक्षी है,
खुसरा से बच गया तो

चचान बाज है
उससे यदि बच गया तो
भूमिया बैगा के
चौप फांदा में फंस जाऊंगा।
तो दीदी ऐसे - ऐसे कष्ट हैं
मेरे रास्ते में इसलिये मै।
नहीं जा सकता।

कैन्ना मंछाल रामो कहती हैं ये सुआ जब तक तुम खैरागढ़, बैरागढ़ नहीं जाओगे तब तक तुमको मैं खाना नहीं दूंगी। तब सुआ अपने मन में सोचता है कि मैं इसे बात बता कर खुद फंस गया हूं। कैन्ना यदि खाना नहीं देगी तो मैं मर जाऊंगा। भूख के कारण सुआ का पेट दर्द करने लगा उसकी टॉख निकली जा रहीं थीं।

तब सुआ कहता है दीदी पत्र लिख दो खैरागढ़ बैरागढ़ के लिये अगर मैं जिंदा रहा तो फिर वापस आकर आपसे मिलूंगा। मरने के बाद तो यह संसार दुर्लभ है।

कैन्ना मंछाल रामो
पत्र लिखती है बैरागढ़ के लिये
पत्र में लिखती है
श्री हरी शुभ स्थान
नगर चांदा गढ़
पोस्ट, थाना, नगर चांदा गढ़
जहां के राजा कुही मांछा
जिसकी बेटी पिली बाविन मंछाल रामो
पत्र लिखने का खास कारण
देश - देश के राजा महराजा
चांदागढ़ की हवालात में बंद है।
अगर तुम मेरे मामा - फुआ के लड़का हो तो
मुझे नगर चांदा से आकर ले जाओ
यदि नहीं आ सकते तो
मेरे नाम से दोनों हाथ में
तीन - तीन चूड़ियां पहन लेना
और रास्ते में बैठकर कोदों दरते रहना
ऐसा पत्र में लिख रही हैं कैन्ना मंछाल रामो

इसके बाद कैन्ना मंछाल रामो ने घी का लौदा और चना की दाल सुआ का ेनिकाल कर दिया! ससुआ ने खाना खाकर कैन्ना मछाल रामो से कहा दीदी मुझे पत्र दो मै। जा रहा हूं बैरागढ़।

कैन्ना ने पत्र को एक तार में फंसा कर उसे सुआ के गले में पहना दिया। सुआ राय मेघिन और कैन्ना मंछाल रामो सत खंड़ा के महल में एक दूसरे से राम जोहार कर रहे हैं ।

सुआ सत खंड़ा से निकल कर राहर के खेत में जाकर बैठ गया। वहां बैठकर सुआ करन

करन बोल कर कहता है दीदी मैं जा रहा हूं । सुआ राहर से उड़ कर चांदा गढ़ के तीन चक्कर लगाता है उसके बाद सुआ ने बैरागढ़ की रास्ता पकड़ ली।

सुआ फर - फर - फर -फर करते हुये उड़े जा रहा था वह बड़े - बड़े जंगल बड़े - बड़े पहाड़ कंदराओं और गुफाओं को नाकते हुये चले जा रहा था तो रास्ते में शाम हो गयी ।

तब सुआ अपने मन ही मन में कहता है मैं पक्षी की जाति का हूं मुझे रात को दिखाई नहीं देता है। अब मैं कहां जाऊं? सुआ को एक जगह एक ऊमर का पेड़ दिखा उस पेड़ के एक कोटर में खुसरा पक्षी ने बच्चे दिये थे । सुआ उस कोटर के ऊपर जाकर बैठ गया।

उस सुआ को देख कर खुसराईन तड़फड़ाने लगी वह सोचने लगी की आज में इस सुआ को अपने बच्चों को खिलाती परंतु बच्चों के सेने के कारण वह कोटर से बाहर नहीं निकल पा रही थी। उसी के पास वाले कोटर में रात भर सुआ आराम से सो रहा था।

दूसरे दिन सुबह - सुबह खुसरा पक्षी जंगल से वापस आया उस रात उसने एक भी शिकार नहीं पाया था। खुसरा सुआ को देखता है और सुआ जैसे ही खुसरा को देखता है वह वहां से फुर्र से उड़ जाता है ।

चलते - चलते सुआ एक जगह पहुंचा जहां चचान पक्षी अपने शिकार की टोह में बैठा था। चचान ने सोचा सुआ आकर मेरे फंदे में फंस जायेगा । सुआ चचान पक्षी के ऊपर से उड़ कर जा रहा था जिससे चचान को सुआ की परछाई दिखी तो सुआ चचान के पीछे पड़ गया।

सुआ जी छोड़ कर भागा जा रहा है। यह दे वह दे ! सुआ चचान को बहकाकर वहां से भाग निकला। जैसे तैसे सुआ अपनी जान बचाकर एक झाड़ी में जाकर छुप गया।

उसी झााड़ीयों में एक सियार और सियारनी बेर खा रहीं थी! सियार और सियारनी ने उस झाड़ी से निकलकर देखा तो एक ड़ाली पर चचान बैठा था।

सियार और सियारिन आपस में किस्सा बताने लगे। सियारिन सियार से कहती है सियार तुम किस्सा बतलाओ। सियार कहता है मैं नहीं तुम सुनाओ किस्सा ! सियारनी ने सियार को किस्सा बताना शुरु कर दिया। सियारनी ने कहा -

चांदागढ़ के राजा कुही मांछा
जिसकी एक बेटी थी
उसके राजा पिता ने
देश - देश के राजाओं को बुलाया
सभी राजाओं को बिना कसूर हवालात में बंद कर दिया।
उस राजा की बेटी मंछाल रामो
ने सुना की मेरे पिता ने
सब राजाओं को हवालात में बंद कर दिया है
ऐसा सुनकर रानी ने
इसी सुआ को बैरागढ़ के लिये भिजवाया हैं।
तो यह चचान उस सुआ का पीछा करते - करते
उसे इसी झाड़ियों में लेकर आ गया है।
सियार की कहानी चचान भी सुन रहा था

वह यह सुनकर पछताने लगा।

सुआ रायमेघिन वहां से उड़ गयी।

सुआ उड़ते - उड़ते एक खेत में पहुंचा वहां पर पकी हुयी पकरी लगीं थीं। सुआ देखता है की उस खेत की पकरी को भिलाई सुआ, टैंउची सुआ,रैसुरी सुआ, सभी सुआ मिलकर उस पकरी को खा रहे हैं।

इतने में रायमेघिन सुआ जाकर वहां बैठ गयी। उससे कोई भी सुआ नहीं बोला पकरी खाकर सब सुआ वहां से उड़ गये। सुआ रायमेघिन भी वहां से उड़ गयी। वह जाकर एक पेड़ पर बैठ गयी।

उसी पेड़ पर पहले वाले सुआ जाकर बैठ गये उस पेड़ पर बिंझवार बैगा चौंप फांदा लगा कर रखा था सभी सुआ जाकर उस फांदा में फंस गये।

कुछ देर बाद रायमेघिन सुआ उस जगह पर पहुंचा। सभी सुआ रायमेघिन से कहते हैं कि तुम हम लोगों की जात बिलादरी की हो ! हम लोग यहां पर फंस गये हैं यहां से निकलने का कोई पाय बताओ ?

तब रायमेघिन कहती है यहां से निकलने का उपाय तो मुझे भी नहीं मालुम । परंतु एक उपाय जरुर है वह यह है कि जब फांदा वाला बैगा तुम लोगों को पकड़ने आयेगा तो तुम लोग मरे जैसे पड़े रहना जिससे वह समझे की तुम लोग मर गये हो।

इसके बाद जब दूसरा दिन निकला तो बैगा बैगिन उस बड़ के पेड़ के नीचे पहुंच गयें बैगा ने देखा की उसका फांदा सुओं से भरा पड़ा है । सुओं को देखकर बै और बैगिन बहुत खुश हो जाते हैं ।

बैगा कहता है ये बैगिन चल अपन दोनों करमा गायें। आज ढ़ेर सारे सुआ जाल में फंस गये हैं । हम लोगों की तो किस्मत जाग गयी है ।बैगा और बैगिन दोनों करमा नाचने लगते हैं ।   करमा नाचने के बाद बैगा उस बड़ के पेड़ के ऊपर चढ़कर देखता है तो सभी सुआ वहां पर चित्त पड़े रहते है। बैगा उन सुओं को जाल से छोड़ - छोड़कर नीचे फैकता जा रहा था। जिससे सुओं के शरीर में चोट लग रही थी । फिर भी वे चुपचाप जमीन पर गिर रहे थे। वे अपने पंख नहीं फड़फड़ा रहे थे । अंत में जैसे ही बैगा ने रायमेघिन सुआ को फेंका वैसे ही सभी सुआ करन - करन कहते हुये वहां से उड़ कर भाग गये।

बैगिन बैगा से कहती है

देखो सब सुआ उड़कर भाग रहे हैं ।

ऐसा सुनते ही बैगा

उस पेड़ से जल्दी - जल्दी उतरने लगा ।

उसी समय एक लकड़ी में

बैगिन की करधन उलझ गई।

तब बैगा ने बैगिन की करधन को

झटका मार कर निकालना चाहा

तो बैगिन की करधन टूट गयी

और बैगा बेचारा लहुलुहान हो गया।

उसके साथ सुआ ने छल किया था।
बैगा को गुस्सा आ गया
जिसके कारण वह बैगिन को
धमा - धम मारने लगा।
इसके बाद बैगा अपने घर चला गया
और बैगिन उसके पीछे - पीछे
अपने घर चली गयी।

सुआ वहां से उड़ा और उड़ कर बैरागढ़ की सीमा पर पहुंच गया। वह बैरागढ़ जाकर वहां के एक बांध के खंबे के ऊपर जाकर बैठ गया। उस बांध पर बैरागढ़ की एक लाख पनिहारिनें पानी लेने आयी और उन पनिहारिनों ने अपने घघरा - बटुओं को धोया और उन्हें सिर के ऊपर रख कर जाने लगीं।

सुआ खंबे से उड़ा और सभी पनिहारिनों का पानी जूठा कर दिया। एक लड़की कहती है बाई तुम्हारा पानी सुआ ने जूठा कर दिया है । तो दूसरी लड़की कहती है बाई तुम्हारा भी तो पानी उस सुआ ने जूठा कर दिया है।

ऐसा करते - करते सुआ ने सब पनिहारिनों का पानी जूठा कर दिया । जिससे पनिहारिनें परेशान हो गयीं। ऐसा होते - होते दोपहर हो गयी पनिहारिनें जब भी पानी लेकर जाने लगती । सुआ उसे जूठा कर देता।

पनिहारिनें गुस्सा होकर उस सुआ को गाली देने लगीं की और कहती हैं यह भड़ुआ सुआ कहां से आ गया है जो सबेरे से हम लोगों को परेशान कर रहा है । इसके कारण हम लोगों को घर जाने में देर हो रही है। यदि आज मेरा भाई होता तो ऐसे सुआ को जान से खतम कर देता।

उन पनिहारिनों की बात सुनकर सुआ कहता है जाओ तुम अपने भैया को बतला देना। यदि यह बात तुमने अपने भैया को नहीं बतलाई तो तुमको तुम्हारे भाई की कसम है।

इतना सुनते ही सभी पनिहारिनें गुस्सा होकर बैरागढ़ के रास्ते जाने लगीं। चलते - चलते आधे रास्ते में उनको राजा बायोड़ंड़ी बैरागढ़िहा मिलते हैं ।

वे लड़कियों से पूंछते हैं क्यों री लड़कियो आज तुम लोगों ने इतनी देर कैसे लगा दी। तब सभी लड़कियां कहती हैं ये भैया बांध में एक सुआ आया है जो सबको बहुत गाली दे रहा है और बार - बार हम लोगों का पानी जूठा कर रहा है । इसलिये देर हो गयी हैं ।

इतना सुनते ही राजा से साठों जंवरिहा कहते हैं ये लड़की वह सुआ कहां पर है। ऐसा सुनकर राजा के सभी जंवरिहा दौड़कर बांध की ओर जाने लगते है।

राजा के साथियों को अपने तरफ आते देख सुआ खंबे से उड़कर बगीचा में चला जाता है। सभी लड़के बगीचा की ओर दौड़ते हैं ता सुआ बगीचे से उड़कर खंबे पर आ जाता है। लड़के खंबा की ओर दौड़े तो सुआ बगीचा में आ जाता है।

इस प्रकार राजा के साठों जंवरिहा लड़के उस सुआ से परेशान हो जाते है। सभी लड़के मन ही मन पछताते हैं और कहते हैं क्या बतायें आज तो इस सुअ ने हमें परेशान कर दिया हैं

तब सुआ राजा के साठों जंवरिहों से कहता है । ये राजा के जंवरिहा तुम लोग यदि मुझे

पकड़ लोगे तो मुझे मार ड़ालोगे। यदि तुम लोग मुझे मारने के लिये न कहो तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा।

इतना सुनते ही राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय कहते हैं ये सुआ आ जा हम लोग तुमको नहीं मारेंगे। सुआ कहता है राजा जी आप पहले कसम खाओ की तुम हमको नहीं मारोगे। तब राजा कसम खाकर कहता है सुआ मैं कसम खाता हूं। कि मैं तुमको नहीं मारुंगा। तब राजा सुआ को बुलाता है तो सुआ खंबे से उड़कर राजा के कंधे में आकर बैठ जाता है।

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय देखते हैं कि उस सुआ के गले में एक चिट्ठी बंधी है राजा उस चिट्ठी को निकालकर पढ़ते हैं उस चिट्ठी में लिखा था -

श्री हरि शुभ स्थान नगर चांदा गढ़
थाना, जिला, तहसील नगर चांदागढ़
जहां के राजा कुही मांछा
जिसकी लड़की मंछाल रामो
चिट्ठी भेजने वाले का नाम
पिली बाविन मंछाल रामो
पाने वाले का नाम
राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय बैरागढ़िहा
अगर तुम मेरे मामा - फुआ के बेटे हो
तो मुझे आकर ले जाओ
नहीं आ सकते तो मेरे नाम की
तीन - तीन चूड़ियां दोनों हाथों में पहन लेना
राजा बैरागढ़िहा मारा क्षत्रीय ने
जब चिट्ठी पढ़ी तो सोच में पड़ गये।

वे अपने साठों जंवरिहा से कहते हैं चलो जल्दी - जल्दी घर चलो। राजा अपने साठों जंवरिहों के साथ अपने घर जाने लगते हैं रास्ते में एक ड़ोकरी उस डोकरी ने एक मुर्गा पाल रखा था। वह दूसरों के घर काम करके अपना जीवन - यापन कर रही थी।

राजा रायमेघिन को अपने कंधे में रखकर उस ड़ोकरी के घर के सामने से गुजरा । राजा ने उसके मुर्गे को देखा तो अपने दोस्तों से कहा इस मुर्गे का पत्थर से निशाना लगाओ। तो राजा का एक साथी कहता है राजा जी यह ड़ोकरी का मुर्गा है इसे मत मारो।

राजा बायोड़ंड़ी ने बिना सोचे समझे उस मुर्गे को एक पत्थर मार दिया जिससे मुर्गा मर गया। ड़ोकरी ने जब देखा की उसका मुर्गा मर गया है तो वह पछताकर रोने लगी। ड़ोकरी कहती है

राजा का हाथी
प्रजा का घोड़ा
रांड़ का मुर्गा
इन सभी की कीमत एक बराबर होती है।

राजा के साथियों में से एक लड़का पीछे छूट गया था । वह वहीं से निकला तो उस ड़ोकरी

को रोते देखा तो वह रुक गया और उस ड़ोकरी से पूंछने लगा दाई तुम क्यों रो रही हो। तो ड़ोकरी कहती है दाई मेरे मुर्गे को किसी ने मार दिया है इसलिये पछता रही हूं।

तब वह लड़का कहता है दाई राजा बायोड़ंड़ी अभी यहां से गुजरे हैं कहीं उन्होंने तो तुम्हारे मुर्गा को न मारा हो ।

तो ड़ोकरी कहती है

राजा को मेरे मुर्गा को मारने में

कौन सा राज मिल जायेगा।

तुम्हारे राजा की सात पीढ़ी के

पूर्वजों के सिर कटे टंगे हैं चांदा गढ़ में ।

तुम्हारा राजा वहां जाकर

अपने पूर्वजों की पगड़ी

निकालकर लाता तो जानती।

मेरे मुर्गा को मारने से उसे क्या मिलेगा।

राजा का साथी जाकर यह बात राजा को बतलाता है कि ड़ोकरी ऐसा कह रही थी। राजा ने जब यह बात सुनी तो वह तुरंत रास्ते से वापस आ गया। राजा ड़ोकरी के पास आकर कहता है दाई अभी तुम क्या कह रहीं थीं ।

तो ड़ोकरी कहती है बेटा न जाने किसने मेरे मुर्गा को मार दिया है जिसके कारण मैं पछता रही थी। उसी समय यह काना लड़का आया और कहता है कि राजा अभी यहां से निकले हैं कहीं उनने तुम्हारा मुर्गा न मारा हो।

तो मैंने कहा बेटा राजा मेरे मुर्गा को क्यों मारेगा। उनके पूर्वजों के सिर चांदागढ़ में टंगे हैं । राजा अपने पूर्वजों की पगड़ी लाता तो जानती। बेटा मैंने तो बस यही कहा था। तब राजा बायोड़ंड़ी ने तुरंत पांच मोहर निकालकर उस ड़ोकरी को दे दिया।

राजा बायोड़ंड़ी वहां से अपने राज महल में पहुंचते हैं । राजा राजमहल में में राज माता के पास जाते हैं और कहते हैं दाई यह सुआ चांदागढ़ से आपकी बहू की खबर लेकर आया है।

राजा कहते है दाई चांदागढ़ के राजा कुही मांछा ने देश - देश से राजाओं को बुलवाकर अपने महल में कैद कर लिया है।

तुम्हारी बहू ने सुआ के हाथ एक चिट्ठी भेजी है उसमें लिखा है तुम नहीं आ सकते तो मेरे नाम से दोनों हाथों में तीन - तीन चूड़ियां पहनकर टिपटा वाली गली में कोदों दरना।

तब रानी कहती है बेटा तुम वहां कहां जाओगे वह बैरी बासा की जगह है चांदागढ़! उस राज्य में तुम्हारे सात पीढ़ीयों के सिर टंगे हैं चांदा गढ़ में हड्डीयों की बाड़ी और कांटों के रुंधना लगे हैं।

राजा वहां से आकर

सुआ को घी की लौंदी

और चना की दाल खाने को देते हैं।

तब सुआ कहता है

भाटो आप चांदागढ़ कब आ रहे हैं।

तो राजा कहते हैं

सुआ जिस दिन चांदा गढ़ की सीमा पर

लाल, पीले, काले तंबू दिखें

तो समझना राजा आ गये हैं।

ऐसा कहकर राजा ने सुआ को वहां से बिदा किया। सुआ वहां से चांदागढ़ के लिये उड़ गया। तीन दिन तीन रात के बाद सुआ चांदा गढ़ पहुंचता है ।

सुआ कैन्ना मंछाल रामो से कहता है दीदी भाटो आने वाले हैं उन्होंने कहा है कि सीमा पर जब भी लाल,पीले,काले तंबू तने दिखें समझना राजा आ गये हैं। ऐसे वचन राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय ने कहे है।।

यहां बैरागढ़ में राजा अपनी मां से कहते हैं मां मुझे पांच मोहर दो मैं चांदागढ़ देखने जाऊंगा। इतना सुनते ही राज माता रोने लगती हैं और कहती हैं बेटा तुम वहां कहां जाओगे चांदागढ़ बैरी बासा की जगह है।

तब राजा कहते है

मां तुम आंगन में

एक तुलसी का पेड़ लगा देना

और उसमें रोज पानी ड़ालना

जब तक वह पेड़ हरा रहेगा

तो समझना मेरा बेटा जिंदा है

जिस दिन वह तुलसी का पेड़ मुरझा जावे

तो समझना मेरा बेटा

युद्‌ध में शहीद हो गया है।

राज माता राजा को

हर प्रकार से समझाती हैं

पर राजा नही मानते।

वे राज माता से पांच मोहर लेकर

कलार पारा जाने की तैयारी करने लगते हैं

राजा कलार पारा जाते - जाते रास्त में सोचते हैं की हमारोज घराने में जब भी कोई बाहर जाता है तो अपने देवी - देवताओं को धार तरपनी करना पड़ती है ऐसा सोचते हुये राजा कलार पारा पहुंच जाते हैं ।

राजा कलार पारा पहुंचकर

चटुआ कलार के घर जाते हैं

वहां पर चटुआ कलार की कलारिन

घर के आंगन को लीप रही थी

राजा वहां जाकर उससे पूंछते हैं

क्यों कलारिन कलार कहां गया है

तो कलारिन कहती है राजा जी

कलार जंगल गये हैं जरवा काटने ।

तब राजा कहते है

कलारिन यह लो पांच मोहर

और बैला आंखिन चुनिया !

इस बैला आंखिन चुनिया

में शराब भर कर ला दो ।

कलारिन राजा से पैसा और बैला आखिन चुनिया लेती है और उसमें शराब भर कर राजा को लाकर दे देती है ं।

राजा उस शराब को लेकर वापस राजमहल में आ जाते हैं । राजा राजमहल में आकर अपनी मां से कहते हैं दाई मैं जा रहा हूं चांदागढ़ वह बैरी बासा की जगह है इसलिये अपने साथीयों के साथ उठ बैठ लूं और उनके साथ बैठकर हुक्का - तम्बाखू खा पी लेता ।

ऐसा कहकर राजा अपने मंत्री मंहगू को बुलाते हैं और उससे कहते हैं मंहगू तुम जाकर मेरे साठों जंवरिहों को बुलाकर ले आओं । उनसे कहना राजा ने उन्हें अभी बुलाया हैं ।

मंहगू राजा के साठों जंवरिहों को बुलाने चला जाता है ।

राजा अपने कंधे में धोती ड़ालकर स्नान करने बांध में चले जाते हैं । राजा बांध में जाकर पांच पसौ पानी देवताओं को और पांच पसौं पानी अपने पूर्वजों को अर्पित करते हैं ।

राजा बंधा में स्नान करके वस्त्र बदल कर राजमहल में वापस आ जाते हैं । राजमहल में आकर राजा अपनी मां से ड़ब्बे में रखी होम सामग्री मांगते हैं ।

होम सामग्री लेकर राजा देवघर में जाते हैं राजा देवघर में जाकर अपने देवताओं को धार तरपनी देकर हवन करते हैं सभी देवता जागृत हो जाते हैं तो राजा देवताओं से कहते हैं

मेरे पुरखों के देवता

मैं जा रहा हूं चांदा गढ़

आप लोग मेरा साथ दोगे की नहीं ।

तब सभी देवता कहते हैं

राजन जिस दिन से आपने

हम लोगों को अपने साथ रखा है

उस दिन से हम लोग

आपका साथ देते आ रहे हैं

जिस दिन आप अपने शरीर से

हमें निकाल देंगे उस दिन की बात हम नहीं जानते।

राजा देवघर से बाहर आते हैं और अपने साठों जंवरिहों के बीच में आकर बैला आंखिन चुनिया की शराब लाकर रख देते है।।

राजा अपने साठों जंवरिहों के बीच में जाकर बैठ जाते हैं और कहते हैं ! मैं तो जा रहा हूं चांदा गढ़ तुम सभी लोग मेरे राज पाट को अच्छी तरह से चलाना आपस में लड़ाई झगड़ा नही करना।

जब तुम्हारे राज्य से कोई आदमी जाये तो उसे पांच कोस तक छोड़ने जाना और तुम्हारे

राज्य में जब कोई आवे तो उसे पांच कोस पहले से ससम्मान लेकर आना।

उसके बाद राजा ने अपने साठों जंवरिहों को बैला आंखिन चुनिया से शराब निकालकर दी सभी ने शराब पी । इसके बाद नौ नारी बत्तीस कुंवारी लड़कियां आयीं और राजा से कहा भोजन तैयार है सभी लोग चलकर भोजन करें।

राजा के साठों जंवरिहा भोजन करने चले जाते हैं आंगन में पत्तलें परोसी गयीं। छत्तीस आलन और बत्तीस प्रकार के भोजन परोसे गये।

भोजन में बना था
बामी मछली और
सांभर का मांस
साथ में राम चचेड़ा
और कुंदरु की भाजी!

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय भोजन करने बैठ गये । राजा ने पांच कौर भोजन अपने देवताओं को अर्पित किया और भोजन करने बैठ गये।

राजा ने भोजन करने के बाद हुक्का और बिड़ी सभी जंवरिहों को पीने दी। इसके बाद राजा ने खूुंटी में टंगी सोन की कलिहारी निकाली और घुड़साल की ओर जाने लगे।

घुड़साल में घोड़ा बैंदुला बंधा था। राजा घुड़साल में जाकर घोड़े की पीठ पर हाथ फेरते हैं । तब घोड़ा बोलता है राजन आप पर कौन सी विपत्ति आन पड़ी है जो आज आपने मुझको याद किया है।

तब राजा कहता है
घोड़ा बैंदुला मुझे तुम्हारे ऊपर सवारी करना हैं
मुझे नगर चांदागढ़ जाना हैं
तुम साथ दोगे की नहीं ।
तब घोड़ा बैदुला ने कहा
राजन जब मेरी जवानी थी
तब तो आपने चांदागढ़ पर चढ़ाई नहीं की
अब जब मेरा बुढ़ापा आ रहा है
तो आप चांदा गढ़ पर
चढ़ाई करने की सोच रहे है।
फिर भी मैं तैयार हूं ।
जब तक आप
मेरी पीठ पर सवार रहेंगे
तब तक आपको कुछ नहीं हो सकता ,
जिस दिन आप मेरी पीठ पर नहीं रहेंगे
उस दिन की बात मैं नहीं जानता।

घोड़े के वचन सुनकर राजा खुश हो जाते हैं राजा घोड़े को घास खिलाते है। घास खिलाकर राजा घोड़े को चौदह वरन के आंगन में लाकर उसकी पीठ में सोने की टाट और सोने की गेंड़ी

लगाकर घोड़े को काले पीले चांवल मारकर अपने देवताओं का आवहन करते हैं ।

अब राजा स्वतः सज रहे हैं

वे राजसी पोशाक पहनकर

हाथों में लोहे के साज - बाज

और सीने में चर्तभुज पारस धारण करते हैं

राजा सिर पर टोपी

और पैरों में मखमल के जूते धारण करते हैं।

राजा अपने हाथ में बैरी साल खरदा रखकर

चांदागढ़ में चढ़ाई करने के लिये तैयार हो जाते हैं।

राजा अपने साथियों और राज माता से बिदा लेते हैं और राजा जय बड़ा देव कहके घर से निकल पड़ते हैं। राजा के साथी राजा को पांच कोस तक छोड़ने जाते है । सभी साथी राजा को रास्ते से बिदा करके अपने - अपने घर वापस आ जाते हैं ।

राजा बायोड़ंड़ी अपने घोड़े बैदुला पर सवार होकर चांदागढ़ के लिये निकल पड़ते हैं। राजा रात दिन का सफर करते करते लोहन गढ़ की सीमा में प्रवेश करते हैं ।

लोहन गढ़ में लोहा ही लोहा की बाड़ी लगी है। राजा बायोड़ंड़ी लोहन गढ़ की बाड़ी देखते हुये चले जा रहे हैं ।

जब लोहन गढ़ के राजा लोहगुंड़ी को पता चला की राजा बायोड़ंड़ी उनके राज्य में प्रवेश कर गये हैं तो राजा लोहगुंड़ी ने अपनी सेना को आदेश दे दिया की राजा बायोड़ंड़ी को चारों तरफ से घेर लो।

राजा लोहगुंड़ी ने अपने राज्य में युद्ध के बाजे बजवा दिये । बाजों से मार - मार की आवाज आ रही थी।

राजा का घोड़ा बैंदुला राजा को सर्तक कर रहा है कि राजा आप मेरी पीठ पर संभलकर बैठना आपको लोहन गढ़ की फौज ने चारों तरफ से घेर लिया है। घोड़ा बैदुला ने एक ऐड़ लगाई और फौज के बीच मे पहुंच गया।

युद्ध के मैदान में

तेगा से खट - खट की

और तलवार से

छपक - छपक

की अवाज आने लगी।

बैरागढ़ के सैनिक भी बहुत लड़ाकू हैं

वे बहुत तेजी से मार काट कर रहे है ।ं

एक घड़ी के लिये जब सिरोही चली

तो युद्ध के मैदान में

खून की नदिया बहने लगी।

पूरे युद्ध के मैंदान में

कटे हुये सिर नजर आ रहे थे।

राजा बैरागढ़िहा ने
दुश्मन की पूरी फौज को मार गिराया।
राजा बायोड़ंड़ी ने लोहन गढ़ की
सात परत की बाड़ी को तोड़ा
और नगर चांदा गढ़ के लिये
प्रस्थान कर गये।
चलते - चलते राजा कहां पहुंचते हैं
कासन गढ़
जहां कांसा ही कांसा
और पीतल के तवा ठुंके थे।
उस राज्य में सात परत के कांसा
और पीतल अलग अलग जुड़े थे।
राजा बायोड़ंड़ी कासन गढ़ पहुंच कर
वहां के राजा कौसबंधी से
युद्ध करके कांसन गढ़ को ध्वस्त करके
फिर से चांदा गढ़ के लिये प्रस्थान कर गये ।
चलते - चलते
आठ दिन नौ रात में
राजा बायोड़ंड़ी
चांदा गढ़ की सीमा में पहुंच जाते हैं ।
चांदागढ़ की सीमा पर जाकर
राजा बायोड़ंड़ी ने
लाल, काले , पीले, तंबू तान दिये।
आठ दिन नौ रात के थके हारे
राजा बायोड़ंड़ी तंबू के अंदर
आराम करने चले जाते हैं ।
राजा का घोड़ा बैंदुला
एक पेड़ से आगे पीछे बंधा था।

चांदा गढ़ की बेटी पिली बाविन मंछाल रामो देखती है कि राज्य की सीमा पर लाल, काल, पीले तंबू लगे हैं । पिली बाविन मंछाल रामो अपने तोता रायमेघिन से पूंछती है ये सुआ यह पीला,काला, लाल तंबू किस राजा ने तान कर रखा है।

तब तोता बोलता है
दीदी यह तंबू
देवबली ,राजबली,धनबली,
अपने राजा बायोड़ंड़ी का है ।
कैन्ना पिली बाविन मंछाल रामो

अपनी सहेलियों को बुलाती है ं

और उससे कहती हैं

चलो सखी बांध में स्नान करने चलते है।

रानी अपनी साठों सहेलियों के साथ बांध में स्नान करने चली जाती हैं। रानी और उनकी सखियां बांध के किनारे जाकर देखती हैं कि राजा ने लाल, पीले, काले, तूबू ताने हैं और उस तंबू के अंदर विश्राम कर रहे हैं।

पिली बाविन मंछाल रामो राजा के तंबू के भीतर चली गयी। वे अंदर जाकर देखती हैं की राजा विश्राम कर रहे हैं ।

उसी समय वीर महर सिंह पिली बाविन मंछाल रामो को तंबू में जाते देखकर आग बबूला हो जाता है। गुस्से के कारण वीर महर सिंह की छाती फटी जा रही थी।

वीर महर सिंह कहता है मैंने राजा से मंछाल रामो के लिये बारह बर्ष की लमसनाई जीती है । यह कहां का राजा या जमींदार आ गया । जो मेरी लमसनिन पिली बाविन मंछाल रामों को तंबू के भीतर रोक कर रखे है।

यदि यह मेरे साथ युद्ध करे तो इसे मैं परास्त कर देता। ऐसा सोचकर वीर महर सिंह राजा बायोड़ंड़ी को ललकारता है और कहता है कौन है रे जो मेरी लमसनिन को तंबू के अंदर रोक कर रखा है। जो भी है आकर मेरे साथ युद्ध कर ।

ऐसा सुनकर

देवबली, धनबली,

जोरबली, राजबली

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय

तंबू के भीतर से बाहर आये।

तो वीर महर सिंह कहता है

राजा मेरे साथ युद्ध कर

तब मेरी लमसनिन को ले जाना।

तब राजा कहते हैं भाई मैं पहले स्नान करने जाता हूं फिर आकर तुम्हारे साथ युद्ध करुंगा। इतना कहकर राजा बायोड़ंड़ी बांध के काली पटपर पर बैठ गये और स्नान करके उसी काली पटपर को अपनी कमर में बांधकर तीन घंटे तक पानी के अंदा घुसे रहे।

तीन घंटे बाद जब राजा बायोड़ंड़ी पानी के अंदर से बाहर आये तो वे बाहर आकर वीर महर सिंह से कहते हैं महर सिंह अब तुम तीन घंटे के लिये इस काली पटपर को अपनी कमर में बांध कर पानी के अंदर रहो तो जानें।

तब वीर महर सिंह ने मना कर दिया तो राजा बायोड़ंड़ी ने वीर महर सिंह को उसी काली पटपर में उठाकर पटक दिया। राजा ने महर सिंह के एक पैर को अपने पैर के नीचे दबाया और दूसरे पैर को हाथ से पकड़कर वीर महर सिंह के दो टुकड़े कर ड़ाले।

वीर महर सिंह के शरीर का एक भाग काली पटपर पर पड़ा था तो दूसरा भाग राजा कुही मांछा के दरबार में जाकर गिरता है।

राज सभा में राजा कुही मांछा और उसके सभापति देखते हैं की वीर महर सिंह का मृत

शरीर का आधा भाग दरबार में पड़ा है। तो राजा कुही मांछा कहते हैं। कौन राजा और कौन जमींदार है जिसने मेरी बेटी के लमसना को मार ड़ाला है।

उसी समय राज सभा के किसी मंत्री ने कहा की राजा जी बांध के पास किसी गढ़ के राजा आये हैं। वे बांध में लाल, पीली, काली तंबू ताने हैं। उसी राजा ने वीर महर सिंह को मारा है।

इतना सुनते ही राजा कुही मांछा ने अपनी अनगिनत फौज को युद्ध का आदेश दे दिया और कहा कि राजा बायोड़ड़ी को सात पुरत से घेर लो। पूरे युद्ध के मैदान से मार - मार की आवाज आने लगी।

मिट्टी के नगाड़ा
डुम -डुम की आवाज से बज रहे थे
तो कांसा पीतल के बाजा
ठनाका के साथ
जब लोहे के बाजा बजते थे
तो उसकी आवाज
नौ कोस तक जाती थी।

उसी समय बैंदुला घोड़ा राजा से कहता है राजा जी आप तो यहां पर अपने मामा - मामी से मिलने आये थे और यहां तो युद्ध के बाजा बजने लगे। आप सर्तक होकर मेरी पीठ पर बैठे जायें ।

युद्ध के मैदान से मारो - मारो ,पकड़ो - पकड़ो की आवाज आ रही थी। राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय बड़े देव,बूढ़ा देव का नाम लेकर घोड़े पर सवार हो जाते हैं ।दुशमनों ने राजा के तंबू को सात दिशाओं से घेर लिया था।

जिस प्रकार पानी के बादल उमड़ते हैं उसी प्रकार युद्ध के मैदान में फौज उमड़ रही थी । राजा ने अपने शरीर में जिरह बख्तर,लोहे के साजू - बाजू, गोला ,बम, तलवार भाला बरछी आदि धारण कर लिये थे।

गोलों और बंदूक से
ठांय - ठांय की आवाज आ रही थी।
तलवार से छप्पक- छप्पक की
आवाज आ रही थी।
पूरे युद्ध के मैदान में
जगह - जगह नर मुंड़ बिछे पड़े थे।
एक घड़ी के लिये
जब सिरोही चली तो
चारों दिशा में खून की नदिया बहने लगी।

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय बड़ी कुशलता से युद्ध कर रहे थे। राजा तलवार से युद्ध कर रहे थे। बांस भर के बैदुला घोड़ा ने फौज में हाहाकार मचा दी।

बैरागढ़ के योद्वा बहुत बहादुर हैं । वे भी तलवारों से वार कर रहे हैं खल - खल ,खल - खल की आवाज से रक्त की धार बह रही थी। हाथी , घोड़े कट - कट कर जमीन पर गिर रहे

थे।

बैदुला घोड़ा का पूरा शरीर रक्त से लथ पथ हो गया।

इस भयानक युद्ध को देखकर

चांदा गढ़ के राजा का

दिल घबड़ाने लगा।

चार घड़ी के युद्ध में

अनगिनत फौज के सिपाहियों के

ख्ूान के लोथड़े ही लोथड़े दिखाई दे रहे थे।

युद्ध का पूरा मैदान सूना पड़ गया।

हाथी ,घोड़े खून की नदी में बह रहे थे ।

युद्ध की सामग्री भी

खून की नदी में बही चली जा रही थीं।

राजा कुही मांछा अपने महल की छत में खड़े होकर इस युद्ध का दृश्य देख कर अतयंत विचलित हो जाते है। राजा कुही मांछा की अनगिनत फौज का एक चौाििाई भाग बचा था बाकी सभी शहीद हो गये थे।े

बैरागढ़ के सैनिक बहुत लड़ाकू हैं । राजा कुही मांछा ने जब राजा बायोड़ंड़ी की युद्ध सामग्री देखी तो सोचा इस राजा से जीत पाना तो मुश्किल है। मैंने बिना सोचे समझे युद्ध के बाजे बजवा दिये । जिससे मेरा बहुत नुकसान हो गया है।

राजा कुही मांछा युद्ध का आदेश देकर पछता रहे हैं । बड़े - बड़े राजा और सभापति सभी राजा से कहते हैं राजा जी आप किस गढ़ के राजा या जमींदार से युद्ध कर रहे थे। आप जाकर उस राजा से क्षम मांग लें । तभी आपकी भलाई है।

इतने में राजा कुही मांछा ने अपने गले में अंगोछा और मुंह में पत्ती चाबकर राजा बायोड़ंड़ी की शरण में पहुंच जाते हैं ।

चांदा गढ़ के राजा कुही मांछा उस राजा से कहते हैं ये राजन आप किस गढ़ के राजा या जमींदार हैं मुझे पता नहीं है आप अपना परिचय दें। मैंने अनजान में युद्ध के बाजे बजवा दिये थे।

इतने में राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय कहते हैं

मैं इजई का बेटा बिजई

बिजई का बेटा ब्रम्हा

ब्रम्हा के बेटा श्री देव

अैार श्री देव का बेटा

मैं राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय हूं।

राजा बायोड़ंड़ी का परिचय सुनते ही राजा कुही मांछा कहते हैं राजन तुम तो मेरे भांजा हो! ऐसा कहकर राजा कुही मांछा ने राजा बायोड़ंड़ी के घोड़े की लगाम पकड़ ली।

राजा कुही मांछा राजा बायोड़ंड़ी को आदर सहित सभा में ले जा रहे हैं । चलते - चलते वे सभा में पहुंच जाते हैं । राज सभा में पहुंच कर राजा बायोड़ंड़ी सभी सभासदों औ जोहार

करके राजा कुही मांछा से जोहार मम्मा कहते हैं । राजा को सभा में बैठने के लिये आसन दी जाती है ।

उसी समय लांघा सभा के बीच में उठकर राजा से कहता है । राजा सुनो !

मेरे राजा का नाम कुही मांछा

उनके खरदा का नाम वेद मांछा

जो राजा उस खरदा को

तीन बार उठा लेगा

उसकी विजय हैं

उसकी शादी

राजा की बेटी कैन्ना मंछाल रामो के साथ

कर दी जायेगी।

यदि आप इस खरदा को नहीं उठा पाये तो

आपको बिना किसी कारण बताये

हवालात में बंद कर दिया जावेगा।

वह खरदा राजा कुही मांछा के पूर्वजों का खरदा था। उस खरदा को बारह कंधों से उठाया जाता था। उस खरदा को रोज पांच किलो नमक से साफ करते थे। उस खरदा में इतनी धार थी की मक्खी भी बैठ जावे तो कट जाती थी।

इतने में राजा बायोड़ंड़ी सभा के बीच में बोलते हैं मैं इस खरदा को उठा लूंगा। राजा बायोड़ंड़ी भरी सभा में अपनी छाती ठोंककर बारह कंधों पर उठने वाले खरदा को अकेले उठा लेते हैं।

राजा बायोड़ंड़ी

लोहे के साज बाज धारण किये हैं

उनकी छाती में चर्तुभुज पारस ,

बड़े देव, बूढ़ा देव जांघ में बैठे है।

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय

उस खरदा को उठाकर

पांच हाथ खरदा को इधर

और पांच हाथ उधर लहरा रहे हैं।

उसी समय राजा बायोड़ंड़ी के

देवताओं ने उसके खरदा को संभाला

और राजा बायोड़ंड़ी ने दो खरदा मार दिये ।

उसी समय मृद लांघा राजा बायोड़ंड़ी से कहता है राजन आप राजा कुही मांछा के भांजे हो इसलिये तुम एक खरदा पुन्न में छोड़ दो ।

तब राजा बायोड़ंड़ी ने खरदा को अपने स्थान पर रख दिया। राज सभा में बैठे सभी सभासदों ने राजा बायोड़ंड़ी की जय जय कार की। पूरे नगर चांदागढ़ में राजा बयोड़ंड़ी की जय जय कार हो रही है।

राजा बायोड़ंड़ी ने आदेश दिया कि जितने भी राजा कैद में हैं उन सभी को छोड़ दिया जावे।

राज महल में कैन्ना पिली बाविन मंछाल रामो अपनी सहेलियों से कहती है देखो राजा बायोड़ंड़ी आये तो सभी राजाओं को कैद से छुड़ा दिया।

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय

राज महल के कैदखाने से

बावन गढ़ के सभी राजाओं को

एक - एक करके निकाल रहे है।

राजा ने बावन गढ़ के सभी राजाओं की

दाढ़ी और बाल बनवाये

सभी को नये - नये वस्त्र प्रदान किये।

सभी राजाओं को उनके हाथी, घोड़ा, लाव - लसगर जो राजा कुही मांछा ने जप्त किये थे उनका पूरा समान राजा बायोड़ंड़ी ने वापस करवा दिया।

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय राजसभा में बोलते हैं । सभा के सभी सभापति और बावन गढ़ के सभी राजा आज मैंने तुम लोगों को जेल से छुड़वाया है इसलिये तुम्ही लोग मेरी शादी की तिथी निश्चित करोगे।

तब राजा कुही मांछा कहते हैं राजन आज ही आपकी शादी का शुभ महूर्त है।

राजा कुही मांछा ने अपने मंत्री से कहा की पूरे चांदागढ़ में ड़का करा दो की पिली बाविन मंछाल रामों की शादी होने वाली है।

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय बैरागढ़ वालों ने चांदागढ़ का खरदा उठा लिया है। इस प्रकार का समाचार पूरे चांदागढ़ में फैल गया।

कैन्ना पिली बाविन मंछाल रामो ने जब यह समाचार सुना तो वह खुशी से फूली नहीं समा रही थी। चांदागढ़ में शादी का शुभ महूर्त आ गया है।

अनगिनत छप्परों में बसा चांदागढ़ के

रजवाड़ा में कोलाहल मच गया।

सभी लोग राजा बायोड़ंड़ी बैरागढ़िहा की

जय - जयकार कर रहे थे।

उस राजा ने बावन गढ़ के

सभी राजाओं को जेल से छुड़ाया है।

यह चर्चा पूरे चांदागढ़ में हो रही है।

राजबली , धनबली,

जोरबली,देवबली

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय बैरागढ़िहा

कचहरी से अपने तंबू की तरफ जाने लगते है।

राजा तंबू में जाकर

अपने देवता

सिंगी चित्तावर ,

ठेलामार ठलुआ, हुलक मार कटार,

तुल्ही बख्तर नौ सौ जोगनी

मिंया मोहन ,जिया जोगन,

आदि सभी देवताओं को

राजा तूमा में ड़ालकर

पेड़ में टांग देते है।

राजा उसी पेड़ के नीचे देवताओं के समान

घोड़ा बैंदुला को बांध देते है।

इसके बाद राजा उसी काली पटपर पर

बैठकर स्नान करने लगते हैं।

उसी समय रानी मंछाल रामो अपनी सहेलियों के साथ सनान ध्यान करने उसी बांध में पहुंचती हैं। रानी अपनी सहेलियों के साथ बांध में स्नान कर रही हैं।

इतने में खबरिया आ जाता है

और वह बतलाता है कि

राजा बायोड़ंड़ी की शादी

रानी मंछाल रामो के साथ

होने जा रही है।

वह खबरिया सब को शादी की खबर दे रहा है।

राजा कुही मांछा के राज दरबार में तेलिन गढ़ से तेल मंगाया गया। हरदी गढ़ से हल्दी मंगाई गई।

राजा कुही मांछा ने नगर सुवासा अैर नगर सुवासिन को बुलाया। उत्तर दिशा से मंगरोहन की लकड़ी काट कर बुलाई गयी।

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय को रात के समय तेल चढ़ाया गया। दोसी और सुवासा ने मिलकर दुल्हे का श्रृंगार किया। राजा को अच्छे - अच्छे वस्त्र पहनाये गये।

दोसी और सुवासिन ने मिलकर कैन्ना मंछाल रामो को गहने जेवर पहनाये। पूरे नगर वासियों को शादी का निमंत्रण दे दिया गया। मंड़प के नीचे चांदा गढ़ के सभी पुरवासी एकत्र हो रहे हैं।

कैन्ना मंछाल रामो और राजा बायोड़ंड़ी की शादी में दोसी और सुवासिन ब्रम्ह गांठ बांध रहे हैं। चौदह वरण के आंगन में हरे रंग का मंड़प गाड़ा गया है।

बावन गढ़ के सभी राजा बराती बने हैं।

राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय और रानी मंछाल रामो की भांवर का समय हो गया है। सात सुवासिन और नौ दोसी राजा - रानी की भांवर पाड़ रहे हैं। सात भांवर हो जाने के बाद दोनों को मंड़प के नीचे बैठाल दिया गया।

उसी समय लांघा राजा कुही मांछा से कहता है राजा जी एक खरदा को आपने पुन्न में छोड़ा था। उस खरदा का आप संकल्प कर दें।

चांदा गढ़ के राजा कुही मांछा

वेद के समान वेद मांछा खरदा को उठाते हैं ।

तब मृद लांघा राजा से कहता है
राजा जी
इस देवबली राजा बायोड़ंड़ी के
सभी देवी - देवता इस समय
तूमा में बंधे एक पेड़ पर टंगे है।
इस राजा ने आपके बारह साल के लिये
लमसनाई जितने वाले
वीर महर सिंह को मार ड़ाला हैं ।
अब आप उसकी शादी अपनी बेटी से कर रहे हो।
तब मृद लांघा राजा से कहता है
राजा जी आप उस पुन्न के खरदा का
संकल्प कर दिजिये।
राजा कुही मांछा अपने खरदा
वेद मांछा को उठा कर घुमाते हैं ।
उसी समय राजा का खरदा
राजा बायोड़ंड़ी को लग जाता है
और राजा बायोड़ंड़ी लद्द से
मंड़प के पास गिर जाते हैं।
राजा स्वर्ग को सिधार जाते हैं।

पूरे राजमहल में हाहाकार मच जाता है। चारों तरफ हाय - हाय हो रही है। कैन्ना मंछाल रामो अपनी किस्मत को कोस रही है। पूरे चांदागढ़ में भारी शोक और अपशगुन हो गया। मंछाल रामो हाय - हाय करके जमीन में गिर जाती है।

उसी समय बावन गढ़ के राजा जो बराती बने थे । वे कहते हैं इस राजा के कारण हम लोगों को जेल से छुटकारा मिला है। इसलिये राजा बायोड़ंड़ी का अंतिम संस्कार भी हम सभी लोग मिलकर करेंगे।

ऐसा कहकर बावन गढ़ के राजाओं में से कोई राजा घाट में चिता बना रहा है तो कोई राजा राजा के लिये सरग नसैनी बना रहा है।

वहां राजा बायोड़ंड़ी के
राज्य बैरागढ़ में भी
भारी अशगुन हो रहा था।
राज माता की कमर टूट जाती है
वे अंधी हो जाती हैं।
तुलसी का हरा पौधा
अपने आप मुरझा जाता है।
राजा के राजमहल बहरे हो जाते है।
राज माता धौलमति

रो - रो कर बैरागढ़ में विलाप कर रही है।।

यहां नगर चांदागढ़ में राजा बायोड़ंड़ी की लाश को शमशान घाट ले जा रहे हैं। चंदन की लकड़ी काट कर चिता सजाई जा रही है। राजा बायोड़ंड़ी को चिता में लिटाया जा रहा है।

कैन्ना मंछाल रामो कहती हैं की मेरे कारण राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय ने अपने प्राण त्याग दिये हैं अब मैं जिवित रहकर क्या करुंगी। ऐसा कहकर कैन्ना मंछाल रामो हल्दी लगे वस्त्रों में दुल्हन के वेश में शमशान घाट पहुंच जाती हैं ।

राजा बायोड़ंड़ी को चिता के ऊपर रख दिया गया था। उनका अग्नि संस्कार बावन गढ़ के राजाओं ने कर दिया था। राजा बायोड़ंड़ी की चिता जल रही थी।

घोड़ा बैंदुला बरगद के पेड़ के नीचे सांकलों से बंधा था। घोड़े कीऑखंसे धर - धर मूंगा - मोती से आंसू बह रहे थे। कैन्ना मंछाल रामो राजा की जलती हुयी चिता को देखती है और वह तंबू की तरफ जाती है और कहती है जब राजा ही जीवित नहीं हैं तो ऐ तंबू किस काम के इनको भी चिता के साथ जला देना चाहिये।

रानी देखती है
कि तंबू के पास बरगद के पेड़ पर
एक तूमा टंगा था।
जिसमें राजा के देवी देवता
बड़े देव, बूढ़ा देव,
जिया जोगन मिंया मोहन,
सभी देवता तूमा के अंदर बंद थे।
वे तूमा के अंदर भड़भड़ा रहे थे ।
कैन्ना ने सबसे पहले तूमा को निकाला
और उसका ढ़ककन खोल दिया
जिससे राजा के सभी देवता
तूमा से भड़भड़ा कर निकल गये।
रानी ने खाली तूमा को
राजा की जलती चिता में ड़ाल दिया।
राजा के सभी देवता
तूमा से निकलकर कौवा और
गिद्व बनकर आकास में उड़ने लगे।
राजा के देवताओं ने देखा की
राजा की चिता जल रही हैं
तो उन्होंने अपने पंखों से
राजा की चिता को बुझाना चालू कर दिया।
कोई देवता राजा के
जिव को लाने चला गया
तो कोई देवता राजा के लिये

अमृत लेने चला गया।
कोई देवता चिता की आग को
ठंड़ा कर रहा है
तो कोई देवता चिता की राख से
पिंड़ बना रहे हैं।
इस प्रकार से सभी देवता
अपने - अपने काम में लग गये।
थोड़ी देर बाद जिव लेने गये देवता
जिव लेकर आ गये ।
अमृत लेने गये देवता
अमृत लेकर आ गये।
कैन्ना मंछाल रामो
कौवा गिद्व को हकाल रही थी।
जिसके कारण वह राजा के साथ
सती होना भूल गयी।
जो देवता अमृत लेने गये थे
वे अमृत लाकर वेद के ड़ंड़ा से
राजा के पिंड़ को ढ़ोंकते है।
राजा के पिंड़ को ठोकते ही
राजा बायोड़ंड़ी के शरीर का
आकार बनने लगता है
राजा बायोड़ंड़ी
जय बड़ा देव कहकर
उठकर बैठ जाते हैं।

कैन्ना मंछाल रामो यह सब देखकर अचम्भे में पड़ जाती हैं। रानी मन ही मन में सोचती है कि धन्य हो राजा के देवता जिया जोगन मिंया मोहन और बड़ा देव, बूढ़ा देव के साथ राजा के सभी देवताओं ने राजा को जीवन दान दिया है।

कैन्ना मंछाल रामो राजा से कहती हैं राजा जी बैरागढ़ को चलिये । तब राजा बायोड़ड़ी कहते हैं। मुझे यहां पर क्यों लाये हो और मैं यहां पर कैसे आ गया हूं।

तब बावन गढ़ के राजा बोलते हैं राजा जी आपकी मृत्यू हो गयी थी। हम लोग यहां पर आपका अग्नि संस्कार करने लाये थे। आपके देवताओं ने आपको फिर से जिंदा कर लिया है।

तब राजा बायोड़ंड़ी कहते हैं
मुझे किसने मारा था।
तब बावन गढ़ के राजा कहते हैं
राजा जी आपको लांघा ने मरवाया था।
तब राजा कहते हैं

मैंने तो तीन खरदा उठा लिये थे।
अब मैं नगर चांदागढ़ में
चढ़ाई करुंगा
इसकी सूचना राजा को भेज दिया जावे
कि राजा बायोड़ंड़ी चांदा गढ़ पर चढ़ाई कर रहे हैं ।
राजा कैन्ना मंछाल रामो से कहते हैं रानी तुम यहीं तंबू में को मै अभी आता हूं। मैं राजा कुही मांछा से राम जोहार करने जा रहा हूं।
इतना कहकर
राजा बायोड़ंड़ी
अपने सभी देवताओं का स्मरण करते हैं।
अपने घोड़ा को समझाते हैं ।
राजा युद्ध का श्रृंगार करते हैं ।
हाथ की भुजाओं में बाजू बंद
कमर में बारह बैलों की घंटी
तेरह बैलों का नेउर
शरीर में धारण करते है।
राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय
बूढ़ा देव का नाम लेकर
घोड़ा बैंदुला पर सवार हो जाते हैं।
राजा बायोड़ंड़ी
नगर चांदा गढ़ के लिये प्रस्थान कर जाते है।
जब राजा कुही मांछा को पता चलता है कि
राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय ने
चांदागढ़ पर चढ़ाई कर दी है
इतना सुनते ही
राजा कुही मांछा
अपने परिवार और बच्चों की रक्षा के लिये
अपनी फौज को युद्ध का आदेश दे देते है।
मार - मार की आवाज करके
बाजा बजने लगे,
मिट्टी के नगाड़े
टुम - टुम करते
तो कांसा पीतर के बाजों से
टन - टन की आवाज आ रही थी।
बैरागढ़ के राजा युद्ध कर रहे हैं
युद्ध के मैदान में

रुंड़ मुंड़ कट - कट कर गिर रहे थे।
युद्ध के मैदान में
खून की नदीयां बहने लगीं।
राजा बायोड़ंड़ी
राजा कुही मांछा से कहते हैं
राजा मैं तुमसे अपनी सात पीढ़ियों का
बदला लेकर रहूंगा।
राजा युद्ध के मैदान में
अपने पराये किसी को नहीं पहचानते।
खट - खट - खट - खट तेगा बाजैं
छप्पक - छप्पक तलवार
की आवाज आ रही थी
जिसका भाला उसी को लग रहा था।
खरदा की मार अलग से
नर संहार कर रही थी।
राजा बायोड़ंड़ी लोहा ही लोहा के
साज - बाज अपने शरीर में
धारण किये हुये थे।
राजा को जिरह बख्तर पहनने के कारण
चोट नहीं लग रही थी।
जिसका खरदा, भाला बरछी था
उसी को लौट कर लग रहा था।
जब एक पल के लिये सिरोही चली तो
युद्ध के मैंदान में खून की नदियां बहने लगी।
बांस की उंचाई वाला घोड़ा बैंदुला
दुश्मनों को अपने दांतों से काट रहा था।
कठिन लड़ैया बैरागढ़ के
बहुत चलायें तलवार।
पूरे नगर में हाहाकार मच गया।
उस राज्य की प्रजा
अपने देवी - देवताओं का सुमरन कर रहे थे।
वे कह रहे थें हे देवता एक आदमी के काम बिगाड़ने के कारण पूरे शहर में धूम मच गयी हैं
इधर बैरागढ़ में
राजा बायोड़ंड़ी की मां को
जो कमर में दर्द हो रहा था।

उनकी टॉख फड़क रही थी।
पूरे राज्य में जो अपशगुन हो रहे थे।
तुलसी का पौधा मुरझा गया था।
उसमें नई - नई कपोलें आने लगीं।
राजा माता की कमर ठीक हो गयी।
रानी की टज़्ख्ज़ का फड़कना बंद हो गया।

राजा बायोड़ंड़ी ने चांदा गढ़ में खूब मार - काट मचाई। राजा ने अपने पुरखों की सात पीढ़ी का बदला ले लिया। पूरे राज्य में मार - काट करने के बाद राजा बायोड़ंड़ी राजा कुही मांछा के पास राम जोहार करने जाते है। ंराजा सोचते हैं कि जाते - जाते मम्मा से राम जोहार कर लिया जावे । ऐसा सोचकर राजा बायोड़ंड़ी राज दरबार की ओर जाते है। ।

राजा कुही मांछा देखते हैं कि
राजा बायोड़ंड़ी राज दरबार की ओर आ रहे हैं
तो राजा कुही मांछा अपने गले में
अंगोछा ड़ालकर मुंह में तिरिन चबाकर
राजा बायोड़ंड़ी मारा क्षत्रीय के
चरणों में गिर जाते है
और राजा कुहीमांछा कहते हैं
भांजा दमाद मैं बन गया गाय
और आप बन गये बाघ ,
आपने अपनी सात पीढ़ीयों का
बदला ले लिया है।
अब आप मेरे सात कसूरों को माफ कर दें।
ऐसा कहकर राजा कुही मांछा
घोड़ा बैंदुला की लगाम पकड़कर
राज दरबार में ले जा रहे हैं।

राजा कुही मांछा ने राजा बायोड़ंड़ी को ससम्मान घोड़े से उतारा और उन्हें सोने के सिंहासन की व्यास गद्दी पर बैठालकर राजा बायोड़ंड़ी को अपना आधा राज्य देने की घोषणा कर दी ।

राजा बायोड़ंड़ी चांदा गढ़ के आधे राज्य के मालिक बन गये। राजा बायोड़ंड़ी अब राजा कुही मांछा से बैरागढ़ जाने के लिये बिदा मांगते हैं।

राजा अपने घोड़े पर सवार होकर पूरी सभा से राम जोहार करते हैं। राजा राजमहल से अपने तंबू में आते हैं।

वहां पर कैन्ना पिली बाविन मंछाल रामो बावन गढ़ के राजाओं जिनको राजा ने हवालात से छुटकारा दिलाया था। उनको भोजन कराने में लगी थी।

उसी समय राजा बायोड़ंड़ी बांध पर आ जाते हैं और बांध में स्नान करने लगते है।ं इतने में कैन्ना पिली बाविन मंछाल रामो सभी राजाओं को खिला पिला कर बांध में स्नान करने चली

जाती हैं।

राजा और रानी दोनों स्नान ध्यान करके तंबू में आ जाते हैं। राजा के तंबू में सबके लिये छत्तीस प्रकार का भोजन बना था। राजा और रानी दोनों ने भोजन किया और बैरागढ़ जाने की तैयारी करने लगे।

राजा रानी और बावन गढ़ के सभी राजा जो राजा के बराती बने थे अपनी - अपनी सवारी हाथी, घोड़ा में सवार होकर बैरागढ़ के रास्ते चलने लगे। चलते - चलते आठ दिन नौ रात बीत गये ।

राजा रानी और बावन गढ़ के सभी राजा आठ दिन नौ रात के बाद बैरागढत्र की सीमा पर पहुंचते हैं। राजा बायोड़ंड़ी कैन्ना मंछाल रामो को चांदागढ़ से विवाह करके लाये हैं इसकी खबर पूरे बैरागढ़ में फैल गई ।

इस प्रकार की खबर सुनकर
राजा बायोड़ंड़ी के
साठों जंवरिहा मित्र
ईनहरिहा किनहरिया
सभी खुशी हो जाते हैं कि
राजा बायोड़ंड़ी नगर चांदा गढ़ को जीतकर
कैन्ना पिली बाविन मंछाल रामो को लेकर
बैरागढ़ की सीमा पर पहुंच गये हैं।
प्रजा ने राजा के स्वागत में
गम्मत बाजा तैयार किये ।
नौ नारी बत्तीस कुंवारी,
सोलह सौ सड़वा,सत्रह सौ हैवाती ,
बारी - बारी से राजा की
आरती उतार रहे हैं।
नगर की नारी गारी गा रही हैं।
उन पर भारी निछावर आ रहा है।
बैरागढ़ की पूरी प्रजा
गाजा बाजा के साथ
राजा को लेने जा रहे हैं
जहां राजा का तंबू लगा था।
राजा और उनके साथ आये
बावन गढ़ के सभी राजा
जो बराती बन कर आये थे ।
बैरागढ़ की प्रजा से गले मिल रहे हैं।
एक दूसरे से राम जाहार कर रहे है।
बैरागढ़ की प्रजा बड़े उत्साह के साथ

राजा और कैन्ना मंछाल रामो के साथ
बावन गढ़ के राजाओं को
बैरागढ़ को ला रहे हैं।
चलते - चलते सभी लोग
राजमहल में पहुंच जाते हैं।
राजमहल में राज माता धौलमति
बड़े आदर के राजा बायोड़ंड़ी की आरती उतारती हैं।
बड़े आदर के साथ राजा रानी को
महल में प्रवेश करा रहीं हैं।

राजा बायोड़ंड़ी ने अपने मंत्री के द्वारा पूरे बैरागढ़ और खैरागढ़ में निमंत्रण भिजवाया की राजा बायोड़ंड़ी चांदागढ़ से रानी मंछाल रामो को जीत कर उसके साथ शादी करके राजा के खरदा को तीन बार उठाकर आये हैं। इसलिये राजा बायोड़ंड़ी बैरागढ़िहा के महल में सभी का निमंत्रण है।(आप पढ़ रहे हैं आख्यान डॉ.विजय चौरसिया)

दोनों राज्यों खैरागढ़ और बैरागढ़ के नगर वासी राजमहल में आकर राजा रानी को आर्शीवाद दे रहे हैं।

राजा बायोड़ंड़ी ने
बावन गढ़ के सभी राजकुमारों को
एक - एक धोती
और एक - एक कमीज
उपहार में दी।
राजा की तरफ से
बावन गढ़ के सभी राजकुमारों के
बाल बनवाये गये।
बावन गढ़ के सभी राजाओं
और नगर वासियों को
राजा ने भोजन कराया
और वस्त्र भेंट में दिये।

राजा बायोड़ंड़ी से बावनगढ़ के राजा कहते हैं । राजा जी आपने हम लोगों को जेल से छुड़ाया हैं इसका एहसान हम लोग जिंदगी भर नहीं भूलेंगे। ऐसा कहकर सभी राजा अपने - अपने देश को चले जाते हैं। इसके बाद बैरागढ़ में राजा बायोड़ंड़ी ने अचल राज्य किया।

जैसे राजा कुही मांछा और राजा बायोड़ंड़ी के दिन फिरे उसी प्रकार सबके दिन फिरें।

0ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्0

संकलन - डॅा . विजय चौरसिया
मु.पो.गाड़ासरई जिला - डिंड़ौरी मध्यप्रदेश

डव्ण्09424386678 मउंपसरू्बीवनतंपंकतअपरंल3/हउंपसण्बवउ

आत्म परिचय डॉ.विजय चौरसिया

नाम - डॉ. विजय चौरसिया

पिता - स्वः श्री सी. एल. चौरसिया

माता - स्वः श्रीमति ललिता बाई

पत्नि - श्रीमति प्रमोदनी चौरसिया

जन्म स्थान - ग्राम - बंड़ा

जन्म तिथि - 29.12.1952

जिला - कटनी म.प्र.

शिक्षा - बी.एस.सी, बी.ए.एम.एस, ड़ी. एच. बी,

संर्पक-चौरसिया सदन गाड़ासरई जिला-डिण्डौरी म.प्र.

- सम्प्रति -

्र चिकित्सा कार्य,पत्रकारिता,लोक संस्कृति पर लेखन,प्रदेश के लोक नृत्यों एवं लोक संस्कृति तथा आदिवासी शिक्षा के संरक्षण हेतु प्रयासरत।

्रम.प्र.तथा देश की विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं जैसे कादंबनी,धर्मयुग,हिन्दुस्तान,टाइम्स,दिनमान,स्वस्थयवर्धक,इंड़ियाटूडे,दैनिकभास्कर,नवभारत, नईदुनिया पत्रिका में एक हजार से अधिक लेखों का प्रकाशन।

्र मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में करीब 30 लोक नाट्य एवं लोक नर्तक दलों का नेतृत्व एवं देश - विदेशों में लोक नृत्यों का प्रदर्शन।

्र विगत तीस वर्षों से मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य की लोक कलाओं एवं लोक नृत्यों के संरक्षण एवं विकास के लिये प्रयासरत।

्र भारतीय रेडक्रास सोसायटी मध्यप्रदेश द्वारा जूनियर रेडक्रास सोसायटी म.प्र. के माध्यम से प्रदेश के बच्चों में रेडक्रास के प्रति जनजाग्रति लाने के लिए प्रयास।

-उप्लब्धियां-

भारत सरकार संस्कृति विभाग का उपक्रम दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र नागपुर में मध्य प्रदेश के लोक नृत्यों के लिए 2011 में गुरु मनोनित,भारतीय रेडक्रास सोसायटी मध्यप्रदेश की राज्य शाखा जूनियर रेडक्रास सोसायटी म.प्र. में 2012 से 2015 तक के लिए चेयरमेन मनोनित.धार जिला के घाटा बिल्लौद ग्राम एवं सतना जिला के मैहर नगर में जूनियर

रेडक्रास का राज्य स्तरीय सम्मेलन जनवरी 2013 में कार्यक्रम का संचालन,राज्य स्तरीय प्रतिभाशाली छात्र - छात्राओं के सम्मेलन 22 सितंबर 2013 में म.प्र.महामहिम राज्यपाल रामनरेश यादव द्वारा प्रदेश के प्रतिभाशाली बच्चों का सम्मान एवं कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन, इंदिरा गॉधी जनजाति राष्ट्रीय जनजाति विश्वविघालय अमरकंटक में सदस्य मनोनित,म.प्र. की प्रसिद्व समाजसेवी संस्था सावरकर शिक्षा परिषद में अध्यक्ष।सावरकर लोक कला परिषद में निर्देशक। दैनिक भास्कर पत्र समूह के क्षेत्रीय संवाददाता। इंटरनेशनल रोटरी क्लब ि‍ड़ड़ौरी में सदस्य। राजीव गांधी शिक्षा मिशन ड़िड़ौरी में जिला इकाई के सदस्य। पंचायत समाज सेवा संचालनालय म.प्र. द्वारा ि‍ड़ड़ौरी जिले के वरिष्ट नागरिक समूह के सदस्य। राष्ट्रीय भारत कृषक समाज के अजीवन सदस्य। भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश द्वारा ि‍ड़ड़ौरी जिला के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ में अध्यक्ष मनोनित. भारत भवन भोपाल द्वारा एक घंटे की इंटरव्यू फिल्म का निर्माण। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 45 मिनट की डाक्यूमेंटरी फिल्म जीवन पर आधारित का निर्माण 2012, बैगा जनजाती के लोक नृत्यों एवं लोक गीतों का आड़ियो विड़ियो कैसेट का निर्माण। जबलपुर होमियोपैथिक स्टूडेंट एसोशिएशन 1973 में अध्यक्ष। 115. म.प्र. की प्रसिद्व जनजाति गौंड़ में प्रचलित गोंड़ राजाओं के इतिहास का साक्ष्य बाना गीत पर आधारित म.प्र. आदिवासी लोक कला अकादमी द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'आख्यान' का म.प्र. के मुख्य मंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा मुख्यमंत्री निवास पर दिनांक 7 फरवरी 2007 को विमोचन।, स्वराज संस्थान संचालनालय संस्कृति विभाग भोपाल द्वारा स्वाधीनता फैलोशिप प्रकाशित ग्रंथ जनजातीय लोक गीतों में राजनैतिक चेतना,का म.प्र. के महामहिम राज्यपाल रामेश्वर ठाकुर एवं मुख्य मंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा 15 अगस्त 2007 को भोपाल के रविन्द्र भवन में विमोचन।,म.प्र. के मुख्य मंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान,फिल्म अभिनेता आशुतोष राणा,फिल्म अभिनेत्री रामेश्वरी,फिल्म निर्देशक प्रकाश झा एवं मंत्रीमंड़ल के मंत्रीयों द्वारा अंर्तराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल 2008 के अवसर पर मेरे द्वारा लिखित तीन पुस्तकों रामायनी,गोंड़वाना की लोकथायें एवं प्रकृति पुत्र बैगा का रविन्द्र भवन भोपाल में विमोचन,टी.वी.सीरीयल मान   रहे तेरा -पिता में मुम्बई की दादा साहब फालके फिल्म सिटी में बैगा लोक नृत्य का प्रदर्शन एवं शुटिंग,बैगा जनजाति के जीवन पर आधारित फिल्म गोदना के निर्माण में सहयोग व फिल्म की स्क्रीप्ट का लेखन,दूरदर्शन भोपाल द्वारा निर्मित फिल्म नगर कथा डिण्डौरी के तीन एपिसोड निर्माण में सहयोग, बंबई की फिल्म कंपनी ड्रीम्स अनलिमिटेड़ द्वारा निर्मित प्रसिद्व फिल्म अभिनेता शाहरुख खान एवं करीना कपूर द्वारा 2002 में अभिनीत फिल्म अशोका में प्रदेश के 35 लोक कलाकारों का अभिनय एवं एक गीत के फिल्मांकन में अभिनय। जिला साक्षरता समिति मंड़ला द्वारा 1998 में तहसील डिण्डौरी का परियाजना समन्वयक मनोनित।

- शोध पत्र -

स्वराज संस्थान संचालनालय संस्कृति विभाग भोपाल द्वारा स्वाधीनता फैलोशिप 2006.07, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग म.प्र.शोध पत्र का पठन। जवाहर लाल नेहरु कृपि विश्वविघालय जबलपुर शोध पत्र का पठन। स्वराज भवन भोपाल एवं गौंड़ी पब्लिक ट्रस्ट मंड़ला द्वारा मार्च 2006 को मंड़ला में आयोजित म.प्र. के स्वतंत्रता   संग्राम

सेनानियों पर शोध पत्र का पठन। शासकीय चंद्र विजय महाविघालय ििड़ड़ौरी शोध पत्र का पठन। गुरु धासीराम विश्व विघालय रायपुर में शोध पत्र का पठन,रानी दुर्गावती महाविघालय मंड़ला में शोध पत्रों का वाचन,भारतीय संस्कृति निधी(इंटेक)राष्ट्रीय सेमिनार 2012 ग्वालियर म.प्र.,उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. शासन द्वारा शासकीय चंद्र विजय महाविघालय ििड़ड़ौरी में 25 से 26 फरवरी 2003 को आयोजित समायिक संर्दभों में गोंड़ी संस्कृति का इतिहास विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में जनजातियों में जड़ी - बूटियों से चिकित्सा विषय पर शोध पत्र का पठन,मेरठ बाटनी कालेज मेरठ में आयोजित बैगा जनजाति में प्रचलित जड़ी - बूटियों पर शोध पत्र का पठन।रानी दुर्गावती विश्वविघालय जबलपुर द्वारा आयोजित सेमिनार 2003 में फारेस्ट पिपुल्स एनवायरमेंट पर शोध पत्र का पठन एवं जनजातिय समस्यायों पर चर्चा,रानी दुर्गावती विश्वविघालय जबलपुर द्वारा मंड़ला में आयोजित सेमिनार जनजातियों में मदिरा का प्रचलन विषय पर शोध पत्र का पठन,इँदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाती विश्वविघालय अमरकंटक में आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार 28 फरवरी 2012शोध पत्र का पठन। म.प्र.सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान(भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद्, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय,भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आयोजित सेमिनार उज्जैन 8 अक्टूबर 2013.मध्य प्रदेश के बैगा आदिवासी क्षेत्रों में सामाजिक,आर्थिक एवं तकनीकी विपय पर शोध पत्र का पठन

-सम्मान -

1. मिनिस्टरी आफ डेवलेपमेंट भारत सरकार द्वारा प्रगति मैदान दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय विश्व व्यापार मेला में प्रदेश की लोक कलाओं को प्रोत्साहन एवं लेखन के लिये नागरिक अभिनंदन, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित।
2. प्रथम प्रांतिय होमियोपैथी डॉक्टर्स अधिवेशन इंदौर में 20 अक्टूबर 1974 को होमियोपैथिक की विशेष सेवाओं के लिये मान पत्र से सम्मानित।
3. भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री सम्मानीय राजीव गांधी एवं श्रीमति सोनिया गांधी के साथ 24 नवंम्वर 1986 को तीन मूर्ति भवन दिल्ली में दोपहर भोज पर आमंत्रित एवं सम्मलित।
4. भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम रायपुर द्वारा गाड़ासरई में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में नागरिक अभिनंदन एवं प्रश्स्ति पत्र से सम्मानित ।
5. आदिवासी कला एवं संस्कृति केंद्र भोपाल एवं स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल 28 दिसंबर 2000 को भोपाल के स्वराज भवन में आयोजित समारोह में राज्य मंत्री श्री गनपत सिंह उइके द्वारा प्रदेश की लोक कलाओं को प्रोत्साहन एवं लेखन के लिये नागरिक अभिनंदन,प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित।
6. जबलपुर नगर के ऐतिहासिक पर्व दशहरा, मुहर्रम 1984 के चल समारोह में अति उत्तम सेवाओं और सराहनीय कार्य के लिये मुस्लिम बेदार कमेटी जबलपुर द्वारा नागरिक अभिनंदन।
7. अखिल भारतीय चौरसिया समाज द्वारा नागपंचमी पर्व 2001 के अवसर में जबलपुर में नागरिक अभिनंदन एवं समाज रत्न से सम्मानित।
8. बा. पा. जयंती 2002 के अवसर पर ड़िड़ौरी जिले के बोंदर ग्राम में आयोजित समारोह में जिले के सांसद एवं पूर्व शिक्षा मंत्री मोहन लाल झिकराम द्वारा शाल एवं श्री फल से

सम्मानित।

9. अखिल भारतीय चौरसिया समाज जबलपुर में आयोजित नागपंचमी पर्व 2003 चौरसिया दिवस के अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं नागरिक अभिनंदन।

10. गणतंत्र दिवस 2003 के अवसर पर ड़िड़ौरी जिले के मुख्य समारोह में मुख्य अतिथि श्री गनपत सिंह उइके द्वारा नागरिक अभिनंदन।

11. सृजन सांस्कृतिक मंच केवलारी जिला सिवनी द्वारा 22 अक्टूबर 2003 को नागरिक अभिनंदन।

12. नेहरु युवा केंन्द्र मंड़ला द्वारा आयोजित राष्ट्रीय युवा सप्ताह 1998 के अवसर पर 19 जनवरी 98 को अलंकरण समारोह में राष्ट्रीय युवा सम्मान से सम्मानित ।

13. नेहरु युवा केंन्द्र मंड़ला द्वारा आयोजित नवरंग लोक कला महोत्सव 11 जुलाई 1994 के अवसर पर नुक्कड़ नाटक कार्यशाला में लोक कला निर्देशक एवं मान पत्र से सम्मानित।

14. नेहरु युवा केंन्द्र दिल्ली द्वारा 15 अगस्त 1998 को आयोजित र्स्वण जयंती समारोह में प्रशस्ति पत्र से सम्मानित।

15. राष्ट्रीय महिला आयोग भारत सरकार 1 फरवरी 2002 को जबलपुर में आयोजित रीजनल वर्कशाप आफ नेशनल कमीशन फार वूमेन के समापन समारोह में प्रशस्ति पत्र से सम्मानित।

16. इंटरनेशनल इंट्रीग्रेशन एंड़ ग्रोथ सोसायटी व्हाइट हाउस दिल्ली द्वारा जीवन रत्न अवार्ड से सम्मानित।

17. 26 जनवरी गणतंत्र दिवस समारोह 2004 के अवसर पर ड़िड़ौरी जिला के कलेक्टर श्री के. आर. मंगोदिया जी द्वारा जिला के मुख्य समारोह में प्रशस्ति पत्र एवं नागरिक अभिनंदन से सम्मानित।

18. भोपाल की समाजसेवी संस्था जनपरिषद द्वारा भोपाल के संस्कृति भवन में आयोजित भव्य समारोह में 'एक्सीलेंट मेन आफ दी ईयर 2004 से सम्मानित।

- प्रकाशित ग्रंथ एवं विमोचन -

1. एशिया महाद्वीप की सबसे पुरानी जनजाति बैगा के जनजीवन पर आधारित भारत वर्ष की प्रथम हिन्दी पुस्तक 'प्रकृति पुत्र बैगा' का म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल द्वारा प्रकाशन।

2. म.प्र. की प्रसिद्व जनजाति गौंड़ में प्रचलित बाना गीत पर आधारित 'आख्यान' (गोंड राजाओं की गाथा) पुस्तक का म.प्र. आदिवासी लोककला अकादमी द्वारा प्रकाशन।

3. म.प्र. की प्रसिद्व जनजाति परधान द्वारा गायी जाने वाली गाथा गोंड़वाना की लोक कथाओं का वन्या प्रकाशन भोपाल द्वारा राजकमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित।

4. म.प्र. की प्रसिद्व जनजाति परधान द्वारा गायी जाने वाली गाथा रामायनी का वन्या प्रकाशन भोपाल द्वारा राजकमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित।

5. म.प्र. की प्रसिद्व जनजाति परधान द्वारा गायी जाने वाली गाथा पंडुवानी का वन्या प्रकाशन भोपाल द्वारा राजकमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित।

6. जनजातीय लोक गीतों में राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना शोध पत्र का ग्रंथ स्वराज भवन संस्कृति

संचालनालय भोपाल द्वारा प्रकाशन ।

7. इँदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाती विश्वविघालय अमरकंटक द्वारा प्रकाशित गोंड,बैगा एवं कोल जनजाति का शब्दकोष तैयार कराने में सहयोग भारत के महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुर्कजी द्वारा पुस्तकों का विमोचन।

8. म.प्र. लोक कला परिषद भोपाल द्वारा प्रकाशित मोनोग्राफ बैगा में सहयोग।

9. म.प्र. लोक कला परिषद भोपाल द्वारा प्रकाशित ग्रंथ सुराज 88 में वतंत्रता संग्राम के समय गाये जाने वाले लोक गीतों का संग्रह प्रकाशित।

- अप्रकाशित कृतियॉ -

बैगा जनजाति में प्रचलित चिकित्सा पद्वति,फोक टेल्स आफ बैगा का हिन्दी,अंग्रेजी एवं रोमन भाषा में प्रकाशन,सर्प बिष तंत्र - मंत्र चिकित्सा,म.प्र. के आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आदि।

आपका अपना ही ....

डॉ विजय चौरसिया

(लोकसंस्कृतिकार)

चौरसिया सदन

गाड़ासरई जिला ड़िड़ौरी